یه کتاب

اپنے بچوں کے لیے scan کی بیرون ِ ملک مقیم هیں مو منین بھی اس سے استفادہ حاصل کرسکتے هیں.

منجانب. سبيل سكينه

یونٹ نمبر ۸ لطیف آباد حیدر آباد پاکستان





۷۸۶ ۱۰-۱۱-بإصاحب الؤمال اوركني"



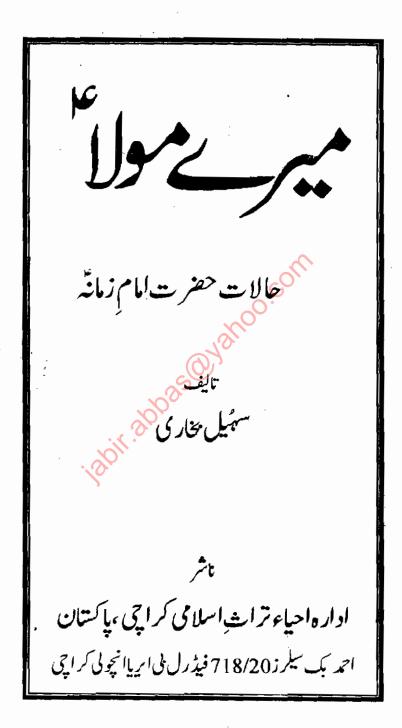
Engly Car

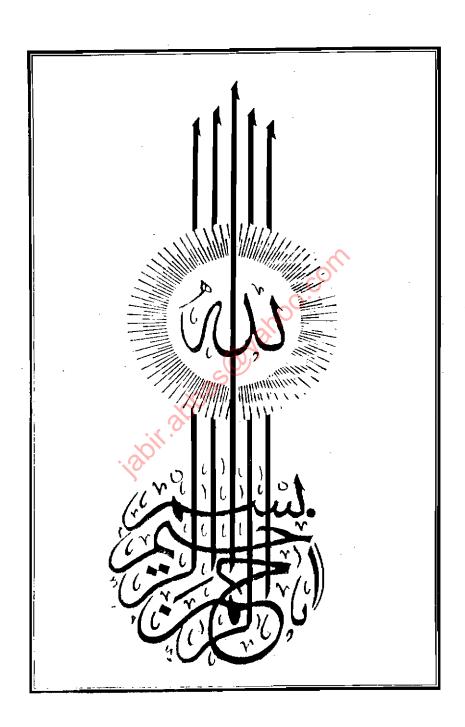
نذرعباس خصوصی تعاون: رضوان رضوی اسملا می گنب (ار د و)DVD دٔ یجیٹل اسلامی لائبر ریری ۔

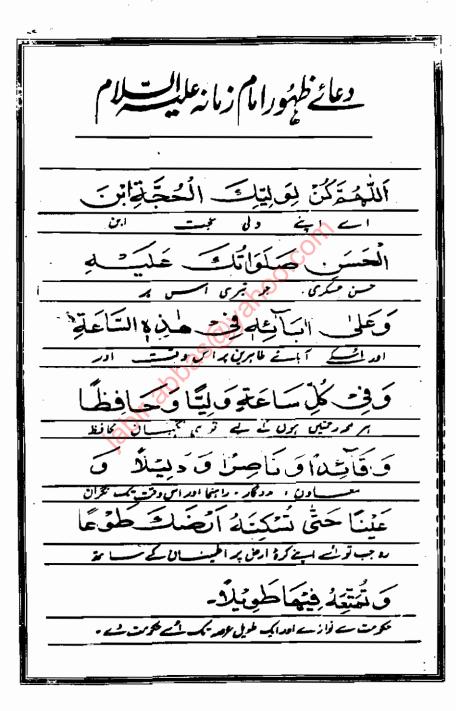
SABIL-E-SAKINA Unit#8, Latifabad Hyderabad Sindh, Pakistan. www.sabeelesakina.page.tl sabeelesakina@gmail.com

iabir abbas@vahoo.com

http://fb.com/ranajabirabba







خذرنظر

یں اپی اس معولی می کافٹی کو عصر عاشق کا کفن پہننے والی مخدرات عصر عاشور جلنے والے میول سے فاکس شفا کا کفن پہننے والی مخدرات عصرت کے اجب مطاہر سے بہنے والے بے گن وخون کی نذر کرتا ہوں وہ خون مقدس جو فاکس شفا بن کو کا فنا ہے کہ جبنوں سے بحدوں کا خواج نے دنا ہے ۔ اسے ختم آلم محد کو بلاسے کوف وقت میک بازادوں دربادوں میں بہنے والے اس طاہر خون کا بدلہ بچکانے کے لئے ظہور میں تجبیل فرط ۔ اے زیانے کے وادث امیری اس می کو اپنے ورباد میں اس انداز میں قبل فرط کے دارت امیری اس می کو اپنے ورباد میں اس انداز میں قبل فرط کے دارت امیری اس مناکر ہے وقت جھے ندامت نہ ہو۔

جادد بکش درا بام منطلوم ۱۹ سهبلی کادی

فهت

| مغمنبر | مصناین | 47. | سؤنم | مطاين | فبرشاد |
|--------|---|-----|-------|---|--------------|
| 64V | آٹپ کوتا مُم م کیوں کہا جاتا ہے | Ę,r | 14 | جب مولاً آئے | 1 |
| 07 | ملائكه آب كرجدمبارك سيمس موت دجه | ۲۳ | 14 | لوح مبارک پراهاکی مهدی کا نذکره | r |
| 10 | نها نه غِيبت ب <i>ي هبر كون</i> والوں كى منزلت | 44 | سرس | مال ولادت بردايت حضرت حكيمة | ۳ |
| 00 | وگرے کے ک ولادت سے انکار کریں ھے | 10 | 44 | ولاوت کے تبسرے دن محاب کو زیارت | |
| اس | حضرت امام زمانة اورنتبعه | 44 | 44 | ولادت پر ما بر مخوم ک دائے | ۵ |
| المات | امام قائم كوسل كمرسف كاطريق | rc | 12 | المانان في الفي والدائل كي نماز حبار م يوسالي | 4 |
| ar | زمانه فیکست می <i>س توگون کا حا</i> ل | 74 | m/ | جناب ذجس خاتون کی گرفتاری | 4 |
| 00 | ا مام زمائمًا م عقل وسجدسے الاترین | 14 | y | الم زام کی گرفتاری کے لئے فرج کی آمد | ٨ |
| 24 | غيئت امام زمائدي شيعمل كامال | (P) | سرمو | اميرت كراندها بوكيا | • |
| ØY | شیعدام مبری رارت و رسی کے | اس | 44 | الم احن صكر على كم كركا مي اصره | 1- |
| 04 | مغرت المام عسكري كع بعد شيعول كاحال | | ro | مائے قیم ایم زمانی | 11 |
| 01 | عرصه غيبت طولي موكا | 44 | 10 | صفرت امام زمامه كي ولادا زواج | . 17. |
| 01 | زمانه عنيست يرضيعن كافريينه | ١ | سونهم | الم زمانة كى ولادت كو يوميد دكا جائے گا | مور |
| 09 | ایک دوس براری کا فلمار کرد مے | | 44 | جبة كما ألودنها بي نبي كون نبي ديوسكة | 10 |
| 09 | في <i>ئبت ين شيعون ك</i> حال <i>ت</i> | 74 | 10 | آپ آئد میں سے کم من ہوں کے | 10 |
| 4. | دشمنان خدا <u>که ل</u> ئے نیکست غصنب الہی ک <i>ی شا</i> ن | | 60 | زمین جمت فداسے کمی خالی نه سوگی | 14 |
| וץ | شیعہ چاہ گاہ تلاش میں گے | ۳۸ | 44 | لوك صاحب الامركى ولادت كا انكاركري مح | . 14 |
| 42 | المم قائم كم شال آفياب مبين سوكى | | 44 | ولادت كى تىبنىت | IA |
| سرد | موفت الماكم كص بغيرما المبيت كالموت | F | 82 | آپ كے بازو برقرآن كى قري | 19 |
| ا سرب | وعلت غرلق برمض والع نبات إمين محت | 17 | WZ | حغرت المامم مميمي كاعتيقة | , † • |
| 74 | البع مقيدت برقائم رمنيا | 64 | MA | الاش اذب كلام بوتا | ۱۲) |

| | * | | | | |
|--------|---------------------------------------|--------|-------|---|-------|
| منونبر | مغناين | نبرثاد | منونر | معنامين | نیراد |
| 99 | دورغيكت يوحزت تفرعيدام زدانة كى طاقات | 44 | Ald | غيبت كى دجسے كى قويس مرتد سروايش كى | سوبه |
| 1-1 | مدت فيكبت صغرى | 49 | 40 | فقها مرتين مول كالشرير مول كا | 44 |
| 1.4 | اما كازمان كم كامت إردليل | 4. | 40 | علار چردوں کی طرح تسل موں کے | · MA |
| 1.4 | المم قائم كى غيبت كاعبدكيا عاچكاتها | 4 | 44 | جهلان علام سے نغرت کرنے لکیں . | (4.4 |
| 1.0 | غیبت حکم خدا دندی ہے | 44 | 44 | مبعنی و گ مبعض پرلوشت کر <i>ی گے</i> | 64 |
| 1.4 | فيبت يرايان دكهف والاخوش نصيب | ۳, | 44 | مبعن وگ معفی کو کذاب کمبیں گے | ρΛ |
| 1.4 | غیربت دام مهرش الندکا دا زہے | دلا | 44 | شيعو <i>ں کا آلیں ہیں اخت</i> اف | cr 9 |
| 1.4 | ہم اہلِ بیت کی شال ساروں جیسی ہے | 49 | 74 | شیعہ ایسے اخلاف کریں گھ | ۵. |
| 110 | عرت فيسكت صغري | 44 | 44 | قرآن کے نمالت روایت روکردو | اه . |
| 1.9 | فيكبت كبرى ٢٠٠ بتجري سع موك | 44 | ٤٠ | دوفيبت ميمورت بقائم ين والول فضيلت | 34 |
| 110 | فيكبت إمام كاانكارية كمزما | 41 | ۷٠ | شیعہ آذائے مایش کے | or |
| 11. | مرصەغىكىبىت لمولى سوگا | 44 | <1 | خواتين ك صورت مال | 70 |
|)// | غیست کی مرت طویل موگ | ** | 35 | خواتین برمهندلباس میں سوں گ | 20 |
| 111 | ا مامت کے جمولے دعومدار | ΛC | 200 | حفرت المارُهُا نَهُ اور نواب اراجه | 04 |
| 11/4 | مشع شریعی | SAF | 47- | ا مام زمانهٔ کے نظار کوامت | ۵۲ |
| 110 | مربن نصير نيرى | ۸۳ | 41 | منان بن سعيد | an |
| liy | احدبن بلال كرخى | ۸۴ | ۸٠ | محدبن عثمان بن سنيد | 04 |
| 114 | الوطا برمحدبن على بن بلال | 10 | سرم | جناب مين بن دوئ نوجنى | ۲٠ |
| 1/9 | محسین من منصور صلاح | 44 | ۸۶۳ | خاب ابی انحسن علی بن ف ی سمرتی | 41 |
| 14. | البرمبغربن الب حزاقر | ٨٤ | AĐ | ا مام مهدی کی زمارت کونے والے | 77 |
| Ir. | ا بو دل <i>ف مجنون کا صا</i> ل | 44 | 10 | چالیس افرادے زمایت کی | 42 |
| IFA | تعفرت أمام زمانة أورمعبزات | Λ4 | 14 | حددن القلانس كاباين | 4/4 |
| 111 | آسمان سے ندا آئے گ | 4- | 94 | فادم فاری نے زمایت کی | 40 |
| irg : | ا ما مبدئ آبادان سے دور رہی گے | 47 | 1< | ا موران الماري الما الماري الماري | 44 |
| 11- | اس سال جح برنه مانا | 95 | 9/1 | مون مع روزت فی سفرار دنا شین و حافزین کے حالات | 74 |
| • | | • | ١ , | - 57 67 | • * |

| منوبر | معناین | نبثرار | صغفر | معنابين | نبرار |
|-------|---------------------------------------|---------|-----------------------|---------------------------------|--------|
| 100 | دِل کی بات | 134 | 171 | حتِ المامُّ ك دمولى | 950 |
| 100 | مردست زمایت ملتوی کردو | 1/4 | 171 | مِرَاد ومِناد مِن موف دوسو بھیج | 914. |
| 100 | خادم نشر کراہے اسے دائیں کردو | 11. | سرماء | | 10 |
| 104 | تماكا وكاوكورقوم وحول ذكرني كالحكم | ire | 150 | | 44 |
| 104 | تیری زوجہ غلط کہتی ہے | 177 | مه ۱۳ مر | | 94 |
| IDA | ا دُن وخل کی امبازت ہے | 44 | 1994 | عاتكه كاتعيلي | 9.0 |
| 100 | انی رقم کا معالبہ کرویل جائے گی | 1754 | 114 | يرا ناموما جها موكيا | 19 |
| 14. | فغرت المام زائر اورمسائل سريعه | 110 | 1179 | | 1 |
| 141 | سأنل ك إر ع ي عكم الم | - 117 | بسوا | جنيد ك علاده اجرائ وطيية كامكم | 14 |
| ۱۲۳ | میری تلاش کرنے دالا | | 11% | | 1-1 |
| 171 | | | 114 | وعائے فرج کی تعلیم | 140 |
| ۱۲۴ | the second | | 1 110 | | |
| 174 | 10.0.116 | | | | |
| 144 | 11/1/2 22/20 | موا م | 1 100 | | |
| 174 | والمع قرفات. |) Im | بها _{ال} م | | L |
| IYA | | موا أ | ۱۲۷ س | | • |
| 144 | | الم الس | 10° 10° | • | |
| 14 | يع دبسترا ك متعلق سعال | الم أ | אן פי | | |
| 14 | ينزك بيسكه إرساس | 11 | -4 IL | تمبارا رصل نام کیاہے | ने भार |
| - 14 | ì | | rk 11 | قیدی ریا ہو مبائے می | in. |
| 14 | , ! | | ra 1 | وبلاسے زبان مل گئ | |
| 14 | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | | ا وسو | | |
| | وببشت ي زندگ | | in- 1 | ام دوں کے مال مباشقہ ہیں | |
| | ب ومن کے والے سے | 1 | 191 1 | • | |
| | ك رسبة الم حيث الم | •, | وأبهم | | 7 |
| | | | - | | • |

| مغرنبر | معناين | ديرار | موتر | مغاین | 16% |
|--------|--|---------|------|--|--------|
| 194 | عوبن ابرابيم فبزيار كوتبنيب | IYA | 144 | خاک ترمیت حین اورکفن | حوبهجا |
| 113 | المازمائم يمرى وراع فرندكم فاكوتيع | | | تىبى ئاڭىشغا | 1997 |
| 7-1 | ابلِ تلم كا توقيع مبارك كانساني ك ك مط | | | ناک پرسجده | 160 |
| 7.0 | الم ذا ذك د بردك باعدي شك مرزا كيك وق | 141 | KΛ | فبرمعصومين برنمانه | lé, A |
| 4.4 | الم نيام كابرسال في اماكزنا | 144 | 149 | قرابت دادوں کاحق | 184 |
| 7-4 | المازمائد كى توانى يى بلاكت وشرك ب | 14.90 | 14. | ولؤش ك الوسعة يادكرده كيرس مى نماز | IÑA |
| Y+4 | سب خيئت كاول سے توقيع مبارك | | | فازمغرب وسع دير سرميضة والالمعون ب | وماا |
| Y-9 | كاجدكا بذاق ندارُاذُ نمسِ اواكرو | 140 | IAY | مروس الاختدوم کی گواری | 10. |
| rir | امام زماد كاعمر بن ابرايم كي نام خط | 144 | IM | مبردس الدخدوم کی گوامی سمبره گاه کی گانس میں سرکا تھانا | 101 |
| rim | ا می زماند کی اولاد زینے کے لئے دعا | 146 | 122 | | 107 |
| سم زلا | خس كوناحتى كمعاف والالمون ہے | | | _ / | 105 |
| TIA | فس كى جا ئىدد كى بارسىدى | 144 | INF | مجرامی بدک انگوشی | 101 |
| 410 | میں فررسٹ یں آگ بعرنا ہے | IA. |) yr | کام کرنے والے عشیل بنیں کرتے | 100 |
| 714 | فسوافد برتما فرشتن اوروكون كالعنت | NA. | INO | مالت مازمی تبیع | 104 |
| 414 | وعل إلى كاماتُ الدشيخ صدوى ا | Ma | 100 | ایک اقدیں تبیع پرهنا | 104 |
| **- | في مددق كا الم زمائسك عم يركتاب كلفا | Mr | ind | وقعند كم الكي فروخت | 104 |
| 771 | ميغد كامد اورام زمانه عليد السلام | 4 | | ہینہ کی برلوسے بچے کے لئے | 129 |
| 447 | بوائن فنركوشنا كاستطامي توقيع مبارك | | | نابنیا مونے کے بعدی شادت | 14. |
| 441 | بعوبن حدال كرك ترتيع مبارك | וחן | 104 | نماز حبنر طبادًا كب برصين | l Mi |
| 4700 | بن ہلال معون کے باعدیں توقیع مبارک | f fA4 | 100 | عورت کے مہر کے ادے میں | 145 |
| 770 | د قت فروع کے بارے میں الم زا د کی تحریر | | | اِدُن كا مع | 147 |
| 770 | فدبن ابمايم فهرايرى غلافهي يرتوقيع مبارك | 104 | 1 10 | | 146 |
| 474 | م خداکی برکت والا قریم بی | 14 | . 19 | مُ وَاقِلُ وَامْ مِنْ مُ | [H. |
| 474 | ام ذما خ کی آخری توتیع مبارک | 1 191 | 19 | | 144 |
| **• | مارزان اورجاری ذیر واریال | / (1) | 19 | | 174 |

| | | | | r | |
|----------|---|------|----------------|---|-------|
| منرنبر | مفيون | | | | إنجار |
| ٨٨٨ | كي سوال كري - ؟ | | | الم زامة كافات ين كويركين | 194 |
| سوبهم ا | نلبوركا وقت متعين كرنوالون كوعبلا دو | 414 | موسونو | امام زمامہ کا حکم واہب ہے | |
| ישיאץ | ا ما زما تلم سے ملاقات کی دعا مانگیں | 77. | سيهويو | الازانة كماناك برمال فرح كري | 1 |
| سويما مر | اسلمراورسواری مروقت تیار دمجیس | 741 | سوسوم | وا) زمام كاصدقه دي | |
| 777 | تعجين المهورك النه دعالا ندمي | 444 | 170 | | 194 |
| ציקן | حضرتُ الم أزمانُهُ العد علامات ظهور | 446 | ماهدا | یہ دعا مانگی جائے | 191 |
| 414 | اكيدعظيم مهتى كاليورى ونياكوا تنطاد | | | | 144 |
| 777 | ندتشتون کی کتاب" زندِ | 110 | 7700 | المرمزيواصل نام نه لها ملت | ۲ |
| 1444 | بهندوُن کی تناب موشنو و یک ا | | | ا مام زمانة كا الم سنة بي كوي مبر ما أي | ۱۰,۱ |
| 1579 | برعمنون كى دواتك الى كماب | | | | 4.4 |
| 149 | مِنْدُون كَى كُمّابِ بِأَنْكِل | 770 | ציינץ | مشكلات مي المازمات كو دسلية تراروي | 4.90 |
| 100 | توریت ادراس کے ملحقات | 779 | צייוניע | ضابيه وال كدوقت أمام زمانة ك تسم | ۲. ۲۰ |
| 101 | عهد مدیدیں انجیل اوراس مے ملحقات | 77 | 474 | كافرون كديروميكية مسي مساخرة بون | 7.0 |
| 101 | الخيل نوقا | | | المابت قدم ركعين | 7.4 |
| 1207 | معیشرب ادرم ادر مرادی کاعقیده | 444 | א מיניו | | 1.4 |
| 100 | علامات فلبور مبدئ كي قسمين | ٦٧٧ | <i>אייני</i> ן | عال مبادك مي زيارت كواشتيا ق ركمين | 7.0 |
| 100 | تلبورام مبري نك زف كقرب كاعلاات | 777 | מיינין | محروالوں كوجبنم كى اگ سے بحایث | 7.4 |
| سره ۲ | د ول يك كا مغير بلك أخرى قرار | 2000 | 7 74 | | |
| 700 | حزت امرا لمونين كانعيه دل أخرى زمان | 42.4 | 7 709 | , | |
| 141 | المام باقط كى علامات خلبور هبدي باين كرما | 454 | 7779 | | |
| سريدم | المورك وقت كاتوين كرنا . (مسلة توقيت) | 750 | 44. | · 1 | |
| 740 | المبود التُدتعالي ك مرضى سنع بوك | ļ | 751 | , - i | |
| 140 | المبودكا وقت تلف والع كا ذب بي | 1 | 441 | | 1 |
| 777 | مِ نے وقت ظہور بتا یا نہ بتا بئر گئے | 1 | 241 | 1 2 1 | |
| 444 | موان بمام زام کا تذکره | 1 | RUT | l a l | |
| • | 1 -27-4 - 121 1402 | l"" | Ι | | 41- |

| منز | معفمان | بزور | مؤنر | معتمون | نبتار |
|------|--|------|-------|--|-------|
| 49 | خواسان والأكوفه وملمان برقبعنه كرم كا | 747 | 744 | امًا قَامٌ كُرِجت آلِ فَيْرَكِ لِعَبْ يَعِياد كرو | |
| 11- | عراق میںنسل نجا کے کائنل | ۳۲۳ | 249 | يدرب تباه بد كا | l |
| 41 | اميرالمومنين كانعطبه لولوة | 448 | بير. | افرلتم کے اسے میں علامات | |
| ۱۹۲ | سجدبرا فماكے داہتے خار امیرکی گفتگو | 170 | ٣٤٠ | قرب ظهور مهدئ وجين ك حالت | 444 |
| 10 | مسجد کوف کی دایل رکاگر نا | 444 | 141 | چین فنا ہو طبئے گا | 444 |
| 10 | یوم عرب پرما داثہ | 744 | 741 | روس کا مشکر سرنگون مبو گا | 444 |
| *44 | حازیں آگ اور غبف میں بانی آجائے | 1 | 242 | ا ذرہ یُجان سے مدوائے گ | 1779 |
| 14 | بندا دیرترا گاری حکومت مرنے میکس - در | | 14/94 | مشرق سے ایک شخص کا فرون | |
| *** | قرکیل کے اطراف میں یا غات میر <i>ن سکے</i> میرین کے اطراف میں یا غات میرن سکے | 1 | ۲۷۴ | | ļ |
| 'A 4 | شامیں پرچم شامل ہوں گھے قب مند اس سر پرچم | : | | | |
| ΔΔ | قیس اورخراسان کے پرمچم شامیں تین جندمے خوج مریں گئے | | | -, 1, 100 | |
| 436 | | | | | |
| - ΑΛ | سفیانی کے تب <u>ض</u> ے بعد شام کی لبتی دمنس جلے گ | | | - , , | |
| 44 | عام ہی جس وہ مل جسے ہ پانچ دریا دُن برکنا رکا جسمنہ | 10 | | -1,010,715 | ı |
| ×44 | ہے ورور ان رسا رہ بھی بیوطرا و علی لیکاب یک عرصن | | | ۳ ٹھرکی قبروں کو خزاب کومیں سکے خزاسان سے پریشانی دور مہرنے کی امید | |
| · 4• | ايك ما من مورج اور طاند كوهن موكا | | | تراسان سے برای فی دور بوت فی مید قم علم وفضل کا معدن مہو گا | i |
| 44- | جادی الله نیه ورجب می متواز بارش برگ | | | | I |
| ~91 | ا ومغرسه ما وصغرتك بشك | 1 | | 1 | |
| 191 | حفرت الم مبرئ كي باد من تعدد اماديث | ì | | 0, 0, | |
| | | į | 1 | | |



🖈 حرف آغاز

اس وفت بوری دنیا میں ایک الی عظیم شخصیت کی آمد کے تذکرے ہو ر ہے ہیں جو دینا کو غم ہے نجات و لائے گی اور ہر طرف امن ہی امن ہو جائے گا۔ دنیا کے تقریباً تمام مذاہب میں آخری زمانے میں کی عظیم شخصیت کے ظہور کے بارے میں ﷺ کو ئیال کی گئیں ہیں مسلمانوں کے تمام مکاتب فکر کا یہ ایمان ہے کہ آخری زمانے 🗘 حضرت امام مہدی علیہ السلام کا ظہور ہو گا۔ اس طرح نفر انیوں کا عقیدہ ہے کہ آفری زمانے میں حضرت میسیٰ علیہ السلام د نیا میں وارد ہول کے جبکہ شیعہ اٹنا عشری ملمانون کا یہ عقیدہ ہے کہ اُن کے امام 255 جر ی میں اس جمال میں ظهور پذیر ہوئے اور آیے حضر ت امام حسن عسکری علیہ السلام کے فرزند ہیں۔260 ہجری میں آپ کی غیبت صغریٰ ہو گی اور پھر غیب کبریٰ کے بعد آیٹ آخری زمانے میں جھم خدا ظہور فرمائیں گے۔ مومنین کرام ۔ یہ ایک ایبا موضوع ہے جس پر جن کلاء نے کئی ضخیم کتابیں لکھیں اور تاحال مزید معلومات یجا کرنے پرینگے ہوئے میں۔ میں نے اس کتاب میں حضرت امام ذمانہ علیہ السلام کی ولادیت باسعادیت ہے لے کر غیبت صغریٰ تک کے حالات، چند معجزات، چند مسائل اور آٹ کے نائبینؒ کے ادوارّ کے واقعات تح پر کرنے کی کوشش کی ہے۔اس سے تمبل <ھزیت امام زمانہ علیہ السلام کے بی حوالے ہے ایک کتاب ''جب مولاً آئیں گے'' تحریر کی تھی خدا کا شکر ہے کہ بطفیل پنجتن یاک علیم السلام اور صدقہ آئمہ طاہرین علیم السلام اس کتاب نے شہر ہ آفاق پر ہرائی حاصل کی۔ کئی ممالک کے علاء و مومنین نے

اس کونے حدیبند کیا۔اس کے بعد ایک دوسر ی کیاب'' عزاد اری سید الشہد اء معصومین کی نظر میں"کھی تح ہر کرنے کی سعادت عاصل ہوئی ہے۔ میں عزاداری کے خلاف کی جانے والی سازشوں ہے مومنین کو آگاہ کیا گیا ہے۔ اور معصومین علیم السلام نے کس اندازے عزاداری کی۔اس ہے آگاہ کرنے کی سعی کی گئی۔ بحر حال دینا کے مظلوم عوام ہر وقت ایک مسجا کی آمد کے نتظر ہیں۔اس وقت دینا کے مختلف حصوں میں مسلمان شدید مصائب کا شکار ہیں۔ شیطانی طاقتیں ہر طر ف مسلمانوں کے خلاف پر سریکار ہیں۔ یہود و نساری مختلف ہر کے دھار کر مسلمانوں کا شیر ازہ بھیم نے کے لئے ساز شوں میں مصروف میں کہیں تو ہے ہیدو نی طاقتیں پر اور است ایے شیطانی منصوبے پر عمل پیرا ہیں اور کہیں مسلمانوں کے روپ میں اُن کے ایجنٹ کام کر رہے ہیں مسلمانوں کوآپس میں لزا کر صب بیر فی طاقتیں ایے نایاک عزائم کی شخیل میں مصرمف ہیں۔عام آد می تو یہو دیوں اور نقر انیوں کے ایجنٹوں کو پھان کھی نہیں کتے۔ ہر حال یہود و نصار کی جتنی سازشیں کر لین وہ اپنے نایاک عزائم میں تحیی بھی کاماب نہیں ہوسکیں گے۔

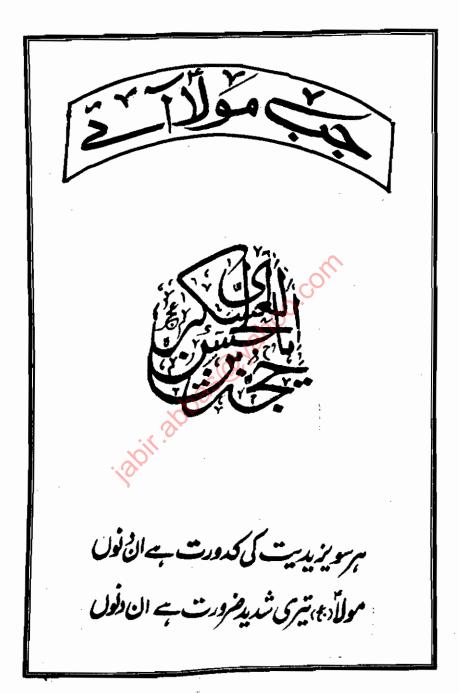
صریث مبادکہ ہے ایک جو فخض اپنے زمانے کے آمام کی معرفت کے بخیر مرگیاوہ جاہلیت کی موت مراراس لئے ہر مسلمان پرواجب ہے کہ دہ اپنے زمانے کے امام کی معرفت حاصل کرے۔ شدیعیان جمان وہ خوش قسمت ترین لوگ ہیں جن کے امام اس کر وَ ارض پر موجود ہیں۔اس لئے ہر شیعہ مسلمان کا یہ فرض ہے کہ اس کو اپنے امام کے بارے میں معلومات حاصل ہوں۔

اس کتاب میں میں نے امام وقت کا تذکر وکیا ہے جس کے انظار میں نہ صرف خداوید تعالیٰ بعد ہر ند ہب و ملت کا فرو ہے۔ حضر ت اہام زبانہ علیہ السلام کے ظہور کے بعد بی وہ خدائی وعد و بورا ہوگا جس کے تحت دیاا من کا گوار و ن جائے گا۔ ظالموں سے مظلو موں کا حق دلاکر کا نتات میں ایک عظیم انقلاب بر باکر دیا جائے گا۔ اہل فت و فجور صفحہ ہتی سے مناد کے جائیں گے۔ او بنیت کی جریں اکھاڑ بھینکی جائیں گے۔ او بنیت کی جریں اکھاڑ بھینکی جائیں گے۔

حضرت امام زمانہ علیہ السلام کے ظہور پر نورے ول فاطمہ کو سکون نصیب ہوگا۔ آپ جناب بیدہ سلام اللہ علیہااور معصوبین علیم السلام کے قاتلوں سے بدلہ لیں گے۔ اور وہی لوگ لمام کے لئکر میں شامل ہوں گے جو صحیح معنوں بیں معصوبین کے اور وہی لوگ لمام کے لئکر میں شامل ہوں گے جو صحیح معنوں بیں معصوبین کے احکامات پر عمل کر ہے ہیں۔ میری دعا ہے کہ خدا تعالی ہم سب کوامام زمانہ علیہ السلام کے صحیح النظام کرنے والا میا دے۔ اور ہمیں عزاد اری سید الشہد اعلیہ السلام کی تھی معرفت عطا کر۔ تاکہ مولاً آئیں تو کر بلا میں جو اتھی صلح والے ہیں۔ آمین کے میں جا میں جا تی صلح ہیں۔ آمین کے میں جو اتھی ساتھیں ہیں ہم سب شامل ہوں۔ آمین

میں ساری سنگتوں کو خود ہی بلاؤں گا جب کریلا میں ماتمی حلقہ لگاؤں گا

سهبيب ل بخارى



لوح مبارک پرامام مهدی کا تذکرہ جرسول نے فاطمہ زہرا کوری

ابو بھیے نے حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام سے روایت کی ہے کہ آپ نے ارشاد فرمایا:۔

کہ میرے والد ماجد نے جابر این عبدا للّٰہ انسار ٹیا ہے فرمایا۔اپ حایماً۔ جھے تم ہے آپ کام ہے جب تم فرصت ہے ،و تو مجھ ہے ملنا۔ عاراً نے · کما ـ مو لاً جس وقت فر ما تمين ميں حاضر ہو حاؤں گا گجر ايک م تـ ـ حضر ت امام ثمر باقر عليه السلام نے جائز این عجراللہ انصاری کو جمائی میں طلب کو اور فرمایا۔ اے حامر ٔ یأس لوح کے بار ہے ہیں متلاؤ۔ جو تم نے میری جدی فاطمہ '' ببغت رسول الله کے ماتھوں میں ویکیسی تھی کراتے بوٹ میں جو ہم تھا تی کے بارے میں تنہیں بتایا تھا۔ جاہر نے کہا کہ میں اللہ کی گوا تھا؛ بنا زوں کہ میں رسول الله كي زعد كي ميں آپ كي جدته فاطمه زہر اسلام الله عليها كي خد مث ميں حاضر جوا تا کہ حضرت امام حسین علیہ السلام کی ولادت کی مبارک باد دیے شنوں یہ میں نے بسی بسی کے ہاتھوں میں ایک سنر لوح و کیسی جھے گمان ،واکہ یہ زمر و کی ہے اور اس کی کتامت الی نورانی تھی جیسے سورج کا نور ساطع :و میں نے حرض کیا۔اے بدنت رسول اللہ آپ پر میرے ماں باپ نثار ۔ یہ کیسی بوخ ہے آپ نے فرمایا۔ یہ لوح اللہ نے رسول یاک کو جمیحی ہے اس میں میرے والد کا نام علیٰ کانام ، میرے دونوں فرزندوں کانام اور ان کے بعد کے ،و نے وائے اوصاء کا

نام ہے۔ پھرید میرے والد نے مجھے عطا فرمائی ہے تاکہ اس طرح میں خوش ہو جاؤں۔

جائر کتے ہیں کہ میں نے آپ کی جدہ من ما اللہ علیما ہے وہ اور لے کر جدہ من ما اللہ علیما ہے وہ اور لے کر جو میں اور اس کو نقل کر لیا۔ میر ہے والد (حضر ت امام محمد باقر علیہ السلام) نے جائر ہے کہا۔ اے جائر ۔ کیاوہ اور تم جھے و کھاؤ کے ؟ جائر نے عرض کیا۔ ضرور کی میر ہے والد جائر کے ساتھ ان کے گھر گئے اور جائر بھی کھال پر تکھا ہوا ایک صحیفہ نکال کر لائے۔ امام محمد باقر علیہ السلام نے فرمایا۔ اے جائر۔ تم اپنی کتاب پر نظر رکھواور میں تمہیں میان کرتا ہوں جو اس میں تکھا ہے۔ پس جائر نسخ و کھے اور آپ میان کرتے جائے اور خدا کی فتم امام محمد باقر علیہ السلام نے جو فرمایا۔ وہ ایک حرف بھی غلط نہ تھا۔ جائر نے غرض کیا۔ میں گواہی و بتا ہوں کہ جو آپ نے فرمایا ایسان کہ جو آپ نے فرمایا ایسان کی حرف بھی تعلی کے مار کی کھا ہے۔

اش بوح کی عبار نے بیہ تھی :۔

بهم الله الرحن الرحيم

یہ کتاب اللہ عزیز وہ تھیم کی جانب سے محمد کے لیے نور و سفیر و تجاب و لیل ہے جس کو روح الا مین رب العالمین کی جانب سے لے کر نازل ہوئے۔اے محمد میرے نام کی عظمت بیان کر و میر کی نعتوں کا شکر اواکر واور ان کا انکار نہ کرو میں اللہ ہوں جس کے علاوہ کوئی خدا نہیں۔ میں جاہر وں کا چر توڑنے والا اور سمبر کرنے والوں کو نابو و کرنے والا ، ظالموں کو ذلیل کرنے والا ہوں اور قیامت کے ون حماب کرنے والا ہوں۔ میں اللہ ہوں جس کے علاوہ کوئی خدا نہیں۔ میں اللہ ہوں جس کے علاوہ کوئی خدا نہیں۔ اللہ ہوں جس کے علاوہ کوئی خدا نہیں۔ ایس چو میرے علاوہ کسی غیر سے امید نگائے اور کسی غیر

ہے خوف کرے تو میں اسے ابیاعذ اب ووں گا جیسا عذاب کا ئنات میں کسی کو شمیں ہوا۔ پس میری عباد ت کرواور جھ پر ہی تو کل کرو۔ پس میں نے کو ئی تھی آتی معبوث نہیں کیا گرید کہ جباس کے ون بورے ہوئے اور اس کی عمر تمام ہو ئی تو میں نے اس کا وصی مقرر کیا اور میں نے تم کو تمام انبیاء بر فضیلت دی اور تمهارے وصی کو تمام اوصیاء پر فضیلت دی اور اس کے بعد تم کو سبطین حسنّ و حسین علیهم السلام ہے کرم کیااور میں نے حسن علیہ السلام کواس کے والد کے بعد اپنے علم کا معدن قرار دیا اور حسین علیہ السلام کو ایپی و حی کا خزینہ قرار دیا اور اس کو شادت کے بہاتھ کرم کیا اور اس پر سعادت کو ختم کیا۔وہ شھداء میں انتقل ہے اور سب ہے جد ورجہ والا ہے اس کے ساتھ میرا کلمہ تامہ اور ججت بالغہ ہے اس کے بعد اس کی عترت کو فضائل ہے مکرم قم ار دیاان میں اول علیّ سید انعامه بن علیه السلام اور گذشته اولیاء کی زیبنت ہیں اور ان کا فر زند جس کا نام اس کے جد کے نام پر محمد ہا قر علیہ السلام ہے جو میرے علم کو ظاہر کرنے والا اور میری عکت کا معدن ہے۔ عنقریب ہلاک ہوجائیں گے وہ لوگ ۔ جو جعفر کی امانمت کے مارے میں شک کریں گے۔

اس کا انکار کرنے والا میر امتکرہ میر اید وعد و پورا ہوگاکہ میں جعفر کی عظمت کو اجاگر کر دوں گا اور اس کے ووستوں (پیروکاروں) اور مدو کرنے والوں کی وجہ ہے اسے خوش کر دوں گا جو موسی کا ظم علیہ انسلام کے بعد شدید فت کھڑا ہوگا شریعت کی رسی ضمیں ٹوٹ گی اور میری ججت پوشید ہ ضمیں رہے گی اور میری ججت پوشید ہ ضمیں رہے گی اور میرے اولیاء مجھی بھی شکایت کے مر تکلب ضمیں ،وں کے پس جو ان آئمہ میں ہے اس نے میری نعموں کو جھٹلایا۔اور میں ہے کی ایک کا انکار کرے گا۔ گویا اس نے میری نعموں کو جھٹلایا۔اور

میری کتاب میں تغیر کیااور جھے پر جھوٹ باندھا۔ ایسے جھوٹوں اور منکروں کے لئے جنم ہے جو میرے مدے اور حبیب (موسیٰ کا ظم علیہ السلام) کے بعد فتنہ اٹھا کیں گے اور آٹھویں (امام) کو جھٹلانے والا ایسا ہے گویا اس نے تمام کو جھٹلایا علی رضاعلیہ السلام میرا ولی اور ناصرہے جس کے کندھے پر میں نبوت کا یو جھڑا ال دوں گااور سختیوں ہے اس کی آزمائش کروں گااس کو ظالم قمل کریں گے اور وہ اس شہر میں دفن ہوگا جن کی بیناد عبد صالح ذوالقر نبین نے رکھی تھی اور وہ میری برترین مخلوق کے پہلومیں دفن ہوگا۔

میں اس کی تعد خلفہ ہوگا وہ میرے علم کا وارث میری حکمت کا معدن دول گاجواس کے بعد خلفہ ہوگا وہ میرے علم کا وارث میری حکمت کا معدن میرے راز کا ایمن اور میری جت ہوگا جنت اس کی جائے از گشت ہوگا اور وہ اپنے اہل خاندان میں سے ان کی شفاعہ کرے گا جن پر دوزخ واجب ہو چک ہوگا انتائی سعادت ہے اس کے بیخ علی (فقی علیہ السلام) کے لئے جو میرا ولی و ہوگا انتائی سعادت ہو اس کے بیخ علی (فقی علیہ السلام) کے لئے جو میرا ولی و مدرگارہ وہ خلق پر گواہ اور میری وہی کا امین ہم اس کا ایک فرز ند ہوگا جو میرا ولی میرے راستے پر بلانے والا اور میرے علم کا خازن ہوگا وہ حن (عشری علیہ السلام) ہوگا گھر میں اس سلسلہ (امامت) کو اس کے بیخ کے ذریعے عمل کروں گا جو عالمین کے لئے رحمت ہوگا اس کے لئے کمال موئ (علیہ السلام) ہدیت میں علیہ السلام اور صبر ایوب علیہ السلام ہے میرے یہ ادلیاء اس زمان میں علیہ السلام اور صبر ایوب علیہ السلام ہے میرے یہ ادلیاء اس زمان میں علیہ السلام کے وادر ان کے دور کے باد شاہ ظلم ڈھا کیں گے دور ان کے دور کے باد شاہ ظلم ڈھا کیں گے دور ان کے دور کے باد شاہ ظلم ڈھا کیں گے دور ان کے میں یہ قبل کتے جا کیں گے اور ان کے دور اسے بیل میں زند ٹی گذاریں کے زمین ان اسباب جلائے جا کیں گے اور خوف کے عالم میں زند ٹی گذاریں کے زمین ان اسباب جلائے جا کیں گے اور خوف کے عالم میں زند ٹی گذاریں کے زمین ان

کے خون سے سرخ ہوگی کی میرے اولیائے حق ہیں جن کے ذریعے ہیں جل کا فتنہ دور کروں گاان کے ذریعے مصیبتوں کو دور کرو نگااور ان پر پڑی ہوئی زنجیروں کو توڑ دوں گا کی وہ ہیں جن پر ان کے رب کی طرف سے صلواۃ اور رحت ہے اور کی ہدایت یافتہ ہیں۔

عبدالرحمٰن بن سالم کہتے ہیں کہ ابو بھیر فرماتے ہیں کہ اگر آپ نے اپنی ذید گی میں صرف یک ایک حدیث بن ہے تو یہ بھی آپ کے لئے کافی ہے اور اس حدیث کو اس کے ملاوہ کمی اور سے میان کرنے سے پر ہیز کریں۔ حدیث کو اس کے ملاوہ کمی اور سے میان کرنے سے پر ہیز کریں۔ (کمال اللہ بن جلد اول صفحہ ۳۲۲)

حالِ و لا دت بمر وايت حفرت حجمه آپ گا ظهور

کتاب اکمال الدین علی این الولید کے جو عطار ہے ،اُس نے حسین بین رزق اللہ ہے ،اُس نے موسیٰ بن محمد بن القام بن جزء بن موسیٰ بن محمد بن القام بن جزء بن موسیٰ بن محمد ابن علی بن موسیٰ بن محمد ابن علی بن موسیٰ بن محمد ابن علی بن الحصین بن علی این الی طالب علیم السلام نے میان کیا کہ :

حضر ست الومحمد امام حسن عسر کی علیہ السلام نے ایک آوی مجمع کر مجمعے بلو ایا اور کما ۔ پھو بھی جان !آج رات آپ ہمار ہے پاس افطار کریں ۔ بیہ شب نیم شعبان ہے آج کی شب اللہ تعالی اپنی جمت کو ظاہر فرمائے گاجو ساری ذیمن پر شعبان ہے آج کی شب اللہ تعالی اپنی جمت کو ظاہر فرمائے گاجو ساری ذیمن پر جمت خدا ہوگا۔ میں نے پوچھا ۔ س کنیز کے بیلن ہے ؟ ۔ آپ نے فرمایا ۔ "مر جس" نے محمد اس میں تو پچھ آثار نظر نہیں فرمایا ۔ "مر جس" ۔ میں نے کما ۔ واللہ ! محمد اس میں تو پچھ آثار نظر نہیں

آرہے۔آپ نے فر مایا ایسای ہو گا۔

استے میں جناب نرجس خاتون بھی آگئیں اور سلام کر کے بیٹھ گئیں اور میرے موزے اتارتے ہوئے ولیں ۔اے میری سیدہ ،کیمامر اج ہے؟ میں نے کما۔لیکن میری اور میرے سارے خاندان کی سیدہ تو اب تم ہو۔ نرجس خاتون نے کما کیو بھی جان آپ یہ کیا فرماری ہیں۔ میں نے کما کہ بدیلی آج کی شب تمہارے میل سے اللہ تعالی ایک ایبا فرز ندیدید اکرے گاجود نیاو آخرت کا شب تمہارے میل نے کا کروہ کچھ شر مای گئیں اور میلھ گئیں۔

الخرض جب بی نے شب کو نماز عشاء سے فارغ ہوکر افطار کیااور اپنے ہستر یہ جل گئی گھر ضعن شب گزر کے بعد اعلی اور نماز شب سے فارغ ہوئی تو دیکھا کہ نز جس تفاتون سوری تھی اُن میں کوئی بات فظر نہیں آری تو میں تقیبات کے لئے ہیں گئی اور پھر اپنے استر پر جاکر سوگئی تھوڑی ویر کے بعد پھر سید ار ہوئی اور اٹھ کر دیکھا تو نز جس فاتون ابھی سور ہی تھیں گر ذراو پیمیں وہ بھی اضحیں اور انھول نے بھی نماز شب اواکی۔

جناب حجمہ خاتون کامیان ہے کہ (جب انھی تک کوئی آٹار و ضع حمل نظر نہ آئے تو) میرے دل میں شکوک پیدا ہوئے ۔ کہ اتنے میں ابو محمد امام حسن عسکری علیہ السلام نے آواز دی۔ تعجیل نہ کیجنے وقت قریب ہے۔

جناب محتمد خاتون کامیان ہے کہ بید سُن کر میں نے سور وَ ثم ، مجد واور سور وَ ثم ، مجد واور سور وَ ثم ، مجد واور سور وَ لیمین کی تلاوت کر بی رہی تھی کہ نرجس خاتون نیند سے چونک کر اٹھ محتمیٰ اور گھیر اکر میری طرف دوڑیں اور مجھ سے لیٹ گئیں۔ میں نے کہا کہ تم پر لیم اللہ کاسایہ رہے۔ کیا تم پچھ محسوس کر رہی ہوا نھوں نے

کمایتی ہاں۔ پھو پھی جان۔

میں نے کہا پر بیٹان نہ ہو۔اپ ول کو مضبوط رکھو۔ میں نے جو کہا تھا

یہ وہی ہے۔ جناب حجمہ فرماتی ہیں کہ اس کے بعد جیسے کی نے جھے پر غنو دگ

طاری کر دی اور ادھر ولاوت ہو گئی۔آکھ کھلی تو ہیں نے محسوس کیا کہ میر اشترادہ، میر اسید و سر واڑ پیدا ہو چکا ہے۔ میں نے کیڑاا ٹھا کر دیکھا کہ وہ اپنی اعضائے تجدہ ذہن پر رکھے ہوئے تجد ہ خالق ہیں ہیں۔ ہیں نے داھ کر انہیں اٹھالیا اور دیکھا تو وہ بالکل پاک و صاف، طاہر و مطاہر ہیں اٹھالیا اور دیکھا تو وہ بالکل پاک و صاف، طاہر و مطاہر ہیں اٹھالیا اور سینے سے لگالیا اور دیکھا تو وہ بالکل پاک و صاف، طاہر و مطاہر ہیں اٹھالیا اور سینے نے لگالیا اور دیکھا تو وہ بالکل پاک و صاف، طاہر و مطاہر ہیں جان ! میرے فرزند کو میر سے پاس لے آئے ۔ میں لے کر گئی تو آپ نے ان جان ! میرے فرزند کو میر سے پاس لے آئے ۔ میں لے کر گئی تو آپ نے ان کے دھن کو لے لیا اور ان کی دونوں پاؤں آپ ہے سینے پر در کھے۔ اپنی زبان ان کے دھن میں دے دی اور ان کی آٹھوں کانوں اور میں جوڑ و مد پر اپنا ہا تھ پھیرا۔ پھر فریا یا۔ اے فرزند کلام کر و۔انھوں نے کہا :

''أشهدُ أَن لَا إلهُ الآاللهُ وحدُ وَلا شريك لهُ وَأَشْهِدُ أَنْ مُحَدَّا رَّسُولَ اللهُ' اس كے بعد انھول نے امير المومنين عليه السلام اور تمام آئمه طاہرين عليهم السلام پر نام مام ورود تھيجا تا اينكه اپنے پدرِين رگوار پر درود تھيج كر ٹھمر۔ گئے۔

اہام ابو محمد حسن عسکری علیہ السلام نے ارشاد فر مایاان کو لے جا ہے تاکہ سہ اپنی مال کو سلام کر لیں اور پھر میر ہے پاس ہی واپس نے آھے۔ جناب حجمہ خاتون سلام اللہ علیہا کہتی ہیں کہ میں انہیں لے کر گئ انھوں نے اپنی ماں کو سلام کیا پھر انہیں واپس لائی اور حضر ہے ابو محمد کے سامنے لٹادیا۔آپ نے ارشاد فرمایا۔ پھو پھی جان ساتویں دن پھر تشریف لائیں ملام کے لئے گئی اور پردہ اٹھایا کہ اپ نو محر میں دوسرے ہی دن ابد محمد کے سلام کے لئے گئی اور پردہ اٹھایا کہ اپ نو مولود شنر ادے کود کھوں۔ مگروہ نظر نہ آئے۔ میں نے حضر ت ابد محمد امام حسن عسکری علیہ السلام سے وریافت کیا کہ شنر ادہ کمال ہے ؟آپ نے ارشاد فرمایا۔ پھو پھی جان۔ میں نے اُن کو اُس ذات کے سپر دکر دیا ہے جس کے سپرد موسی نے خضرت موسی کو کیا تھا۔

جناب محمد کا بیان ہے کہ ساتویں دن میں پھر حضرت اوہ محد امام حسن عسری علیہ السلام کے پاس آئی۔ سلام کیا اور جیٹھ گئی۔ آپ نے بھے ہے فرمایا۔ جائے اور میر نے فرزند کو میر ہے پاس لے آئے۔ میں گئی اور ایک کیڑے کے پارچے میں لیبیٹ کر انھیں لے آئی تو آپ نے پھر وہی کیا جو پہلے کر پھے تھا پئی ذبان مبارک اُن کے دمین میں دی جیسے انھیں دودھ یا شعد پلار ہے موں۔ پھر ادشاد فرمایا۔ اے فرزند کلام کرو۔

شنرادئے نے کہا۔اشھد ان لاالد الااللہ بھر حمد و ٹنائے الی جالائے اور محمد و علی اور بھر تمام آئمہ طاہرین پر نام بہ نام درود تھیجے ہوئے اپنے پدر مزرگوار پر درود تھیج کررک گئے اور اس آیت کی تلاوت فرمائی۔

بسم الله الرحمن الرحيم.

و نُديدُ أَن نمّنَّ علىَ الَّذِينَ استُفعِفوا في الأرضِ وَ نَجعَلهُم أَنْمَةُ وَ نَجعَلهُم الوَارِثِينَ ه وَنْمَلْنَ لهم في الارضِ وَ نُحِعَلهُم أَنْمَةُ وَ نَجعَلهُم الوَارِثِينَ ه وَنْمَلْنَ لهم في الارضِ وَ نُرى فرعونَ و هامانَ وَ جُنودَ هُمَامنهم مَّاكا نوايدذُ رُونَ هُ نُرىَ فرعونَ و هامانَ وَ جُنودَ هُمَامنهم مَّاكا نوايدذُ رُونَ هُ لَا رَالَ السَّالِينَ هَا اللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللّهُ الللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللللّهُ اللّه

تهم الله الرحمٰن الرحيم_

ترجمہ:۔اللہ کے نام سے جور حمٰن ہے رحیم ہے اور ہم نے چاہا کہ جو
زمین میں بے ہس اور کر ور کئے گئے تھے اُن پر احسان کریں اور انھیں امام
(پیشوا) مادیں اور انھیں وار ف قرار دیں اور ہم انھیں زمیں میں اقتدار عشیں
اور فرعون اور ھامان اور اُن دونوں کے لئکروں کو وہ عذاب دکھا کیں جس کا
انھیں خوف تھا۔ رادی موسیٰ کامیان ہے کہ میں نے جناب حجمہ خاتون سلام
اللہ علیہا کی اس روایت کے بارے میں عقبہ خاوم سے تھد اِن چاہی۔ تواس نے
کما کہ جی ہاں۔ جناب حجمہ خاتون سے حجمہ خاتون سا۔

(اكمال الدين حار الانوار جلد ۱۴، اروو ترجمه صفحه ۲۶۲۳۳)

ولادت کے تیسر ہے دن اصحاب کو زیار ت

ابن متوکل نے حمیری سے انہوں سے حمد بن احمد علوی سے انہوں نے البی عائم خادم حضرت ابو محمد امام حسن عسری علیہ السلام سے روایت کی ہے کہ جب حضرت صاحب الزمان تولد ہوئے تو حضرت ابو محمد امام حسن عسری علیہ السلام نے انہوں ایچ اصحاب کو لا کر د کھایا اور ارشاد فرمایا۔ یمی تسار سے امام اور میر سے بعد تم پر خلیفہ و نائب ہیں۔ یمی وہ قائم ہیں جن کے انتظار میں لوگوں کی گرو نمیں اُن کی طرف المحین گی اور جسب ساری زمین ظلم و جور سے نم اور زمین کو عدل سے اس طرح کھر دیں گے اور زمین کو عدل سے اس طرح کھر دیں گے اور زمین کو عدل سے اس طرح کھر دیں گے دیں ہوگی۔

(ا كمال الدين ، حار الا نوار جلد ١٢ ، ار دو صفحه ٢٩ ، ٢٩)

ولادت پر ماہر نجوم کی رائے

علامہ مجلسی علیہ رحمۃ نے حارالا نوار جلد سیز وہم میں 'متاب الخوم'' اور 'متاب الا صفیا'' کی اساد ہے آپ کے ذائجہ کے متعلق تحریر کیا ہے آپ نے جوروایت میان کی ہے اُس کا ترجمہ یہ ہے:۔

کہ احمد ن اسحاق ان مصطلہ کامیان ہے کہ شہر قم میں ایک بدود ی علم نجوم میں و منتگاه کامل رکھنا تھا اور تیاری زائچہ تر تیب تقویم و ویگر ترکیب حسابات نجوم میں فر دیگانہ اور منتخب زمانہ تھا میں اس کے پاس گیا اور اُس سے میان کیا کہ فلال وقت اور فلال ساعت ایک لڑ کا پید اہو اے تم اس کا زائچہ ورست کر کے مثلاؤ کہ وہ کیے طالت پر حاوی اور کیتے کیے اوصاف سے موصوف ہو گا۔اس بہوری منجم نے مجھے آب کی ولادت کا ٹھیک ٹھیک وقت دریافت کر لیاادر کھرای صاب ہے آپ گاڑا گئے دلادت مرتب کیا۔اور کھر یزی دیریک کامل غور کر کے ہتلاما کہ ان اد ثابت 🎢 ستارہ مائے مخصوصہ تو ہر گزیدامر نہیں بتلاتے کہ ایبابے مثل ولادت فرزند تہارہے گھریپدا ہوا۔ کو تکه ایبا لؤکا تو تبھی کی معمولی آدمی کو نصیب ہی نہیں ہو سکتا بلحه ایسے فرزندان گرامی طالع توانبیاء اور ادصیاء کے مقدس دائرہ تک خاص محور پر محدود و مخصوص هوتے بن اور دفت ساعت د کواکب موجود میں پیدا شدہ حضرات بابذات خود پیزمبر ہوں گے۔ یا پینمبر مرحق کے وصی مطلق۔ جہاں تک میں نے اس مولو دِ متعود کے زائچہ ولادت پر غور کیا ہے۔ جھے معلوم ہوا ہے کہ یہ فرزند گرامی شان تمام ویا کے غرب و شرق ، شال و

جنوب وریاد میابان کو دو صحر اکامالک اور حاکم جو گااور اُن تمام اشیاء پر حکمر انی کریگااور تمام روئے زمین پر کوئی شخص ایساباتی نه رہے گاجو اس کے دین و ملت اور آئینِ عقیدت میں نه آیا ہو۔ اور کوئی شخص تمام اقصائے عالم میں ایسا نہیں پایا جائے گاجو اس کی امارت و حکومت کا مطیع و فر ماہر دار نه ہو۔

(در مقصود صفحہ ۲۵۲۲)

امام زیانہ نے اپنے والدگرائی کی نماز جنازہ پڑھائی
ابوالا دیان سے مروی ہان کامیان ہے کہ میں حضرت امام حسن ن
علی من محمد ان علی موسی من جعفی من محمد من علی من حسین من علی من ابی طالب
علیم السلام کا خادم تھا اور آپ کے خطوط مختلف شروں میں لے کر جاتا تھا جب
آپ کا وقت شمادت قریب آیا میں آپ کی خدمت میں حاضر ہوا توآپ نے بہت
سے خطوط تحریر فرمائے اور فرمایا کہ تم ان کو لے کرمائن جاؤگے اس میں تمہیں
پندرہ دن لگیں گے پندر ھویں دن جب تم سر من رائے والیں آؤگے تو میر ب

ابوالاویان کامیان ہے کہ میں نے عرض کیا۔ آتا اجب ایسا ہوگا تو بھر
امام کون ہوگا ؟۔ فر مایا۔ جو تم ہے ان خطوط کے جو ابات طلب کرے گا وہی
میرے بعد امام تائم میں جوگا میں نے عرض کیا۔ کوئی اور علامت۔ فر مایا۔ جو تھیلی
(ہمیان) کی رقم کی نشا ند ہی کرے گا۔ میں جرات نہ کر سکا کہ ہمیان میں کتنی رقم
ہوگی اور میں خطوط لے کر مدائن چلا گیاو ہال سے اُن کے جو ابات وصول کئے اور
پندر ہویں ون سر من رائے والی آیا۔

جیسا کہ آپ نے فرمایا تھااور آتے ہی میں نے آپ کے گھر ہے گریہ و
زاری کی آوازیں بلند ہوتے سیس اور دیکھا کہ جعفرین علی گھر کے دروازے
پر جیٹھا ہے اور شیعوں کا مجمع ہے وہ لوگ اس سے رسم تعزیت ادا کر رہے ہیں
میں نے اپنے دل میں کما کہ اگر اب نی امام ہے توامامت کا خدائی حافظ ہے اس
لئے میں جانتا تھا کہ جعفر (کذاب) بن علی شراب خور اور قمار بازے اور وہ گانے
جانے میں بھی مشخول رہتا ہے۔

بہر حال میں نے کہی آگے ہوٹھ کر رہم تعزیت اواکی گر اُس نے مجھ سے کی چیز کے متعلق یو چھا ہی نہیں اس کے بعد عقید (خادم)اندر سے برآمد ہوااور اُس نے کہا کہ مالک آپ کے کھائی کو کفن دیا جاچکاہے اُن کی نمازِ جنازہ پڑھ لیں۔

یہ من کر جعفر بن علی اندر آلی اور اس کے ساتھ دوسر سے شیعہ بھی آگے۔ جب ہم لوگ اندر گئے تودیکھا کہ حضر سام حسن عسری علیہ السلام کی میت ایک تاہد سے بیل گفن کی جا چی ہے۔ جعفر بن علی آگے بردھا تا کہ اپنے کھائی کی نماز جنازہ پڑھائے۔ جو نمی اُس نے تکبیر کہنے کا ارادہ کیا۔ اندر سے ایک بجچہ گندی رنگ ، سر پر (زلفیس)، دندان مبارک کھڑکی دار، زنان خانے سے بہتے گندی رنگ ، سر پر (زلفیس)، دندان مبارک کھڑکی دار، زنان خانے سے بہتے جا کیں۔ بیس اپنے باپ کی نماز جنازہ بر ھانے کازیادہ حق دار ہوں۔ بیس کر جعفر نے منہ مایا اور پیچھے ہے گیا۔ اور پر ھا اور نماز جنازہ پڑھائی اور انھیں اُن کے والد کی قبر کے پہلو ہیں دفن کیا۔

پرأس ہے (حضرت امام زمانہ علیہ السلام) نے فرمایا۔اے بھری

تہمارے پاس جو خطوط کے جو ابات ہیں وہ بچھے و کھاؤ۔ میں نے اُن کی خد مت میں پیش کئے اور دل میں سوچا کہ کیا ہے دوسری نشانی ہے ؟۔ اب صرف ہمیان (تھیلی) والی علا مت اور باتی ہے پھر میں وہاں ہے اٹھ کر جعفر بن علیٰ کے بہریان (تھیلی) والی علا مت اور باتی ہے بغر میں وہاں ہے اٹھ کر جعفر بن علیٰ ک پاس آیا وہ آئیں کھر رہا تھا۔ حاجز و شاء نے بوچھا۔ اے سیدی وہ چہ کون تھا ؟۔ جعفر نے کما کہ بچھے شمیں معلوم وہ کون تھانہ میں اُسے پچھا تا ہوں۔ ابھی ہم لوگ وہیں بیٹھے ہوئے تھے کہ قم کے پچھے لوگ وارد ہوئے اور بوچھنے کہ تم کے پچھے لوگ وارد ہوئے اور بوچھنے کیا۔ حضر سے اہم کمال ہیں ؟ لوگوں نے بتایا کہ اُن کا تو انتقال ہو چکا ہے دانھوں نے دریافت کیا۔ کہ اُن پی تعزیت کس کو دی جائے ؟۔ لوگوں نے بتایا کہ اُن کی تعزیت کس کو دی جائے ؟۔ لوگوں نے بعضری علی طرف اشارہ کیا۔

ا نموں نے (اہل قم فے) آئے ہو ھے کر سلام کیا اور تعزیت کا حق اداکیا اور بولے ہمار نے پاس کچھ خطوط اور رقوم ہیں یہ متا ہے کہ وہ خطوط کس کے ہیں اور رقم کتنی ہے ؟ یہ سن کر جعفر اپنالباس سیٹینا ہو ااٹھا اور بولا ۔ لوگ چا ہے ہیں کہ ہم غیب کی با تیں بھی انھیں بتا کیں۔ اتنے میں اندرے ایک خاوم برآمہ ہوا اور بولا ہم لوگوں کے پاس فلاں فلال کے خطوط ہیں اور ایک تھیلی میں ایک ہزار و ینار ہیں مگر اس میں ہے وس دینار گھے ہوئے اور نقوش منے ہوئے ہیں یہ تن دیار ہیں مگر اس میں ہے وس دینار گھی خاوم کے حوالے کر دی اور کما کہ جس نے محمد اس کام کے کئے تھیلے ہور حقیقت و بی امام ہیں۔

اس کے بعد جعفر بن علی معتد کے پاس پہنچااور اُسے سار احال کہسایا اُس نے اپنے سپاہی روانہ کئے کہ صبقل خاو مہ کو گر فمار کر لو ادر اُس سے وہ چہ طلب کر و۔ سپاہی صبقل کو گر فمار کر کے لائے اور اُس سے چہ طلب کیا تواس نے انکار کرتے ہوئے کما کہ مجھے تواہمی حمل ہے (تاکہ اس پے لینی امام زمانہ) ؟

حال لوگوں سے پوشدہ رہے۔ چنانچہ أسے این الی شوار ب قاضی کے حوالے کہ

دیا گیا گراس اثناء میں کچی بن خاقان کا انقال ہو گیا اور بھر سے میں ساحب زن

نے خروج کر ویاسب لوگ اس افر اتفری میں مشغول ہو گئے اور صفال کی طرف
سے اُن کا دھیان خفل ہو گیا اور اُن لوگوں کے پنج سے نکل گی اور خدا نے وحدہ لاشریک کا شکر اوا کیا۔

(ا كمال الدين، حار الانوار، جلد ١١، صفحه ٨ ٧ ٥ ٨٠٠٥)

جناب نرجس خالون کی گر فآری

معتد لمعون نے سب سے سلے حضر تبر جس فاتون سلام اللہ علیها کی گر فاری کا تھم دیائی کے اس ظالمانہ تھم کی فررائتیل کی گئی اور جناب زہس معتمد لمعون کے سامنے لائی گئیں۔ صاحب ور مقصود لکھتے ہیں کہ جمال تک اُن کی تحقیق کا تعلق ہے تو اُن کو اسلام کی تاریخ ہیں ہے دو سری مثال لمتی ہے کہ اس فاندان عصمت و طمارت کی مخدرات عظمی حاکم وقت سے پاس الائی آئیں اور اسلام کے سلاطین جارین کی فرست میں ہزید لعین این معاویہ کے بعد معتمد ان محتوکل ملعون کا دوسر انمبر خصوصیت کیا تھ قائم کیا جاتا ہے جس نے پاس شریعت کے ساتھ بی عرب ہو نیکی عزت اور قوم قرایش نو نیلی حمیت کھی ہیئے۔ کے ضائع کر دی اور دنیا میں وہ نگ وعار اختیار کی جو اُس کی پیٹانی کا بیاد داخ من کر قیامت تک اُس کی بیشانی کا بیاد

بر حال جناب زجس خاتون سلام الله عليهاأس شقى القلب ك سائ

ا ئی گئیں تو معتمد ملعون نے آپ سے جناب قائم آل محمہ علیہ السلام کے بارے میں بوجھا تو آپ نے معتمد ملعون نے آپ سے جناب قائم آل محمہ علیہ السلام کے بارے میں بوجھا تو آپ نے تمایت ہو شاور کما کہ بھی اسر ار خداوندی کے اختفا اور کمان کی خاص غرض سے اٹکار کیا اور کما کہ بھی سے اس وقت تک کوئی ولادت نہیں ہوئی ہے باہد میں اٹھی تک حاملہ ہوں اور میرے وضع کے ایام بورے نہیں ہوئے ہیں۔

خدا کی قدرت اور خدا کی شان دیکھے کہ جناب نرجس سلام اللہ علیہا کے بیان پر معتمد ملعون کو فور ایقین ہو گیا اور اُس نے اپنے موجو وہ اضطراب کی فکر میں اس کو ہز ار غیمت سمجھ کر کہ جب والا دت ہوگی تو نو مولود نور اقتل کر دیا جائے گااس کے بعد جناب نرجس خاتون سلام اللہ علیہا کو قاضی ابو شور اب کی حراست میں قید کر دیا گیا اور قاضی کر خت تاکید کر دی گئی کہ وہ ان کی حفاظت و کر ان کا کوئی دقیقہ فرو گذاشت نہ کر لے اور حس وقت دالاوت واقع ہو فور اخبر کی جائے تاکہ وہ اپنی آئندہ تجویزوں کو اس سے متعلق فور اعملی صورت میں لائے۔

لا ئے۔

امام زمانة كى كر فآرى كے لئے فوج كى آمد

کتاب الخرائج والجراح میں تھی رشیق صادر ائی ہے روایت ہے کہ اس کے لئے ایک برا الشکر تھیجا گیا جب وہ لٹکر حضر نظی امام حسن عشری ملیہ السلام کے گھر میں واخل ہوا تو سر داب سے قرآن مجید کی تلاوت کی آواز سان وی تو سب سر داب کے دروازے پر جمع ہوگئے تاکہ نہ کوئی باہر شکل کا در دروازے پر جمع ہوگئے تاکہ نہ کوئی باہر اگل سے اور نہ کوئی اندر جا سکے اور لشکر کا امیر دروازے پر پسرے کے لئے کھڑا

ہو گیا تا کہ لفکروالے نمازے فارغ ہولیں تو پھر کاروائی شروع کریں او حر لفتکری نماز میں مشغول ہو گئے تو آپ (حضرت صاحب الزمان علیہ السلام) سرواب کے دروازے ہے نکلے اور اُن لوگوں کے سامنے سے نکل کر چلے گئے اور غائب ہو گئے جب لفکری نماز سے فارغ ہو چلے تو سردار الشکر نے کما کہ اب سرداب کے اندراتر ھاؤ۔

اُن لوگوں نے کہا۔ اے امیر! وہ توآپ کے ساننے ہے ہی نکل کر گئے بیں کیا آپ نے انھیں نہیں ویکھا؟ امیر لفکر نے کہاکہ نہیں میں نے نہیں ویکھا۔ گرتم نے انھیل کیوں چھوڑا؟ اُن لوگوں نے کہا۔ ہم تو سمجھے کہ آپ نے ویکھ لیا ہے اور خود ہی چھوڑ ویا ہے۔

(البرائجُ والجراح : حارالا نوار جلد الهار و ترجمه ، صفحه ۷۱)

امير لشكراند ها بهو گيا

کتاب "اخرائی ہے دوایت ہے کہ حضرت انام زبانہ علیہ السلام کی گر فقاری کے لئے ایک روالفکر تھیجا گیا ہے۔ وہ حضرت انام زبانہ علیہ السلام کی گر فقاری کے لئے ایک روالفکر تھیجا گیا جب وہ لفکر امام حسن عمری علیہ السلام کے گھر میں داخل جو اقو سر واب سے قرآن مجید کی تلاوت کی آواز سائی دی توسب کے سب سر واب کے دروازے پر جمع ہو گئے تاکہ نہ کو تی باہر نکل سکے اور نہ کو تی اندر داخل جو سکے اور لفکر کاامیر سر داب کے دروازے پر پسرے کے لئے کھڑ اجھ گیا۔ تاکہ لفکر والے نماز سے فارغ جو لیں تو بھر کاروائی شروع کریں او هر افکری نماز میں مشغول ہو گئے۔

توآب (حضرت صاحب الزمان علیہ السلام) سر داب کے دروازے

ے نگلے اور ان لوگوں کے سامنے سے ذکل کر چلے گئے اور غائب ہو گئے۔ جب لفکری نماز سے فارغ ہو چکے تو سر وار لفکر نے کما کہ اب سر داب کے اندر جاؤ۔ ان لوگوں نے کما: اے امیر: وہ توآپ کے سامنے ہی نکل کر گئے ہیں کیا آپ نے انہیں نہیں ویکھا ؟ امیر لفکر نے کما۔ نہیں۔ میں نے نہیں ویلما۔ مگر تم نے انہیں کو نکر چھوڑ ااُن لوگوں نے کما۔ ہم تو سمجھے کہ آپ نے دکھے لیا ہے اور خود ہی چھوڑ دیا ہے۔

(الخرائج والجرائح، قارالانوار جلد ١١، صفحه ٧٦)

امام من عسكري كے گھر كا محاصره

علی بن حسن علی بن مجمد علوی کامیان ہے کہ میں نے او الحس ابن و جنا کو کہتے ہوئے ساروہ کہ رہے تھے کہ میرے والدے میرے جدنے یہ واتی میان کیا ہے کہ حضر سے امام حسن عمری علیہ السلام کے گھر میں موجود تھا کہ چند سواروں نے آگر گھر کا محاصرہ کر لیا جن کیساتھ جعفر کذائے بھی تھااور اُن سب نے لوٹ مار شروع کروی تو جھے موالائے حضر سے تائم علیہ السلام کی فکر لائق ہوئی۔ گر میں نے دیکھا کہ وہ اندر سے برآمہ ہوئے اور اُن لوگوں کے سامنے سے نکل کر چلے گئے گر انھیں کسی نے نہیں دیکھا اور اُس وقت آپ کا بن سامنے سے نکل کر چلے گئے گر انھیں کسی نے نہیں دیکھا اور اُس وقت آپ کا بن حمد سال کا تھا۔

(ا كمال الدين، قار الانوار جلد ١١، ار دو صفحه ٣ ٥٥، ٥٥٥)

جائے قیام امام زمانہ علیہ السلام

ان غلاہ نے علی من حسن تملی سے انہوں نے عمر و من عثان سے انھوں نے اس عثر سے انہوں نے ان کا انھوں نے ان کا ہوں نے ان کا ہوں نے ان کا ہیاں ہے کہ میں نے حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام کو فرماتے ہوئے سنا :۔ آٹے نے فرمایا :۔

امام آگام علیہ السلام کے یے دو غیبتیں ہیں ایک ان میں سے طویل ہو گی اور دو سری صغیر کے لیں پہلی غیبت (غیبت صغری) میں آپ کے مخصوص شیعوں کو آپ کا مسکن (جانے آپام) معلوم ہوگالیکن دو سری غیبت (غیبت کرای) میں آپ کا مسکن (جانے آپام) معلوم ہوگالیکن دو سری غیبت (غیبت کرای) میں آپ کی جائے رہائش کا علم سورے آپ کے خاص آد میوں کے اور کی کونہ ہوگا۔

(غيبة نعماني، قارللانوار ، جلد ۱۲،ار دوتر جمه)

حضرت امام زماية كي اولا دوازواج

حصرت جمت علیہ السلام کی اولاد کے بارے میں بھن صاحبان متیر رہتے ہیں جس کی وجہ یہ ہے کہ بیشتر محافل و مجالس میں الی بانوں کا ذکر شیں ہوتا اور خود فرصت نہیں کہ الن کتابوں کو ویکھیں جن میں اس فتم کے نذکرے ملتے ہیں۔ بہت می روایات میں اس فتم کے میانات ملتے ہیں اور عقل کھی اس کی تائید کرتی ہے کیو فکہ عینی طور پر کی امر پر ہمار المطلح نہ ہونا اس کے نہ ہونے کی دلیل نہیں بن سکتا۔ ہم کیا اور ہمار اعلم کیا۔ آگر ایک چیز ہمیں معلوم نہیں ہے تواس سے میہ نتیجہ ہر آمد نہیں ہو سکنا کہ اس شے کاوجود ہی نہیں۔ بلعہ ہو سکتا ہے کہ ہمیں اس بات کی اطلاع نہ ہو۔ لیکن دوسر ب لوگ اس سے مطلع ہوں۔ البتہ ہمارے پاس تمین قتم کے ایسے قرائن و شواہد موجود ہیں جنگی سا پر اگر ہم میہ تسلیم کر لیس کہ حضرت امام زمانہ علیہ السلام مجرد نہیں بلعہ معملی زندگی گزارر ہے ہیں تو ہم حق جانب ہوں کے وہ شواہدو قرائن میہ ہیں۔
زندگی گزارر ہے ہیں تو ہم حق جانب ہوں کے وہ شواہدو قرائن میہ ہیں۔

؟ فظرت المان نے فظر ی تقاضے ﴿ آئمہ معمومین سے منقول روایات ﴿ آئمہ کرام کی عطا کردہ دعائیں

🏠 فطري نقاضے:

شریعت اسلامیہ کے عطا کردہ قوانین کلیہ کے پیش نظر ضروری ہے کہ آپ بھی ویگر اہل بیدت علیم السلام کی طرح صاحب خانہ ہو کر سنت رسول کے حال ہوں

علامہ مرزانوری اپنی گرافقدر تالیف "البخم اللّ قب" بین فرماتے

ہیں۔ آئمہ اسلبیت علیم السلام سرورانبیاء کے خلفائے حقہ مونے کی دیثیت

ے دوسری امت کی نبیت سنت ختمی مرتبت پر عمل کرنے پر زیادہ پامد ہیں
اور یقینا یہ ایک مسلمہ حققت ہے تو پھر ہمیں یہ تسلیم کرنا پڑے گا کہ سرکار

چمت علیہ السلام مجرو نہیں بلحہ معیل زندگی گذار رہے ہیں کیو نکہ ایک الی

ہو سکن۔

ہو سکن۔

سر كار علامه نماد ندى اين شره آفاق تصنيف" العبيقيري الحسان "

میں فرماتے ہیں کہ:

سر کار جبت علیہ السلام کی اتنی طویل زندگی تشلیم کر لینے کے بعد یہ بات کیے مانی جا سختی ہے کہ آپ اپنے جرمینہ گوار کی شریعت مقد سہ پر کما حقہ عمل نہ کرتے ہوں گے جبکہ ہمیں یقین سے علم ہے کہ حضر ت نبی اکر م نے را بہانہ زندگی گذار نے کی تختی سے ممانعت فرمائی ہے اور نکاح اور ترویج کو اپنی الی سنت موکدہ فرمایا ہے کہ نکاح سے درخ موڑ نے والے کو اپنی امت سے خارج بتایا ہے ان مسلمات کے پیشِ نظر یہ کیسے کما جا سکتا ہے کہ حضر ت امام زمانہ علیہ السلام حضرت فحتی مرتبت کی الیمی سنت موکدہ پر عمل کرنے سے گریزاں بیس۔

ماریں ان تصور افی اور خیالی باتوں میں کوئی حقیقت نمیں رہتی کہ عائب تو صرف حضرت جمت علیہ الله میں اگر ان کی اولاد ہوتی وہ کیسے عائب رہ سکتی تھی کیو فکہ حضرت جمت علیہ السلام اسی کرہ ارض پر رہتے ہیں ایک ایسے خطہ مبار کہ میں زندگی گذار رہے ہیں جو نگاہ خلائی سے مخفی و پوشیدہ ہے کیو فکہ جو قادرِ مطلق حضرت امام زمانہ علیہ السلام اور ان کے مقام رہائش کولوگوں کی نظر سے مخفی رکھ سکتا ہے تو آپ کی اولاد کو بھی مخفی رکھ سکتا ہے تو آپ کی اولاد کو بھی مخفی رکھنے میں اے کوئی رکھ خیں ۔

چندروایات

جمال تک الی روایات کا تعلق ہے جن میں حضرت جمت علیہ السلام کی اولاو کا تذکر ہ ہے تو ان کی اولاو کی تعد او بہت زیاد ہ ہے اور اسمیں بنیاد ساکر اس بات کا تعین کیا جاسکتا ہے کہ سر کار امام زمانہ علیہ السلام صاحب اولاد ہیں۔ البتہ جو ملئہ قابلی غور ہے وہ یہ ہے کہ حضرت صاحب العصر علیہ السلام کی از واج کا۔ اس سلسلے میں ہمارے پاس صرف اور صرف ایک روایت ہے جو مجم الثا قب میں صفحہ ۲۵۵ پر ہے اور صرف اس قدر ہے۔
" حضرت ولی العصر علیہ السلام کی زوجہ مبارکہ عبد العزے این عبد المطب کی اولاد سے میں"

سید این طاؤس نے جمال الا سبوع صفحہ ۵۱۲ پر تحریر فرمایا ہے کہ جمعے ایک مو ثق اور متندروایت ملی ہے جس کے مطابق حضر ت ولی العصر علیہ السلام کی اولاد ساخل دریا کے شہروں میں موجود ہے وباں صرف ان کی ہی حکومت ہے جو نیکی ویا کبازگی اور گفتار و کر دار میں بے مثال ہیں۔

"النجم الثاقب" صفحه ۲۲۵ پر محمودین مشهدی نے حضرت صادقِ آل محمد علیه السلام سے روایت کی ہے کل میں آخری حجت خدا علیه السلام کواپنے اہل وعیال سمیت کو فدکی مسجدِ سہلہ میں دیلی رہا تھاں۔

الا یقاظ من الهجة صفحه ٣٩٣ اور غیبت شخطوی صفحه ٩٤ پر ایک روایت ہے کہ نی اگر م نے اپنی زندگی کی آخری شب میں مضرت علی علیہ السلام کو کاغذ اور قلم لانے کا تکم دیا۔ حضرت علی علیہ السلام کو کاغذ اور قلم لانے کا تکم دیا۔ حضرت علی علیہ السلام کو وصیتیں لکھوانا شروع کیں۔

کی۔ آخضرت نے حضرت علی علیہ السلام کو وصیتیں لکھوانا شروع کیں۔

ایخ تمام اوصیاء عظیم السلام کے نام یہ پیغام دیا کہ میری یہ وصیت دست به ست حضرت مهدی علیہ السلام پنچائی جائے اور حضرت مهدی علیہ السلام دم آخریہ وصیت اینے فرزند کے حوالے کر دیں۔

في خرِعا ملى نے ایقاظ المجیة صفحه ۲۳۹۲ صفحه ۲۰۵ پر انسوس ایب

عليحده باب ميں حضرت امام زمانه عليه السلام كي اولاد كا تذكر ه كيا ہے۔

علامہ مجلسی '' نے جار الانوار جلد ۵۳ صفحہ ۱۳۵ تا صفحہ ۱۳۵ میں حضرت ولی انعصر علیہ السلام اور ان میں کیے بعد دیگرے ہونے والے خلفاء کے لیے ایک علیحہ وباب مختص فرمایا ہے۔

ند کورہ بالا روایات کے مقابلے میں غیبت طوی صفحہ ۱۳۳ پر ایک الیں روایت ملتی ہے آگر اے تسلیم کر لیا جائے تو ند کورہ روایات از خود کا لعدم اور غیر موثر ہو جاتی ہیں وہ روایت ہے:

"ناموائے امام منتظر علیہ السلام کے ہرامام صاحب اولاد ہوگا"
"انجم الثاقب" کے فاضل مصنف سر کار علامہ مرزانوری نے اس
روایت کی بول تاویل کی ہے جیرے خیال میں حضرت جست علیہ السلام کی
اولاد نہ ہونے کا بیہ مقصد ہرگزشیں آپ بالکل ہی ہے اولاو ہوں گے۔ بلحہ
آپ کی اولاد نہ ہونے کا مقصد یہ ہے کہ چو تکہ آپ خاتم الاوسیاء ہیں اس لیے
آپ کی اولاد نہ ہونے کا مقصد یہ ہے کہ چو تکہ آپ خاتم الاوسیاء ہیں اس لیے
آپ کی اولاد نہ ہونے کا مقصد یہ ہوگاجور ابنمائے امت معصوم امام ہوگا۔

خود سر کار طوی نے ند کور ہ روایت پیش کر کے بعد جو تبھر ہ فر ہایا ہے وہ یہ کہ اگر کوئی ہے کہ حضرت ولی العصر علیہ السلام کا کوئی فرزند جانشین سر در انبیاء ہوگا تو وہ غلط گو ہے کیو نکہ نصوص صریحہ کے مطابق آئمہ عظمم السلام کی تعداد بارہ ہے اگر امام زمانہ علیہ السلام کے سی فرزند کو آپ کا وصی اور مسم امامت کا مستحق مسلم کر لیا جائے تو اس کا مطلب یہ ہوگا کہ آئمہ کی تعداد بارہ نہیں تیرہ ہے۔

سر کار طوی کے اس تبعر ب اور ان روایات کے پیش نظر جن میں

حضرت ججت عليه السلام كى اولاد كاتذكره به يه تسليم كرنا بى پزے گاكه حضرت امام زمانه عليه السلام صاحب اولاد كثيره بين اور اولاد حضرت امام زمانه عليه السلام عالم اور صالح جونے كے باد جود مند امامت كے حقد ار نہيں بين كيونكه تعد اد آئمة عليم السلام باره به -

او عيه

فطری تقاضوں، روایت آئمہ عظیم السلام اور اقوالِ علائے حقہ کے بعد جب ہم ان دعاؤں کو دیکھتے ہیں جو آئمہ عظیم السلام سے منقول ہیں تو بھی ہمارے لیے اس کے مواکوئی چارہ کار نہیں رہتا کہ ہم بلا نزاع اس بات کو شلیم کرلیں کہ کہ حضر ت امام آبانے علیہ السلام صاحب اولاد ہیں۔ مثال کے طور پر چندا کہ دعاؤں کے فقرات ملاحظ فرمائے :

غیبت طوی صفحہ ۱۷۰، معبال تھمی صفحہ ۵۳۸، جمال الاسبوع صفحہ ۵۳۸ اور جار الانوار جلد ۵۳ صفحہ ۲۲ کے مطابق نماز کی آخری وعاجو ناحیہ مقد سے موصول ہوئی ہے اس کے آخری جملے یوں ہیں :

اے اللہ! اپنے ولی اور اولاد ولی میں سے جو ٹائیٹن ہیں ان پر نزولِ رحمت اور سلام فرما، ان کی زندگی دراز فرما، انہیں دین وو نیااور آخری میں ان کی خواہش سے ہم کنار فرما، توہی قاد بر مطلق ہے۔

حارالانوار جلد ۱۰۲ صفحہ ۱۱۱۳ور مصباح الزائر صفحہ نمبر ۲۳۷ کے مطابق ہر زائر کو تھم ہے کہ جب سامرہ میں مقام غیبت کو الوواع کمو تویہ دعا پر طو اس دعائے آخری الفاظ ملاحظہ ہوں۔

''اے اللّٰہ اپنے ولی، اپنے ولی کے تامین اور اپنے ولی کی راہنمااولاد

پر درود و سلام بھیج'' ہارالانوار جلد ۱۰۲ صفحہ نمبر ۲۲۸ کے مطابق سر کار ججت علیہ السلام کے زیارت مخصوصہ ہے اس کے بعض جملے اس طرح میں

'' حضرت ججت علیہ السلام کے نائینِ زبانہ اور آپ کی صالح اولاد پر میرا سلام ہو'' فار الانوار جلد ۹۵ صفحہ نمبر ۳۳۲، مصباح تفعمی صفحہ نمبر ۵۵۰، جمال الاسبوع صفحہ نمبر ۵۱۰،۵۱۰ حضرت امامِ رضا علیہ السلام نے زبانہ غیبت میں جو دعا پڑھنے کی تلقین فرمائی ہے اس کے چند جملے ملاحظہ فرمائیے۔

"اس کی اولاد، اس کی قریت جمت علید السلام کی اپنی ذات ، اس کے تمام اہل، اس کی اولاد، اس کی قریت ، اس کی امامت اور تمام رعیت کو وہ سب چھ عنایت فرما جس سے ان کی آئسیل محنڈ کی اور ول مطمئن ، و ہر قتم کی حکومت خواہ قریب ہویا بعید اور بلد ہویا بہت اس طرح حضرت جمت علید السلام کے تابع فرمان ساکہ اس کا حتم ہر علم پر غالب رہے اور اس کا حق ہر باطل کو مغلوب کردہ ۔ "

جال الاسبوع صفحه نمبر ۱۳۸ ور تجم التا قب صفحه نمبر ۲۲۳ میں ویر آئمه اسلمبدیت علیم السلام کی طرح حضرت حجت علی السلام کی زیارت مخصوصه مرائع یوم جعد ہے اس کے بعض فقرات ملاحظ فرما ہے :

" میں اللہ سے التجا کرتا ہوں کہ محمد و آل محمد عظمیم السلام پر رحمیں اللہ اللہ میری اللہ فائل فرمائے۔ اے میرے آفا! اے میرے امام زمانہ علیہ السلام! میری اللہ سے اپیل ہے کہ جمحے آپ کے انظار کنندگان، آپ کے تابع احکام، آپ کے مدرگاروں، آپ کے چاہنے والوں اور آپ کے قد موں میں شمید ہوئے والوں

کی فہرست میں جگہ دے ، آج ہوم جمعہ ہے آپ پر آپ کی صالح اہل دیت پر اللہ کی رحت ہو''

عصر روزِ جعبہ کے اعمال مستحبہ میں سید اننِ طاؤس نے ایک دعا نقل کی ہے اور روزِ جعبہ کے اعمال مستحبہ میں سید اننِ طاؤس نے ایک دعا نقل کی ہے۔ اور روزِ جعبہ اگر کوئی اور عمل نہیں کر مجت تو کم از کم اس دعا کو کبھی فراموش نہ کرو اس دعا کے بھن فقرات ملاحظہ ہوں

"حتی کہ ہم تیرے ولی کی زیادت کاشرف حاصل کریں تیری دست ہو اس ولی پر اور اس کی آل پر (کمال الدین صفحہ نمبر ۵۱۲، جمال الا سبوع) چونکہ صلو تک جلیے و آلہ کا جملہ بھی جزو توقیع اور نا دیبہ مقد سہ سے موصول نوا ہے اس لیے اس جملہ سے کھی صاف طور پر معلوم ہوتا ہے کہ حضرت صاحب آل بھی ہیں۔

فارالانوار جلد ۸۹ صفحہ نمبر ۴۳ اور نجم النا قب صفحہ نمبر ۲۲۲ میں صبح جمعہ کے و ظائف میں ہے ایک مفصل صلوات منقول ہے جس کا ایک جملہ اس طرح منقول ہے

''اے اللہ! حضرت حجت علیہ السلام اور آپ کی ذریجے کو وار ٹان روئے زمین قرار دے''

غیبت شیخ طوی صفحہ نمبر ۱۷۰، مصباح تھمی صفحہ نمبر ۱۷۳ کے ۵۳ کے مطابق نا دید مقد سر سے بذریعہ توقیع ایک صلوات پڑھنے کا حکم موصول ہواہے ۔ آس کا آیک جملہ ملاحظہ فرمائے :

"ا ب الله ! حفر ت حجت عليه السلام كوا بني ذات ، اپني ذريت ، ايخ

شیعہ اور اپنی رعیت کے ہر خاص و عام کے لیے وہ چیز عنایت فرماجس سے حضرت امام زمانہ علیہ السلام کی آتکھیں شمنڈی ہوں اور دل مطمئن رہے'' مصباح تفعی صفحہ نمبر ۵۵۰ کے مطابق حضرت امام رضاعلیہ السلام نے زمانہ غیبت میں شعیان آل محم کوایک و عاتعلیم فرمائی ہے اور پڑھنے کا حکم ویا ہے جس کے بعض فقرات یوں ہیں۔

''اے اللہ! حضرت ججت علیہ السلام اور آپ کے بعض رائنماؤں پر رحمتیں نازل فرما کیونکہ وہ تیرے کلمات کی کا نمیں ہیں''

مرحوم میں نے حاشیہ مصباح پر لکھا ہے کہ آپ کے بعد آئمہ سے مراد آپ کی اولاد ہے اور حضرت جمت علیہ السلام سے منقول د عاسے اس کی تائید بھی ہو جاتی ہے۔

ان تمام ہاتوں کے بعد حطرت کی از واج واولاد کے وجود میں کو کی شبہ شمیں ہو سکتا۔ یہ تفصیل معلوم نہیں کہ حضرت کے کتنے فرزند ہوئے یا اولاد کی کتنی تعداد ہے جب حضرت پروہ غیبت میں بیں تو حضرت سے تعلق رکھنے والی بعض ہاتیں۔ بعض ہاتیں۔

(عرفان امامت در حالات حفرت امام مهدی صفحه ۲ ۱۹۳۲)

امام مهدی کی ولاوت کو پوشید ہر کھا جائے گا احمدین ہارون اور این شازویہ اور این سرور اور جعفر ن جین نے محمد بن حمیری سے انہوں نے اپنے والد سے انہوں نے ایوب بن نون سے ،ایوب نے عباس بن عامر سے اور ہم سے میان کیا جعفر بن علی بن حسن ن جب تک امام خود نہ جا کیں انہیں کوئی نہیں و کھے سکتا

حضر تا مام زین العابدین علیہ السلام کے فرمان سے معلوم ہوتا ہے

کہ لوگ اگر چہ حضرت امام ممدی علیہ السلام کو دیکھتے ہیں لیکن انہیں پچپان

نہیں کتے۔ جس طرح کہ لوگ حضرت یوسٹ کونہ پچپان کتے تھے۔ اور یہ نشانی

اور یادگار حضرت یوسف علیہ اسلام کی حضرت امام ممدی علیہ اسلام میں

موجود ہے۔

ا یک سوسے زیادہ ایسے خوش نصیب افراد کے بارے بیل مختف کتب بیل نیک آنخضرت کونہ بھیان سکے بیل نیک آنخضرت کونہ بھیان سکے اور جب بعد بیل متوجہ ہوئے تو سمجھ گئے کہ وہ ہزگوار حضرت امام زمانہ علیہ اسلام تھے۔

متام واقعات سے آشکار حاجی علی بغدادی کا واقعہ ہے جو کہ ماضی قریب میں وقوع پذیر ہوا ہے۔ چنانچہ مرحوم حاجی نوری نے کتاب "النجم الثاقب" میں لکھا ہے کہ حاجی بغدادی کا واقعہ ہماری کتاب کی جان ہے اور اگر اس واقعہ کے سواکوئی اور واقعہ اس کتاب میں ذکر نہ کیا جاتات بھی اس واقعہ کی نوعیت اور کیفیت اس کے سیح ہونے کی قوی دلیل تھی۔

طابی شخ عباس فی نے تھی اس واقعہ کو کتاب ''مفاتح البتان '' میں تحریر کیا ہے۔ حاجی علی بغد اوی نے حضرت امام زمانہ علیہ اسلام کی زیارت کی اور ایک عرصہ تک آ نجناب کی خدمت اقلاس میں حاضر رہائیکن چونکہ امام علیہ اسلام نے خود ہی یہ نہ چاہا کہ وہ آپ کو پہچانے لہذاوہ آپ کو نہ بہچان سکا۔

بیر حال اس واقعہ کی صحت پر کسی قتم کے شک و شبہ کی کوئی گنجائش ہی نہیں۔ (مہدی موعود امام زیامہ صفحہ ۱۵۲،۱۵۱)

آب آئمہ میں سے سب سے کمن ہول گے علی من احمد نے عبداللہ من مویٰ سے انہوں نے محمد من سان سے انہوں نے محمد من سان سے انہوں نے انہوں نے حضر سے امام باقر علیہ السلام سے روایت کی ہو ہے ہیں نے آپ کو فرماتے ہوئے سنا کہ صاحب الامر علیہ السلام عمد مَامامت سخبالتے وقت ہم گروہ آئمہ میں سب سے کمن اور سب سے زیادہ گنام ہو نگے۔

دوسری اساد سے محمد من شان نے ابد جارود سے اور انہوں نے محمد سے اس کے محمد سے اس کے محمد سے امام باقر علیہ السلام سے اس کے محمد محمد اللہ السفیہ ۱۵ میں اللہ السفیہ ۵ م

ز مین جمت ِ خد اسے تبھی خالی نہ ہو گی

حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام ہے روایت ہے آپ نے ارشاد فرمایا : جب سے اللہ تعالیٰ نے حضرت آوم علیہ السلام کو پیدا کیا بھی تھی زمین کو اپنی جبت سے خالی نہیں چھوڑا خواہ وہ جت ظاہر و مشہور ہو یا غائب و مستور ہو اور نہ بھی تا قیا مت اس کو اپنی جبت سے خالی چھوڑے گا دور اگر ایسا ہو تا تو بھی المد کی عبادت ہی نہ کی جاتی۔ سلیمان نے عرض کیا۔ مولا ! بجر جبت غائب و

متورے لوگ فیض کیے عاصل کریں گے۔ فرمایا: جس طرح لوگ آفآب سے اس وقت بھی فیضیاب ہو تھہیں جب وہ اہر کے پر دوں میں پوشیدہ ہوتا ہے۔

(حار الانوار جلد الصفحہ نمبر ۲۰۸)

لوگ صاحب ِالامر ؑ کی ولا دیت ہے انکار کریں گے اسحاق بن ابوب نے میان کیا ہے کی میں نے حضرت ابوالحن امامِ علی نقی علیہ السلام کو فرماتے ہوئے ساکہ

صاحب الامروه ہوگا جس کی ولادت کے بعد بھی لوگ کہیں گے کہ وہ ابھی پیدائی نہیں ہوئے ہیں۔

(ا كمال الدين، حار الانوار جلد اا صفحه نمبر ۲۹۵)

ولاوت کی تهنیک

لوگوں کی ایک جماعت نے تلعیم کی ہے ، انہوں نے الحدین علی ہے ،
انہوں نے محم بن علی ہے اور انہوں نے حفظلہ بن ذکریا ہے باو ثوق ذریعے
ہے کما کہ مجھ سے عبداللہ بن عباس علوی نے انہوں نے حسن بن حبین علوی
سے کما کہ مجھ سے عبداللہ بن عباس علوی نے انہوں نے حسن بن حبین علوی
سے نقل کی ہے کہ میں سر ممن رائے میں حضرت ابو محمد علیہ السلام کی خد مت
میں حاضر ہوا اور انہیں اپنے آقاو مولا حضرت صاحب الزمان علیہ السلام کی
ولادت باسعادت کی تہذیت پیش کی۔

(غبية طوى، فيار الانوار صفحه ٣٣، جلد ١١، ار دوتر جمهر)

آپ کے بازو پر قرآن کی تحریر

جنابِ حجمه خاتون سلام الله عليها بروايت ہے كه وه پندره شعبان كى شب تھى اور بير كه ان كى والده كانام نرجس تھا اور اس كے بعد ولادت كا حال ميان كرتے ہوئے كماكه : مجر بيس نے اپنے (امامِ عصر) كى حس وحر كت محسوس كى ، معاً حضرت ابو محمد عليه السلام نے فرمايا كه اب چھو پھى جان! مير بے فرزند كو مير بياس ليا گيئے۔

' جب میں نے ان (کے جھولے) کا پروہ ہٹا کر دیکھاوہ آپنے اعضائے 'خدہ زمین پر رکھے تو ئے محو مجدہ میں اور ان کے واپنے بازو پر یہ تحریر تھی : ''عِمَّا عَالَیْ وَ زَحْنَ البَاطِلِ ﴿ سور وَبدنی اسر ائیل آیت ۸۱) ترجمہ : حق آگیا اور باطل مٹ کیا۔

پھر میں نے انہیں آغوش میں لیااور سنج او محمد علیہ السلام ک پاس گنی یمال تک کہ انہوں نے کلام کیا۔

حضرت امام مهدي كاعقيقه

ماجیلویہ وائ متوکل و عطار۔ ان سب نے اساق بن ریاح ہمری سے
انہوں نے ابو جعفر عمری سے روایت کی ہے کہ جب حضرت ابو محمہ امام مسن
عسکری علیہ السلام کے مال شہزادہ (صاحب الزمان علیہ السلام) تولد ہوئے تو
آپ نے فرمایا کہ ابو عمرو کے پاس آدمی تھیج۔ جب آدمی گیااور وہ آگئے تو آپ
نے فرمایا کہ دس بڑارر طل روئی اور دس بڑادر طل گوشت بڑید کراسے تقسیم

كردورراوى كتاب كه جحے يادآتا ہے كه آپ نے بدنى باشم ير تقيم كرنے کے لئے فرمایا تھااور آپٹے اٹ کا عقیقہ بھی اتنی اتن بحریوں پر کیا۔ (ا كمال الدين ، قيار الا نوار جلد ١١، ار د و صفحه ٢٨ ، ٢٨)

کاش اذ ن کلام ہو تا

ہا جیلو یہ وعطار نے محمد عطار ہے انہوں نے حسین بن علی (نبیثا یو ر ی) ہے انہوں نے ایر اہیم تک محمد بن عبداللہ بن مو کی بن جعفر علیہ السلام ہے انہوں نے شاری سے اور نہوں نے تشیم اور ماریہ (وونوں کنیزوں) سے ہوایت کی ہے کہ جب حضرت صاحب الزبان علیہ السلام تولد : ہے کہ وونوں گھٹنوں کے بل مبیٹھ گئے اور شہاد ت کی دونوں انگلیاں آ سان کی طر ف بلید کیں۔ پھر آپ کو چھنگ آئی تو فر مایا :

ظالموں نے یہ گمان کر لیا ہے کہ جہت خدا من جائے کی اور اَلر نہیے اذ ن کلام ہو تا تولو گول کے سارے شک وور ہو جاتے۔ (ا كمال الدين ، جار الإنوار جلد ١١،١١ دونسفحه ٢٦،٢٦) علان نے بھی مجمد عطار ہے ای کے مثل روایت کی ہے۔

(عنية طوي)

آب کو قائم کیوں کما جاتا ہے

د قاق اور ان عصام نے کلدیذی سے انہول نے قاسم بن عااسے ،

انہوں نے اساعیل فزاری سے انہوں نے محمد بن جمہور عمی سے انہوں نے این الی نجران سے جس نے ان سے ذکر کیا اس سے ثمالی نے راویت میان کی ہے کہ میں نے حضرت امام محمد باقر علیہ السلام سے عرض کیا: فرزیدِ رسول! کیا آپ مسب آئمہ قائم بالحق نہیں جیں ؟

آپ نے فرمایا: ہاں ہیں نے عرض کیا: پھر امام قائم ہی کو قائم کیوں
کمتے ہیں؟ آپ نے فرمایا: جب میرے جد حضر ت امام حسین این علی علیہ السلام
کو قبل کرویا گیا تو طائکہ کوبے حدو کھ ہوا تو انہوں نے بارگاہ خد امیں گریہ کناں
عرض کیا۔ اے جارے اللہ اور جارے مالک تیرے ختیب مدے اور تیرے
ختیب مدے کے فرز ندکو جو تیرا کہترین خلائق ہے قبل کر ویا گیالیکن تو نے فبر
نہ لی۔ اللہ تعالی نے فرشتوں کی طرف وحی کی اور فرمایا: اے ملا ککہ! ذرا صبر
نے کام لو، بے قرار نہ ہو جاؤ جھے لی عزت و جلالت کی قتم ہے میں اس کے
قاتموں سے بھیاانقام لوں گا خواہ کچھ عرصے کے بعد بی کیوں نہ لوں۔

اس کے بعد اللہ تعالی نے حضر ت امام میں علیہ السلام میں جتنے آئمہ اللہ علی اللہ میں جتنے آئمہ اللہ اللہ سب کے انوار سے پر دہ ہٹادیا تو ملا تکہ النہ تعالی نے فرمایا: میں اس ان میں سے ایک نور کھڑ اہوا مصر و ف نماز تھا۔ اللہ تعالی نے فرمایا: میں اس کا تم (کھڑ سے ہوئے) کے ذریعے حسین کے قاتلوں سے انتقام لوں گا۔

(علل الشر الع، حارالا نوار جلد ۱۱، ار دوتر جمہ صفحہ ۱۳)

ملا نکلہ آپ کے جسدِ مبارک سے مس ہوتے رہے ماجیلویہ نے محمہ عطارے اور انہوں نے ابوعلی خیز رانی ہے روایت ک ہے کہ ان کی ایک کنیر تھی جے انہوں نے حضرت او محمد حضرت امامِ حن عسر کی ملیہ السلام کے پاس بطور ہریہ تھیا تھا گر جعفر کذاب نے آپ کے گر پر لوٹ مار مجائی تو وہ کنیز جعفر کے قبضے سے تھا گ کر پھر اس کے پاس آگئ اور اس نے اس سے عقد کر لیا۔

ادوعل کامیان ہے کہ میں نے اس کنیز کومیان کرتے ہوئے ساکہ جب حضر نے صاحب الزمان علیہ السلام کی ولادت ہوئی تو اس کنیز نے ویکھا کہ آپ کے جسد پاک ہے ایک نور ساطع ہے جو افق ساء تک جارہا ہے اور کچھ طائر ان سفید فضاؤں ہے ایک تو رساطع ہے ہو افق ساء تک جارہا ہے اور کچھ طائر ان کو مضید فضاؤں ہے اتر کر آپ کے سر، چر ہے اور جسد پاک ہے اسپناز دؤں کو مشید فضاؤں ہے اتر کر آپ کے سر، چر نے اور جسد پاک ہے اسلام کو متایا۔ آپ مسکر اسے پیر فرمایا: یہ سب آسان کے فرشتے ہیں جو ان سے انھی یہ کتیں حاصل کرنے کے لئے اتر ہے ہیں اور جب ان کا ظہور ہوگا تو ہی ان کے ناصر و مددگار ہوگا۔

(ا كمال الدين، حار الانوار جلد ١١، ار دوتر جمه صفحه ٢٨)

زمانہ ء غیبت میں صبر کرنے والوں کی منز ات ہمدانی نے علی ہے انھوں نے اپنے والد ہے انھوں نے عبدالسلام ہروی ہے انھوں نے ربیع بن سعد ہے انھوں نے عبدالرحمٰن بن سلیط ہے انھوں نے کماکہ میں نے حضرت امام حسین علیہ اسلام کو فرماتے ہوئے سا

ہم میں ہے بارہ ممدی ہوں گے جن میں ہے پہلے حضرت امیر المو منین ان افی طالب علیہ اسلام ہیں اور آخری میرا نواں فرزند ہوگاوہ امام قائم بالی ہوگاوں ہوگا اللہ اس کے قریعے ہے زمین کے مردہ ہو جانے کے بعد اے زندگی فضے گاور دین حق کو اس کے قریعے ہے سارے ادیان پر عالب کرے گا خواہ مشرکین اسے کتنا ہی نا پند کریں اس کے قربانہ ء غیبت میں بہت ی قومین مرتد ہو جا کمیں گی، کچھ اپنو وین پر قائم رہیں گی آگے کا ظہور چاہیں گی اور ان سے کما جائے گا کہ اگر تم سے ہو تو بتاؤ دعدہ کب پورا ہوگائی کی غیبت میں مصائب اور لوگوں کی تحقیب پر صبر کرنے والوں کی منز لے وہی ہوگ جو رسول اللہ علیہ کے سامنے تکوارسے جماد کرنے والوں کی منز لے وہی ہوگ ۔

(ا کمال الدین جارانوار جلد ۲۳۲ په ۲۳۳ار دوتر جمه)

عبدالله ن معيره نه انهول نه الله حسن انهول عباس ف عامر سه ، عباس ف عامر سه ، عباس ن عامر سه ، عباس ن عطا سه روايت عباس نه موی فن بلال صدي سه انهول نه عبدالله فن عطا سه روايت كل مهان كاميان مه كه من نه حضرت امام باقر عليه السلام سه عرض كياكه آب كه شيمه عراق مين بهت كثرت سه جين اور خداكي فتم الل بيدت من آب كاكوئي مثل نبين _ فير آب روج كيول نبين كرت ؟

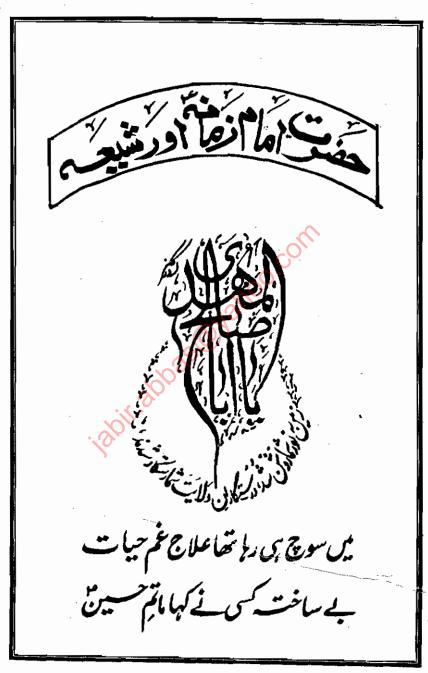
آپ نے فرمایا: اے عبداللہ بن عطا! تیرے کانوں میں لغولوگوں ک باتیں واخل ہو گئیں ہیں۔ خدا کی تتم! میں تم لوگوں کا امام قائم شیں ہوں۔ میں نے عرض کیا۔ پھر ہمارا امام قائم کون ہے ؟

آپ نے فرمایا رکھتے رہو۔ جس کی ولادت کو لو گول سے پوشید ور کھا جائے ہس و بی امام قائم ہوگا۔

(كمال الدين عار الانوار جلد ١١،١١ دوتر جمه صفحه ٧٧)

لوگ آپ کی و لادت سے اُنگار کریں گے عباس بن عامر نے روایت کی ہے کہ میں نے 'هزت امام مو کٰ بن جعفر علیہ السلام کو فرماتے ہوئے تنا:

آمام علیہ السلام نے فرمایا: صاحب الامڑ کے متعلق پیدا ہونے کے بعد تھی لوگ کمیں گے کہ دوا تھی پیدا ہی نہیں ہوئے بعد تھی لوگ کمیں گے کہ دوا تھی پیدا ہی نہیں ہوئے (اکمال الدین ،جار الانوار بار دوتر جمہ جلدا اصفحہ ۲۷۲)



امام قائم کوسلام کرنے کا طریقہ

جائر نے حضرت امام محمد باقر علیہ السلام ہے روایت کی ہے کہ کتابِ غدا اور سنت نی علم قلبِ مهدی علیہ السلام میں اس طرح اگے گا جس طرح سمترین کھیتیاں اگتی ہیں اگرتم لوگوں میں ہے اس وقت کوئی باتی رہے اور اس ہے ملا قات کرے توسلام اس طرح کرے۔

السلام عليكم يا اهل بيت الرحمة و النبوة و معدن السلام عليكم يا اهل بيت الرحمة و النبوة و معدن العلم و موضع الرسالة الرام كواس طرح ملام

45

السلام علیك جابقیة الله فی ارضه عمرون شمرے بھی ای کے مثل روایت ہے۔ (اکمال الدین ،غیبة نعمانی، حارال نوار جلد 11 صفحہ ۷۸)

ز مانه غیبت میں لو گوں کا حال

جعفر بن مجرنے مجرین حمین سے ، انہوں نے یہ لی سے ، انہوں نے علیہ السوائی کے انہوں نے حضر سے امیر الموسین علیہ السوائی کو فریاتے ہوئے نا آپ نے فرمایا تمہار ایس وقت کیا حال ہوگا جب تم علم و ہدایت کے امام کے بغیر رہ جاؤگے اور تم میں سے ہر ایک دوسر سے سے یہ آت

وہیر: اری کا اظہار کر رہا ہو گا۔

(منییة طوی ، حار الانوار جلد ۱ اصفحه ۲۰۲۱ر دونر جمه) ٔ

امام زمانہ عام عقل و سمجھ سے بالاتر ہیں ابنوں نے سعد سے انہوں نے حن تن عیدی تن محمد تن علی تن جعفر سے انہوں نے حن تن عیدی تن محمد صادق علیہ السلام سے انہوں نے اپنے ہمائی حضرت امام مو کی تن جعفر صادق علیہ السلام سے انہوں نے اپنے ہمائی حضرت امام مو کی تن جعفر صادق علیہ السلام سے دوایت کی ہے آپ نے ارشاد فرمایا: جب تمہارے ساتویں امام کا پانچوال فرز ند پر د و نیبت میں چلا جائے تو خدا کے لئے اپنے دین کا بہت خیال رکھنا کمیں ایام کا پانچوال الیانہ ہو کہ تم کو تمہارے دین ہے جادر یہ غیبت الی نو گادہ بھی اللام کی غیبت بھی ہے اور یہ غیبت اللہ تو گا کہ جو شخص اس کا قائل ہو گادہ بھی اس سے بھر جائے گا۔ در حقیقت یہ غیبت اللہ تعالیٰ کی طرف سے ایک آزمائش اس سے بھر جائے گا۔ در حقیقت یہ غیبت اللہ تعالیٰ کی طرف سے ایک آزمائش اس سے اللہ تعالیٰ اپنے معدوں کا امتحان کے گادر سنو! اگر تمارے آباؤ میں کے موری کرتے۔

میں نے عرض کیا مولا و آتا! وہ ساتویں کا پانچاں فرزند کون ہوگا؟ آپ نے ارشاو فرمایا: اے میرے فرزندو! تہماری عظیں کوتاہ ہیں تم اس کا تصور بھی نہ کر سکو گے تہماری عقل و سمجھ اتنی کم ہے کہ اس کی متحمل نہ ہو سکے گی۔ لیکن اگر تم لوگ اس عمد تک زندہ ہوتواس کو خووہی و کیے لوگے۔ (علل الشر الکع، حار الانوار جلد الصفح ۲۵،۲۵،۲۵ ار دوح جمد)

غيبت امام زمانة مين شيعون كاحال

محمہ نے حمیری نے اپنوالدے انہوں نے این بزیدے انہوں نے میں محمد نے حمیری نے ایم ایم میں عمر بمانی سے انہوں نے ایک فخص سے اور اس نے حضرت الوجعفر امام محمد باقر علیہ السلام سے روایت کی ہے کہ آپ نے فرمایا۔

ترجمہ: اے شعیان آل جمر ! تم اس طرح گلیں جاؤگے جیسے آ تکھیں میں مرحد کسے اس طرح گلیں جاؤگے جیسے آ تکھیں ہیں ہر مد کس ساتا ہے کیو فکل سر مد لگانے والا بیہ تو جانتا ہے کہ سر مد کب لگایا گیا ؟ حمر یہ نہیں جانتا کہ وہ آ تکھوں ہے کب غائب ہو گیا۔ چنا نچہ اس طرح تم بیل ہے اس طرح تم بیل ہے اس کا دو گا۔ یہ فخص ہماری شریعت پر صح کو لفل آئے گاوہ شام کو اس سے نکل چکا ہوگا۔ پھر الر ہوئی شخص شام کو ہماری شریعت ایر نظر آئے گا تو وہ صبح کو اس سے باہر ہوگیا ہوگا۔

شیعہ امام مہدیٰ کی زیارت کو تر سیں گے

الی بے حمیری ہے انہوں نے احمد بن ہلال ہے ، انہوں نے انبِ محبوب سے انہوں نے حصرت ابوالحن امام علی رضاعلیہ السلام ہے روایت کی ہے کہ آپ نے فرمایا :

ا کی انتائی سخت اور اندو ہناک فٹنے کا برپا ہو تا لازی ہے جس میں ساری ووستیاں اور رازواریاں ختم ہو جا کیں گی اور یہ فتنہ اس وقت برپا ہوگا جب شیعہ میرے تیسرے فرزند کواپنے ور میان مفقود پاکیں گے۔اور اس سَ

لیے تمام آسان وز بین والے گریہ کریں گے ہر مر دوزن ان کی زیارت کو تر ہے گاسب محزون اور آووزاری کریں گے۔

پھر فرمایا: اس پر میرے مال باپ قربان! جو میرے جدکا ہمنام ہوگا جو میری اور موسی بن عمران کی شبیہ ہوگا اس کے جسم پر نور کا لباس ہوگا جو ضیائے قدس سے روشن ہوگا۔ اس چشمئہ آب شیریں کے غائب ہونے کے بعد کتنی ہی مومنات اُس کے شرعت دیدار کی بیای ہوں گی مومن کھنے افسوس ملتے ہوں گے اس کے بعد انھیں ایک نداستائی دے گی جیسے کوئی قریب سے ہی پکار رہا ہو۔ جو ندامو منین کے لئے باغث رحمت اور کافرین پر عذاب ہوگا۔ رہا ہو۔ جو ندامو منین کے لئے باغث رحمت اور کافرین پر عذاب ہوگا۔

حضرت امام حسن عسر کے بعد شیعوں کا حال ابد حام حسن عسر کی جد شیعوں کا حال ابد حام کا میان ہے کہ میں نے حضرت الل جسن عسر کی علیہ السلام کو فرماتے ہوئے ساآپ نے فرمایا۔ کہ والم جبری میں ہادے شیعوں اور انسار جائیں گے چنانچہ ای میں میں آپ نے شادت پائی اور آپ کے شیعوں اور انسار کا شیر ازہ منتشر ہو گیا کھے جعفر کی طرف ماکل ہو گئے اور پھو شک میں پڑ گئے بچھ نے تو قف کیا اور پھر جنو فتی الی اپنے دین پر ٹامت قدم رہے۔

ز تو قف کیا اور پھر جنو فتی الی ایہ والا نوار جلد اا، ار دوتر جمہ صفحہ ۸۰۰)

عرصه غيبت طويل ہو گا

محمد بن مسلم نے حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام سے روایت کی ہے کہ آپ نے ارشاد فرمایا :۔

جب امام قائم علیہ السلام نیبت اختیار کریں گے تولوگ ایک عرصہ تک یو نمی رہیں گے اخیں پتہ خمیں ہوگا کہ امام کون ہیں اور کمال ہیں پھر اللہ تعالیٰ اُن کے صاحب (امام) کو ظاہر ہونے کا تھم دے گا۔

﴿ عَبِيةِ نَعِما فِي ، فَارَ الانوار جِلد ١١ الرووتر جمه صفحه ٢٧٧)

زمانه غيبت مين شيعول كافريضه

ثمالی نے حضرت امام محمد با قر علیہ السلام ہے روایت کی ہے اُن کا میان ہے کہ میں نے امام علیہ السلام کو فرماتے ہوئے نیا ہے

بے شک۔ اللہ تعالی عزو جل کے سب سے آبادہ مقرب مدے اور سب سے زیادہ اور سب سے زیادہ اور مربانی کرنے اور سب سے زیادہ اور مربانی کرنے والے حضرت محمر اور آئم طاہرین صلوات اللہ علیم اجمعین ہیں ہیں جمال وہ جائمیں تم بھی گریز کرو۔ (اس سے مراد جائمیں تم بھی گریز کرو۔ (اس سے مراد آپ نے حضرت امام حسین علیہ السلام اور اُن کی اولاد کو لیا ہے) کیو نلہ ان بی میں حق ہے اور وہی او سیاء ہیں اور ان ہی میں آئمہ ہیں تم لوگ جمال بھی انھیں و کیکھوان کی ہیروی کرو اور اگر کی دن تمہیں ان میں سے کوئی نظر نہ آئے تو تم اللہ تعالی بدرگ و بر تر سے مدو جا ہو اور اُس ہی سنت پر چلتے رہو جس پر تم اب

تک (اُن کی موجود گی میں تھے)اور اُس کی پیروی کرتے رہو اور اُن بی ہے محبت رکھو جن سے اب تک تم محبت رکھے تھے اور اُن سے بخض رکھو جن سے اب تک تم بھن رکھتے تھے اور اُن سے بھن رکھتے تھے اُس جلد بی امام قائم کا ظہور ہوگا اور تساری مشکلات دور ہو جا کیں گی۔

(ا كمال الدين ، حار الانوار جلد ،١١، ار دورٌ جمه صفحه • ٣٣١ ،٢٣٠)

ایک دو سرے سے بین اری کا اظہار کروگے جعفر من محمہ نے محمہ من حسین سے ،انہوں نے ان یز لیے سے ،انہوں نے اصم سے ،انہوں نے ابن سانہ سے انہوں نے عمر ان من صبغ سے ،انہوں نے عبایہ اسدی سے ،ان کا میان ہے کہ میں نے حضرت امیر المو منین علیہ السلام کو فرماتے ہوئے سار آپ نے فرمائی ۔

تمهارای وفت کیا حال ہو گا جب جماع و ہدایت کے امام کے بغیر رہ جاؤ کے اور تم میں سے ہر ایک ووسر سے سے برات ویں از ی کااظمار کر رہا ہو گا۔ (غیبة طوی، حار الانوار جلد ۱۱، ارووز جمہ صفحہ ۲۰۷)

عنيبت من شيغول كي حالمت

شیبانی نے اسدی سے ، انہوں نے سل سے ، سل نے عبد العظیم حتی سے ، انہوں نے ابو جعفر فانی سے اور انہوں نے اپنے آباء سے انہوں نے حضرت امیر المو منین علی این الی طالب علیہ السلام سے روایت کی ہے۔ کہ

آپ نے فرمایا ۔

ہم میں سے جو امام قائم ہوگائی غیبت طویل مدت تک رہے گا گویا میں دیکھ رہا ہوں اُس زمانہ غیبت میں شیعہ اس طرح پھریں گے جیسے چوپائے چراہ گاہ کہ تااش میں بھرتے ہیں گر اُن کو چراہ گاہ نہیں ملتی گریاد رہے کہ جو فض اُس زمانہ غیبت میں اپنے دین پر قائم رہااور اپنے امام کی طولانی غیبت کی۔ وجہ سے مالوی نہ ہوا وہی قیامت کے دن میرے ساتھ میرے درجہ میں ہوگا۔

پجر فرمایا: ۔ جب جارا قائم ظمور کرے گا تواس کی گردن میں کسی ک بیعنت کا قلادہ نہ ہوگا (وہ کسی کا مجکوم نہ ہوگا) اس لئے ان کی و لادت کو پوشیدہ رکھا جائے گااوروہ جسمانی طور پر غائب رہیں گے۔

(ا كمال الدين ، حار الا تواريطد ١١ ، ار د د ترجمه صفحه ٣٠٣)

و شمانِ خدا کے لیے غیبت عضب الی کی نشانی انی اور ان ولیدئے ایک ساتھ سعد اور حمیری سے انہوں نے ان عینی سے انہوں نے ان محبوب سے انہوں نے محمدین نعمان سے روایت کی ہے کسنعمان کے فرزید محر کا بیان سے کہ حصر جدام جعفر ساوق طیبہ السام مے ا ارشاد فرمانا:

ترجمہ: اللہ عزو جل کی سب سے ذیادہ قرمت در ضامدوں کو اس وقت حاصل ہوگی کہ جب دہ جمجت خدا کو گم (پوشیدہ) پائیں گے دوان پر ظاہر نہ ہوادر پرد و غیبت میں ہواور انہیں بیہ معلوم نہ ہو کہ محبت خدا کس مقام پر ہے گراس کے باوجودوہ جانتے ہوں کہ اللہ کی محبوں کا سلسلہ ہر گز ختم نہیں ہوا ہے اور وہ جاری ہے اور وہ صبح شام ظہور و کشائش کے لیے متو قع رہیں اور د عا کرتے رہیں۔

اور سب سے زیادہ غضب اللہ تعالیٰ کا اپنے دشموں پر سے ہوتا ہے کہ
اپنی محبت کو ان میں سے مفقود کر دیتا ہے اور ان پر ظاہر نہیں اور اللہ کو معلوم
ہے کہ اس کے اولیاء اور دوستدار بھی شک میں جٹلانہ ہو تنگے اور اگر اس کے
علم میں سے بات ہوتی تو چشم زون کے لیے تھی وہ اپنی محبت کو پر د م غیبت میں نہ
ر کھتا۔

ا مالی صد وہ گئے تھی تھی مضنل بن عمر ہے اسی کے مِثل روایت ہے۔ (حار الا نوار جلد ۱۱ ،ار دو صفحہ ۹۱۱)

شیعہ چراہ گاہ تلاش کریں گے

طالقاتی نے علی بن حسن بن فضال نے اپنے دالنہ ہے انہوں نے حضرت امام علی رضاعلیہ السلام ہے دوایت کی ہے:

آپ نے ارشاد فرمایا:

ترجمہ: گویا میں دکھ رہا ہوں کہ میری اولاد میں سے تیسرے کے مفقود ہوئے کے دوران شیعہ چراہ گاہ تااش کرنے میں سرگر دال پھر رہے ہیں گرانسیں چراہ گاہ (مرکز)نصیب نسیں۔

میں نے عرض کیا۔ فرزمرِ رسول سے کیوں ؟ آپ نے ارشاد فرمایا اس لیے کہ ان کا امام ان میں سے عائب ہوگا۔ میں نے عرض کیا کہ غائب س لیے ہو گئے۔ آپانے ارشاد فرمایا تاکہ جبوہ تلوار لے کر خروج کرے توان کی گرون پر کسی حاکم و حکومت کی جیعت کابار نہ ہو۔ اور نہ کسی کے زیم تمیں ہوں۔ موں۔

(ملل الشر الع ، حار الإنوار جلد ١١ صفحه ٢٨٠)

امام قائم کی مثال آفتاب جیسی ہوگ

محدین ہمام نے فزاری ہے انہوں نے حسن بن محدین ساعہ ہے انہوں نے اس بن محدین ہمام نے فزاری ہے انہوں نے اس طبیان ہے انہوں نے اس طبیان ہے انہوں نے اس طبیان ہے انہوں نے جار انساری سے روایت کی ہے کہ جار انساری نے حضر ت نی اکرم صلی اللہ علیہ و آلہ و اللم سے سوال کیا کہ کیا امام قائم کی فیبت میں ان کی ذات ہے شیعہ فاکد و حاصل کر سین کے ؟

آپ نے ارشاد فرمایا : بال ۔ اس ذات کی قتم جس نے بھے نبوت پر مبعوث فرمایا ہے۔

بلاشہوہ لوگ ان سے فائدہ حاصل کریں مے اور ان کے نوروا ایت سے روشن وضایا کیں مے جس طرح آنتاب کے بادلوں میں بوشیدہ رہنے کے باوجودلوگ اس سے نفع حاصل کرتے ہیں۔

(حار الانوار جلد ١١)

معرفت امامٌ کے بغیر جاہلیت کی موت

فضیل بن بیار نے میان کیا ہے کہ حفرت امام محمد باقر علیہ السلام فرماتے ہیں کہ کوئی شخص مرجائے۔اس حالت میں کہ اُس کا کوئی امام نہ ہو تووہ جاہلیت کی موت مر ااور انسانوں کے لئے معرفت امام کے سلیلے میں کوئی عذر قابل قبول نہ نُوگا۔ (اکمال الدین و تمام المنعمه جلد دوم صفحہ ۲۰۲)

بغیر امام کے مرناصلالت کی مُوت ہے حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام نے ارشاد فرمایا کہ اکر کوئی شخص مرجائے ۔اس حالت میں کہ اس کا کوئی آلیام نیہ ہو۔ تو وہ جا ہلیت ، کفر، شرک

(اكمال الدين ، تمام المدنعية جلد دوم صفحه ١٠٠٣)

د عائے غریق پڑھنے والے نجات پائیں گے

عبداللہ بن سنان نے میان کیا کہ میں اور میرے والد حضرت امام جعفر صاوق علیہ السلام کی خدمت اقدس میں حاضر ہوئے توآپ نے ارشاد فرمایا:۔ اس وقت تم کیسے زندگی گزارو کے جب تم اپنے امام کو نہیں وکیر سکو گے اور اس سے نجات صرف ان لوکوں کو سکو گے اور اس سے نجات صرف ان لوکوں کو سلے گی جو وعائے غریق پڑھیں گے۔ میرے والد نے عرض کیا کہ حضور اس

اور منلالت کی موت مرابه

وقت ہم کیا کریں آپٹ نے فرمایا۔ جب ایبا وقت آئے تو دین پر ٹامت قدم رہنا۔ یہاں تک کہ امر تمہارے لئے واضح ہو جائے۔ (اکمال الدین، تمام العمہ جلد دوم، صفحہ ۳۵۳)

ایخ عقیدے پر قائم رہنا

حارث من مغیرہ نے میان کیا کہ میں نے حضرت امام جعفر صادق علیہ
السلام سے دریافت کیا کہ کیالوگوں پر ایباوقت تھی آئےگا کہ وہ اپنے امام کونہ
پچان عیس کے ؟آپ نے فرمایا۔ ہاں۔ میں نے عرض کیا پھر ایسے وقت میں
لوگوں کو کیا کر ناچا ہے۔ فرمایا۔ اپ عقیدے پر قائم رہنا چاہے۔ یماں تک کہ
ان کے لئے امر حق ظاہر کر دیا جائے۔

نیبت کی وجہ سے کئی قومیں مرتد ہو جائیں گی

قدم رہیں اور ہارے وشنوں سے بے زار رہیں۔ وہ ہم سے اور ہم ان سے ، ان سے آئمہ راضی اور وہ آئمہ سے راضی ہیں۔ پس ان کے لئے طونی اور پھر طولی شے خدا کی قتم وہ ہمارے ساتھ قیامت کے روز ہمارے ورجے میں ہوں گے۔ (اکمال الدین ، تمام المنعمه جلدووم ، صفحہ ۳۲۳)

فقهابدترین ہوئے شریہ ہو گے

حضرت الم جعفر صادق عليه السلام نے رسول اللہ سے روایت کی ہے کہ میری امت پر ایک الیان مانہ آنے والا ہے کہ قرآن کے فقط نفوش باتی رہ جائے گا اور وہ اپنے کو مسلمان کمیں گے جائیں گے اور اسلام کا فقط نام باتی رہ جائے گا اور وہ اپنے کو مسلمان کمیں گے لیکن اسلام سے بہت دور ہوں گے الیکی مجد میں ممارت کے اعتبار سے صحح ہوں گائی نما نے نقبار سے خوالہ ہوں گائی نما نے نقبار ہے تین اور شریز ترین فقہا ہوں گے جو آسان کے نیچے ہوں گائی تی سے فقہ باہر آئے گا اور ان تی کی طرف واپس جائےگا۔

ادر ان تی کی طرف واپس جائےگا۔

(ظہور الحجے صفحہ ۱۳۳)

علاء چوروں کی طرح قتل ہوں گے

ارشاد فرمایا۔ کہ انسانوں پر ایک زمانہ ایساآنے والا ہے کہ اس زمانے میں جس طرح چور قتل کئے جائیں گے ای طرح علماء بھی قتل کئے جائیں گے۔ کاش علماء اُس وقت اپنے آپ کوبے و قوف اور احتی ہائیں۔
گے۔ کاش علماء اُس وقت اپنے آپ کوبے و قوف اور احتی ہائیں۔
(علائم الطہور، زنجانی ص کے اسم، علامات ظہور مہدی ص کے ۲۲۸)

جب مسلمان علاء سے نفرت کرنے لگیں حضرت امیر المومنین علیہ السلام نے رسول اللہ سے روایت کی ہے کہ آپ نے فرمایا کہ جب مسلمان اپنے علاء سے نفرت کرنے لگیں اور اپنے بازاروں کی تقییر کو ظاہر کرنے لگیں اور دولت کے لئے شادی کریں تو اللہ انہیں چار بلاؤں میں جالا کرے گا۔ اس زمانے میں قط پڑے گاباد شاہ (صاحب سلطنت) ظالم ہوگا، جمر ان خیانت کار ہوں کے اور مسلمانوں کے دلوں میں دشموں کاشد ید خوف ہوگا۔

(علائم الطهور زنجانی صفحه ۱۳۱۷ ، علايات ظهور مهدي صفحه ۲۲۵،۲۲)

بھن لوگ بھن پر لغنت کریں گے

فیبت طوسی میں حضرت امام حسن این علی علیہ السلام کی صاحبزادی سے
روایت ہے کہ انہوں نے فرمایا کہ جس امر کے تم شظر ہو وہ اس وقت تک نہیں
ہوگا جب تک کہ تم میں سے بھن لوگ بھن کے چرے پر نہ تھوک دیں یمال
تک کہ تم میں سے بھن لوگ بھن کی کفر کی گوائی دیں گے راوی نے کمارکہ
اُس وقت تو پھر خیر نہیں ہے ۔ فرمایا۔ کہ سارا خیر اُسی وقت ہے اس لئے کہ ای
وقت تمہارا قائم قیام کر ہے گا اور ساری با تمیں ختم ہو جا کمیں گی۔
(الزام الناصب جلد ۲، ص ۱۳۵ علامات ظہور مہدی می ۲۳۳ میم ۲)

بعض لوگ بعض کو کذاب کہیں گے

عمیرہ بینت تفیل میان کرتی ہیں کہ ہیں نے حضرت امام حسن علیہ السلام سے سنا کہ میں اوقت تک نمیں ہوگاتم جس کا انظار کر رہے ہو جب تک کہ تم میں سے ایک مخص وہ سرے سے اظمار ہیں اری و نفر ت نہ کرے اور بعض بحض پر لعن طعن نہ کریں یمال تک کہ تم میں ہے بعض لوگ بعض کو کذاب کمیں گے۔

(ظهورالجية صفحه ١١٥، علامات ظهور مهديٌ صفحه)

شيعول كآلبس كااختلاف

عوالم میں غیبت نعمانی سے نقل کیا ہے کہ ذکر قائم علیہ السلام پر حضر تام مصادق علیہ السلام نے فرمایا کہ انہی قیام کیے ہو سکتا ہے انہی تو فلک خفر وش میں نمیں کی کہ اس کے بارے میں سے کما جائے کے دو (قائم) مرگیا ہے یا ہلاک ہو گیا۔وہ کی وادی میں چلا گیا ؟ راوی کمتا ہے کہ میں نے پوچھا کہ فلک کی گردش کیا ہے ؟ فرمایا۔ شیعوں کا آپس میں اختلاف۔
(الزام الناصب جلد ۲صفحہ ۱۲ ا، علامات ظہور ممدی صفحہ ۲۳۲)

شیعہ ایسے اختلاف کریں گے

مالک این حزوہ سے حضرت امیر المومنین علیہ السلام نے ارشاد فرمایا
کہ مالک :۔ تمہارا حال اُس وقت کیا ہوگا جب شیعہ اس طریقہ سے اختلاف
کریں گے بھرآپ نے ایک ہاتھ کی انگلیوں کو کھول کر دوسر نے ہاتھ کی انگلیوں
کو پیوست کر دیا۔ مالک کھتے ہیں کہ بیس نے کما۔ یاا میر المومنین ۔ اس وقت تو خیر
نمیں ہوگا۔ فرمایا۔ حارا خیر تو اس وقت ہوگا۔ اے مالک۔ ای وقت ہمارا قائم "
قیام کرے گا۔ اور سر مروقیام کریں گے جو خدا اور رسول کی محذیب کریں
گے تو قائم "ان سب کو قتل کروے گا بھر اللہ ان شیعوں کے اختلاف کو رفع

کر کے امرواحد پر جمع کر دے گا۔

(ظهورالجبة صفحه ۵ ۱۱، ملا مات ظهور مهدی)

قران کے مخالف روایت ر د کر دو

این قولویہ نے کلیسنی سے انہوں نے علی سے انہوں نے اپنوالد سے انہوں نے علی سے انہوں نے عمر وین سے انہوں نے عمر وین شمر سے انہوں نے جاء کتے ہیں کہ ہم لوگ مناسک چی شمر سے انہوں نے جاء کتے ہیں کہ ہم لوگ مناسک چی اواکر نے کے بعد رخصت ہونے کے لئے حضرت امام ابو جعفر محمد باقر علیہ السلام کی خدمت میں حاضر ہوئے اور عرض کیا کہ فرزند رسول ہمیں کھے تھے تیں فرائے :۔

آپ سے ارشاد فرمایا :۔

تم میں جو قوی ہے وہ صنعیف و کنر ورکی مدد کر ہے۔ تم میں سے جودولت مند ہے وہ اپنے فقیروں پر توجہ دے۔ تم میں سے ایک شخص جو کچھ اپنے لئے پیند کر تاہے وہی دوسروں کے لئے چاہے۔ تم لوگ ہمارے اسرار کو پوشیدہ ہی رکھنااور لوگوں کو اپنی گرونوں پر مت سوار کرنا۔

ہارے ظہور امر (قائم) کا انظار کر نااور جوروایت ہاری نسبت
سے تم لوگوں تک پنچے اگر وہ قرآن کے مطابق ہو تو اُسے قبول کر لینا ادر اگر
قرآن کے مخالف ہو تو اسے رو کر دینا۔ اور اگر مشتبہ ہو (پہ نہ چلے کہ موافق
ہا مخالف ہے) تو تو قف کر ناور ہم سے دریافت کر نا تاکہ ہم اس کی تشر تک

اگرتم لوگ ہماری نفیحتوں پر عمل کرتے رہے تو ہمارے قائم کے طہور سے قبل تک جو ہمارے قائم کے طہور سے قبل تک جو بھی تم بیں سے ان نفیحتوں پر عمل کرتا ہوا مرے گا۔وہ شہید ہوگا۔اور جس نے حضر ت امام قائم کا زمانہ پالیااوران کی معیت بیں قبل ہوگیا اس کو دوشہید وں کا اجر لے گا۔اور جس نے اُن کی معیت بیں ہمارے ایک بھی د شمن کو قبل کیا اس کو بیس ۲۰ شہید وں کا اجر لے گا۔

(امالی شخ ، حار الا نوار جلد ۱۱)

دور غیبت میں آل محمر کی مو دّت پر ثابت قدم رہنے والوں کی فضیلت

ہدانی نے علی ہے ، انھوں نے اپنے والد ہے انھوں نے بسطام من مرتہ ہے انھوں نے عمر و من ثامت سے روایت کی ہے کہ حضر مند امام زین العابدین علید السلام نے ارشاد فرمایا :۔ کہ

جو مخفل قائم کے دو رغیبت میں ہماری ولایت پر ٹامب قدم رہائس کو بدرواحد کے شہیدوں بھیے ایک ہزار شہیدوں کا تواب عطا ہوگا۔

() كمال الدين ، حار الانوار جلد ١١ صغير ٣ ٢٥)

شیعہ آز مائے جائمیں گے

محمد حمیری نے اپنے والد ہے انہوں کے ایوب ن نوح ہے انہوں

عباس بن عامرے انہوں نے ربیع بن محمد سلی سے روایت کی ہے اُن کامیان

ے کہ حضرت اہام جعفر صادق علیہ السلام نے مجھ سے فرمایا :۔

خدا کی قتم تم لوگ اس طرح توڑے جاؤ کے جیسے مٹی کے یہ تن۔ جن کو جوڑا جائے تو جڑتا ہی نہیں ۔خدا کی قتم تم لوگ رگڑے جاؤ گے۔خدا کی قتم تم لوگ چھانے جاؤ گے جس طرح جمرنے میں گھہدو ں

ہے دو سرے دانے جھانے جاتے ہیں۔

(غبية طوى، حار الانوار جلد ١١، ار د وتر بمه صفحه ٢١٩)

خوا تین کی صور ت حال

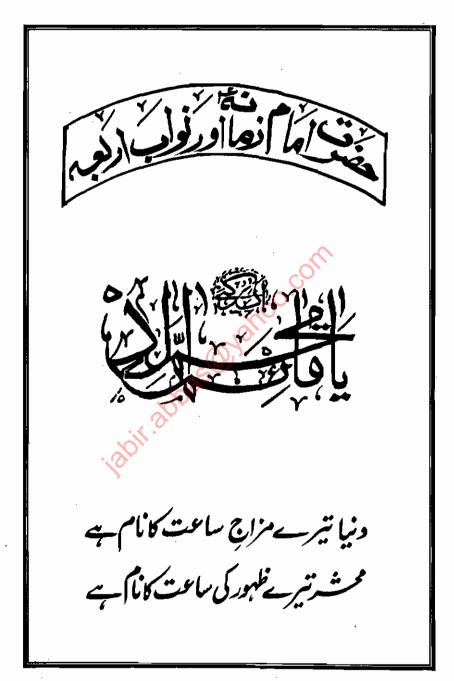
حضرت امير المو منين عليه السلام نے ارشاد فر مايا كه آخرى ذمانے بلى جوبد ترين زمانہ ہے وقت كے قريب آجائے كى ساعت بلى اليك عور تمى ظاہر يوب كى جوب پرده ہول كى اور اپنى زيب وزينت اجنى مردول پر ظاہر كريں كى وين سے عارى ہول كى فقنول بلى واخل ہول كى شموت رائى كى طرف ماكل مول كى لذ تول كے پيچے ہما گئے والى ہول كى محرمات كو طال سجھنے والى ہول كى اور ہميشہ جنم بلى رہنے والى ہول كى۔

(علائم الطهور صفحه ۱۲۲، علامات ظهور مهدى)

خوا تین پر بھالیاس میں ہوں گی

ای عمر سے روایت ہے کہ رسول اللہ نے فرمایا کہ اس وقت کے آخری زمانے کے مر و تیز گردش والی سوار یوں پر سوار جوں کے اور مجد کے دروازوں پر آئیں گے ان کی عور تین تباس میں ہوں گی لیکن جمد ہوں گی اور ا ان کے عرر وں پر اونٹ کی کو بان کی طرح بال ہوں گے۔

(علائم الطبور صفحه ۳۲۳ ، ملامات ظهور مهدى صفحه ۲۳۸)



امام زمانہ کے نظام امامت

حفرتِ قائمُ آلِ محمد علیہ السلام نے اپنے والد گرای حفرت امام حسن عسرى عليه السلام كى شمادت كے بعد اسے عمد و جليله اور منصب رفيعه ا مامت کے فرائض جو منجانب اللہ آپ کے سپر و فرمائے گئے تھے انجام ویے شروع کر دیئے مگر جو نکہ امتد اہی ہے نظام مشیت نے آپ کے تمام امور کو ایک خاص اختفاء کی حالت میں رکھا جانا عین مصلحت سمبھا۔ اس لئے ان فرائض کے متعلق تمام احکام بہت میزی حزم واحتیاط کے ساتھ انہی سفراء اور نائبین کے ذریعے انجام دیئے جاتے تھے جو حضرت امام حسن عسکر می علیہ السلام کے ز مانے بی ہے مومنین خالصین کے اغراض و مقاصد کو آپ کی خدمت میں عرض کیا کرتے تھے مگر جو نکہ ان کے عہد کر امت ہے آپ کے وقت کی و شوار ایاں مردھ گئیں تھیں اسلئے ان کے انظامات میں پہلے سے بیاد واضا فات فرمائے گئے۔ حضرت امام حسن عسكرى عليه السلام كو قت ميں تو صرف فيم خس وغيره ك ا پیے امور کی وصولی میں سنر اءاور نائبین وغیر ہ کی ضرور ت ہوا کرتی تھی۔ پھر کھی آپ کی خد مت میں مومنین کا جمع ہو نا جو نکہ مخالفین کی مخالفت اور آپ کی تکلیف وزحمت کاباعث ہوتا۔ اس ترکیب سے روک دیا گیا تھا گر آپاکے عهد میں یہ و شواری اور مجبوری روز ہر و زیر قی کرتی گئے۔

جنابِ امام حسن عسکری علیہ السلام کے وفات کے وقت ہے رویت عموماً موقوف ہوکر خاص خاص۔وہ بھی صرف چند خوش قسمت حضرات تک مخصوص و محد ودر کھی گئی تھی۔ آپ کے خاص زمانہ میں تو عام یا خاص۔ رویت کا شرف عمو ماسب کے لئے ممنوع ہو گیا اور جملہ امور کی اطلاع اور احکام د نصاب بدایت کے تمام اجراء واعلان سنر اء اور نائبین سے متعلق کردیے گئے اور ان بی حضر ات کو حضوری اور زیارت کی دولت بھی نصیب ہوتی رہی مگر جب مخالفین کی شورش اور زیادہ ہوگئی تو یہ سنراء بھی عمو مازیارت سے محروم رہنے پر مجبور کردیے گئے

جناب قائم آل محمد علیہ السلام نے اپنے والدیدر گوار حفرت امام حسن عسکری علیہ السلام کی شماوت کے بعد امامت کے فرائض سر انجام ویتا شروع کرویئے۔ عوام کی نظروں سے پوشید ور بنے کے ساتھ ساتھ کار ہدایت نمایت بی متحکم انتظام کے ساتھ انتخام یا تاریا۔

پہلے بی ہے اس گر میں و نیاکی کا چری سلطنت و مملکت نہ تھی جو مائی
ریاست و دولت ، جاہ و حشم فوج و نظر کی ضرورت ہوتی اس پر تو د نیا دالے
تابین چلے آر ہے تھے۔ یمال تو دین و ملت کی خفاظت اور لوگوں کی ہدایت کا
کام تھاجو محض مخصوص نظام کے تحت انجام پاتا رہا۔ حضر ہے گامیہ پوشیدہ نظام
ہدایت آپ کے پدر بررگوار کے زمانہ کا قائم شدہ تھا کیونکہ حضر ہ امام حسن
عسری علیہ السلام کی خدمت میں بھی لوگوں کی زیادہ آمد ور فت حکومت کو
ناگوار تھی اور آزادی کے ساتھ مو منین کی حاضری نہ ہو عتی تھی اس لئے پنھ
فاص معتد صاحبان کے ذریعے ہے کار ہدایت ہوتار ہتا تھا۔ وہی قابل اعتاد
لوگ امام حسن عسری علیہ السلام کی شمادت کے بعد امام زمانہ علیہ السلام کے

حضرت امام حسن عسری علیہ السلام کی نماز جنازہ کاوا قد اور الل تم کاواقد تو بحر ت امام زمانہ کاواقد تو بحر ت مومنین نے دیکھااور سنا تھاجواً می وقت سے حضرت امام زمانہ علیہ السلام کی امامت کے مقرب ہو گئے تھے اور اس سے قبل تھی بہت سے مقامات پر پاکباز مومنین حضرت امام زمانہ علیہ السلام کی زیارت سے مشرف جوئے تھے۔ دور در از شہرول، بسستیوں میں جا جامومنین کی آبادیال تھیں اس تمام گروہ کی ہدایت واعانت حضرت کی ذمہ داری تھی جس کی جمیل میں بہنست پہلے حضرات آئمہ کے اس وقت حکومت کی وجہ سے کافی و شواریال پیدا ہور ہی تھیں لیکن ضواکی شان کہ براے نظم و نش کے ساتھ پوشیدہ طور پر عراق بور ہی تھیں لیکن خواکی شان کہ براے نظم و نش کے ساتھ پوشیدہ طور پر عراق و جازوا یوان وغیرہ میں بیر تمام کام پورے ہوتے رہے۔

بغد اد جواسلامی مرکز مجھاجاتا تھااور جہاں ہزاروں مومنین قاموشی کی زندگی سر کررہے تھے اور ان کے علاقہ ہر جگہ کے صاحبان ایمان اپی اپنی ضرور توں سے آتے رہتے تھے وہاں ایک مقد کی ہزرگ امام زمانہ علیہ السلام کے نائب خاص سر دارِ مومنین کی مشیت سے مقرر کے گئے اور دوسرے ہوئے شہروں میں ان کے ماتحت دکا عوسنراء معین ہوئے۔

قصبات اور دیماتوں میں کارکنوں کا تقرر ہوااور تمام آباد ہوب کے حصے اس طرح تقلیم کر دیے گئے۔ کہ ایک علاقہ ایک و کیل و سفیر کی سردی میں آگیاادر سلسلہ ہملسلہ افسری ، ما تحق کی صورت میں ہے دینی فراینہ سرانجام ہونے لگاکی بھی ایک وروازے پر مومنین کا جوم نہ ہوتا جس سے زاز فاش ہونے کا خطرہ تھا۔ حاجت مندوں کی در خواسیں حضرت امام زمانہ علیہ السلام کی خدمت اقد س میں نائب کے ذریعے سے چیش ہوتی تھیں جن کی جاضری نہ تو

اس طرح ہوتی تھی کہ جب چاہیں جائیں اور نہ اس کیلئے کوئی خاص وقت مقرر تھا باہد جب مصلحت ہوتی تو اُن کو طلب کر لیا جاتا تھا اور وہ مو منین کے معرد ضات اُن کے مسائل وو گر متعلقہ امور جفرت اہام زبانہ علیہ السلام کی خدمت اقدی میں عرض کرتے تھے بھی عر ضدوں پر تحریری احکامات صادر ہوتے تھے ان تمام جو ابوں کی تقشیم نمایت احتیاط ہے ہوتی تھی اگر ذرا بھی پُتھ خطرہ ہوتا تو در خواست والوں کو دہ نائب اپنیاس بلا کر جو ابات سے مطلع فرماد ہے تھے۔

مجھی بھی دو سرے و کیل د سفیر بھی بھن ضرور توں پر بارگاہ معلیٰ میں خود حاضر ہو کر حالات عرض کرتے آور جو ابات لیکن ہر مرشبہ بید ند ہو تا تھا کہ زیارت کے بھی مشرف ہوں۔

خمس وغیرہ وامام وقت کے مالی حقوق جو منجاب خد ااور رسول معین بین ہر حلقہ سے وہاں کے سفیرو دکیل کے پاس جمع ہوتے تھے اور یہ سب رقیس بذریعیہ نائب کے حضرت امام زمانہ علیہ السلام کی خدیمت اقدیں بین پہنچائی جائی تھیں اور نام سام ان کی رسیدیں دربار امامت سے ملتی تھیں جال حرام ۔ جعلی سکے ، کھوٹے در ہم ووینار واپس کر دیئے ہواتے تھے۔ کی وہیشی کی بھی اطلاع دی جاتی تھی۔

بھر نائب وو کلاء سز اکے ذریعے سے مستحق موسنین میں یہ مال تقیم ہوتا تھا چو نکہ حکومت وقت کی طرف سے جاسوسی کا سلسلہ برابر جاری تھاجب کی نہریں دشمنوں تک پہنچنے لگیں تو صحح طور پر پہنے گا نے کی بہریں دشمنوں تک پہنچنے لگیں تو صحح طور پر پہنے گا نے کی بہریں وجی گئی کہ ان بعض محصلین کے پاس جن کے متعلق مخصیل

وصولی کا محکمہ ہے کھ آدمی مال لے کر جائیں اور وہ جاکر کمیں کہ یہ رقوم حضرت امام زمانہ علیہ السلام کی خدمت میں روانہ کرویں اوراُن کی رسیدیں منگواویں۔لیکن قبل اس کے کہ حکومت کا حکر و فریب عمل میں آئے حضرت امام زمانہ علیہ السلام کی طرف سے فرمان جارمی ہو گیا کہ کمیں کس نے آدمی سے اُس دفت تک کوئی رقم نہ لی جائے جب تک کہ وصول کنندہ کی اس شخص سے زاتی واقعے اور اس پر بور ابھر وسہ نہ ہو۔

کھر تو ہمو منین کے لباس میں بہت سے ناکار اور غدار جاجا اس کام کے لئے گشت کرنے گئے اور اچھی طرح یہ جال پھیلایا گیا گر کوئی اس دام فریب میں نہ پھندا۔ ضرورت کے وقت خاص صاحبان وکلاء، سزاء یا دوسر سے مومنین مخلصین بارگاہ امامت میں حاضر ہونا چاہج تو آن کی حاضر کی ہوشدہ طریقے سے حضرت امام زمانہ علیہ السلام کی قیام گاہ پر ہوتی رہتی۔ لیکن جس وقت مکان کے اندر حضرت امام زمانہ علیہ السلام کی تاباش کے سللہ میں واقعات پیش آئے تو اس کے بعد سرواب مقدس میں صرف ان حضرات سے ملا قات کا شرف باتی رہ گیا تھا جو نمایت رازوار کی اور احتیاط کے ساتھ امام زمانہ علیہ السلام کی خد مت اقد س میں حاضر ہوا کرتے تھے اور ہدایت حاصل کر کے علیہ السلام کی خد مت اقد س میں حاضر ہوا کرتے تھے اور ہدایت حاصل کر کے ادکام مقرر ذرائع سے مومنین تک پنچانے تھے۔ اجراء احکام و ہدایت کے انظامات کی صورت میں حسب مصلحت تغیر و تبدل رہتا تھا۔

حکومت کی طرف ہے امام زمانہ علیہ السلام کی حلاش میں جتنی زیادہ سختی پڑھتی تھی ادھرا تنی بی احتیاط ہے کام لیاجا تا تھا۔ سمر انوں کو جب بھی ملکی جھڑوں سے فرصت ملتی تو وہ حضرت امام زمانہ علیہ السلام پر قابو پانے کی کو حش میں لگ جاتے۔ یوئی ہوئی کو ششیں کی گئیں گر تدیر البی سے سب کی سب ناکام ہو گئیں حضر ت امام زمانہ علیہ السلام عوام الناس کی نگاہوں سے تو پوشیدہ ہوگئے لیکن آپ نے اپنے چند نائیین کے ذریعہ سے اپنے مومنین کے ساتھ راہلہ یر قرار رکھا

عثان بن سعيدٌ

متقی اا مال جلد دو م صفحہ ۲۰۵ فصل عشم ہے نقل کیا ہے جو حفر ت
امام زمانہ علیہ السلام کے نواب اربعہ کے بارے میں ہے اور کتاب کفایۃ
الموصدین میں تحریر ہے: فرمایا۔ الن میں اول عثان کن سعیہ عمری میں۔
حضرت امام زمانہ علیہ السلام ان کو بہت قابل عثاد سیجھتے تے اور انہیں امانت
دار قرار دیتے تھے۔ وہ حضرت امام حسن عسری علیہ السلام اور حضرت امام
علی نقی علیہ السلام کے بھی معتند تھے اور الن کی زندگیوں میں الن کے امور کے
وکیل تھے اور گروہ اسدی کے جدِ اعلیٰ جعفر عمری سے منسوب تھے۔ ان کورد غن
فروش کئی کما جاتا تھا اور انہوں نے یہ کام بعض مصلحوں کی ما پر اختیار کیا تھاوہ
قید مرتح تھے۔ اپنے کار سفارت کو دشمنوں سے ہوشیدہ رکھنے کی غرض سے وہ
تید مرتح تھے۔ اپنے کار سفارت کو دشمنوں سے ہوشیدہ رکھنے کی غرض سے وہ
لیکے لے جاتے تھے اور شیعہ جو اموال حضرت امام حسن عسکری علیہ السلام کے
لیکے لے جاتے تھے ان کے حوالے کر ویتے تھے اور وہ ان اموال کو اپنی تجار سے
میں لگا لیتے تھے اور بھر خدمت امام علیہ السلام میں پہنچاد سے تھے۔
اس میں اگا لیتے تھے اور بھر خدمت امام علیہ السلام میں پہنچاد سے تھے۔
اس میں اگا لیتے تھے اور کیم خدمت امام علیہ السلام میں پہنچاد سے تھے۔
اس میں اس کا لیتے تھے اور وہ این اس کا تی جو علائے شیعہ میں سے ہیں ان سے روایت ہے کہ
اس میں اس کا تی جو علائے شیعہ میں سے ہیں ان سے روایت ہے کہ
اس میں اس کا تھے اور وہ این اس کا تی جو علائے شیعہ میں سے ہیں ان سے روایت ہے کہ

میں نے ایک روز خدمتِ حضرت امامِ علی نقی علیہ السلام میں باریاب ہونے کا شرف حاصل کیا میں نے عرض کیا : اے میرے مولا اور سیائہ میرے لئے یہ ہر وقت ممکن نہیں ہے کہ آپ کی خدمت میں آنے کا شرف حاصل کر سکوں۔ فرمائے اس صورت میں کس کی بات مانوں اور اطاعت کروں ؟

امام علیہ السلام نے ارشاد فرمایا: بیا او عمر وابین معتر اور تقد فرد ہیں

یہ تم ہے جو کچھ کتا ہے میری طرف سے کتا ہے اور جو پھے تم تک پہنچا تا ہے وہ
میری طرف سے پہنچا تا ہے۔ پھر جب حضرت امام علی نتی علیہ السلام نے و نیا
ہے ر طلت فرمائی تو عمل ایک روز امام حسن عسکری علیہ السلام کی خدمت میں
حاضر ہوااور میں نے ان سے وہی عرض کیا جو ان کے پدر بررگوار سے عرض
کیا تھا۔ فرمانے لگے کہ یہ ابو عمر و تقد اور امین فرد ہیں اور میری نظر میں بھی تقد
ہیں اور یہ میری زندگی میں یا و فات کے بعد جو کچھ تم سے کسیں وہ میری جانب
ہیں اور یہ میری زندگی میں یا و فات کے بعد جو کچھ تم سے کسیں وہ میری جانب
ہیں اور یہ میری زندگی میں یا و فات کے بعد جو کچھ تم سے کسیں وہ میری جانب

علامہ مجلسی علیہ رحمۃ نے حار الانوار میں لکھا ہے کہ شیعہ موقعین کی ایک جماعت حفر ت امام حن ایک جماعت حفر ت امام حن عکر ی علیہ السلام کی خد مت میں شر فیاب ہوئی۔وہ لوگ امام کے لئے اموال کے کر آئے تھے۔ پس امام علیہ السلام نے فرمایا:اے عثمان اوق تھے امال خداکا مین اوروکیل ہے۔ جا۔اور جو مال یہ اہل یمن لائے جیں اے وصول کر۔اہل یمن نوروکیل ہے۔ جا۔اور جو مال یہ اہل یمن لائے جیں اے وصول کر۔اہل یمن نے عرض کیا: مولا!خداکی قتم۔ عثمان آپ کے ہر گزیدہ شیعوں میں سے ہیں اوران کی جو عرت و منزلت ہماری نظر میں تھی آپ کے ہر گزیدہ شیعوں میں سے ہیں اوران کی جو عرت و منزلت ہماری نظر میں تھی آپ کے اس عمل سے اور ھ

میں۔امام نے فرمایا : بے شک گواہ رہنا کہ عثان ٹن عمری میر او کیل ہے اور اس کالڑ کا محمد من عثان میرے بیچ ممد کا کاو کیل ہے۔

قاری تر بہ کہ حفر تاام من مسکری علیہ السلام کی شادت کے بعد بطاہر عثان بن سعید آنجناب کی تجینر و تحقین میں مشغول ہوئے اور حفر ت صاحب الامر علیہ السلام نے ان کی وفات کے بعد ان کو وکالت و نیات کے جلیل منصب پر فائز کیا اور شیعوں کے سوالات کے جو لمبات ان کے توسط کے جلیل منصب پر فائز کیا اور شیعوں کے سوالات کے جو لمبات ان کے توسط سے شیعوں تک پہنچاتے تھے۔ اور سم امام کے جو اموال تھے وہ ان کے حوالے کے جاتے تھے اور حفر ت صاحب الامر علیہ السلام کے وجو دکی ہرکت کے نتیج میں ان سے غیبت سے متعلق بھیب و غریب امور دیکھنے میں آنے تھے۔ لوگ جو میں ان کو دینا چا ہے تھے ان کے جلال و حرام اور مقد ار کے بارے میں وہ وصولیا لی سے قبل اطلاع ان کو دیتے تھے اور سے کی حال حضر ت کے باتی و کیلوں اور طرف سے اس کی اطلاع ان کو دیتے تھے۔ یکی حال حضر ت کے باتی و کیلوں اور طرف سے اس کی اطلاع ان کو دیتے تھے۔ یکی حال حضر ت کے باتی و کیلوں اور سفیروں کا تھا کہ آنجناب کی جانب سے دلائل و کر امت کے ساتھ وہ فر شِ نیات اواکر تے تھے۔

محدین عثان بن سعیدٌ

حفرت امامِ حن عسری علیہ السلام نے ان کی اور ان کے والد کی توثیق فرمائی تھی اور اپ شیعوں کو اطلاع وی تھی کہ وہ میرے بینے مهدی کے وکیوں میں سے ہیں۔ جب ان کے والد عثان بن سعیدٌ عمری کی وفات کاوقت قریب آیا تو حفزت صاحب الامر علیہ السلام کی طرف سے ایک تو قیع مبارک

باہر آئی جوان کے والد کی وفات کے سلسلہ میں تعزیت نامہ کی حیثیت رکھتی تھی اور اس میں یہ تحریر تھا کہ وہ اپنے والد کی جگہ ولی خدا کی جانب سے منصب نیامت پر فائز ہیں۔ توقیع کی عبارت شخ صدوق علیہ رحمۃ اور ان ووسر سے لوگوں کے مطابق یہ تھی۔

یقیا ہم خدا کیلے ہیں اور ہماری بازگشت خداہی کی جانب ہے ہم نے اس امر کو تشکیم کرلیا ہے اور ہم اس کی قضا ہے راضی ہیں۔ تمہارے والد نے سعادت اور نیک بیختی کے ساتھ زندگی گذاری اور اس کے بعد اس طالت میں فوت ہوئے کے وہ ہمارے بہندیدہ و محبوب تنھے۔ خداان ہر رحمت کرےاور ا نہیں اولیاء و سادات و سوالیان ہے ملحق کر ہے۔اس لیے کہ وہ ہمیشہ آئمہ 'وین کے کاموں میں ان چیزوں کے لئے معم وف رہتے تھے جو خد ااور آئمہ و بن کی مار گاہ میںاس کے تقرب کا باعث جوتی تھیں۔ خدا تہمارے جیرہ کو شگفتہ کرے۔اور ان کی (تمہارے والد) لغز شول کرمیاف کرے اور تمہاری جز ااور تمہارے اجر کو زماوہ کرے۔ان کی مصیب کے مالانے میں تمہیں صر عطا کرے۔ خدامہیں اپنی رحت ہے مسرور کرے اور ان کی آبام گاہ کور حت ہے نوازے۔ تہارے باب کے کمال سعادت میں ہے ایک بات رہے کہ تہارے جیہا فرز نداشیں عطاکیا گیاتم ان کے مقام و منصب پر فائز ہو۔ ان کے خلیفہ و جانشین ہو۔ تہیں جائے کہ ان کے لئے ایسال تواب اور طلب مغفرت کرو۔ ادر میں کتا ہوں کہ حمد خدا کر و کہ نیک طینت شیعوں کے دل تمارے مقام اور منزلت سے اور جو کچھ خدانے تہمیں در ایت کیاہے اس سے مسرور و شاد مال ر ہیں۔ برور گار تماری مدو کرے اور تہیں مضبوط اور متحکم کرے اور تو نیق

خير عطا فرمائے۔

علامہ کلینی ہے منول ہے کہ توقع شریف حضرت صاحب الله م علیہ السلام کے طرز تحریم باہر آئی اس پر لکھا تھا:۔

کہ محکر من عثمان خدا اس کے والدے خوش ہو۔ میر آمعتدے اور اس کا نوشتہ ہے۔ امام کے بہت سے دلا کل اور معجزات شیعوں کے واسطے ان سے خلاہر ہوتے تھے وہ زمانہ نیامت و سفارت میں حضر ت جمت کی طرف سے شیعوں کے مرجع تھے۔

ام کلثوم دخر سخری عثال سے راویت ہے کہ میرے والد نے فقہ کے موضوع پر چند کتابی تصنیف کیں تصنیف کیں تصنیف کیں تصنیف کیں تصنیف کیں تصنیف کیں تصنیف کی مادرج معلومات انہوں نے حضرت امام حسن عسکری علیہ السلام، حضرت صاحب الامر علیہ السلام اور اسپنے والد سے حاصل کی تصین انہوں نے وہ سے کتابی و فات کے وقت جناب حسین میں دوج کے حوالے کر دی تصین۔

یخ صدوق نے اپنی سند کے ساتھ محد من عنان کن سید ہے روایت کی ہے کہ خدا کی قتم ہر سال موسم مج میں حضرت امام زمانہ علیہ السام تشریف لاتے ہیں محلوق خدا مھی ان کو دیکھتے ہیں اور مخلوق خدا مھی ان کو دیکھتے ہیں اور مخلوق خدا مھی ان کو دیکھتے ہیں اور مخلوق خدا مھی ان کو دیکھتے ہیں۔

ایک اور روایت میں جناب صدوق سے بی منقول ہے کہ محمد من عنان اس سعید سے بوچھا کہ تم نے حضرت صاحب الامر علیہ السلام کو ویکھا ہے؟ انہوں نے جواب ویاباں ویکھا ہے اور آخری مرتبہ خانہ خدامیں ویکھا ہے ؟ انہوں نے جواب ویاباں ویکھا ہے انہوں نے ما و عدتنی "اور اس حالت میں کہ وہ فرمار ہے تھے" الملھم انہوں نے ما و عدتنی "اور

بچر متجاريس و يكهاكه وه فرمار ب تح" اللهم انتقم بي اعدائي"

جناب حسين ان روح نو ببختي م

حضرت صاحب الامر علیہ السلام کے سفیروں اور وکیلوں بیں سے تئیسر سے جناب حمین این روح بیں جو جناب محمیر ان عثال کے زمانہ سفارت بیں ان کی جانب سے ان کے حکم سے بعض امور کے مہتم تھے۔ محمیر ان عثال کے مومنوں میں سے چندافراد معتمد اور موثق تھے ان میں سے ایک حسین این روح کھی تھے۔

روحؓ کے لئے یر آمہ ہوئی۔

توقیع مبارک کے جملوں کا ترجمہ

ہم اے لینی حیین این رو آگو جانتے ہیں خدااے ہم سے متعارف کرائے اس کو عالم معاوے اس کی اپنی تو فق سے مدد کرے ہم اس کے مکتوب سے باخر ہوئے۔ ہم اس کی وینداری کو سے باخر ہوئے۔ ہم اس کی وینداری کو موثق اور قامل اعمال سجھتے ہیں بھیا جس نے ہمیں خوشحال کیا ہے وہ بلد مرتبہ ہے یہ ورگاراس کے مرحمیتام میں اضافہ فرمائے۔

اس ہزرگوار کے حالات بہت تکھے ہیں کہ بغداد میں اس طرح تقیہ کرتا تھااور مخالفین سے ایباسلوک کی تھا یمال تک کہ دوسرے مسلک کے لوگ کہتے تھے کہ وہ ہم میں سے ہے اور اس پر فخر کرتے تھے چاروں نداہب کے افراد کا خیال تھاکہ حسین این روٹ ان سے تعلق رکھتے تھے۔

جناب ابی الحسن علی بن محمد سمری

جب جناب حیین این روح کا وقت وفات آیا تو انہوں نے حضرت امام زمانہ علیہ السلام کے تھم کے مطابق انی الحن بن مجمد سمری کو اپنا قائم مقام قرار دیا۔ کرامتوں معجووں اور مسائل کے جواب کو حضرت جت علیہ السلام کے ہاتھ سے جاری کرتے تھے اور شیعہ آنجناب کے تھم کی تقییل میں اموال ان کے ہیر دکرتے تھے اور ان سے خواہش کرتے تھے کہ کی کو اپنی جگہ مٹھا کمیں اور

امر نیامت ان کے سپر د کر دیں وہ جواب میں کہتے ہیں خدا کاایک امر ہے۔ چاہیے کہ وہ پورا ہو۔ یعنی غیبت کمرای واقع ہو جائے۔

ایک اور روایت میں شخ صدوق علیہ رحمۃ نے تحریر کیا ہے کہ جب علی من محمد سمری کاوقت و فات آیا تو شیعہ ان کے پاس کے اور ان سے بوچھا کہ آپ کے بعد وکیل امور کون ہوگا اور آپ کی جگہ کون شخص گا انہوں نے ان کے جواب میں کما کہ جمعے اجازت نہیں ہے کہ اس سلسلہ میں کوئی وصیت کروں۔ جواب میں کما کہ جمعے اجازت نہیں ہے کہ اس سلسلہ میں کوئی وصیت کروں۔ (نامین امام صفحہ ۲۳۲۱۸)

الم مدى كى زيارت كرنے والے

ایے لوگوں کی تعداد ہے جنہوں نے حضرت امام ممدی علیہ السلام کی زیارت کی ہے یاان سے بات چیت کاشر ف حاصل کیا ہے۔ یمال صرف ان لوگوں کی فہرست پیش کر تا مقصود ہے جنہوں نے حضرت امام ممدی علیہ السلام کے والد گرامی قدر حضرت امام حسن عمری علیہ السلام کی زندگی میں یاان کی وفات کے بعد قریبی دور میں حضرت امام ممدی علیہ السلام سے ملی قات کی بعد قریبی دور میں حضرت امام ممدی علیہ السلام سے ما قات کی یاان کی زیارت سے مشرف ہوئے۔ ان لوگوں کے اساء گرامی ہیں :

ارار اہیم این ادریس

۲۔ ایر اہیم بن محمد بن احمد انصار کا

سبر ایرا جیم بن محمد تیمریزی اور ان کے ساتھ دوسرے انتالیس اشخاص ۱۲ ۔ اہم اہیم بن محمد بن فارس نیشا پوری

۵۔ابراہیم بن محمد فرح زقی ۲_ابراہیم بن میزیار ۷ ـ این اخت الی بحر عطار صو فی ٨ _ اين بادشاله اصفهاني **9**_ائن المجمى يمانى • ا ـ این خال شنروری اا۔ان القاسم بن مو کی (امل رے) ٢ ا_ابوالادمان ۳ ارابو ثابت (الل حرو) ۳ ا_ابو جعفرا حول ہمدانی ۵ ا۔ ابو جعفر الر فا (اہل رے) ۲۱_ایوالحین و سوری Oir aby ۷ ارابوالحن حیینی ٨ ١ ـ ابوالحن ضراب اصنهاني ۹ ا_ایوالحن عمری ۲۰ ـ ابوالحن این کثیر نود بخستی ۲۱_ابوراج الحمامي ۲۲_ابوالرجاالمصري ۳۳_ابوعیدالله توری ۲۳ ـ ابو عبدالله جیند ی بغد اد ی

۲۵ ـ ابو عبدالله بن صالح ٢٧_الوعيداللدين فروخ اصفهاني ۲۷_ایوعیدالله کندی بغدادی ۲۸_ ابو علی بن مظهر ۹ و ابوعلی تملی ٣٠_ابوغانم خادم ا ۳_ابوالقاسم جلیسی بغدادی ۲ ۳ _ ابوالقاسم بن د میس بغد اد ی ۳ ۳_ابوالقاسم و حی ۳ سر ابو محمد نمالی ۵ ۳_ابو محمه د علجی 3011.310K ۲ سروی ۲ سرابو محمر و جناي نصيبي ٣٨ _ الو محمر بن بارون (امل ر ١) ۹ ۳-ابوبارون ٠ ٧ _ ابوالهثيم انباري اسم ابوعلی احمد بن ایر اجیم بن اور لیس • ۴ _ احمر بن ابر اجيم بن مخلد ۳۳ زاحرین افی روح -۳۳ یا یو غالب احمد بن احمد بن محمد بن سلیمان زراری

۵ ۲۰ احمد بن اسحاق بن سعد اشعري ۲ ۲ راحمه بن حسن بغد او ی ۷ ۲ _ احمد ن خسن بن الى صالح نجدى ۴۸ یا دری هن بن احرکات ۹ ۳ ـ احمد دینوری ۵۰ ـ احمد بن عبدالله ۵۱_احرین عبدالله ماشی ۵۲ _ احمد بن سوره ۵۳- ابوالطيب الكون محمر بن بلة ۴ ۵_احمد بن محمد سر اج و پنوري ۵۵ پياليس افراد . ۲۵_ازدي ۷ ۵ ـ اسحاق کاتب بن نوضت ۵۸_ابوسل اساعیل بن علی نوبختی ٥٩- ١م كلوم بدست إلى جعفرين عثان عرى ۲۰ ـ يدر (فادم) ۲۱ ـ ملالي بيند او ي ۲۲_ابو علی خزران کی کنیر ۲۳_ایوالحن بن د جناء کے جد ۲۳_ جعفر این احمه

۲۵ په جعفرين حمد ان ۲۲_جعفر كذاب (نواب) ۲۷_ جعفرین عمر ۲۸_ جعفري (ابل يمن) ۲۹_ایراهیم من محمر تبریزی کی جماعت (۱۳۹ اشخاص) ٠٠ ـ اتمرين عبدالله باغي (عياس) كي جماعت (٩ ٣ اشخاص) ا ۷۔ محمد بن ابولقاسم علوی عقیقی کی جماعت تقریباً ۱۴۴۰ اشخاص ۲۷ ـ عاجز ببغد اد ی ۲۵ ـ حسن بن جعفر قرو ن م 2 _ حسن م حيين اسباب آبادي ۵۷ ـ حسن بن عبدالله تميمي زيدي ۲۷ ـ حن بن فضل بن يزيد ۷ ۷ ۔ حسن بن هر فتی ۵۸ _ ابو محمر حسن بن و جناء نصبيبي 9 کے حسن بن وطاقہ صید لانی ۰ ۸ _ حسن بن بارون دینوری ۸۱ مین کن یعتوب فمی ۸۲ حسین بن روح نوبه خدیش (نائب سوم) ۸۳_حسین بن بهدانی ۸۴ ـ حسين بن على بن محمد بغد اد ي

۸۵ - حسین بن محمداشعری ۸۷ حصيني الل ابواز ۷ ۸ _ جناب حجمه خانون سلام الله عليها ۸۸ _ ابوالحن خفرين محمه ۹ ۸ ـ د اشد اسد آماد ی ۹۰_ایک ایرانی غلام 91_ قابس کے دو آد می ۹۳_زبري ۴ و زیدان (اہل صمیرہ) ٩٥_ سعدان عيدالله في ۹۲_سنان موصلی ۷ ۹ _ شمشاطی (امل یمن) ۹۸ _ اہل مرومیں سے ایک مخص (صاحب الالف ریار) 9 9_اہل رے میں ہے ایک شخص (صاحب الحصاۃ) • • ا الل بغداد میں ہے ایک شخص (صاحب الصر ۃ المختومہ) ا • ا۔ اہل بغد اد میں ہے ایک مخض (صاحب الفراء) ۱۰۲۔ اہل مصر میں سے ایک فخض (صاحب مال) ١٠٣ـ ابل مرومين ہے ايک مخص (صاحب التر فعدُّ البيضة) ۱۰۴-اہل مصر میں سے ایک شخص (صاحب مولودین)

۵ • ا به غلام ابو نصر ظریف ۲۰۱- احمرین حسن ماد را فی کاغلام ٤٠١ عبدالله سفياني ۸ • ۱ ـ عبدالله سوري ۱۰۹_ابو عمر عثان بن سعید (نائب اول) ١١٠ عقيد (غلام) ااا۔علان کلینی ۱۱۲ علی این ایر اجیم بن میزیار ۱۱۳۰ علی بن اخمه فکورینی م اا_ابوالحن على بن حن يماني ۱۱۵ علی بن الحسین بن موسی بایولیه فتی ۱۱۷_علی این محد (الل رہے) ے اا۔ علی این محمد بن اسحاق آتھ ۱۱۸ ایوالحن علی ن محمه سمری (نائب چهارم) ۱۱۹_ابو طاہر علی بن کیجیٰ رازی ۱۲۰ یم وایوازی ا ۱۲ ا ـ ابو سعيد غانم ين سعيد ہندي ۱۲۲ فضل بن يزيدامل يمن ۱۲۳_ قاسم بن علاء (ابل آذر مائجان) ۱۲۴ قاسم بن مو کیٰ (اہل رہے)

۱۲۵_کامل بن امراہیم مدنی ۲۷ا ـ ماريه (کنيز) ۷ ۲۱_ محمد نن امر اجيم بن مهزيار ۱۲۸_ مجروح فاری ۱۲۹_محمران الي عبدالله كوفي • ۱۳ - محمد بن احمد ا ٣١_الا جعفر محمد اين احمد ۳۲ ایالونیم محمر ن احمر انصاری اور کچھ لوگ ۳ ۳ ا_ محمر بن احمر بن جعفر قطان ۳ ۱۳ اوعلی محرانن احد محود کی ۵ ۳ ا براین انسحاق کمی ۲ ۱۳ ـ محمرین اساعیل بن مو میٰ بن جعفر 4 m ا_محمر بن ابوب بن نوح ۸ ۱۳ ۸ ایدانوالحسین محمد بن جعفر حمیر ی ۹ ۱۳ مرین حسن بغد او ی • ۱۳۰ محمرین حسن صمرنی ام الم محد بن حسن بن عبدالله تميي ۳۲ ا_محمدین حصین مروی ۳ ۱۳ میرین شاذان کاملی ۳ م ۱ مر محمد این شاذ ان نعیمی (الل نیشا بور)

۵ ۱۴۳ و محمد بن جعفر م ٧ سمار نحدين صالح ۸ ۱۴۸ و محمر بن صالح بن علی بن محمد بن قنیر ۱۴۹ - محدین عباس قصری ۴۶ [محمر بن شعيب بن صالح (الم نيثابور) • ١٥ - محمرين عبد الله الحميد ا ۵ ا ۔ محمد کن عبید اللہ فتی ۵۲ اراد جعفر مجمد بن عثان سعيد (نائب دوم) ۱۵۳ محمرین علی اسود داوری ۳ ۱۵ _ محمد بن على عثم خاني ۵۵۱_محمرین کشمر وجدانی ۱۵۲ محرین فمی ۷ ۱۵ اوالحسین محمرین محمرین خلف ۱۵۸ محرن محركليني (المرر) 9 ۱۵ مرين معاونه اين ڪيم ۲۰ اے محمرین ہارون بن عمر ان ہمدانی ۱۲۱ یے محمرین بزواد ۱۶۳ م واس بن علي ۱۲۲_م واس قزوی ۱۲۴ مرور طباع ١٦٥_ابوغالب زراري كالمصاحب ۲۲۱_معادیه بن حکیم

۱۶۷- نیم خاد مه امام حسن عسکری علیه السلام ۱۶۸- نیل (امل بغد اد) ۱۲۹- نفرین صباح ۱۶۰- قم اور مضافات قم کاایک د فد ۱۲۱- بارون قبزاز بغد ادی ۱۲۷- بارون بن مو می بن فرات ۱۲۷- بیتقوب این منقوش ۱۲۷- بیتقوب این منقوش ۱۲۷- بیتقوب این منقوش

یہ سارے اساء ارشادِ مفید، غیبت طوعی، المجالس السنی، تبعرہ الولی، منتخب الاثر حار الاثوار، سفینہ الحار، کمال الدین، یتابید کے المود ق، الزام الناصب اور الخرائج والجرائح سے لئے گئے ہیں جو تفصیلی واقعات کے ساتھ ان کتابوں میں نہ کور ہیں۔ اگر غیبت کمرای کے طویل عمد میں زیارت کرنے والوں کے نام مبدی علیہ جمع کئے جائیں تو وہ ہزاروں کی تعداد میں ہوں گے۔ حضرت امام ممدی علیہ السلام کے سلسلہ میں یہ تھی ایک خدائی منصوبہ تھا کہ مختلف عمد میں لوگوں سے ملا قاتیں ہوتی رہیں تاکہ آپ کے وجود مبارک کوافسانوی اور تخیلاتی قرارنہ دیا ماسکے۔

(علامات ظهورمهدي صفحه ۳۲۲۷)

امام زمانه کی زیارت کرنے والے مخصوص مومنین امام قدوری نے یتابیع المودۃ میں ایک علیحدہ باب اس مضمون کا قائم کیاہے جس کے عنوان کواس عبارت کے ساتھ آغاز فرماتے ہیں :

اس میان میں کہ حضرت امام حسن عسکری علیہ السلام نے اپنے فرزیم ولید جناب قائم علیہ السلام کواپنے احباب مخصوصین کو دکھایا اور میدار شاد فرمایا کہ میرے بعد یہ فرزیم لیدواقعات ہوگا۔ اس سلسلے میں چند مزیدواقعات

آپ کے خادم الی غائم کامیان ہے کہ حضرت امام حسن عسری علیہ السلام کو جب فرزیر ارجمند عطاکیا تو آب اس کانام محمدر کھااور ولادت سے تین دن بعد اپنے آس بار و جگر کو باہر لا کر اپنے آس باب کود کھایا اور ارشاد فرمایا کہ مارے بعد تمہارای امام ہے اور ہمارا خلیفہ تم پر ۔۔ اور بھارای علیہ السلام ہے جس کے انظار میں تمہاری گرد نیس جھی رہیں گی اور جس طرح زمین اس وقت ظلم وجورہے پر ہو جائے گی اس طرح یہ تمام دنیا کو عدل و انسان ہے ہم

پیش کرنے کی شعادت جا ہتا ہوں۔

چالیس افراد نے زیارت کی

جعفر ان املک ناقل ہیں کہ ہم سے معاویہ ان حکیم و محمہ ان ایوب اور محمہ ان عثان نے میان کیا کہ ہم لوگ جناب حضرت امام حسن عسکری علیہ السلام کی خدمت اقد س میں حاضر ہوئے ہم لوگ تعداد میں چالیس تھے تو آپ نے اپنے فرزید دلید کو ہم لوگوں کو و کھاکر کہاکہ ہمارے بعد میں تسمارے امام

ویں گے۔

ہیں اور تم پر یکی حارا خلیفہ ہے۔ اننی کی اطاعت انتقیار کرنا اور میرے بعد اختلاف میں نہ پڑنا اور لمینا وین وایمان کھو کر معرض ہلاکت میں نہ پڑنا۔ اگر چہ ان کو آج کے بعد بھرتم نہ ویکھ سکو گے۔

حر ان القلانسي كاميان

حمدان الفلائی کامیان ہے کہ میں نے محمد این عثان العری ہے ہو چھا کہ حصرت امام حسن عمری علیہ السلام کا تو انقال ہو گیا ؟۔ انہوں نے جو اب دیا : ہاں۔ آپ نے البار صلت فرمائی۔ گر ہم لوگوں میں آپ نے اپنا وصی ضرور چھوڑا ہے اور اس کی بیعت ہم لوگوں کی گردن پر باتی ہے۔ (ینا بیع)

عمر و اہوازی کا میان ہے کہ جناب حضرت امامِ حسن عسکری علیہ السلام نے اپنے فرزند کو د کھلا کر مجھ سے ارشاد فزمایا کہ سمی میرے بعد تمہار ا امام ہے۔

خادم فارسی نے زیارت کی

خادم فاری کامیان ہے کہ میں در دولت پر حاضر تھا کہ ایک کنر اپنا ہم ایک کنر اپنا ہم حول پر کوئی چھی ہوئی چیز لے کر اندر سے باہر نگل حضرت امام حسن عسکری علیہ السلام نے ارشاد فرمایا کہ جو چیز تیرے ہاتھ پر ہے اسے دکھلا دے پس اس نے دکھلا دیا تو میں نے دیکھا کہ اس کے ہاتھوں پر ایک نمایت حسین

گورا چیہ ہے۔ حضرت امام حسن عسکری علیہ السلام نے فرمایا کہ میرے بعد تنمارے امام ہیں اس دن کے بعد ہیں نے پھر بھی بھی انہیں نہیں دیکھا۔
محمد بن اسلحیل ابن موکی الکاظم علیہ السلام جو بدنسی کاظم ہیں سب سے بزرگ اور سن رسیدہ تھے بیان کرتے ہیں کہ جناب امام حسن عیسکری علیہ السلام کے صاحبزادے کو دیکھا اور ان کے نزدیک اس صاحبزادے کی برای قدر تھی۔

کامل نے زیارت کی

کامل این ایر انہم مدنی کامیان ہے کہ میں حضرت ابد محمد امام حسن عسکری علیہ السلام کی خدمت میں حاضر ہوا تو محل سرا پر پر دہ پڑا ہوا تھا۔ ہوا جو آئی تو وہ کپڑاا کیک طرف سے کھل گیا ہے میں نے دیکھا کہ ایک ماہ پارہ چہ ماو کامل کی طرح موجود ہے آپ نے ارشاد فرمایا: اے کامل! تیری آرزو پوری ہوگئی کی میرے بعد ججت ہے۔

ار اہیم بن اور ایس کا بیان ہے کہ میں نے جناب مہدی علیہ السلام کو حضر ت امام حسن عسکری علیہ السلام کی شماد ت کے بعد ویکھا گیاس وقت طفلِ صغیر الس شے اور میں نے آپ کے دست مطمر اور فرقِ مبارک کا ہوسہ لیا۔
یعقوب ابن مستفو س کا بیان ہے کہ میں حضر ت ابو محمد امام حسن عسکری علیہ السلام کی خدمت اقد س میں حاضر ہو ااور بو چھا کہ آپ کے بعد امر امامت کس سے متعلق ہوگایہ من کر آپ نے فرمایا یہ پر وہ اٹھاد و۔ میں نے پر وہ اٹھایا تو ایک طفل صغیر السن ہم آمد ہوا اور جناب امام حسن عسکری علیہ السلام کے ذائو مبارک پر بیٹھ گیا۔ آپ نے جھ کو مخاطب کر کے فرمایا کہ یہ میرے بعد

تمهارا امام ہے بھر آپ نے اس بچے سے ارشاد فرمایا کہ اچھا اب گھر بیلے جاؤ چنانچہ وہ تشریف لے گیا اور ہیں اس کو جاتے ہوئے اپنی آئکھوں سے ویکھارہا۔ جب وہ اندر چلاگیا تو پھر آپ نے مجھ سے ارشاد فرمایا کہ اب تم گھر میں جاکر ویکھو۔ میں گھر میں گیا توکی کو وہاں نہیں پایا۔

سفراء ونائبین و حاجزین کے حالات

اگر چہ عزاء و حاجزین اور نائبین وغیر ہ کے انظامات جناب حضرت امام علی نقی علیہ السلام علی کے زمانے سے تھوڑے تھوڑے شروع تھے اور حضرت امام حسن عسکری علیہ البلام کے زمانے میں بیدا نظام کامل ہو کیا تھے۔ یہ حضرات رقوم وصول کر کے خدمت امام میں پنجادیا کرتے تھے۔ جناب امام ز مانہ علیہ السلام کے عہد میں تھی اگر چہ کی خدمات ان حضر ات کے متعلق رہیں گروصولی خمس کی ضرور توں کے ساتھ ہی اور تمام امور کی اطلاع واجراء کا کا فی اضافہ فرمادیا گیا تھا۔ جس کی کوئی ادر دجہ سوائے اس کے نہیں ہو عتی تھی کہ ردئیت ممنوع ہو جانے کے باعث ہدایت عامہ اکتانا 🏖 یفت اور دگر ضر دریات کے اجراءوا جاح کی کوئی دو سری سبیل بغیر ان انتظامات کے نہیں تھی۔اس وقت برے برے شہروں میں دو دو تمین تمین ملحہ اس ہے بھی زیادہ سنراء مقرر فرمائے گئے اور قریوں اور قصبوں میں ایک ایک ماایک ہے زائد ان سفر اء کے نائبین مقر ر کئے گئے ادر قر بوں اور قصبوں ہے بھی چھو ٹی چھوٹی بستیوں میں تائین سزاء کی مانحی میں ایک کے روے۔ ماج مر لی کااسم فاعل ہے جس کے معانی حد فاضل ہونے نے ہیں اور جازا ذریعہ، وسلہ

اور واسطہ کے بھی ہو سے جی بیں اور یہاں بلور جازا نبی معنوں بیں مستعمل ہے۔

ہیت کا ایک چھوٹی چھوٹی ہمتیاں بھی تھیں جہاں مومنین کی تعداد ہیت کم تھی
اور باعتبارِ شار کے وہاں ایک علیمدہ سفیر نائب یا حاجز مقرر کئے جانے کی مصلحت
نہیں تھی اس لئے ایسے وہ وہ تین تین چار چار مقامات کو آبادی قرار دے کر
ایک وکیل سفیر یا حاجز کے سپر د فرمادیا گیا پھر ان سفر اء نائبین اور سفر اء حاجزین
اور وکلاء پروہ مقد س راس الرئیس مقرر کیا گیا جو شمر بغد اد بیس بالا ستقلال مقیم
ربینا تھا اور دہاں کا مقامی تھا۔ یہ تمام حضر ات اپنے تمام مطالب و مقاصد کو اس
اور دہ اپنی بی معرفت تمام معروضات مومنین پر آپ ہے تھم واحکام حاصل
کرتا تھا۔

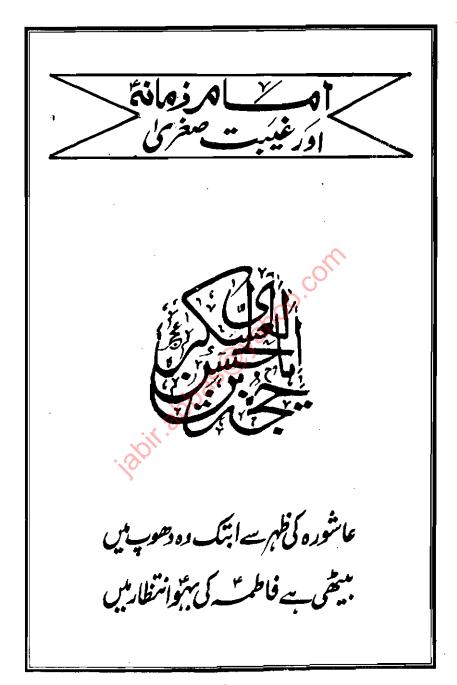
اموال خمس کے جمع کر کے سے بھی سمی طریقے تھے تکر بعض عالات و واقعات کے دیکھنے سے بھی معلوم ہو تا ہے کہ بعض حضرات نے بلاواسطہ نوائٹن و سنراء دغیر ہ کے اپنے معروضات کے جواب پائے ہیں۔

دور غیبت میں حضرت خضر کی امام زمانہ سے ملا قات مظفر علوی نے ان عیا ثی ہے انہوں نے اپ والدے انہوں نے جعفر بن احمدے انہوں نے ابن فضال سے انہوں نے حضرت امامِ علی علیہ السلام سے روایت نقل کی ہے۔ آپ نے ارشاد فرمایا :

حضرت خصر علیہ السلام نے آبِ حیات پیااور وہ زندہ ہیں اور حمیں مریں گے جب تک کہ صور بھو نکاجائے گا۔وہ مرامر آیا کرتے ہیں اور ہمیں سلام کرتے ہیں، ہم ان کی آواز سنتے ہیں، ان کو دیکھتے نہیں۔ تم لوگوں پر لازم ہے کہ جب ان کا تذکرہ کرو تو علیہ السلام کو۔وہ ج کے موقع پر بھی جاتے ہیں اور تمام مناسک بنج جالاتے ہیں۔مقام عرفہ پرو قوف کرتے ہیں اور مومنین کی دعاؤں پر آمین کہتے ہیں اوران ہی کے ذریعے سے اللہ تعالی ہمارے قائم علیہ السلام کے زمانہ غیبت میں ان کاول بھلائے گااور تھائی میں وہ ان سے ملا قات کرتے رہیں گے۔

(ا کمال الدین ، حار الانوار جلد ۱۲، ار دوتر جمه صفحه ۲۳)





امام زمانهٔ کی صحت ِامامت پر دلیلِ

کتاب "اعلام الوری" میں مرقوم ہے کہ وہ چیز جو حضرت امام زمانہ
علیہ السلام کی صحت امامت کی دلیل ہے وہ یہ کہ آپ کی غیبت اور غیبت ک
کیفیت اور اس کے ہونے کی حد کے ساتھ آپ کی امامت پر نص ہے اور اس میں
کی کو کوئی اختلاف نہیں سب اس کو تعلیم کرتے آئے ہیں اور عاو تا یہ نا ممکن ہے
کہ ایک جماعت کیٹر الی پیدا ہو جائے جس میں سب ہی جھوٹ ہو لتے ہوں کہ
آئید ہ ایبا ہونے والا ہے اور اس پر سب کے سب متفق ہو جا کیں۔

چونکہ حضرت جمت علیہ السلام کی غیبت کے متعلق احادیث حضرت جمت علیہ السلام کی فیبت کے متعلق احادیث حضرت جمت علیہ السلام کی ولاوت سے بہلے آپ کے پدر بزرگوار اور جبہ نامدار کے زمانے سے موجود تعیس جن کو کیسائیہ اور ماج اس و معلور واپنی بنیاد مائے ہوئے بیں۔ اور جنمیں شیعہ محد ثمین نے تھی اپنے اصول میں ٹاست کیا ہے۔ بیں۔ اور جنمیں شیعہ محد ثمین نے تھی اپنے اصول میں ٹاست کیا ہے۔ اُن کہاں لی میں میں اُن کہاں لی میں میں میں کا سے اُن کہاں ہیں۔ اُن کہاں لی میں میں میں میں کا سے اُن کہاں ہیں۔ اُن کہاں ہیں۔ اُن کہاں ہیں میں میں میں میں میں میں میں کا میں کہاں ہیں۔ اُن کہ

نی اکرم اور آئم طاہرین علیم السلام کی کے بعد دیگرے سیل احادیث جبت بیں توان عی احادیث ہے آپ کی غیبت کے ساتھ آپ کی امامت بھی ثابت ہوتی

ہے اور اس ہے کوئی شخص ا نکار نہیں کر سکتا۔

القاتِ محد مین و مصد فدن شیعہ میں ہے ایک حن می مجوب زراد میں ہم جوب زراد میں ہم جوب زراد میں ہم جو اسول شیعہ کے متعلق میں ہیں جنوں نے ایک کتاب اسلام نیادہ مشہور ہے۔ یہ زیادہ مشہور ہے۔ یہ زیادہ میں میں دیارہ میں ہیں دیارہ میں ہیں ہون و واحادیث میں ہیں

حاصل کر چکا ہوں۔ اور جو کھی ان احادیث میں مذکور تھا بالکل ای کے مطابق بلاا ختلاف امام کی غیبت واقع ہوئی۔

مخلد ان احادیث کے ایک وہ حدیث کھی ہے جو اہر اہیم حارثی نے ابو سیر سے اور انھوں نے حضرت ابو عبد اللہ حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام سے روایت کی ہے۔ ابو بھیر کامیان ہے کہ حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام سے میں نے عرض کیا۔ فرز ندر سول ۔ آپ کے پدر ہورگوار حضرت ابو جعفر امام محمد باقر علیہ السلام فرمایا کرتے تھے کہ آل محمد باقر علیہ السلام فرمایا کرتے تھے کہ آل محمد سے و عیبتیں ہیں۔ ایک صغیر ہوگی اور دوسری طویل۔

آپ نے ارشاد فرایا۔ ہاں اے ابو اہیم ۔ ایک غیبت و وسری غیبت ہے بہت ذیاد و طویل ہوگی اور پھر آئی و قت تک امام کا ظہور نہ ہوگا جب تک کہ سفیانی کاخر وج نہ ہو ۔ بلا کیں سخت نہ ہو جا کیں ۔ لوگ موت و قتل میں گر فآر نہ ہوں اور خلقت این تک نہ ہو جا ہے کہ حرم خدا اور حرم رسول میں پناہ لینے کے لئے جائے۔

لہذاد کیھو۔ کہ آپ کے آباؤواجداد سے سابقہ روایات واحادیث میں جو کی ہی تھا تھابالکل اُس کے مطابق کس طرح دو غیبتیں ہو کیں۔ غیبت صغری وہ بی تھی جس میں آپ کے سغراء موجود سے ادر آپ کے نوابین کو لوگ جائے سے اور جو لوگ امامیہ میں سے حضرت امام حسن عمری علیہ السلام کے قائل سے اُن میں سے کی کو اس سے اختلاف نہیں۔ جن میں ابو ہاشم داؤو بن قاسم جعفری اُن میں سے کی کو اس سے اختلاف نہیں۔ جن میں ابو ہاشم داؤو بن قاسم جعفری محمد بن علی بن بلال ، ابو عمر و عثان بن سعید سان اور ان کے فرز ند ابو جعفر محمد بن عثان ، عمر اہوازی ، احمد بن اسحاق ، ابو محمد و جنائی ، ابر اہیم بن میزیار اور محمد بن

ايراہيم وغير ه شامل ہيں

(حار الانوار جلد ١١ صفحه ٩٠ ٣)

امام قائمً كى غيبت كاعهد كيا جا چكاتھا

این متوکل نے علی ہے انھوں نے اپنے والد سے انھوں نے ہروی سے ،ہروی نے حضرت امام رضا علیہ السلام سے اور انھوں نے اپنے آبائے کرام سے روایت کا ہے کہ نمی اکرمؓ نے ارشاو فرمایا :۔

اُس ذات کی جم جس نے جھے کو حق کے ساتھ بھیر بناکر تھیجا ہے اُس
عدد کے مطابق جو جھے سے ہوا ہے میری اولاد میں سے اہام قائم لاز ما غیبت
اختیار کرے گا تا ایس کہ لوگ کینے لگیں گئے کہ اب اللہ تعالی کو آلِ محمد کی کوئی
ضرورت نہیں رہی بلحہ بعد میں آنے والے لوگوں کو تو اُن کی ولادت میں ہی
شک ہو گاجو شخص امام قائم علیہ السلام کے زمانے میں ہوگا اس پر لازم ہے اُنّ
ک وین سے متمک دہے اور شیطان کو شک پیدا کرنے کا کوئی موقع ہی نہ دے
ورنہ وہ میری ملت اور میرے دین سے خارج ہو جائے گا اس لئے کہ ای
شیطان نے تمہارے باپ (آدم) کو جنت سے اس سے پہلے نکلواد یا تھا اور جو لوگ ایمان
نہیں لائے بیں اُن کاولی اللہ نے شیاطین کو قرار دے دیا ہے۔

(ا كمال الدين ، حار الانوار جلد ١١ صفحه ١٣ ١٣ اردو)

غیبت تھم خداوندی ہے

حضرت امام زمانہ علیہ السلام کو پانچ مرس تک اپ پدر بزرگوار کے دامن اشفاق میں پر ورش پانے اور راحت اٹھانے کی نعمت نصیب ہوئی ۲۲۰ بجری میں حضرت امام حسن عسکری علیہ السلام جیسے شفق باپ کاسا یہ آپ کے سرے اُٹھ گیا اور آپ اُس و قت سے منجانب اللہ منصب امامت پر مامور ہوئے اور اپنے والد الحد کی تجییز و تحفین کی خدمات جالا کر فرائض امامت کی انجام دی میں مشغول و معروف ہوئے۔

آپ کے تمام معاملات اسر ار ربانی اور آیات ہزدانی پر مدینی سے
اس لئے نماز جناز و حفرت امام حین عسری علیہ السلام اور اہل قم کے تصفیہ
اموال کے معاملات و شاہدات کو دیکھ کر جو علی الا تصال آپ سے ظاہر ہوئے
ان تمام مو نین جو اس وقت موجو و سے آپ کی امامت حقہ کا اقرار کر لیا۔ گر
چونکہ نظام قدرت اور تدہیر مشیت کے مطابق آپ کو اپنی امامت کی تمام خدمات
بالکل مخفی طور پر انجام و بے کا حکم مقدر ہو چکا تھا اور یہ بھی مقدر ہو چکا تھا کہ
آپ اپنے زمانہ امامت میں بھی عام نگا ہوں سے اس طرح مخفی اور پوشیدہ رہیں
کے جس طرح آپ نے پدر عالی مقد ار کے زمانے میں پوشیدہ رہج سے اس لئے
جمال کک مختلف سیر و تو ارش کی کہا ہوں سے فامت ہو تا ہے کہ بعد ان معاملات
کے جن کا ذکر ابھی ابھی او پر کیا گیا ہے جناب امام العصر علیہ السلام پھر دولت
سراء میں اندر تشریف لے گئے پھر اس وقت کے بعد سے غیبت کبر کی کے آغاز
سراء میں اندر تشریف لے گئے پھر اس وقت کے بعد سے غیبت کبر کی کے آغاز

خانسمن کے کی اور کو اس زمانہ میں آپ کی زیارت کا شرف حاصل نہ ہو سکا۔ جمال تک اور کو اس زمانہ میں آپ کی زیارت کا شرف حاصل نہ ہو سکا۔ جمال تک اور کو شرات وہی ہیں جو خلوص و عقیدت کے اعتبارے بگآ اور مختب روزگار ٹامت ہوتے تھے۔

(در مقعود، صفحه ۳۰ تا ۱۲)

ع**نیت میں ایمان** رکھنے والا خوش نصیب

ان الوليد نے مفارے انھوں نے احمد من حسين نن سعيد سے انھوں فيے محمد من جمهور سے انھوں اللہ علامے معاويد من وہب سے انھوں نے ابھوں نے معاوید من وہب سے انھوں نے ابھوں سے دوایت انھوں نے ابھوں سے دوایت کی ہے۔آپ نے اور علیہ السلام سے دوایت کی ہے۔آپ نے فرمایا کہ حضرت رسول اللہ نے اور شاد فرمایا :۔

وہ مخفی یوا خوش نصیب ہو گا جس کو میر سے ابہلدیت میں سے امام قائم کاد در ملے گا اور وہ اُن کی غیبت میں قبل قیامت اُنھیں آجا آمام مانے گا اور اُن کے دوستوں کو اپنا ووست اور اُن کے دشمنوں سے عدادت رکھے گا کی لوگ میرے رفق ، میرے اہل محبت اور قیامت کے دن میرے نزدیک بہت کرم ہو تھے۔

(ا كمال الدين، جار الا توار جلد ١١ ،ار وو صفحه ١٣٩)

غیبت امام مهدی الله کار از ہے اس میں شک کرنا کفر ہے

ان متو کل نے اسدی ہے انھوں نے برکی ہے انھوں نے علی ن

عثان ہے انھوں نے محمد من فرات ہے انھوں نے قامت من دینارے انھوں نے

سعید من جیمر ہے انھوں نے ابن عباس سے ،ابن عباس نے کما کہ حضر ت رسول
اللہ نے فرمایا :۔

میں بعد میری امت کے امام اور میرے فلیفہ علی ان افی طالب علیہ السلام ہو تھے اور اُن بی کی اولاد میں سے امام قائم میں ہو تھے جن کا لوگ ان قلار کریٹے جو زمین کو حل و انسان سے اس طرح ہمر دیٹے جس طرح وہ فلم وجور نے ہمری ہوئی ہوئی اُن قائس ذات کی قتم جس نے جمعے حق کے ساتھو معبوث فرمایا ہے کہ اُن کی غیبت کے زمانے میں اُن کے قائل ہونے اور اس پر معبوث فرمایا ہے کہ اُن کی غیبت کے زمانے میں اُن کے قائل ہونے اور اس پر معامت قدم رہنے والے کبریت احمر سے زیادہ کرتے ہیں۔

یہ سن کر جابر بن عبداللہ اٹھے اور عرض کی بیار سول اللہ کیاآپ کی اولاو میں جو قائم ہوگائی کیلئے غیبت ہے ؟آپ نے ارشاد فرمایا۔ ہاں۔ میر سدرب کی قتم۔ تاکہ اللہ مومنین کو آزمائے اور کا فردل کو نیست و تا وہ کرد ۔۔ اے جابر سید معاملہ خدا کا ہے اور یہ اللہ کے راز بائے سر سہ میں سے ایک پوشیدہ راز ہے جے اللہ نے ایک میں ہر گز شک در از ہے ہے۔ امر الی میں ہر گز شک نہ کر نایہ کفر ہے۔

(اكمال الدين، جار الإتوار جلد ١١ صفحه ١٣٢، ارد، تر:مه)

ہم اہل بیت کی مثال آسان کے ستاروں جیسی ہے احمد ن علی بدیکی نے عبداللہ ن عباس سے انھوں نے موئ ان سلام سے انھوں نے یونللہ ن ختاب سے انھوں نے معز ت امام جعفر صاوق علیہ السلام سے اور آپ نے اپنے آبائے کرام سے موایت کی ہے کہ حضر ت رسول انٹلہ نے ارشاو فرمایا:۔

میرے اہل بیت کی شان آسان کے ستاروں کی طرح ہے جب ایک ستارہ غروب ہو جاتے ہو تا ہے یمال تک کہ جب اس میں ہے ایک ستارہ غروب ہو جاتے ہو تا ہے یمال تک کہ جب اس میں ہے ایک ستارہ طلوع ہو گا تو تمہاری نگا ہیں اس کی طرف انھیں گی اور تم انگلیوں سے اشارہ کرو کے تو ایک فرشتہ آئے گا اور اسے لے جائے گا بھر تم لوگ ایک عرصہ دراز تک ہو نمی پڑے مرامی کے اور اولاد عبد المطلب کی حکومت ہوگی بھر نہ معلوم کون کون خومت کرے گائی دفت بھر تمہاراوہ ستارہ ظاہر ہوگائی دفت بھر تمہاراوہ ستارہ ظاہر ہوگائی دفت بھر تمہاراوہ ستارہ ظاہر ہوگائی دفت بھر تمہاراوہ ستارہ ظاہر

(غيبة تعمانه، حارا لا نوار جلد ال صفحه ۱۳۹،ار دو)

مدت غيبت منغري

ثمالی نے حضرت علی این الحسین علیہ السلام سے روایت کی ہے کہ آپ نے ارشاد فرمایا۔ کہ:

ترجمہ قرآن تھیم: اور بعض قرامتدار بعنوں سے زیادہ حق دار ہیں۔ اللہ کی کتاب کے مطابق (سورة الاحزاب آیت نمبر ۲) اور تبارے ہی حق

میں بیر آیت بھی نازل ہو کی ہے۔

ترجمہ: اوراً سنے کلمہ باقیہ کو اپنے عقب میں قرار دیا (سور والز فرن آیت ۲۸)

یعنی حضرت امام حسمیٰ ابن علی بن ابی طالب علیہ السلام کے عقب (نسل) میں
امامت قیامت تک باتی رہے گی اور ہم میں سے جوامام قائم ہوگائس کی دو عیبتیں
ہوں گی ایک غیبت چو دن ، چو ماہ
اور چو سال کی ہوگی اور دو سری غیبت کی مدت اتنی طویل ہوگی کہ اکثر لوگ جو
اس کے قائل ہوں گے وہ بھی اس سے پھر جائیں گے اور اپنے قول پر ٹامت وہی
دے گا جس کا یقین قولی ہوگا جس کو صبح معرفت ہوگی اور جو پچھ ہم نے کہ
دیا ہے اس میں اُس کو کوئی شک نے جو گا اور ہم اہل بیبت کو پورے طور پر تسلیم
دیا ہے اس میں اُس کو کوئی شک نے جو گا اور ہم اہل بیبت کو پورے طور پر تسلیم

(الكال الدين ، حار الانوار الوروتر جمه جلد ١١ ، صفحه ٢٣٦)

غیبت کبری ۲۹۰ ججری ہے جو گ

امّ إِنْ ب روايت ب ك مين نے حضرت امام محمد القام اللام ب عرض كياك يه فرمائي ك الله تعالى ك اس قول كاكيا مطلب ب "فلآ أقسيم بالخنس"

آب نے ارشاد فرمایا۔ یاام ہانی:

اے ام ہانی اس سے مراد دہ امام ہے جو خود کو پر د و نفیبت میں رکھے گا یہاں تک کہ ۲۶۰ جری میں کی کو کوئی خبر نہ ہو گی کہ دہ کمال بیں پھر دہ این چیری رات میں شماب ٹاقب کی طرح نمودار ہوں گے پس اگر تم اُس ز مانے تک جا پہنچو تو تساری آنکھیں ٹھنڈی ہو جا کیں گی (بینی مزاسکون ہوگا) (غیبة نعمانی ، جارالانوار جلد ۱۱، ار دوتر جمہ صفحہ ۲۳۳)

غیبت امام سے انکار نہ کرنا

ا ہو بھیر نے حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام سے روایت کی ہے کہ آپٹ نے ارشاد فرمایا:۔

اگر تمہیں اپنے صاحب (امام قائم علیہ السلام) کی غیبت کی خبر لمے تو اس سے انکار ند کر نا

(غیبة طوس محارالانوار جلد ۱۱،ار دوتر جمه صفحه ۲۶۳)

عرصه غيبت طويل ہو گا

محدین مسلم نے حضرت امام جعفر صادق علیہ الملام ہے روایت کی ہے کہ آبید نے ارشاد فر مایا :۔

جب امام قائم علیہ السلام غیبت اختیار کریں گے تولوگ ایک عرصے تک یو نئی رہیں گے انسیں پیتہ نہیں ہو گاکہ امام کون ہیں اور کمال ہیں بھر اللہ تعالیٰ ایک صاحب (امام) کو ظاہر ہو نیکا تھم دے گا۔

(عند نعمانی، جار الا نوار جلد آا، ار دوتر جمہ صفحہ ۲۲۵)

110

غیبت کی مدت طویل ہو گی

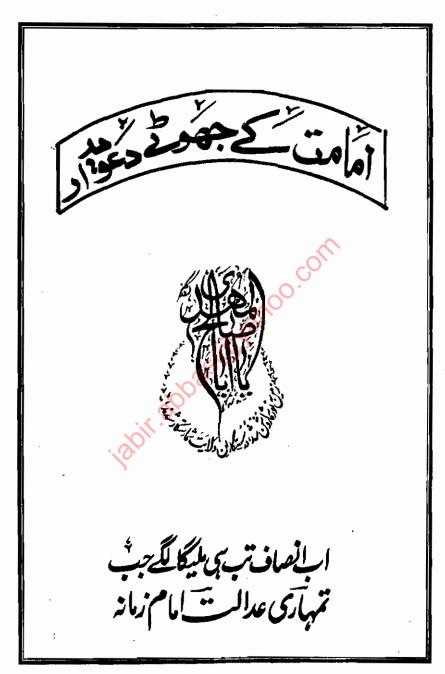
ان عبدوس نے ان قتیہ ہے ، قتیہ نے حمد ان ہن سلیمان ہے ، حمد ان کے محد ان کے محد ان کے محد ان کے صفر ان دلف ہے روایت نقل کی ہے۔ کہ بین نے حفر سابو جعفر امام محد من علی الرسفا علیہ السلام کو فر ماتے ہوئے ساہے کہ میرے بعد میر افر ذید علی امام ہوگا اُس کا حکم میر احکم اور اُس کا قول میر اقول اُس کی اطاعت میر ک اطاعت ہوگا اُس کے بعد اُس کے بعد اُس کے فرزند حسن (عسکری علیہ السلام) کی اطاعت ہوگی اُس کے والد کا حکم اُس کے والد کا حکم اُس کے والد کا حل عت ہوگی

یہ فرما کر آپ خا موش ہو گئے تو میں نے عرض کیا: فرزند رسول!! امام حسن عسکری علیہ السلام کے بعد کون لمام ہوگا؟

اس سوال پرآپ نے شدید گرید فرایا: - بجرار شاہ فرمایا۔ اور حسن عکری علیہ السلام کے بعد اُن کا فرزند قائم بالحق المدن تنظر او گا۔ میں نے عرض کیا فرزند رسول ۔ اُن کانام قائم کیوں رکھا گیاہ جگر نے فرمایا۔ کہ امامت کے قائل اکثر لوگ مرتد ہوجا کیں گے۔

یں نے پھر عرض کیا۔ اور اُن کا نام منتظر کیوں ہے ؟۔ آپ نے فرمایا۔ اس لیے کہ اُن کی فیبت کی مدت بہت طویل ہو گی جس میں مخلص لوگ اُنْ کے ظہور کے منتظر ہوں گے شک کر نے والے اُن کے وجود سے انکار کریں گے اور انکار کرنے والے اُن کے ذکر کا خداق اڑا کیں شے۔ اکثر لوگ ان ک ظہور کے وقت کا تعین کرنے کی کو شش کریں سے جلدی چاہئے والے ہاا ک:و

جائیں گے اور تتلیم کرنے والے نجات پائیں گے۔ (اكمال الدين، قار الانوار جلد ١١، ار دوتر جمه صفحه ٧٥)



فيخ شريعي

کتاب غیبہ میں شیخ طوی علیہ الرحمہ نے ارشاد فرمایا ہے کہ جھوٹے دعوید اران میں سب سے پہلا مخص وہ ہے جوشر بعی کے نام سے مشہور ہے۔

الا محمد تلحمری نے الو علی محمد بن ہمام سے روایت کی ہے کہ شر بعی کی کتیت الو محمد تھی اور ہارون کامیان ہے کہ میر اخیال ہے کہ اُس کانام حسن تھا اور وہ حضر سے الو الحقی بن امام محمد تھی علیہ السلام کے اصحاب میں شار ہو تا تھا اس کے بعد حضر سے امام حسن عسری علیہ السلام کے اصحاب میں شار ہو تا تھا اس کے بعد حضر سے امام حسن عسری علیہ السلام کے اصحاب میں محمد شار ہو نے لگا۔ یہ وہ پہلا مخص ہے جس نے ایسے مقام و مر ہے کا دموی کیا جس کانہ وہ اہل تھا اور نہ جے اللہ نے اس کے لئے قرار ویا تھا۔ اُس نے اللہ تھا لی ایس کے لئے قرار ویا تھا۔ اُس نے اللہ تھا لی ایس کے لئے قرار ویا تھا۔ اُس نے اللہ تھا لی ایس کے لئے قرار ویا تھا۔ اُس نے اللہ تھا لی الی الی الی علی منہ و سے کیس جو ان حضر است کی طرف اُنی الی علی منہ و سے کیس جو ان حضر است کی شان کے قبلی خان ف تھیں۔

چنانچہ اُس پر شیعوں نے لعنت تھی اور اُس سے یہ آت و ہیز اری کا اظمار کیااور حضرت امام زمانہ علیہ السلام کی طرف سے اس پر اینت اور یہ آت کے لئے تو تین و تحریر آمد ہوئی۔

ہامون کامیان ہے کہ مجراس کے منہ سے کفروا افاد کی بدید دار با تیں صاور ہونے لگیں نیزان کامیان ہے یہ تمام جمو فے وعویدار سب سے پہلے تواما نم پر جمو ف باند مصلا اور کتے کہ دولوگ امام کے وکیل ہیں۔ اور وولوگ اپناس قول سے ضعیف الاعتقاد مسلمانوں کواس امر کی عوت دیے کہ دوان لوگوں سے عقیدت رکھیں۔ بجران لوگوں کا یہ معاملہ آگے چل کر حلاجیوں تک جا بہنچا۔

جیسا کہ ابو جعفر علمغانی اور اس کے امثال کے لئے مصور ہے اللہ تعالی ان سب پر لعنت کرے۔

محمدين نصير نميري

ادر ان بی میں سے ایک شخص محمد بن نصیر نمیری تھا۔ این نوح کا ماان ب كه مجهدا و نفر بهة الله بن محمد ن ماياك محمد بن نفير نميري حفرت امام او محمد حسن عسکری علیہ السلام کے اصحاب میں شار ہو تا تھااور جب امام حسن عسکری علیہ السلام کی شاد ے ہو گی تو اُس نے ابو جعفر محدین عثان کے عدے کا وعوى كيااور كماكه وه حفر الله المام عليه السلام كاباب ب مرالله تعالى نے اُس کے جیل ادر الحاد کو ظاہر کرکے اُسے رسوا اور ذلیل کیا ادر ابو جعفر محمد ین عثانؓ نے اس پر لعنت کی اور اس پر تیں اور ہے زاری کا اظہار کیا۔جب أسے اس بات کی اطلاع ملی تووہ خود ابد جعفرا کے یاس جا پہنچا۔ تاکہ اُن سے معذرت خواہ ہو۔ گرانموں نے ملا قات کی اجازت نہ دی اور 🚱 ماہیں ہو کروالیں آٹمیا سعدین عبداللہ کا میان ہے کہ محمد بن نصیر اس امر کا وعویدار تھا کہ وہ رسول دنی ہے اور علی بن محمرٌ (حضرت امام علی المنقبی) نے اُس کور سول ماکر محجاب اوروه ؟ تاع كا قائل تقااور حفرت المام على المدتقى عليه السلام ك بارے میں غلو کر تا اور کتا کہ وہ رب ہیں نیز وہ محارم جن سے نکاح حرام ہے (جیسے بہن بیپتلی وغیر ہ) کو حلال جانتا تھااور مر د سے مر د کا نکاح بھی جائز سمجھتا

معد کا میان ہے کہ جب محمد بن نصیر مرض موت میں مبتلا ہو ااور زبان

بہ مشکل چکتی تولوگوں نے اُس سے کمااب تمہارے بعد تمہارا نائب کون ہوگا اُس نے بہت و هیمی اور لڑ کھڑ اتی آواز میں کما''احمد''محر کو کی نہ سمجھ سکاکہ احمد سے مراو کون ہخش ہے

لهذااس کاگروہ نین فرقوں میں تقیم ہو گیاایک نے کہاکہ احمہ ہے مراد خوداُس کابیا ہے و وسرے فرقے نے کہااس سے مراد احمہ بن محمہ بن موک بن فرات ہے۔ تیسرے فرقے نے کہااس سے مراد احمہ ابن الی الحسین بن بھر بن فرات ہے۔ تیسرے فرق نی رہے اور کی ایک بات پر نہ آسکے۔

رخی احدین ہلال کرخی

ان جھوٹے وعویداروں میں ہے ایک احمدین بلال کرخی ہے۔ ابوعلی من حام کامیان ہے کہ احمدین بلال کرخی حضر ہے امام ابو محمد حسن عسکری علیہ السلام کے اصحاب میں سے تھا کر حضر سامام حسن عسکری علیہ السلام کی نص کی ما پرآپ کی حیات ہی میں آپ کے شیعہ ابو جعفر محمدین جگان کی و کالت پر متفق ہو چکے تھے چنا نچہ جب حضر سامام حسن عسکری علیہ السلام کی شماد سے ہوگئی تو گروہ شیعہ نے اس سے کما۔ کیا تم ابو جعفر محمدین عثان کی و کالت کو جول نہ کروہ شیعہ نے اس سے کما۔ کیا تم ابو جعفر محمدین عثان کی و کالت کو جول نہ کروہ شیعہ نے اس

جبکہ امام مفتر ض الطاعۃ نے اُن کی و کالت پر نص قائم کر دی ہے۔ اُس نے جو اب دیا۔ کیا ہوگا۔ ہم نے تو امام کی زبان سے نہیں سُا۔ کہ امام نے اُن کی و کالت پر نص کی ہو۔ ویسے اُن کے والد عثمان بن سعیدؒ کی و کالت سے تو جھے انکار نہیں گر جب جھے تعلمی یقین آجا بڑگا کہ ابو جعفر حضرت امام زمانہ علیہ السلام ے وکیل میں تو میں ان کے خلاف جسارت نہ کروں گالوگوں نے کما (تم نے نہیں سنا) مگر دوسروں نے کما (تم نے نہیں سنا) مگر دوسروں نے تو شاہے۔ یہ کمہ کر اُس نے ابو جعفر کی و کالت تتلیم کرنے میں تو قف کیا تولوگوں نے اُس پر لعنت برسائی اور تیم اکیا۔

پھر ابوالقاسم حسین من روئے کے ذریعے سے اُس پر تیم ااور بے زاری کے متعلق حضرت صاحب الزمان علیہ السلام کی توقیع و تحریر آئی۔

ابو طاہر محدین علی بن بلال

آن ہی میں ہے ایک ابو طاہر محمد من علی من بلال ہے اس کا وہ قصہ مشہور ہے جو اس کے اور ابو جعفر محمد من عثمان کے در میان پیش آیا۔ اُس نے تمام مال اہام روک لیا اور انھیں وینے ہے انکار کر دیا اور خود امام علیہ السلام کی وکالت کا وعوید اربن بیٹھا۔ چنانچہ سب لوگوں کے اس پر لعنت برسائی اور اس پر تمرا اور بے ذاری اختیار کی۔

حضرت صاحب الزمان عليہ السلام كى طرف ہے أمر كے متعلق جو تو تيخ آئى وہ مشہور ہے۔ ابو طالب زرارى كاميان ہے كہ مجھ سے محمد ن محمد من يكى معاذى نے متايا كہ ہمارے اصحاب ميں ايك مخض تھا جو پہلے ابو طاہر من بلال كروہ ميں شامل جو الچر بليث كرا ہے كروہ ميں آگيا۔ ميں نے أس سے بلنے كاسب بو جھا ؟

اُس نے کما کہ ایک ون میں ابو طاہر بن بلال کے پاس بیٹھا تھا اور وہاں اُس کا بھائی ابو طیب و ابن خزر اور اُس کے اصحاب کی ایک جماعت بھی تھی کہ ایک غلام اندرواخل ہوا اور بولا کہ ابو جعفر عمری دروازے پر اُمزے بیں وہ بیہ

سن كر لرز كے اور اى حالت مل كمد دياكه اندر بلالو يجب اله جعفر اندر آئے تو الوطاہر اورأس كى پورى جماعت تعظيما كورى ہو گئى وہ صدر مجلس ميں تشريف فربا ہوئے اور الوطاہر أن كے سامنے بيٹھ كيا۔ تھوزى دير الوجعفر نے لوگوں كر بيٹے انتظار كيا جب سب لوگ بيٹھ كے توآب نے فرمايا۔

اے او طاہر۔ بین سخیے اللہ کا واسط دے کر پو پہتا ہوں کہ کیا بخیے خفر ت صاحب الزمان علیہ السلام نے یہ تھم شیں دیا ہے کہ تیرے پاس اُن کا جتنا ہی مال ہے وہ سب میرے حوالے کر دے ؟، ابو طاہر نے جواب دیا۔ خدا کی فتم۔ ہاں۔ ہیں اس کے بعد ابو جعفر فوراً وہاں ہے اٹھ کھڑے ہوئے اور واپس ہو گئے اور سارے لوگوں پر ایک سنتہ طاری ہو گیا جب یہ کیفیت یہ طرف ہو گی اور انھیں ہوش آیا تو ابو طاہر کے جمائی ابو طیب نے اس سے بو چھا۔ تم نے حضر ت صاحب الزمان علیہ السلام کو کماں دیکھا۔ ابو طاہر نے جواب دیا کہ ایک حضر ت صاحب الزمان علیہ السلام تھے اُس کی بالائی منزل پر نظر آئے۔ انھوں نے بھے آواز دی اور فرمایا۔ تیرے باس جو مال ہے وہ سب ان کے حوالے کر دے۔ ابو طیب نے دریا فت کیا۔ گرشہیں مال ہے وہ سب ان کے حوالے کر دے۔ ابو طیب نے دریا فت کیا۔ گرشہیں کیے یہ معلوم ہو گیا کہ وہ صاحب الزمان علیہ السلام ہی تھے۔

اُس نے جواب دیا کہ اُن کو دیکھتے ہی مجھ پر ہیت طاری ہو گئی اور ایسا رعب چھا گیا کہ مجھے یقین ہو گیا کہ وہ صاحب الزمان علیہ السلام ہی ہیں۔راوی کتا ہے کہ اس ماپر ہیں نے ابو طاہر سے جدائی اختیار کرلی۔

حسين بن منصور حلاج

ابو تھر بہۃ اللہ بن محمد کاتب این بدنت اس کلؤم بدنت ابو جھر عری
کا میان ہے کہ جب اللہ تعالی نے ارادہ کیا کہ حمین بن منصور طآج کے کرو
فریب کا پر دہ چاک کر کے اُسے رسوااور ذکیل کرے تواس نے ذہین میں میہ بات
وال دی کہ ابو سل این اساعیل بن علی نو بہتھی رضی اللہ عدان او گوں میں
سے بیں جن پر اُس کا جادہ چل جائے گا اور وہ اُس کے مگر و فریب میں آجا کمی کے
اور اگر اُن کو اپنی طرف بلائیا جائے تواس کا اثر لوگوں پر بہت پڑے گا کو تلد اُن
کے علم واد ب کی وجہ سے لوگوں کے دلوں میں اُن کا ہوا مرسبہ ہے۔

لید ااس نے ابوسل کو خط کھیا کہ میں حضرت صاحب الزبان علیہ السلام کاو کیل ہوں جھے تھم ہوا ہے کہ میں جمہیں خط لکھوں اور اس امر کا اظمار کر دوں۔ تمہاری مدد کی جائے گی تاکہ تمہاراول قومی رہے اور تم اس امر میں کوئی شک نہ کرد۔

اہ سل رضی القد عد نے اس کے جواب میں لکھا کی تہیں اپنے ایک معمولی ہے کام کی زحمت ویتا ہوں جمال تہمارے ہاتھوں بہت ہے مجوات اور کر امات ظاہر ہوتے ہوں گے اُن کے مقابلے میں میرے اس کام کی حقیقت ہی شمیں۔ وہ کام میہ کہ میں عور توں کو بہت چاہتا ہوں۔ گر میر ابر حمایا اس سلیلے میں حائل ہے اور اس کو پوشیدہ رکھنے کے لئے میں ہر جمعہ کو خضاب استعال کر تا ہوں جس میں جمیے زحمت شاقہ ہوتی ہے اگر ایبانہ کروں تو میر ابر حمایا اُن پر فاہر ، و جائے اور وہ راہ فرارا نقیار کر جائمیں گی میں چاہتا ہوں کہ جمعے خضاب کی طاہر ، و جائے اور وہ راہ فرارا نقیار کر جائمیں گی میں چاہتا ہوں کہ جمعے خضاب کی

زحت سے نجات ولا وو۔ ایس کر امت ظاہر کروکہ میری داڑھی کے بال سیاہ ہو جا کیں تو میں تہمار امطیع اور قائل ہو جاؤں گا اور تممارے ند ہب کی طرف دعوت کے لئے اپنے مال اور اپنی تھیم ت سے تمماری مدد کروں گا۔

طاج نے جب اُن کا جو اب پڑھا تو محسوس کیا کہ میں نے یو کی غلطی کی جو اسیں خط لکھ دیا چر وہ خاموش ہو گیا اور اُن کے خط کا کوئی جو اب نہ دیا اور اور اس خط کا کوئی جو اب نہ دیا اور اور اور سل رضی اللہ عدہ نے اس کو ایک اطیفہ مالیا اور ہر ایک کے سامنے اس کو میان کرنے گئے چانچے ہیا ہے ہر خر وو کلال یعنی عوام و خواص میں مشہور ہوگئ جس سے اُس کا سار اکر و فریب لوگوں پر ظاہر ہو گیا تو لوگ اُس سے نفر ت

ابو جعفرین آفی عزا قر

الا تصربیة الله بن محد بن احمد کاتب این بدنت الم کلوم بدنت الا جعفر عمری رضی الله عند سے روایت ہے کہ مجھ سے کیرہ ام کلوم بدنت الا جعفر عمری نے بیان کیا کہ الو جعفر ابن الی عزاقر نبی بسطام کے نزدیک ایک ذی وجہ مخص تھا اور چو فکہ شخ الا القاسم بن روح نے نے اسے لوگوں کے در میان ایک مقام دے دیا تھا۔ اس لئے جب وہ مرتد ہوگیا تواس نے بہت سے کفر والحاد اور جھوئی باتیں شخ الو القاسم کی طرف منسوب کر کے بدنی بسطام سے بیان کر ناشر وی کر دیں اور وہ لوگ اُسے شخ مجھ کر قبول کرنے گئے۔ جب اس کی اطلاع شخ الوا لقاسم حیین بن روح کو پینی تو بدنی بسطام کو منع کیا کہ وہ اس سے گفتگونہ کریں اور اس پر تیم او بے زاری اختیاد کریں اور اس پر تیم او بے زاری اختیاد کریں اور اس پر تیم او بے زاری اختیاد کریں اور اس پر تیم او بے زاری اختیاد کریں اور اس پر تیم او بے زاری اختیاد کریں اور اس پر تیم او بے زاری اختیاد کریں اور اس پر تیم او بے زاری اختیاد کرین کو اور اس پر تیم او بے زاری اختیاد کرنے کو اور اس پر تیم او بے زاری اختیاد کرنے کو اور اس پر تیم اور بے زاری اختیاد کرنے کو ب

کما۔ مگر وہ لوگ بازنہ آئے اور اس سے دوستی پر قائم رہے اس کے جہاہے تھی کہ وہ لوگوں سے کتا تھا کہ میں نے راز کوافشا کر دیاہے اس لئے انھوں نے بطور سزا اختصاص کے بعد مجھے دور کر دیاہے کیو نکہ وہ ایک الیا تحظیم راز ہے کہ جس کا متحمل یا ملک مقرب ہو سکتا ہے یا نبی غر سل یاوہ مومن جس کے قلب کاامتحان لیا جا چکا ہو۔ یہ بات اُن لوگوں کے دلوں میں نقش ہو گئی اور اس سے این الی عزاقر کی قدر اُن لوگوں کے دلوں میں نقش ہو گئی اور اس سے این الی عزاقر کی قدر اُن لوگوں کے ذو کی اور معرف گئی۔ جب سے خبر شیخ ابو القاسم حسین رو بے کو کی قو انھوں نے دنویک اور معرف کی قدر اُن لوگوں کے دیدی سطام کو خط کھا کہ تم لوگ این الی عزاقر اس کے تابعین اور مانے والوں پر لعنت اور تیم اگر و۔

جب یہ خط بدنی بسطام کو ملا تو وہ سب این الی عزا قر پر ٹوٹ پڑے وہ زار و قطار رونے نگااور یو لا کہ تم لوگ سمجھے ہی نہیں۔ شخ ابوالقاسم کے اس قول بیس ایک عظیم مطلب پوشیدہ ہے لعنت کے معنی دور کرنے کے ہیں اور لعنہ اللہ علیہ کا مطلب یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے اس کو جشم کے عذاب ہے دور کر دیا ہے اور اب میں سمجھا کہ اُن کی نظر میں میری کیا حزرات ہے۔

یہ کہ کر اُس نے اپنی پیٹانی زمین پر تجد وَ شکر کے لیے رکھ وی اور کما کہ اب تم لوگوں پر لازم ہے کہ اس بات کو پوشید ہ رکھو۔

کیرہ ام کلوم کامیان ہے کہ شخ اوالقاسم کو ہیں اس واقع ہے آگاہ کر چکی تھی کہ ایک دن میں او جعفر بن اسطام کی مال کے پاس گئی تواس نے میری موالی تعظیم و تکریم کی۔ حدیہ ہے کہ اُس نے جمک کر میرے قدم چو ہے۔ میں نے اُسے منع کیااور اُس کو بٹایا اور کما کہ یہ نُری بات ہے۔ ایمانہ کر دریہ کہ کر میں نے اسکے ہاتھ چوم لئے تووہ رونے گئی اور ہولی میں ایما کیوں نہ کر وں۔ آپ تو میری شنرادی فاطمہ زہراً ہیں۔ میں نے دریافت کیا یہ کیے۔ اُس نے جواب دیا شخ بینی ابو جعفر بینی محمہ بن علی نے متایا ہے کہ ہم لوگوں پر پر دہ فاش ہو چکا ہے۔ میں نے کما۔ پر دہ کیا۔ اُس نے کما کہ ہم لوگوں سے عمد لیا گیا ہے کہ اس کو پیشدہ در کما جائے میں ڈرتی ہوں کہ اگر اس کو ظاہر کروں تو عذاب میں جلا ہو جاؤں۔ میں نے اُس سے پختہ عمد کیا کہ کمی کونہ متاؤں گی محرول میں یہ تھا کہ سوائے ابو القاہم حیین بن دوئے کے اور کی کونہ متاؤں گی۔

یہ عمد لینے کے بعد اُس نے کما۔ شخ ابو جعفر نے ہم لوگوں کو ہتایا ہے
کہ رسول اللہ کی روح آپ کے پیدر بعنی ابو جعفر محمد بن حمان عمری کے پیکر میں
آئی اور امیر المو منین حضرت علی این ائی طالب علیہ السلام کی روح ابو القاسم
حسین بن روح کے پیکر میں اور حضرت قاطمہ زہرا کی روح تممارے پیکر میں
خمال ہوگئے ہے۔ لہذااے شمر ادی۔ تعلل تمماری اتنی تعظیم کیے نہ کروں۔

میں نے کما۔ یوی فی۔ نہیں ایبا ہر گز تھیں ہے۔ یہ محض جھوٹ ہے۔ اُس نے کما۔ نہیں یہ بہت بڑا راز ہے اور ہم لوگوں سے عمد لیا گیا ہے کہ یہ راز کی پر ظاہر نہ کریں۔لہذا خدا کے لئے جھ پر رحم کیجئے گا۔ کہیں تھے عذاب میں جٹلانہ کر دیں یہ توآپ نے مجبور کر دیاس لئے آبکو ظاہر کر دیاور نہ یہ راز تو میں آپ کونہ بتاتی اور آپ کے علادہ کی کو بھی نہ بتاؤں گی۔

کیرہ ام کلوم کا میان ہے کہ جب میں اس کے پاس سے والی آئی تو سید سی بیخی اور سار اقصہ سایا۔
سید سی بیخی اور سار اقصہ سایا۔
المواں نے فرمایا۔ بیلٹی ۔ اب تم اس کے پاس بھی نہ جانا۔ اور اگر
وہ تم کو کوئی خط لکھے تو اُسے بھی وصول نہ کرنا۔ اگر وہ تممار سے پاس کمی آو می کو

12.

سید ھی شیخ ابوالقاسم حسین بن روئے کے پاس پیچی اور سارا قصہ سایا۔

انھوں نے فرمایا۔بیٹی ۔اب تم اس کے پاس بھی نہ جانا۔اور اگر وہ تم کو کوئی خط لکھے تواسے تھی وصول نہ کرنا۔اگر وہ تمہارے پاس کی آوی کو

کھیے تو اُس سے بھی ملا قات نہ کرنا اس لئے کہ یہ کفر والحاد ہے۔ جو اُس ملحون (این افی عزاقر) نے اُن لوگوں کے دلوں میں رائح کرویا ہے تاکہ اُن لوگوں سے یہ کئے کی راہ ہموار ہو جائے کہ اللہ تعالیٰ اُس کے اپنے پیکر میں آگیا ہے جیسے کہ نصاری جیسے سے علیٰ علیہ السلام کے متعلق کہتے ہیں اور یہ بھی حلاج کی طرح دعویٰ کرنے کی عمید ماریا ہے۔

کیر وام کلوم کتی ہیں۔ اس کے بعد میں نے بدنی بسطام کو چھوڑااور ان کی طرف جانا ترک کر ویااور ان لوگوں کی مان سے ملا قات نہیں کی۔ اور بیہ واقعہ بدنی نو خت میں مشہور ہوگیا اور شیخ آبو القاسم نے خود جا کر بابذر بعیہ خط بیہ حکم دیا کہ ابو جعفر شمخانی پر۔اس کے تمبعین پریاجو شخص اس کے اس قول پر راضی رہے بلحہ اس سے دوستی تو در کنار جو شخص ابو جعفر شمخانی سے بات تھی کرے ان سب پر لعنت تھی واس سے برات کا ظہار کر و۔

اس کے بعد حضرت صاحب الزمان علیہ السلام کی طرف ہے تو قیم مبارک بھی ہر آمد ہوئی کہ ابو جعفر محمد بن علی حکم خاتی ، اُس کے تابعین ، اُس کے ساتھ دینے والوں اور اُس کے قول پر راضی رہنے والوں پر لعت کی جائے اور اس ہے ہر آت کا اظہار کیا جائے یاجو مخص اس تو قیع کے بر آمد ہونے کے بعد بھی اس ہے ہر آت کا اظہار کیا جائے یاجو مخص اس تو قیع کے بر آمد ہونے کے بعد بھی اس ہے اپنی دوستی قائم رکھ اُس پر بھی لعنت۔

اس کے قتل کا سب ہے ہوا کہ جب لوگوں پر ظاہر ہو گیا کہ طح

اور ہر ایک کی ذبان پر ہیہ جاری تھا کہ حسین بن روح ؓ نے اس مخف پر لعنت اور تیمرا کا حکم دیا ہے اس نے لوگوں کو پکار کر کما۔ اچھا تو ، تم لوگ جھے اور شخ ابوالقاسم حسین بن روح ؓ کو بچا جع کرو میں اُن کا ہاتھ پکڑو نگادہ میر اہاتھ پکڑیے گئے اگر آسان سے حلی گر کر انہیں جلانہ دے تو میر ۔ متعلق جو پکھ کما ہے اُسے پچ سمجھنا۔

یہ باتیں این مقلہ کے گھریں ہو رہی تھی اس کی اطلاع راضی تک پنچی تواس نے تھم دیا کہ اس کو پکڑ کر قتل کر دولہذ اانھوں نے اس کو پکڑ کر قتل کر دیا اور قوم شیعہ کو اس ملعون سے نجات مل گئی۔

ابو بحر بغد ادی (ایر جعفر می بن عثان عمری کے منتھ)اور ابو دلف مجنون کا حال

یخ ابو عبداللہ محدین نعمان نے ابو الحن علی ن بلال مسہلدی سے روایت کی ہے ان کا بیان ہے کہ میں نے ابو القاسم جعفری محدین قولویہ کو فرماتے ہوئے شاہے کہ ابداللہ اس کو غارت کرے۔ ہم لوگ اس کو طحد سجھتے تھے پھر وہ غلو کرنے لگا پھر وہ مجنون ہو گیا۔ پھر وہ مفوضہ من گیا ہم لوگ تو اس کے متعلق یہ جانتے ہیں کہ وہ جس مجمع میں جاتا اس کو خفیف و زیل کیا جاتا اور قوم شیعہ تو اُس کو چند ونوں سے جانے گی ہے اور اس پر اور اُس کے مانے والوں پر (جو اُسے اہام سجھتے ہیں اُن پر) تیما کرتی ہے اور جب ابو دخس نے والوں پر (جو اُسے اہام سجھتے ہیں اُن پر) تیما کرتی ہے اور جب ابو دخس نے والوں پر (جو اُسے اہام سجھتے ہیں اُن پر) تیما کرتی ہے اور جب ابو دخس نے والوں کی دوری کے متعلق دعوی کیا (کہ وہ اہام کا و کیل ہے) ہم

لوگوں نے ابو بحر بغدادی سے رابطہ کیا توأس نے صلف کما کہ نہیں۔ میر اہر گزیہ دعوی نہیں ہے۔ تو ہم نے اس کی بات مان لی مگر جب وہ بغداد آیا توگروہ شیعہ کو چھوڑ کر ابو دلف کی طرف ماکل ہو گیا اور اسے ابناو صی بنالیا پھر تو ہمیں کوئی شک نہ رہا کہ یہ اپنے آئی نہ جب پر ہے ہم نے اُس پر لعنت کی اور برآت کا اظہار کیا۔ اس لئے کہ ہمارے نزویک سمریؓ کے بعد جو شخص حضرت امام صاحب الزمان علیہ السلام کی و کالت و سفارش کا دعویٰ کرے گاوہ کا فرگر اہ ہے۔

این عیاش کابیان ہے کہ ایک دن ہم لوگ ابو دلف کے پاس جمع سے وہاں ابو بحر بغد ادی کا ذکر چھڑ گیا تو اس نے کما تم جانے ہو کہ ہمارے شخ (ابو بحر بغد اوی) کو ابوالقاسم حبین بن روخ اور دو سر دل پر کیوں فشیلت حاصل ہے۔ میں نے کما۔ نہیں جھے تو نہیں معلوم اس نے کما۔ اس لئے کہ ابو جعفر محمد بن عثان نے اپنی وصیلت میں اپنے نام پر اُن کے بام کو مقدم رکھا تھا۔ میں نے کما۔ کہ اگر کی بات باعث فضیلت ہے تو پھر منصور دوانتی تو حضرت آمام موکی کا ظم علیہ السلام سے افعال شخرا اُس نے کما یہ حضرت آمام موکی کا ظم علیہ السلام کے دھرت آمام موکی کا ظم علیہ السلام کے دھرت آمام موکی کا ظم علیہ السلام کے دھرت آمام موکی کا ظم علیہ السلام کے نام پر منصور کانام اپنے وصیت نامے میں مقدم رکھ دیا تھا۔ اس نے کما۔ تم تو ہمارے شخ سے تعصب و عناد رکھتے ہو۔ میں نے کماکہ تممارے علاوہ تمام لوگ ابو بحر بغد ادی سے تعصب اور عناور کھتے ہیں اور ابو بغد اوی کم علی اور بے مروتی میں مضہور ہے اور ابو دلف کی مجنونانہ با تیں ب

انو محمد ہارون بن موکیٰ نے ابو القاسم حسین بن عبدالرحیم ابراروری

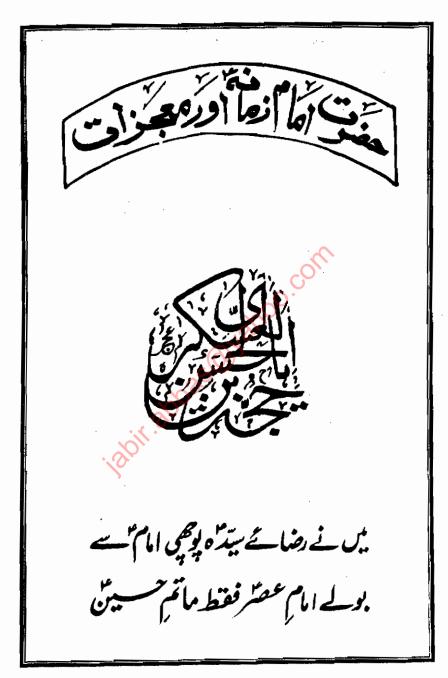
سے روایت کی ہے کہ ایک مر تبعث ہرے باپ عبدالر حیم نے جھے ابو جعفر محمہ ن عثان عمر ی کے پاس ایک کام کیلئے تھجا میں وہاں پہنچا تو دیکھا کہ وہاں ہمارے چند اصحاب بیٹے ہوئے آئمہ طاہر بن وصاد قین علیم السلام کی چندر وایات کے متعلق گفتگو کر رہے تھے کہ اتنے میں ابو بحر محمہ بن احمہ بن عثان المعر وف بہ بغد ادی لینی ابو جعفر عمر ی کی نظر اس پر پڑی تو انھوں ابو جعفر عمر ی کی نظر اس پر پڑی تو انھوں نے کہا کہ اب تم سب خاموش ہو جاؤ۔ اس لئے کہ بیر آنے والا تمہارے اصحاب میں نہیں ہے۔

میان کیا جاتا ہے کہ ابو بحر بغد اوی بھر ہیں یدیدی کاوکیل تھااور ایک عرصہ دراز تک اُس کی ملازمت کر تار ہااور اُس نے بہت کی دولت جمع کرلی۔ کی نے یدیدی سے جاکر چفلی کر دی تو یدیدی نے اس کو پکڑوا کر بلایا اور اس کے سر پراتناماراکہ اس کی آنگھوں میں یانی احر آیا اور وہ اندھا ہو کر مرگیا۔

ابو نفر بہت اللہ من محمہ من احمد کا تب اس بنت ام کلثوم بدنت ابو جعفر
محمہ من عثان عمر ک کا میان ہے کہ ابو ولف محمہ من نظفر کا تب امتداء میں مخم
(غالیوں کا ایک فرقہ جو اصحاب کساء مختن پاک محمد و علی و فاظم میں حمن و حسین کی
الوہیت کا قائل تھا) مشہور تھا کیو نکہ اُس نے کر خیوں میں تربید پائی تھی اور
ان ہی لوگوں کا شاگر و ان ہی کا ساختہ پر واختہ تھا اور اس میں کوئی شک نہیں کہ
کر خی لوگ عمو با تخمس ہوتے تھے ابو ولف کا بھی ہی مسلک تھا خود اُس کا میان ہے
کہ ہمارے شیخ صالح قدس اللہ روحہ نے ہمیں نہ ہب ابو جعفر کر فی ہے تکال کر
نہ ہب صحیح یعنی ابو بحر بعد اوی کا تمنع ہما دیا۔

ابو دلف کا جنون اور اس کے مذہب فائسد کے واقعات بے شارین

جن کی تفصیل بھی خاص طو ب<u>ل ہے۔</u> (قار الا توار جلد ۱۱ ، صفحه ۲۹۲ تا ۵۰۳ (



آسان ہے ندا آئے گی

حضرت الم جعفر صاوق عليه السلام ب روايت ب كه وه وو آواذي بين پهلى ابتدائى رات بين اور دو سرى رات ك آخرى حصه بين بوگ، بشائ بن سالم كتاب كه يه كس طرح به بوگا؟ تو حضرت نے فرمايا كه ايك آسان به بوگا در ايك الجيس كى جانب به بوگا راوى كتاب كه بين نے سوال كيا كه آن دونوں بين ايك دوسر به كوكس طرح جداكيا جائے گا تو حضرت نے فرمايا كه اس كوده شخص پهان جائے گا جس نے اس آواز آنے به حضرت نے فرمايا كه اس كوده شخص پهان جائے گا جس نے اس آواز آنے به پيلے اس كے بارے بين سنا ہوگا كي

(حارانوار جلد ۱۵ صغیہ ۲۹۵، عصر ظهور ۳۳۳، ۳۳۲)

حمر بن مسلم سے روایت ہاں نے کہا، ،آسان سے حضر ت قائم کے

ام کی آواز آئے گی کی یہ یہ آواز مشرق اور مغرب کے رہنے والے سیس
کے ،سونے والااس آواز سے مید ار ہو جائے گااور ہیضا ہو آگئر اہو جائے گااور جو
کھڑ ا ہو گا وہ خوف کی وجہ سے ہیٹھ جائیگا یہ آواز جبر ائیل ایمن علیہ السلام کی ہو
گئے۔

(حارانوار جلد ۲۹۰۲ ۲۹۰۲)

امام مہدئی آباد ہول سے دور رہیں گے اصدبغ تن نبانہ نے کماکہ ہیں نے حفزت امیر الموشین علی این الی طالب علیہ السلام کوفرماتے ہوئے شاکہ :۔ صاحب الامر عليه السلام ذمانه غيبت ميں لوگوں سے الگ تحلگ، آباد يوں سے دور تنااور اكيلے رہاكريں گے۔ (اكمال الدين، حار الانوار جلد ١١، ار دوتر جمہ صفحہ ۲۱۸)

اس سال جج يريه جانا

حبین بن علی بن بادیہ کا میان ہے کہ جس سال قرامط نے حاجیوں کے قافلوں پر حلے گئے اور اس سال ستار ہے بہت ٹوئے۔ ہمارے شر کے پکھ لوگ بغد او میں منیم نے اُن لوگوں نے مجھ سے متایا۔ میر سے والدر ضی اللہ تعالی عن نے ابو القاسم حبین بن روح فقد س اللہ روحہ کی معرفت حضرت صاحب العصر علیہ السلام کی خدمت میں خط تکھا اور تج پر جانے کی اجازت جابی ۔۔

توجوابآیا'' که اس سال هج پر نه جانا^{ین}

میرے دالدینے دوبارہ لکھاکہ یہ نذرواجب ہے کیااس کے بادجو دہتھ رچوں اور چج سرنہ جاؤں ؟

جواب آیا :۔ اگر اتا ہی ضروری ولازی ہے تو بالکل آخری قافلے میں چلے جانا چتانچہ وہ بالکل آخری قافلے کے ساتھ گئے اور اس سے پہلے جتنے قافلے گئے تھےوہ سب قمل کرویئے گئے لیکن یہ قافلہ محفوظ رہا۔

(غبية طوى ، لتارالا نوار جلد ١١ ، اروو ترجمه صفحه ٣٩٧)

حق اماتم کی وصولی

محمد ن ہارون ہدائی ہے روایت ہے اُن کامیان ہے کہ مجھ برپانچ سو
ویتار حنِ اہام کے واجب الاوا تھے لیکن میر اہاتھ تھ ہوگیا ہیں نے سوچا کہ
میرے پاس چھ د کا نیں ہیں جو ہیں نے پاپچسو تمیں دیتار ہیں طرید لی تھیں اُن کو
پانچ سو دیتار کے عوش نا جیہ مقدسہ کو دے دول (تا کہ حق اہام اوا
ہوجائے)۔ خدا کی قتم یہ بات ابھی میری ذبان پر نہ آئی تھی کہ حضرت اہام
ذبانہ علیہ السلام کا خط محمد من جعفر کے نام آیا کہ میرے پانچ سودیتار کے عوش میں میں بارون سے دکا نہی طرید لو

(الخرائج والجرائح ، حارالاتوار جلد ١١، ار دوتر جمه ص ٩٤ ٣)

ہزار دینار میں سے صرف دو ہو بھج

محر بن بوسف شاشی سے مروی ہے اُن کا میان ہے کہ جب میں حراق سے والیں ہوا تو مقام مرومیں ہارے پاس ایک مخص تھا جس کو محر بن حسین کا تب کما جاتا تھا اُس نے غریم (قرض خواہ حضرت صاحب الربان علیہ السلام) کے لئے کچھ رقم جح کی تھی ۔ راوی کا میان ہے کہ اُس نے حضرت صاحب الربان علیہ السلام کے متعلق وریافت کیا تو میں نے جو آثار و نشانیاں و کیسی تھیں بنائیں۔ اس نے کمااچھا میرے پاس صاحب الربان علیہ السلام کی رقوم جمع ہیں۔ تمہاری کیارائے ہے :۔

مس نے کماأے عاج کے پاس بھ ووروہ لا۔ عاج کے اور می کوئی

ہے۔ میں نے کما۔ ہاں۔ ایک ہزرگ ہیں۔ وہ یولا۔ اچھا۔ اگر اللہ نے مجھ سے اس کے متعلق بازیرس کی تو میں تمہار انام لیکر کمو نگا کہ انھوں نے کما تھا۔ میں نے کما۔ ہاں کہ ویتا۔

اس کے بعد میں اس کے باس سے روانہ ہو گیا جب کی ہرس کے بعد اس سے ملاقات ہوئی تو اس نے ہتایا کہ میں عراق گیا تھا میرے پاس وہ رقم موجود تھی۔ میں نے عابدین لیل فارسی اور احمدین علی کلثوی کے ہاتھ دوسود یتار کی رقم روانہ کی اور اس کیا تھ حضرت صاحب الزمان علیہ السلام کی خدمت اقدس میں ایک عربینہ کلھاجس میں التجاکی کہ آپ میرے لئے وُعافر مائیں۔

توجواب آیا که :

تم نے جو رقم ارسال کی تھی وہ وصول ہو گئے۔ اور یہ ہی لکھا کہ تہمارے پاس ہمارے ایک ہزار دینار تھا ہی کے بعد لکھا کہ اگر پچھ کرنے کا ارادہ ہو تو ابو الحن اسدی سے مقام رے بیل طور میں نے بوچھا کیا واقعاً۔ میں نے دوسو واقعاً۔ میسا۔ آنجناب نے تحریر فرمایا ۔ وییا بی کما۔ ہال واقعاً۔ میں نے دوسو دینار پھچ تو۔ اس لئے کہ میں مشکوک تھااور باتی رقم میرے پاس تھی اللہ نے وہ شک دور کر دیااور اسکے دو تین دن بعد حاجز مرگیا تو میں نے جا کر اس کو اطلاع دی۔ وہ بہت ممکنین ہوا۔ میں نے کما۔ غم کی بات نہیں آنجناب تو پہلے بی اپن خط میں بنا چکے تھے کہ وہ رقم ایک ہزارہ بنار ہے دوسرے یہ کہ اب آئندہ اسدی سے معاملہ کرنا۔ اس لئے کہ انھیں حاجز کی موت کا علم تھا۔

(الخرائج والجرائح، حار الاتوار جلد ١١، ارد وترجمه صغه ٤ ٩ ٩ ٨ ٠ ٣)

تهمارے یاس تنمیں دینار ہیں

محمہ بن حسین ہے روایت ہے کہ تمیمی نے استرباد کے ایک محض کے حوالے سے متایائس مخف کا میان ہے کہ میں عسکر (سرمن رائے) گیا میرے یاس تمیں ۳۰ عدد شامی دینار ایک یارچہ میں مدھے ہوئے تھے میں اُسے لیکر د رِ دولت ہر حاضر ہوااور دہاں ہیٹھ گیا۔اتنے میں ایک کنیزیاایک غلام اندر ہے مرآمہ جو ااور یو لا۔ لاؤ تمہارے یاس کیا ہے۔ میں نے کما میرے یاس کچھ نہیں۔ یہ جواب من کروہ اندر جلا گیا۔ مجروا کیں آبااور کینے لگاآپ کے ہاس تمیں دینار ایک یار ہے میں مدیعے ہوئے میں اور ایک اگو تھی ہے چنانچے میں نے وہ رقم آٹ کے ہاں تھے دی۔

(الخراجُ والحِرائح، جارالانوار جلد ١١، ار دوتر جمه)

مسرور طباخ کی اعانت

مسرور طباخ ہے روایت ہے کہ میں نے حسن بن راشد کو اپی تک د سی کا حال لکھااور اس کے پاس گیا محروہ گھریر نہ تھا۔لہذاوا پس آیااور ابو جعفر کے شہر میں داخل ہوا جب رحیہ میں پنجا توایک مخص میرے پاس آیا س کا جمرہ تو مجھے نظر نہ آیا گر اُس نے میر اماتھ پکڑ ااور ایک سفید رنگ کی تھیلی مجھے تھاوی جس پر تح پر تھااس میں ہارہ دینار مسرور طباخ کیلئے ہیں۔

(الخرائج والجرائح)

تیرے باپ کا نام عبدر بہ ہے

غلال من احد ابوالرجاء مصری (جومر و صالح تھا) سے روایت ہے اُن کا تیان ہے کہ میں نے حضر ت امام حسن عمری علیہ السلام کی و قات کے تحقیق کے لئے (کہ خفیت خد ااور امام کون ہیں) اپنے ول میں کما۔ اگر کوئی بات ہوئی تو وہ تیمن سال بعد ظاہر ہوگی محر میں نے ایک آواز سی '' اے نفر من عبدر بہ'' اہل مصر سے کمن کہ کیا تم لوگ رسول اللہ کو دیکھ کر اُن پر ایمان لائے تھے۔ ابو الوجاء کا میان ہے اس سے پہلے جمعے خود نہیں معلوم تھا کہ میر سے باپ کا نام عبد الرجاء کا میان ہوئی۔ رب ہے کیونکہ میں مدائن میں پیدا ہواوہاں سے جمعے ابو عبداللہ نو فلی اٹھا کر مصر لایا ور دہیں میری نشو نما ہوئی۔

(طلا لا نوار جلد ۱۱، ار دوتر جمه صفحه ۴۰۰)

عا تکه کی تھیلی

احمد من افی روح کامیان ہے کہ اہل و نیور میں سے ایک عورت نے بجھے بلیا جب میں پنچا تو اس نے کہا ہے ابن افی روح ہم ہمارے شریص و بن داری اور زہدو تقویٰ میں موثق ترین آدی ہولہذا میں ایک امانت آپ کے سرد کرتی ہوں امید ہے کہ تم اس سے عمدہ برآء ہو کے میں نے کما کہ انشاء اللہ الیابی کرونگا اس عورت نے کما کہ یہ چند در ہم میں جو اس تھیلی میں سر ممبر میں اسے کھول کرنہ دیکھنا جب تک کہ اس محض تک نہ پنچا دوجو یہ بنا دے کہ اس تھیلی میں کیا ہے۔ اور یہ میر اایک گوشوارہ ہے جو دس دینار کے برابر ہے اس میں کیا ہے۔ اور یہ میر اایک گوشوارہ ہے جو دس دینار کے برابر ہے اس میں

جواہرات کے نین دانے ہیں وہ بھی وس دینار کے برابر ہیں۔ نیز مجھے حضرت صاحب الزمان علیہ السلام سے ایک بات وربافت کرنی ہے مگر جاہتی ہوں کہ میرے سوال سے پہلے دہ مجھے جواب بناویں۔

راوی کامیان ہے کہ میں نے کہا۔آپ اُن سے کیا ہو چھنا چاہتی ہیں اُس عورت نے کمامیری شاوی میں میری ماں نے کس سے وس ویتار قرض لئے تھے میر پتہ نہیں کہ انھول نے کس سے قرض لیا تھا تاکہ میں اُس کواد اگر دول جو بھی تم کو میہ بات بتا دے اس کو میہ مال وے ویتا میں نے اپنے دل میں کما چلو میہ تھی میرے اور جعفر من علی کے در میان آز مائش ہے۔

لواور اسے پڑھ لو میں نے پڑھا تواس میں تحریر تھا۔

بهم الله الرحمٰ الرحيم_ا الدين روح ، عاتك بينت ويراني في تمہیں ایک تھیلی سپروکی ہے تمہارے خیال میں اس کے اندر ایک ہزار ورہم ہیں گر تمہارا اندازہ غلط ہے ایبا نہیں ہے۔ تمہیں ایک امانت دی گئی تھی جس کو تم نے کھول کر نہیں ویکھااس لئے تہیں کیا معلوم کہ اس میں کتنی رقم ہے۔ سنو۔اس میں ایک ہزار در ہم اور پیاس ویتار ہیں علاوہ ازیں تمہارے یاس ایک کو شوارہ (کان کامدہ) ہے اُس عور ت کا خیال ہے کہ بید دس دینار کی قیت کا ہے۔ یہ سیح ہے کہ اس میں جو تھینے جڑے ہوئے ہیں اُن کے ساتھ یہ کو شوارہ ای قیت کا ہے ادر اس میں موتیوں کی قیت وس دینار ہے بھی زیاد ہ ہے تم پیر م وشوارہ میری فلاں خاد مہ کو دے وور پیس نے اُس کو عطا کر ویا ہے مجر یمال سے بغد اد واپس جاؤاور یہ ساری رقم حاجز کے حوالے کر دیتااور اُس سے ا پناسغر خرچ جو د ودے لے لینا۔اوروہ دین دینار جسکے تنفلق اُس عورت کا خیال ہے کہ اُس کی مال نے اُسکی شادی کے موقع پر کسی ہے قرش کئے تھے وہ نہیں جانتی کہ کس ہے قرض لئے تھے توالیا نہیں ہے بلحہ اس کو علم ہے کہ کس ہے قرض لئے تھے جس ہے وہ دس دینار قرض لئے تھے اس کانام کلثوم بینت احمہ ے جو ناصبیہ بے لین وہ وشمن الل بیت ہے اور عاسکہ چاہتی ہے کہ أسے نه دے مبعہ وودیتارا بنی نادار بسہنوں میں تقتیم کرناچاہتی ہے اور اے این روح ، اب تم جعفر کے پاس اُس کی آز ماکش کے لئے نہ جانابلحہ سید ھے اپنے گھر واپس جاؤ کیو نکہ تہارے چاکا انقال ہو گیا ہے اور میراث میں اللہ نے اُس کا مال

تهارے مقدر میں لکھ دیاہے۔

یہ خط پڑھ کر میں بغداد واپس آیاوہ تھیلی جا بڑ کو دی اُس نے تھیلی کا رقم کو شار کیا تو ایک ہزار در ہم اور بچاس دینار تھے جھے اُس نے تمیں دینار و سیے اور کما کہ جھے حکم ملاہے کہ اتن ہی رقم کم کو تمہارے اخر اجات کے لئے دے دول الغرض میں وہال سے اپنی جائے قیام پرواپس آیا توایک شخص نے آگر جھے خبر وی کہ تمہارے کچاکا انتقال ہو گیاہے اور تمہارے گھر والے تمہیس واپس بانچا تو دیکھا کہ واقعاً میرے بچاکا انتقال ہو گیا تھا کہ واقعاً میرے بچاکا انتقال ہو گیا تھا اور آم طے۔ اور آم ملے۔ اور آم کے جھے تین ہزار دینار اور ایک لاکھ در ہم لیے۔

تير العصور احيها مو گيا

محمد بن یوسف شاخی کا میان ہے کہ مجھے تا سور ہو گیا تھا میں نے بہت سے اطباء کو دکھایا اور کافی بیسہ خرچ کیا گر دوانے کوئی کام نہ کیا تو میں نے ایک عریضہ لکھااور اس میں دعا کی التجاء کی۔

جواب آیا: کہ اللہ نے کچھے صحت وی اور کچھے و نیا اور آخرت میں ہمارے ساتھ قرار دیااس کے بعد روز جمعہ آنے سے قبل ہی زخم اچھا ہو گیا اور زخم کی جگہہ ہقتیل کی مائند ہو گئی میرے احباب میں جوا طباعہ تھے میں نے انھیں بلا کر د کھلایا توانھوں نے کہا کہ اس ناسور کی کوئی دواہی نہ تھی یہ اللہ تعالیٰ کا بہت ہوا کرم تم پر ہوا ہے

(كا في ،الخرائج والجرائح ، جارالا نوار)

حضرت امام زمانّہ نے تحریر فرمایا کہ۔۔۔۔

حسن بن عیسی عربی کامیان ہے کہ حضر ت ابو مجمد امام حسن عسکری
علیہ السلام نے جب شمادت پائی تو ایک مخص مصر سے حضر ت صاحب الامر
علیہ السلام کے لئے پچھ رقم لے کر مکہ جانے کے لئے چلا اور بہال دار د
ہوگیا۔ بہال پر لوگوں نے مختف با تیں شروع کر دیں۔ کی نے کما کہ حضر ت
امام حسن عسکری علیہ السلام نے لاولد شمادت پائی۔ کی نے کماأن کے بعد أن
کے جانشین جعفر بیں اور پچھ نے یہ بھی کما کہ ایسا نہیں ہے بلحہ أن کے بعد أن

چنانچہ اُس مخف نے اور طالب مای ایک آدی کو عمر (سامرہ) روانہ
کیا تاکہ حقیقت حال کا پتہ چلے۔ اُس کو ایک خط تھی دیا۔ وہ آدمی پہلے جعفر
(کذاب) کے پاس گیا اور اس سے امامت کی دلیل طلب کی اُس کے بعد وہ
حضرت انام حسن عسکری علیہ السلام کی ڈیوڑھی پر پہنچا اور حضرت صاحب
الزمان علیہ السلام کے سفیر کو خط دیا۔ اُس خط کا جواب آیا کی نہ

''اے مخص اللہ مختے صبر دے۔ تیرا مالک فوت ہو گیائے اور وہ رقم جو اُس کے پاس محفوظ تھی اس کے لئے وہ اپنے ایک معتمد شخص کو وصیت کر گیاہے کہ اپنی صوابدید ہر عمل کرے'' چنانچہ جو کچھ آپ نے لکھا تھا ویسا ہی پایا۔ (کافی ،ارشاد ، حارلانوار جلد ۱۱، ار دو)

تم تکوار لانا بھول گئے

علی ن محمہ سے روایت ہے کہ ایک محض کچھ رقم صاحب الر مان علیہ السلام کی خد مت اقد س میں پہنچانے کے قصد سے آیا اس کا ارادہ تھا کہ وہ اپنے ساتھ تلوار بھی لے کر چلے گا کر وہ تلوار بھول گیا جب بیر قم آپ کی خدمت میں پہنچی تو آپ نے لکھا۔ رقم وصول ہو گئ کر اس تلوار کا کیا ہوا جو تم اپنے ساتھ لانا ہول گئے تھے۔

(**حار ا**لا نوار).

جنید کے علاوہ اجرائے و ظیفہ کا تھم

حسن بن مجمد اشعری کا میان ہے کہ حضرت ابو مجمد امام حسن عسری علیہ السلام کے خطوط میں جیند اور ابو الحسن اور دوسروں کے لئے اجرائے و ظا تف کا حکم آتا محرآپ کی شمادت کے بغد حضرت صاحب الزمان علیہ السلام کی طرف سے جو تحریرآئی اس میں ابوالحن اور اُن کے ساتھوں کے لئے پجر سے اجرائے و ظا تف کا حکم تھا۔ لیکن جنید کے لئے پچھے نہ تھا یہ دیکھ کر جھے و کھ جوا۔ در ایں اثناء جنید کے انتقال کی خبر آئی تنظیم میں سمجما کہ جنید کا نام کو ل نہ تحریر فرمانا :۔

(ارشاد ، جار الإنوار جلد ۱۱،۱ر دوتر جمه)

اولا د نرینه کی د عا

یخ او جعفر طبری نے اپن ایک کتاب میں او الفضل شیبانی و کلیدی

صاحب الزمان علیہ السلام کی خدمت اقد س میں تین عریضے تحریر کے اور اُن میں اپنی حاجتیں بیان کیس اور یہ بھی لکھا کہ میں کیر الری ہو گیا ہوں مگر کوئی اولاد خیس رکھتا ۔ آپ نے تمام حاجتوں کے متعلق تو جواب دیا مگر اولاد کے بارے میں کوئی جواب میں دیا۔ پھر میں نے چو تھی مرتبہ عریضہ لکھا اور اس میں در خواست کی کہ آپ و عافر آگی کہ اللہ جھے فرز ند عطا کرے۔ آپ نے اس کے جواب میں تحریر فرمایا :۔

ترجمہ: ۔یااللہ ۔ تواس محض کو اولان فرینہ کرامت فرا۔ جس سے اس کی آتھیں شھنڈی ہوں اور وہ حمل جو قرار پایا ہے اس کو فرزند کا حمل قرار وے قاسم ن علاء کا بیان ہے کہ جمعے معلوم نہ تھا کہ میری کنیز حاملہ ہے جب میں نے اس سے وریافت کیا۔ تواس نے اقرار حمل کیا۔ اس کے بعد اس کنیز سے فرزند کی ولاوت ہوئی۔

اس حدیث کو حمیری نے بھی نقل کیا ہے۔

(قارالانوار جلد ۱۱، صفحه ۱۳۰)

وُعائے فرح کی تعلیم

مجیح ابو جعفر محمد بن جریر طبر ی نے اپنی کتاب میں ابو جعفر محمد بن مار ون ین موسیٰ تلعجمری ہے روایت کی ہے انھوں نے کہا کہ مجھ ہے ابو الحسین بن ابو بغل کا تب نے میان کیا کہ ہیں نے ابو منصور بن صالحان کی ملاز مت اختمار کرلی محر میرے اور اُن کے در میان کچھے ایبا معاملہ اور الی غلط فنمی بید ا ہو گئی کہ مجھے لاز ماس ہے روپیش ہونا پڑاائس نے مجھے بہت علاش کر ایا اور بہت ڈر ایا۔ کہ میں روپوش ہیں رہائے چنانچے ایک مرتبہ شب جعہ کو میں نے مقامر قریش کاارادہ کیاتا کہ وہاں رات تھر رہ کر کھا کروں وہ رات باد وباراں کی تھی میں نے ابو جعفر قئم ہے در خواست کی کہ واول کے ہے در دازہ مد کر لے اور مجھے الی جکہ وے دیں جہاں میں اطمینان سے د عابر سے کوب اور د عاما گوں اور کسی انسان کی وسترست ہے محفوظ ر ہوں وہاں کوئی نہ مپنچ کی کیو نکہ مجھے اپنی گر فآری کا خطر ہ تھاا نھوں نے ایبا ہی کہاہا ہر ہے دروازے مدر کر دیا اور اد ھر آند ھی اور مارش کازور ہوچہ گیااور ہر طرف ہے کی انسان کے پہنچے کاامکان نہ رہا۔ لیذا میں بہ صمحم قلب د عاوزیارات و نماز میں مشغول ہو گیا میریاس مشغولیت کو تھوڑی ہی دیر گذری تھی کہ حضرت امام موسیٰ کاظم علیہ السلام کی قبر مبارک کے پاس ہے کی انسان کے قد موں کی جاب سائی دی میں نے دیکھا کہ ایک تعخص کھڑ ا ہوا زیار ت پڑھ رہاہے اُس نے حضر ت آد م علیہ السلام اور تمام انبیاء · اولوالعزم پر سلام کیا بھراک ایک کرے تمام آئمہ طاہرین علیم السلام بر سلام مهجا اور گیار ہویں امام حضرت امام حسن عسكرى عليه السلام ير توقف كيا

(بار هویں امام پر سلام نہیں کھی) جھے ہوا تعجب ہوااور سوچاکہ شاید یہ ہول گیا ہواس کو معلوم نہ ہو ۔ یا یہ کہ اس شخص کا بی عقیدہ اور ند بہب ہوا۔ جب وہ شخص زیارت سے فارغ ہوا تو دور کعت نماز پڑھی پھر حضرت امام ابد جعفر علیہ السلام کی قبر کے نزدیک میرے پاس آیاادر اس طرح زیارت پڑھی اور سلام کیا اور دور کعت نماز پڑھی ہیں ڈر رہا تھا کیو نکہ اس کو پیچا نتانہ تھا ہیں نے دیکھا کہ ایک جوان مرد ہے سفید لباس زیب تن کئے ہے سر پر عمامہ بھی تحت الحک کے ساتھ ہے دوش پر روا ہے اس نے میرا نام لے کر آواز دی۔ اے ابدا لحن ن ساتھ ہے دوش پر روا ہے اس نے میرا نام لے کر آواز دی۔ اے ابدا لحن ن الی بخل ۔ تم دعا نے فرج کو کیوں بھولے ہوئے ہو۔ ہیں نے عرض کیا دہ کون کی دعا ہے انھوں فرمایا پہلے دور کھت نماز پڑھواس مے بعد یہ پڑھو۔

ترجمہ: ۔ اے وہ جو نیکوں کو طاہر کرتا ہے اور ہرائیوں کی پردے کو فاش
کرتا ہے۔ اے وہ جو جرم کا فوری مواخذہ میں کرتا۔ کی کے پردے کو فاش
نیس کرتا۔ اے عظیم احمان کرنے والے ۔ اے بہت نظر انداز کرنے والے ، اے
اے بہترین درگذر کرنے والے ۔ اے بہت زیادہ مغفر نے کرنے والے ، اے
رحت کے ساتھ دو نوں ہاتھ بردھانے والے اے ہر مناجات کی انتا۔ اے ہر
ایک کی شکایت سننے والے ۔ اے ہر مدد جاہنے والے کی مدد کرنے والے ۔ اے
قبل استحقاق سب کو نعمات و سے والے ۔ ۔ ۔ میں ان اساء کے واسطے تھے
سوال کرتا ہوں اور محر اور اُن کی او لاد طاہرین علیم السلام کے حق کا واسطہ دے کہ کو دور کر۔ میرے رنج و غم کو
دے کر تھے ہے دعا کرتا ہوں تو میری تکلیف کو دور کر۔ میرے رنج و غم کو
برطرف کر۔ میرے ماکی بومانگن ہومانگ اور اپنی حاجت طلب کر۔
فرماوے اور اس کے بعد جود عامائگن ہومانگ اور اپنی حاجت طلب کر۔

مچرا پناداہندر خسار ذمین پرر کھ کر سومر تبہ یہ کہ۔۔

"يا محمدٌ و يَا علِيُ يا علِيُ ويا محمدٌ اكفِيَاني فإنكُما

كَافِياىَ وَ انصُرانى فَإنكما نَاصِرَايَ"

پھر اپنا بایال رخسار زمین پر رکھ سو مرتبہ بلعہ زیادہ ادر کن کمہ کر الغوث الغوث الغوث اتا کمہ کہ ایک سانس ختم ہو جائے۔ پھر سر اٹھالے۔ انشا ء اللہ حل جلالہ اپنے کرم سے تیری جاجت پوری فرمائیگا۔

یہ ہدایا ہے من کر جب میں نماز و د عامیں مشغول ہوا تووہ چلے گئے نماز

وغیرہ سے فارغ ہو کر میں او جعفر قتم کے پاس گیا تاکہ میں دریافت کروں کہ
وہ مخف کون تھا اور اندر کیے داخل ہو گیا۔ گر پہلے میں نے ایک ایک درواز ب
کو جاکر دیکھا توسب مقفل اور مد تھے۔ بھے موا تعجب ہوا بھر خیال آباوہ مخف اندر
ہی کمیں سور ہا ہوگا اور ہمیں پتہ نہ چلا ہوگا آب میں او جعفر کے پاس پہنچا وہ
جیت زیت سے نکل کر باہر آئے تو میں نے اُس مخفل کے بارے میں دریافت کیا
کہ وہ کیے اندر داخل ہو گیا ؟

ا نھوں نے کہاکہ تم نے خود و کیے لیا کہ تمام دروازے مقتل اور مدین میں نے اٹھی تک کسی دروازے کو نہیں کھولا۔

پھر میں نے اُن سے سارا قصد میان کیا۔ انھوں نے کما کہ وہ حضرت صاحب العصر و الزمال علیہ السلام تھے میں نے انھیں شب جمعہ میں کئی مرتبہ دیکھا ہے کہ جب روضہ خالی ہو جاتا ہے تو تشریف لاتے ہیں۔

یہ من کر مجھے ہواا فسوس ہوا کہ بردااحجما موقع کھو دیااور قریب فجر میں نے دہاں سے مخلہ کرخ کااراد ہ کیا جہاں میں رد بوش تھاا تھی یہاں سے نکلا ہی تھا کہ این صالحان کے لوگ مجھے حلاش کرنے آگئے اور میرے احباب سے میرے متعلق پوچھنے گئے۔ان کے پاس میرے لئے ایک امان نامہ وزیر کی طرف سے اور ایک خط خود اُس کے ہاتھ کا لکھا ہوا تھا۔

لہذا ہیں اپنے چند باو ثوق احباب کو ساتھ لے کروزیر کے پاس گیاوہ جمھے و کیمتے ہی کھڑ اہو گیا بغل گیر ہوااور ہولا۔ اب تم اس منزل و مر ہے پر پہنچ گئے کہ تم نے میری شکایت حضرت صاحب الزمان علیہ السلام ہے کروی۔ ہیں نے کما کہ نہیں۔ بلکہ میں نے لود عاما گئی تھی اور التجاکی تھی۔ اُس نے کما۔ وائے ہو تھے پر۔ گذشتہ شب بعجہ حضرت صاحب الزمان علیہ السلام میرے خواب میں آئے اور مجھے ڈانٹ کر کما کہ۔ خبر وار۔ اُس سے اچھی طرح پیش آؤ۔ فواب میں آئے اور مجھے ڈانٹ کر کما کہ۔ خبر وار۔ اُس سے اچھی طرح پیش آؤ۔ میں نے کما: لا الد الا اللہ جمعہ نظرے میا جو ان کہ یہ حضرات (آئمہ طاہر من) حق کی انتا ہیں۔ میں نے حضرے میا حب الزمان علیہ السلام کو عالم علیہ السلام کو عالم عید اری میں و یکھا ہے اور انھوں نے جمھے یہ تعلیم فرمایں۔

مجر روضے میں میں نے جو پھے ویکھا تھاوہ میان کیا اُس کو برا تعجب ہوا اور حصر ت صاحب الزمان علیہ السلام کی ہر کت و طفیل میں میرے ایسے ایسے مقاصد پورے ہوئے جن کا میں تصور بھی نہیں کر سکتا۔

(كتاب الخوم، حار الانوار جلد ۱۱، صفحه ۳۱۳۲ ۳۱۸)

او لا د نرینه عطا ہو گی

یخ او العباس عبداللہ بن جعفر حمیری نے اپنی کتاب "الدلائل جزء ٹانی" میں تحریر کیا ہے کہ ربض حمید سے ایک مخص نے حضرت صاحب

الزمان علیہ السلام کی خدمت میں ایک عریضہ لکھا کہ میری زوجہ کے حمل ہے وعا فرمائیے۔

تو ولادت سے چار ماہ تمل جو اب آیا کہ اللہ تعالیٰ تھیے فرزند عطا فرمائے گااورابیای ہوا جیسا کہ آپ نے تحریر فرمایا تھا۔

(كتاب الني م، جار الانوار جلد ١١)

تمہیں کفن کی ضرور ت نہیں

روایت ہے کہ علی بن محمد سمری نے آپ کو عریضہ تھیجا جس میں ایک

کفن کی در خواست کی گئی۔

آپ نے جواب میں تخریر مایا :۔ کہ تمہیں ابھی کفن کی ضرورت نہیں ہے اتنی یرس کی عمر میں چیش آئے گی جنانچہ آپ نے جو سال مقرر فرمایا مقرار فرمایا میں اُن کی وفات ہو کی اور اُن کی وفات سے دویاں قبل آپ نے اُن کے لئے کفن تھے دیا۔

(كتاب الني م، حار الانوار)

حج کی ا جازت کفن کے ساتھ

حیین کن روئے ہے روایت ہے کہ احمد کن اسحاق نے حضرت صاحب الزمان علیہ السلام کو عربیضہ تھیجا۔اس نے جج پر جانے کی اجازت چاہی۔آپ نے اجازت دی ادر ساتھ کے لئے ایک کیڑا تھی تھیج دیا۔ احمد بن اسحاق نے کہا کہ اس کا مطلب سے سے کہ آپ انے مجھے موت کی خبر دی ہے۔ چنانچہ جب وہ حج کر کے واپس ہوا تو مقام طوان میں اُس کا انتقال ہو گیا۔

(ر جال کشی، حارالانوار جلد ۱۱، صغحه ۳۱۳)

امام نے فقیہ کے خط کا جو اب نہ دیا حن بن فضل نے زید بمانی سے روایت کی ہے اُن کا میان ہے کہ میرے والد نے اپنے ہاتھ سے لکھ کر ایک عربینہ حضر ست امام زمانہ علیہ السلام کی خدمت اقد س میں ارسال کیا۔ تو اُس کا جو اب آیا۔ بھر میرے ہاتھ سے ایک عربینہ لکھوا کر بھیا۔ اُس کا بھی جو اب آیا۔ بھر اپنے فقہاء میں سے ایک فقیہ ک ہاتھ سے عربینہ لکھوا کر بھیا۔ تو اس کا کوئی جو اب د آیا گر بعد میں خور کرنے پ معلوم ہوا وہ شخص قرمطی (جوند ہب حقد سے پھر جائے) ہوئے والا تھااس لئے جو اب نہیں ویا۔

> مولاً موالیوں سے مقدر سنوار دو دل اپنے بے قرار ہیں آکر قرار دو



مینی قافلے کے ساتھ نہ جانا

جعفر بن ار اہم مان کے فرستادہ علی بن محد شمشاطی ہے مروی ہے کہ ایک مرتبہ میرانقام بغداد میں تفااور وہاں مے نکلنے کے لئے اہل مین کے

قافلے کا نظار کر رہا تھا میں نے حضرت صاحب الزمان علیہ السلام کی خدمت با بر کت میں عریضہ لکھا کہ اگر احاز ہے ہوتو قافلہ اہل یمن کے ساتھ جلا جاؤں۔

جواب آیا کہ ان لوگوں کے ساتھ نہ جانا اتھی تمارے جانے میں

میتری نہیں ہے سر دست کو فد میں قیام کر و۔

چنانچہ تا ظہرواتہ ہو گیااور بنو حنظلہ نے اُن لوگوں پر حملہ کرے انہیں لوٹ لیا۔

(اكمال الدين، حار الأتوار)

ا مسال سمندری سغرنہ کرنا راوی نہ کورہ کا بیان ہے کہ ایک مرتبہ میں نے آپ کی خدمت میں عریضہ لکھ کر سندری سنرکی اجازت چاہی۔ جواب آیا۔ نہیں۔ سندری سنرے گریز کرو۔ چنانچہ اس سال جتنے سفینے روانہ ہوئے بر ی قذاقوں نے اُن پر حملہ کر کے انسیں لوٹ لیا۔

(اكمال الدين، جار الانوار)

تسارا اصل نام بدہے

لفر کتے ہیں کہ الل ملے میں سے ایک فخص نے پانچ وینار حاجز کے پاس مجھے اور ایک خط بھی خدمت اہام میں ارسال کیا جس میں اپنے نام کی جائے ایک

فرضى نام لكه ديا_

وہاں سے جواب آیا تواس میں اس ملنی کا پورانام و نصب تحریر تھااور سے میں کہ رقم وصول ہو ئی آخر میں اس کے لئے وعالمی تحریر فرمائی۔ میں کہ رقم وصول ہو ئی آخر میں اس کے لئے وعالمی تحریر فرمائی۔ (ایکال الدین ، جارالانوار)

قیدی رہاہو جائے گا

انی معد نے محمد من صالح سے روایت کی ہے انھوں نے کہا کہ میں نے حضرت صاحب الزبان علیہ السلام کی خدمت میں عریضہ ارسال کیا جس میں باواشا کہ کے لئے دعا کی در خواست کی جے عبدالعزیز نے قید کر لیا تھا نیز اجازت چاہی کہ میں اپنی فلال کنیز سے توالدو تاسل کا سلسلہ کر سکتا ہوں ؟ جواب آیا کہ کنیز وسے سلسلہ اولاد قائم کر سکتے ہولیکن اللہ جو چاہتاہے کر تاہے اور قیدی کواللہ تعالیٰ رہائی دے گا۔

چنانچہ میں نے اپنی کنیز سے سلسلہ اولاد شروع کیا مگر اولاد پیدا ہوئی اور مرگی اور جس دن آپ نے مجھے خط لکھاأس دن قیدی رہا ہو گیا (اکمال الدین ، جار الانوار)

کربلاسے ذبان مل گئ

الا عبداللہ ن سورة کامیان ہے کہ سرور تای شخص جو عابد و مجملہ تھاأن کا نصب میں کھول رہا ہوں جن سے اہواز میں میری طاقت کمی ہو پی ہے ان کا نصب میں کھول رہا ہوں جن سے اہواز میں قوت کویائی ندر کھتا تھاجب میری عمر کا میان ہوئی اور اور اللے سے قاصر رہا تو میر سے والد اور پیا جھے حسین ان روئ کے پاس لے گئے اور عن کرنے گئے کہ آپ حضرت امام زمانہ علیہ السلام سے گذارش کریں کہ آنجنا بال سے کے دعافر ما کمیں تاکہ یہ اور گئے۔

بیخ ابو القاسم حین این روئ نے تنایا کہ تم کو عکم دیا گیا ہے کہ حائر (کربلا) جاؤسرور کا میان ہے کہ یہ عکم پاتے ہی میرے والد اور پچا کر بلا پہنچ ، خسل کیا اور زیارت کی پھر میرے والد اور پچانے بھے پکارا''اے سرور'' میں نے کما۔ ابرے تم توبولنے گئے۔ میں نے عرض کیا میں انھوں نے کما۔ ابرے تم توبولنے گئے۔ میں نے عرض کیا جی بال !

عبید الله بن سورة کا میان ہے کہ یہ مختص بینی ''سرور'' بلید آواز ہے۔ نہیں و لنا تھا۔

(عنية طوى ، قارالانوار)

ہمیں اس کیڑے کی ضرورت نہیں

اسحاق بن حامد کاتب کامیان ہے کہ قم میں ایک براز مرد مومن تھااور اس کا شریک ایک مرد مرجئی تھاان دونوں کو ایک بہت عمدہ و نفیس کیڑا ہاتھ آیا۔ مرد مومن نے کمایہ تومیرے مولاً کے لئے بہت اچھار ہے گا۔

مر دمر جنی نے کہا کہ میں تو تہادے مولاً کو جانتا ہی تہیں۔ تاہم اس
کیڑے کا جو چاہو کر والغرض جب وہ کیڑا حضرت امام زمانہ علیہ السلام کی خد مت
میں چیش ہوا توآپ نے لیمائی میں اس کے دو فکڑے کر ویئے۔نصف اپنے پاس
ر کھ لیا۔اور نصف یہ کہہ کر والیاں کر دیا کہ ہمیں مر د مر جنی کے مال کی ضرورت
نہیں ہے۔

(ا كمال الدين ، حار الانول عليه ١١ ، ار دوتر جمه صفحه ٩٥ ص)

امام دلول کے حال جائے ہیں

حن بن فضل بمانی نے کہا کہ ایک مرتبہ میں شریر من انے گیا تو جناب قائم آل محمد علیہ السلام کی طرف سے ایک تعیلی میرے لئے آئی جس میں چھو دیار تھے اور اس کے ساتھ وو کیڑے مھی تھے میں نے ان کو والیس کر دیا اور اپنے ول میں سوچا کہ میری موجودہ حیثیت الی شیں ہے کہ میں ایبا چھو ٹا اور بے مقد ارتخد قبول کروں۔جب میں ان چیزوں کو والیس کر چکا بھر مجھے شخت ندامت ہوئی اور بالاخر میں نے اپنی گٹاخی کی خاص معذرت میں ایک عریضہ ندامت ہوئی اور بالاخر میں نے اپنی گٹاخی کی خاص معذرت میں ایک عریضہ

کھی لکھااور اہام کی خدمت میں کھجا۔ اور اس وقت نیت کرلی کہ اگر اللہ اس تھیلی کو جھے لوٹاوے تو میں اے حلال نہیں سمجھو نگا کہ اس کو استعال کروں باتھ اپنے باپ کے پاس لے جاؤں گا کیو نکہ وہ مجھ سے ذیاد واس کی اجمیت ہے آگاہ جیں۔ اور اس تھیلی کے لینے کے بارے میں کچھ بھی اشار و نہیں کیااور نہ ہی و وبار واس کے لینے سے انکار کیا۔

پس جوابا آپ کی تحریر آئی:۔

کہ تم نے تھیلی کے داپس کر دیے میں خطاکی ہے ۔ بشک ہم اپنے دوستوں کے ساتھ الیا کرتے ہیں اور سااد قات دہ خود ہم ہے اس کو طلب کرتے ہیں اور اس مے برکت حاصل کرتے ہیں اور بھے تک یہ بھی لکھار کہ تم نے ہمار کی تھال کی کور دکر لے کی وجہ سے خلطی کی ہے تو ہم اللہ عزق جل سے مغفرت طلب کرتے ہیں ۔ پس اللہ تہاری مخش فرمائے گا۔ گر چو نکہ اب تمہارایہ قصد ہے کو وہ رقم فود تم اپنے مصرف میں نمیں لاؤ گے اس لئے وہ رقم تم کو نمیں بھی جاتے ہیں اور تمہارے لئے لازم ہے کہ تم اپنی کیڑوں میں احرام باند ھو۔ میں نے دومرادوں کے بارے میں کھا اور چا کہ تیسری مراد کے بارے میں تکھا اور چا کہ تیسری مراد کے بارے میں تکھول لیکن پھر سوچا کہ آ جناب کو زا اور چا کہ تیسری مراد کے بارے میں تکھول لیکن پھر سوچا کہ آ جناب کو زا اور چا کہ تیسری مراد کے بارے میں تکھول لیکن پھر سوچا کہ آ جناب کو زا اس لئے اے نہ لکھا)۔

تو مجھ تک ان دونوں مرادوں کے بارے میں جواب آیا اور اس تیسری مراد کے بارے میں کھا تھا۔ میں نے چھپایااور نہیں لکھا تھا۔ میں نے امام سے ایک خوشبو الگی تھی۔ آپ نے ایک سفید کیڑے میں لیبٹ کر خوشبو مجھے کھوائی۔ وہ خوشبو میرے محمل میں تھی۔ جب میں راہ مکہ میں عسفان کے

مقام پر تھا تو میر اناقہ کھاگ آیا اور محمل گر پڑی اور جو بھی میر احال و متاع اس پر تھا تھی۔ میں اسے اپنا سامان سمیٹا گر اس میں تھیلی نہ تھی۔ میں اسے تلاش کر نے لگا۔ ایک شخص جو میرے ساتھ تھا بھے سے پوچھنے لگا کہ کیا تلاش کر رہے ہو ؟ میں نے جواب دیا کہ میری ایک تھیلی کھو گئی ہے۔ پوچھا اس میں کیا تھا۔ بی نے کماوہ میری زادِراہ تھی۔

اس نے کہا کہ میں نے اسے ویکھا ہے جس نے اسے اٹھایا ہے (لیکن کہ تفصیل نہ بتائی) کو میں اس سے مسلسل ہو چھتار ہا۔ یہاں تک کہ مایوس ہو گیا جب میں مکہ پنچااور میں نے اپناساز وسامان کھولا توسب سے پہلے اس گھڑ ی میں وہ تھیلی نظر نہ آئی جو محمل نے گر گئی تھی جس وقت کہ سار امال و متاع بھر اپڑا تھا۔

میں بہت پریٹان تھا کہ اب ہیں بعد اوا پڑھر کیے جاؤں گااور سوچا

کہ جمجے خوف ہے کہ اس سال جج نہ کر سکوں گااور نہ اپنے گر بہنج سکوں گا۔ میں
او جعفر کے پاس گیااور جور قعہ میں نے لکھا تھااس کا جواب طلب کیااس نے کما
کہ فلاں مقام پر ایک مسجد ہے تم وہاں چلے جاؤ وہاں ایک مختص تمہیں لے گا جو
تمہیں تمہارے اموال کی خروے گا میں اس مسجد میں گیا توایک مختص جمحے طااس
نے جمحے سلام کیااور مسکر ایااور او لا کہ میں تمہیں خوشخری و بتا ہوں تم اس سال
ج بھی کرو مے اور خروعا فیت سے اینے گر بھی لوٹو کے ۔ انتاء اللہ۔

میں این و جناء کو تلاش کرنے لگا تاکہ اسے کموں کہ نیرے لئے کر اپ پر باقہ کا انتظام کر و سے پہر و نوں بعد اس سے ملا قات ہو نی وہ بھے دیکھتے ہی ہولا کہ میں کئی روز سے تمہاری تلاش میں تھا مجھے حکم ہوا ہے کہ میں تمہارے لئے کرایہ کی سواری کا نظام کروں۔ پس حن نے مجھ سے بیان کیا کہ وہ اس سال امام کے وجود کی دس د لیلوں سے مطلع ہوا۔ (کمال الدین جلد دوم، صفحہ ۲۳۳)

خط پر صرف انگلیوں کے دائرے تھے

سیان کیا جھ سے میرے واللہ نے ان سے سعد بن عبد اللہ نے ان سے
ابو حامد مراغی نے ان سے محمد بن شاذ ان بن نعیم نے کما کہ اہل ملخ کی جانب سے
ایک مخف آیا جس کے پاس کچھ مال اور ایک رقعہ تھا جس میں کچھ تحریر نہ تھا بلعہ
انگلیوں سے وائرے ڈالے ہوئے تھے المی سلخ نے اس قاصد سے کما تھا کہ یہ مال
اس مخف کے حوالے کر ناجو تم کوائی تھے کے باست متا تے جو ہمارے ساتھ پیش
آیا۔ اور اس رقعے کا جواب دے۔

پی وہ مخص عکر آیا۔ اور جعفر (افتاب) کے پاس گیا۔ اور اس کو خبر دی تو جعفر نے اس سے کہا تم بدا پر یقین رکھتے ہو۔ اس مخص نے کہا کہ اس لی تو جعفر نے کہا ہوا تھا اور انہوں ۔ ہاں۔ تو جعفر نے کہا ہے شک تمہارے صاحب (مال) کو با ہوا تھا اور انہوں نے تہیں تھم دیا تھا کہ مال مجھے دے وینا مال لانے والے نے کہا میں اس جو اب پر قناعت نہیں کر سکنا۔ پھر وہ وہاں سے لکلا۔ اور ہمارے اصحاب کے پاس آیا تو اس کے لئے۔ امام زمانہ علیہ السلام کی تو تین ظاہر ہوئی :۔

یہ مال ہوائے و فاہے یہ ایک صندوق میں رکھا تھا چور گھر میں واخل ہوئے اور صندوق میں جو آپنے تھالے گئے گر مال چ گیااس کے اوپر بر قعہ موجود تھااور اس میں دائر ہے ہے ہوئے تنے جن کے ذریعے دیا کی گذارش کی گئی ہے الله تمهارے ساتھ (تمهاری خواہش کے مطابق) ایبابی کرے۔ (کمال الدین جلد دوم، صفحہ ۲۲۳)

جو خیال دل میں ہے اُس سے توبہ کرو

ان ولید نے سعد ہے ،انھول نے علان ہے ، انھول نے محمد بن جبر کیل ہے انھول نے ایر اہیم و محمد بن فرج ہے انھول نے محمد بن ایر اہیم بن میز یار ہے اور اُن کا میان ہے کہ میں ایک مر تبہ بغر ض زیارت عسکر (سر من رائے) گیا اور ناحیہ مقدمہ (روضے)کا قصد کیا راستے میں ایک عورت

ملى _اس نے پوچھا _ کیاتم محمد من الراہیم ہو؟

میں نے کہا۔ ہاں۔ اُس نے کہا کہ والیں جاؤتم اس وقت وہاں نہیں پنٹی سلو کے رات کے وقت آنا تمہارے گئے دروازہ کھلار ہیگا۔ اندر چلے جانا جس ججرے میں چراغ روشن ہواس میں داخل ہو جانا۔

میں نے ایسا ہی کیا۔ دروازے پر پہنچاد روازہ کھلا ہواد یکھا۔ اندر چلا کیا اور اس ججرے میں داخل ہو اجس میں چراغ روشن تھا۔ انھی میں دونوں قبروں کے در میان سسکیوں سے رور ہا تھا کہ ایک آواز سنائی دی۔ کس نے کہا کہ اے محمد! اللہ سے ڈرو۔اور دل میں جو خیال ہے اُس سے توبہ کرو تمہاری ذمہدار نی بہت اہم اور ضروری ہے

(اكمال الدين، خار الانوار)

دل کی بات

حسن بن فضل بن زید بمانی ہے رواہت ہے کہ میں نے (حضر ت امام زمانہ علیہ السلام) کو دو مقصد اپنے عریضے میں لکھے لیکن تیسر ی حاجت کالکھنا میں نے مناسب نہ سمجھا کہ آپ کو ہر امحسوس نہ ہوآپ نے جواب میں دونوں مقاصد کے ساتھ ساتھ تیسری حاجت کے بارے میں خود تحریر فرمادیا۔

(غيبة طوى، حار الانوار)

سروست زیار ت ملتوی کر دو

محمد بن یعقوب نے علی بن محمد برواہت کی ہے اُن کامیان ہے کہ ایک مر جبہ مقاہر قریش کا ظمین اور حائر کربلا کی زیارت کے لئے حضرت امام زمانہ علیہ السلام کا امتاعی حکم آگیااور اس حکم کے آئی کے بعد ایک ماہ بعد دزیر باقطانی نے جھے بلایا اور کما کہ فرات کے کنارے سے والوں اور قریبہ مرس کے باشدول سے جاکر کمہ دو کہ مقاہر قریش کی زیارت کو نہ جا کیں اس لیے کہ خلیفہ وقت نے حکم دیاہے کہ جو تھی مقاہر قریش کی زیارت کو جائے آئے گر فار کرلو۔

حادم نشہ کر تا ہے اسے والیس کرو حن بن خفیف نے اپنوالدے روایت کی ہے کہ آپ (حضر ت امام زمانہ) نے کھے خدام مدینہ رسول کھے اور خفیف کو خط تحریر فرمایا کہ تم ان

خاد مول کے ساتھ مدینہ جاؤ۔

خفیف اُن کے ساتھ گئے جب کو فد پہنچے تو اُن میں سے ایک خادم نے کوئی نشہ آور چیز استعمال کی۔ اور ابھی کوچہ سے نکلے بھی نہ تھے کہ عسکر (سر من رائے)سے خط آیا کہ اس خادم کو واپس کر دو جس نے نشہ آور شے استعمال کی ہے۔ پھر اس کو خد مت ہے یہ خواست کر دیا۔

(فارالانوار)

قمام و کلاء کور قم و صول نه کرنے کا حکم

حیین بن حن علوی کامیان ہے کہ بادشاہ کے ندیموں ہیں ہے ایک مخض روز حنی اور دوسر اس کاسا سی دونوں مکار اور فر بی تھے ایک مر جہ اُس خض روز حنی اور دوسر اس کاسا سی دونوں مکار اور فر بی تھے ایک مر جہ اُس خض نے کہا کہ فلال جگہ پر رقم آتی ہے اور اُن کے بہت ہے و کلاء رقم و صول کرتے ہیں چنانچہ اس نے ان تمام و کلاء کے عام بھی بناد نے جو اطر اف وجو انب ہیں بنے اس کی اطلاع عبید اللہ بن سلیمان وزیر کو ہوئی گوائی نے اُن تمام و کلاء کو قید کرنے کا ارادہ کیا لیکن بادشاہ و قت نے کہا کہ اس مخض کو طلب کیا جائے جس نے یہ ذری ہے کہو تکہ یہ بات اتن اہم ہے کہ اسے نظر انداز نہیں کیا جائے جس عبید اللہ بن سلیمان نے کہا کہ ہم تمام و کلاء گرفار کر لیٹے ہیں۔بادشاہ نے کہا۔ نہیں۔بادشاہ نے کہا۔ نہیں۔بادشاہ نے کہا۔ نہیں۔بادشاہ کے باس جاسوی کے لئے روانہ کرتے ہیں اور ان جاسوسوں کو و کلاء بچائے تھی نہ ہو نگے۔ پس جو و کیل ان سے رقم و صول کرے۔اُسے گرفار کر لیا جائے۔

رادی کامیان که معاحضر عدامام زمانه علیه السلام کا تھم تمام و کلاء کے

پاس پینچا کہ تا تھم ٹائی کی تھی شخص ہے کوئی رقم وصول نہ کی جائے باعد رقم وینے والے مخص ہے اس معالمے میں لاعلمی کا ظہار کیا جائے۔

چنانچہ ایک جاسوس محمد من احمد کے پاس جا پہنچا اور تخلیہ چاہا اور پھر کما
کہ میرے پاس کچھ رقم ہے جس کو میں امام کی خد مت میں ہمجما چاہتا ہوں محمد من
احمد نے کما کہ تم کو شاید میہ غلط فئمی ہوئی ہے میں تو اس سلسلے میں کی بات سے
واقف نہیں ہوں۔وہ مخص مسلسل اُن کی خوشا مہ کر تارہا اور محمد من احمد بہتم
لا علمی کا اظمار کرتے رہے۔اور اس طرح تمام جاسوسوں نے ہر وکیل کے پاس
رقم لے جاکر دینے کی تھم پور کوشش کی۔ مگر تمام وکلاء نے اُن سے رقم وصول
کرنے سے ازکار اور معالمے لیے لا علمی کا اظمار کیا۔ اس طرح میہ خطرہ ش گیا۔
کرنے سے ازکار اور معالمے کے لا علمی کا اظمار کیا۔ اس طرح میہ خطرہ ش گیا۔

تیری زوجہ غلط متی ہے

علی بن محمد بن اسحاق اشعری کامیان ہے کہ میری ایک زوجہ تھی جے میں ایک عرصہ سے چھوڑے ہوئے تھا ایک ون وہ میر سے پاس آئی اور بولی۔اگر تم نے بچھے طلاق دے دی ہے تو مجھے سا دو؟ میں نے کما۔ نہیں۔طلاق نہیں دی۔

بھرای روز میں نے اس سے مباشرت کی۔ چنانچہ ایک ماہ بعد اس نے بھے خط کلصاکہ مجھے تمل قرار پایا گیا ہے۔

میں نے اس بارے میں حضرت امام زمانہ علیہ السلام کی خدمت باید کات میں عریضہ تکھاجواب آیا۔ حمل کاذکر چھوڑدو۔

چنانچہ تھوڑے د نوں بعد میری زوجہ کا دوسر انط آگیا اس میں تحریر تھاکہ میں نے غلط لکھا تھاصل کی کوئی حقیقت نہیں۔

(مار الا توار)

اذن دخول کی اجازت ہے

علمخانی نے تناب الاوصیاء میں روایت کی ہے کہ الو جعفر مروزی کا میان ہے کہ جعفر بن جی ن عمر اور اُن کے ساتھ چندلوگ عسکر (سامرہ) گئے اور انہوں نے حضرت الو محمد لیام حسن عسکری علیہ السلام کی زندگی میں اُن کی زیادت کی تھی اُن لوگوں میں علی تناجمہ بن طنین ہمی تھے جعفر بن محمد بن عمر نے قبر تک جانے کے لیے خط تکھا اور اون و فول چاہا۔ علی بن احمد نے کما کہ میں اون نہیں جا بتا انعوں نے اس کانام نہیں تکھا :۔

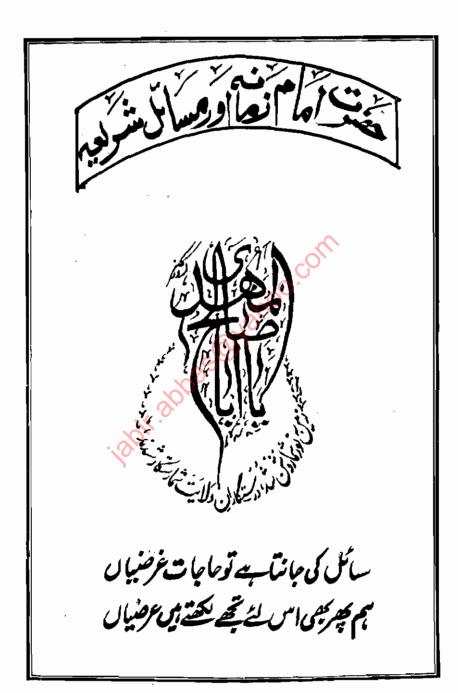
توجواب آیا : میں بھی دخول کی اجازت ہے اور اُسے بھی جو واشطے کی اجازت نہیں چاہتا۔

(غبية طوى ، قار الانوار جلد أاصفحه ٣٩٦)

اپنی رقم کا مطالبہ کرو۔ مل جائے گ علی من محرنے محرین صالح سے روایت کی ہے اُن کا میان ہے جب میرے والد کا انتقال ہوا تواُن کے پاس لوگوں کے ذمہ غریم بینی صاحب العصر علیہ السلام کی رقوم کی کچھ ہنڈیاں تھیں میں نے بذریعہ عربینہ حضرت صاحب الزمان عليه السلام كواس كى اطلاع دى ـ

آپ نے تحریر فرمایا:

کہ ان لوگوں سے رقوم کا تقاضا کرو۔ میں نے تھم کی تعیل کی توسب نے رقم او اگر دی صرف ایک محض رہ گیااس ہر ہنڈی کے جار سودیتار واجب الادا تھے میں نے اس سے رقم کا مطالبہ کیا تواس کے پیٹے نے میر انداق اڑایا اور مجھے ذلیل کیا میں نے اس کی شکایت اُس کے باپ سے کی تو اس نے بھی مجھے خفیف کیالس یہ منتے تی میں نے ایک ہاتھ ہے اس کی واڑ ھی پکڑلی اور ووسر ہے ہاتھ سے ٹانگ پکڑنی اور گھیٹتا ہوا گھر کے صحن میں لے آیا بھر لا توں ہے اس کی خوب مرمت کی۔ یہ ویکھ کر آئ کے لڑے نے باہر نکل کر شور مجایا۔ کہ لوگو ۔ جلدی مدد کے لئے ووڑو۔ میر کے الک کو ایک فمی رافضی نے مار ڈالا۔اس ووران میں تو سواری برآگر بیٹ گیا۔اور جو کوگ جمع ہو گئے تھے ان سے کئے لگا۔ اے بغداد والو۔ شاباش ہے تم لوگوں پر کہ آیک مظلوم کے مقاملے میں تم لوگ ایک ظالم کی و عگیری پر جمع ہوئے ۔ میں در مجل ہدان کا ایک سی مسلمان باشنده ہوں گریہ مجھ پر رافیضییت کاانہام لگا کر میری رقم ہضم کر ناچاہتا ہے یہ سن کر لوگ اس کے خلاف ہو گئے اور چاہتے تھے کہ اس کی و کان میں تھس جائیں تمرییں نے انھیں منع کیا۔ توانہوں نے اسی سے میری مطلوبہ ر قم کافور یادر تختی ہے مطالبہ کیاتواس نے میر ی ساری رقم اداکر وی۔ (کافی ،ار شاد ، بحارا لا نوار جلد ۱۱ ،ار د وتر جمه صفحه ۴۰۴)



چند مسائل لکھ کرنا حیہ مقدسہ میں بھیج گئے اُن کے جواب میں تو قیع سائلین کے نام مرآمہ ہوئیں اس کی عبارت ہو۔۔۔

ماکل کے بارے میں تھم امام سم اللہ الرحم الرحم -

تہمارے خط کے مفاین سے میں مطلع اور آگاہ ہوا تم نے ان سوالات

کے متعلق جن کو اپنے خط میں لکھا ہے جھ سے پوچھا ہے۔ میں تم لوگوں کو مطلع

کرتا ہوں کہ وہ تمام میرے ہی جو ابات ہیں اور ان میں اس رسوا گر اہ کندہ
خلاکق جس کو غراقری کتے ہیں۔خدا کی اُس پر لعنت ہو۔ اس کا ایک حرف مھی
داخل نہیں ہے اور اس سے قبل جو اب احمد بلال وغیرہ کی معرفت جا چکا ہے جو
اسکے ارتداو عن الاسلام سے فولی واقف ہو چکے ہیں خدا کی لعنت اور غضب
سب بر۔

تو قیعات مبارکہ کی نست جو دائرہ مومنین میں آپ کی طرف منوب کی جاتی تھیں ہو چھا گیا تو ذیل کی عبارت میں یہ تھم فرمایا گیا۔ لیمی جن احکام کی بات ریہ ٹاست ہو جائے کہ فلال شخص معتمد کی معرفت ریہ تھم نافذ ہوا ہے تواس کے صحیح مانے جانے میں کوئی ضرر نہیں۔

ایک بار ایبا ہی واقعہ پیش ہوا تھا جس میں پوری صراحت کے ساتھ

ذیل کے احکام صاور فرمائے گئے تھے :۔

یعنی۔اصل علم ہماراعلم ہے اور جو شخص کافر ہو گیااس کے کفر سے حمیں کوئی ضرر نہیں پینچ سکنا پس اگر کوئی تھم (تو قیع) کی ایسے شخص کے ذریعے تہیں معلوم ہواور اس کی صحت علائے تقد رحم الله تعالی نے ہی کر دی ہو تو تم اُس وقت اپنے پرور دگار کاشکر جالا وُاور اس کی نبست کی گر اویا غیر معتبر شخص کی زبانی کوئی تھم سُنا ہے اور اب اس کے کرنے اور نہ کرنے بیں تہیں تا بل ہے تو تم اس تھم کے لئے فور اُہار کی طرف رجوع کر واور خدا تعالیٰ کا سم مقد س پاک ہے اور وہی قابل ستائش ہے اور وہی تہمارا تو فیق وہندہ ہے اور ہی تہمارا تو فیق وہندہ ہے اور ہی سب سے اچھا ہمارا و کیل اور میں سب سے اچھا ہمارا و کیل اور کھیل ہے۔

حضرت متم این علاء رضی اللہ عنی نے ایک طول و طویل اور پر تفصیل عربضہ خد مت افد س بیل تحریر فرمایا اور یہ مضمون اس بیل قلبند کیا کہ میرے شہر بیل ایک جماعت کے لوگ ہیں جو اسد تقہار جی خواہال ہیں ان لوگوں کے نام جو گرامی نامہ جمایت دین کے متعلق تحریر ہوا تھا پنچا۔ علی ان محمد این حبین این مالک مضہور بہ این ماد ولہ جو ص ہے داباو ہیں ان کا نام اس گرامی نامہ بیل داخل نہیں ہے۔ اپنانام تحریر ناکر نے پروہ نمایت محرون و ملول ہیں۔ خدائے تعالی اپن تائید آپ کے امور بیل نازل فرمائے۔ اب علی این محمد نے بچھ سے اس امر خاص بیل خواستگاری کی ہے کہ آپ کی خد مت بیل ان کی طرف سے عفو تقصیر کے لئے استد عاکی جائے۔ کہ آپ این اخلاق کر بیمانہ سے طرف سے عفو تقصیر کے لئے استد عاکی جائے۔ کہ آپ این اخلاق کر بیمانہ سے ان کے قصور کو معاف فرمائیں اور ان کے نام نہ لکھے جانے کی وجہ تحریر ان کے نام نہ لکھے جانے کی وجہ تحریر ان کے نام نہ لکھے جانے کی وجہ تحریر

فرمادیں۔اگر حقیقت میں ان سے خطاوا قع ہوئی ہے تووہ اس سے توبہ وانامت کریں اور اگر کوئی ایباامر لاحق نہیں ہوا تو اپنی تحریر گرامی سے اُن کی تسکین فرماد یجئے۔

اس طولا فی عرصداشت کاجواب ان مختصر لفظوں میں مرحت ہوا میں نے ان بی کو خط لکھیے جنھوں نے جمھے خط لکھے۔

میری تلاش کرنے والا

اوالعباس العران خفر کامیان ہے کہ میں ایام غیبت صغری میں آپ کی روزی اور ایارت کی تمایل اور دیارت کے تعارت میں میں دیام مراکب کی جس کی عبارت سے تھی۔

ر جمه :<u>-</u>

یعنی جس محض نے میری جبتو کی وہ حقیقا میری طاش میں میرے پیچے پڑگیاوہ ضرور تمام خلائق میں میرے پیچے پڑگیاوہ ضرور تمام خلائق کو میر انشان بتادے گااور جس شخص نے خلائق کو میر انشان بتادیوہ میرے قتل و ہلاکت کاباعث ہواوہ مشرک بھی ہوااور جو محض میرے قتل و ہلاکت کاباعث ہواوہ مشرک بھی ہوااور کا فر بھی۔

 خیال ہمیشہ کے لئے اپنے ول سے زکال ڈالداور پھر مجھی اس طرف کوئی خیال نہیں کیا۔

نماز جعفر طیارا کے بارے میں

سائل نے تماز حضرت جعفر طیارہ علیہ السلام کی نبیت استفیار کیا کہ حالت قیام میں یار کوع و سجود کی حالتوں میں ذکر تشیخ اس سے سمو ہو گیااور نماز منام ہونے سے پہلے ذکر سوشدہ کااس کو خیال آگیا توالی خالت میں وہ اپ سو کر دہ ذکر تشیخ کو ادا کرے یا تماز کو تمام کرلے بعد اس کے ذکر تشیخ کو ادا

ساکل کے سوال کا جواب تو آئی طامی کے ذریعے اس عبارت میں عنایت فرمایا گیا۔ ترجمہ:۔ جب الی حالتوں میں سے کمی حالت میں سمووا قع ہو اور وقت گذر جانے کے بعد وہ یادآئے توجو چیز کہ اس سے فوت ہوئی ہے،اوا کرسکتا ہے۔

شوہر کی موت کے حوالے ہے مسائل

زن و شوہر کے معاطات میں پوچھا گیا کہ آیا عورت اپنے شوہر کی مشایعت جنازہ میں شرک ہو سکتی ہے ؟ جواب میں ارشاد ہوا۔۔۔۔ مشایعت جنازہ کر سکتی ہے۔۔۔۔ پھر دریاوت کیا گیا کہ بدوہ کو ایام مدت میں اپنے شوہر کی قبر کی فبر کی زیارت کرنا جائز ہے۔یا شمیں ؟ تحریر فرمایا گیا۔ شوہر کی قبر کی زیارت کرنا ہے۔ گررات کے وقت اپنے گھر سے باہر نگانا سے لئے جائز

نہیں ہے۔

بھر استفبار کیا گیا کہ وہ اپنے کار ضروری کے لئے بھی اٹی حالت میں باہر جا سی ہے؟ حکم ہوا۔ اگر اس کو سی شخص غیر سے اپنا کوئی حق لینا ہے تووہ اس سے لے باہر جا سی ہے اور اس کے علاوہ کوئی کام ہواور کوئی دوسر اکام کرنے والا اس کے عوض میں موجود نہ ہو تووہ باہر جا سی ہواور کوئی دوسر اکام کرنے والا اس کے عوض میں موجود نہ ہو تووہ باہر جا سی سے مگر رات کے وقت البتہ اپنا گھر نہیں چھوڑ سکتی ۔

وریافت کیا گیا کہ کتب ا کال مثل (ثواب القران فی الفرائش)
وغیرہ میں وارو ہے کہ آپ کی خدمت ہے تھم ہوا ہے ۔ کہ بھے تخت تجب
ہوتا ہے اُس شخص کی غفلت پر جو اپنی نماز میں سور وَ انااز لنا کی تلاوت اور
قرات کو ترک کرتا ہے ۔ میں نہیں سجھتا کہ اُس کی نماز کیے متبول بارگاؤ
احدیت ہوتی ہے ۔ پھر دوسر کی جگہ ہوا ہے کہ وہ نماز کی طرح بہتر نہیں
کمی جائتی جس میں سور وَ قل ھواللہ احد کی طاوت نہیں کی جاتی پھر تیسر کی جگہ
ار شاد فرمایا گیا کہ جو شخص اپنی نماز میں سور وَ ہمز و کی تلاوت کرتا ہے وہ دولت و نیا پر فائز ہوتا ہے ۔ ایسی حالت میں جائز ہے کہ سور و بائز لنا اور قل ھو اللہ کو ترک کر کے سور وَ ہمز و کی تلاوت کی جائے آگر چہ یہ ظاہر ہے کہ ان وونوں سوروں کو ترک کر نے میں اجامت و قبولیت نماز میں احتمال واقع ہوتا

اس کا جواب تو قیع مبارک کی مصلہ ذیل عبارت میں تحریر فرمایا۔ ترجمہ:۔ تواب ان سوروں کی تلاوت کا ایبائی ہے جیسا کہ وار دکیا گیاہے اور اگر کوئی سورہ ان میں سے جن کا تواب لکھا ہے ترک کر دے اور جائے اس کے سورہ قل ھواللہ احد اور سورہ ان انزلناہ ان کی فضیلت کی وجہ سے پڑھے تو ران سوروں کا بھی جواس نے پڑھے اور ان سوروں کا بھی جواس نے پڑھے اور ان سوروں کا بھی جواس نے ترک کر دیئے ووٹوں اُس کو عطا کیئے جائیں گے اور یہ بھی جائزے کہ ان ووٹوں سوروں کی سوادوس سے سورے بھی پڑھے جائیں۔

اعمال وداع رمضان

وداع رمضان المبارك كى نسبت بوچھا گيا كه عموما دواج ماو مبارك رمضان شب آخر ميں پڑھى جاتى ہے اور بھن يہ كتے ہيں كه روز آخر جب ہلال عيد نمودار ہو پڑھنا چاہيے ان دونول صور توں ميں سے كون مى صورت اختيار كى جائے۔

جواب میں ارشاد ہوا:۔

ا عمال ماہ رمضان المبارک تمام تر رات کو سے جاتے ہیں اس لئے وواع تھی آخر شب میں کرنی چاہیے اگر کی ایام کا خیال ہے تر دونوں را توں انتیس ۹ مااور تمیں ۲۰ کووداع کریں۔

نماز کے بارے میں بوجھا گیا کہ ایک شخص نماز پڑھ رہا ہے جب تشد اول سے فارغ جوا تو نیسری رکعت کے واسطے کھڑا جو تواس کے لئے تحبیر کہنا واجب ہے یا نہیں۔ بعض اس کے وجوب کے قائل نہیں۔ صرف فول اللہ و قویۃ اقومُ واقعد کے ذکر کو بی کافی سجھتے ہیں۔

اس میئلے کا جواب میں ار شاد ہوا :

ترجمہ: راس میں دو حدیثیں وار دہیں ایک یہ ہے کہ جب مصلی ایک

حالت سے دوسری حالت میں منتقل ہو تواس و قت اس کو تکبیر کمناواجب ہو جاتا ہے۔ اور دوسری بید کہ تجدہ وو تکی سے سراٹھایا تو تحبیر کمناواجب ہو گیا۔ پھر بیٹھ جائے۔ پھر اٹھے۔ پس بیٹھنے کے بعد اٹھنے کے کئے تکبیر کمناواجب نہیں ہے اور اس طرف تشہد اول کی تھی صورت ہے اور ان دونوں صورتوں میں سے جس پر عمل کیا جائے وہ صحیح ہوگا۔

دوست کی طرف سے قرمان کامسکلہ

قربانی کے متعلق سوال کیا گیا کہ ایک ہخص نے اپ دوست سے کما کہ اُس کی طرف سے اونٹ مول کے کر منی میں نح کر دے۔ چنانچہ اُس مخض نے اونٹ مول کے کر منی میں نح کر دے۔ چنانچہ اُس مخض نے اونٹ تو ٹرید لئے گر قربانی کرتے وقت اسکانام لینا کھول گیا۔ جب ذرج کر چکا تو نام یاد آیا تو ایس دبانی کی طرف سے ہوگی یا نہیں ؟۔
جو اب ارشاد ہوا:۔ اس میں کوئی مضا کھ نہیں اور اس کے دوست کی طرف سے جائز ہے۔

احوال مو تو فات

ایک مخص کے بارے میں پوچھا کہ ایک مخص کو تخصیل واموال موقو فات کا عمدہ سپر و ہے اور وہ ان اموال کو جو اس کے قبضہ میں ہیں اپنے جھال جانتا ہے اور اموال بد موقو فات لے لینے سے بھی کوئی پر ہیز نہیں کر تا۔الی حالت میں مجھ کواکڑ ان دیمات میں جانے کا اتفاق ہوا جو اس کے

زیر انظام ہیں اور اس کو ہیں اکثر وہاں بھی پاتا ہوں اور جھے اس کے پاس جانے کا بھی اتفاق ہوتا ہے اور اس کو کھانے کا وقت بھی ہو جاتا ہے وہ جھے کھانے کا تکلیف ویتا ہے اگر میں اس کے کھانے سے انکار کرتا ہوں تو وہ جھ سے تخت معداوت کرتا ہوں تو وہ جھ سے تخت عداوت کرتا ہے اور اس کی موجو وہ عداوت میری مختلف اقسام کی مصرت کا باعث ہوتی ہے ایک خاص حالت میں جھے اس کا کھانا کھانا جائز ہوگایا نہیں۔اور اگر میں اس کے کفارہ میں تھد ق کرتا چاہوں تو اس تھد ق کی کیا مقدار ہوتا گر میں اس کے کفارہ میں تھد ق کرتا چاہوں تو اس تھد ق کی کیا مقدار ہوتا چاہوں ہو اس تھو ت کی ہیں ہوجود ہوں وہ جھ سے چاہے اور اگریہ و کیلی موقو فات کی شخص کے پاس کوئی شے کھائی ہدیے کے طور پر بھیجتا ہو اور اتفاق وقت سے میں بھی اس کے پاس موجود ہوں وہ جھ سے کے کہ اس میں سے پچھے کھالولیا ہے گھر لے جاؤ طلا تکہ جھے خوب معلوم ہے کہ وکیل موقو فات ان اموال موقو فات کی تصرف میں کوئی خوف نہیں کرتا ہے تواگر وہ ہدیہ میں لے لوں یا اس میں سے پھی اس کے گھر لے جاؤ کا تھیں کہ خوب معلوم ہے کہ تواگر وہ ہدیہ میں لے لوں یا اس میں سے لیکی ہے گھر لے جاؤں تو میرے اس عمل میں سے خاص میرے لئے کوئی حرج ہوگایا تھیں گ

اس کا جواب ویل کی عبارت میں مرحمت کیا 🔐 :

ترجمہ: ۔ اگر اس مخص کی کوئی جائیداد یا آمدنی جوائے اموال موقو فات کے اس کے اختیار میں ہے تواس کا کھانا بھی کھایا جا سکتا ہے اور تخد تھی لیاجا سکتا ہے اور اگر دوسری معاش نہیں تو جائز نہیں ہوگا۔

قنوت میں ہا تھول کا منہ پر پھیر نا ار کان نماز واجب و سنت اور تجد ۂ شکر کی نسبنت استفسار کیا گیا کہ نماز واجب میں نماز پڑھنے والا قنوت کی دعا پڑھ کرایئے ہاتھ اپنے منہ اور سینہ کی طرف سید حاکر لیتا ہے مطابق اس دوایت کے کہ وارد ہواہے کہ حق و سجانہ تعالی اس سے کمیں زیادہ براگ ہے کہ وہ اپنے مدے کے ہاتھوں کو دعا کرنے کے بعد خانی پھیر دے بلعہ وہ اپنی رحت سے اس کے ہاتھوں کو لبریز کر دیتا ہے اور دوسری روایت کے مطابق ہاتھوں کو منہ پر پھیر لیا۔ منقول ہوا ہے آیا یہ عمل جائز ہے یا نہیں۔ بھن علماء سے مروی ہے کہ نماز میں دونوں صور توں میں سے صرف ایک ہی عمل جائز ہو سکتا ہے :

جواب میں ارشاد فرمایا گیا۔

نمارواجی میں ہاتھوں کو سر اور منہ پر پھیرنا جائز نہیں اور جس چیز کے ساتھ نمازواجی میں عمل کیا جاتا ہے وہ یہ ہے کہ جب مصلی تنوت پڑھ کے ساتھ اپنے باتھوں کو آبھی اور سولت کے ساتھ اپنے بینے کے مقامل لاکر اپنے زانو تک پہنچائے اور تکبیر کے اور پھررکوع میں چلا جائے۔منہ پر ہاتھ بھیر لینے کی خبر تھی صحح ہے گر نوافل شب وروز میں نہ کہ نماز ہائے واجب میں اور نوافل میں اس عمل کے ساتھ جالانا۔ لینی ہاتھوں کو منہ پر پھیر لینا افضل ہے۔

سجد ۂ شکر کے بارے میں

تجد ہ شکر کے بارے میں بوجھا گیا کہ نماز واجی کے ساتھ تجد ہ شکر واجب ہے یا نہیں کیو فکہ بعض اس کو یہ عت بتلاتے ہیں تو نظر ہر آل نماز فرائض میں واجب نہیں اور اگر واجب بھی ہے اس کا وجوب نماز مغرب اور اس کے بعد کی چارر کھتھائے نوافل تک محد ووو مخصوص ہوگا۔ آیا تھم مسیح ہے اور اس پر

عمل جائز ہو گایا نہیں ؟

اس مئله کاجواب ذیل کی عبارت میں صادر ہوا:

ترجمہ: یعنی عبد ہ شکر الزم ترین سنت واجب ہے ہوار بھی کی نے اس کوبد عت نہیں بتا یا گر اس شخص نے جس نے خود دین ہیں احداث و اختر اع کیا ہو گا۔ اب اس امر کا جواب کہ عبد ہ شکر خصوصابعد از نماز مغرب و قبل از چار رکعت نوا قبل مغرب کے ساتھ لازم ہے ۔ یہ ہے کہ دعا اور تسمیحات کی جو فضیلت جو بعد فرائض جالائی جا کیں ان دعاؤل پر جو نوا فل کے ساتھ اداکی جا کیں فیسے اسی ہی ہیں جیسا کہ فرائض کے نشائل نوا فل پر فاست ہیں اور سجد واصل میں وعاد تی ہی جیس جیسا کہ فرائض کے نشائل نوا فل پر فاست ہیں اور سجد واصل میں وعاد تی ہی جا در افضل کی ہے کہ فرائش کے بعد جا در افضل کی ہے کہ فرائش کے بعد جا در افضل کی جا کہ جا در افضل کی جا کہ در اگر بعد نوا فل جا لا کی جا کہ جو گا۔

بیع و مشر ا کے متعلق سوال

بیع اور مشرا کے متعلق یہ سوال کیا گیا کہ ہارہ چند رادران
ایمانی ایسے ہیں کہ جنہیں ہم پہانے ہیں کہ ایک قطعہ زین نوآباد فی خانہ شاہی
ملحق ہے۔ جس میں حاکم وقت کا بھی حصہ اور قبقہ ۔۔۔ گر جاء انہ اور محض
خاصبانہ۔۔۔ اکثر او قات بعض اہل شہر اے بغیر اجازت جوت لیتے ہیں اور اس
کی وجہ سے عمّال شاہی ان کو سز انھی دیتے ہیں اور حتی الامکان ماز مین سلطانی
اس کی پیداوار پر قاصن و متصرف ہوئے سے اہل شہر کوبازر کھتے ہیں اس لئے وہ
زیمن ہوجہ ویران رہنے کے کہھ الی قیمت بھی نہیں رکھتی اس لئے کہ کا ل میں
دیس سے محض افاوہ پڑی ہوئی ہے۔ فدکورہ بالدیرادران ایمانی اس کے

خرید نے سے انکار محض کرتے ہیں اس لئے ان کو معلوم ہو چکا ہے کہ یہ قطعہ زمین کی ذمانے میں کی خاص محض نے وقف کیا تھا جس کو سلطان وقت نے جرا کے لیا پس صورت سطور وہیں اگر ذہین نہ کور وی بدیع سلطان وقت کی طرف سے جائز ہے اور اس میں کوئی حرج شرح نہیں ہے تو اس کا خرید لینا ہمارے مراد رہان مومنین کے لئے نمایت مفید اور نافع خامت ہو گا اور زمین نہ کور وہی شاد اب وآباد ہو جائے گی اور وہ حصہ زمین ایسا ہے کہ آسانی سے سراب ہو سکت ہو اور عمد و پیداوار دے سکتا ہے اور اگر اس کی جدیع سلطان وقت کی جانب سے حلال نہیں ہے تو جم انتاع جاری فرمایا جائے:

جواب سوائے مالک زمین نہ کورہ کے بیدع کئے ہوئے یا کم سے کم اس کا حکم یااس کی رضا وَ استزاج کئے ہوئے معاملہ مسطورہ صحیح وجائز نہیں ہوگا۔

کنیز کے بچے کے بارے میں

کنیر اور غلام کے متعلق پوچھا گیا کہ ایک شخص نے آئی ایک کنیر کو
اپنے ایک غلام کے لئے حلال کر دیا۔ وہ کنیز چہ جن۔ اس مر د غلام کو اس کنیز
کے چہ پیدا کرنے پرشک گذرا۔ گراس چہ کو اپنا چہ کہہ دینے کے سوااس مر د
غلام کو کوئی دوسر اچارہ ضمیں ہوا۔ آخر اس نے قبول کر لیا گراس کے دل میں سے
شک ہمیشہ رہا کہ بید چہ اس کا شمیں ہے اس وجہ سے اس چہ کو کبھی اپنے ساتھ منمیں رکھتا اور نہ اس کو اپنی اولاد واعقاب میں داخل اور شامل سمجھتا ہے۔ پس اگروہ چہ بھی مثل ان چوں کے ہے جواس مروسے پوری نسبت رکھتے ہیں توار

کے لئے ضروری ہے کہ اس کو تھی اپنی طرف اپنی دو سری اولادوں کے منسوب کرے یا یہ چہراس کی اولاد سے حسب و نسب میں کمتر ہے تو وہ اپنی جائیداد واموال میں مقابلہ ویگراولاو کے اس کو پھے کم حصہ دے۔

اس سوال کے جواب میں ذیل کی توقع صادر فرمائی گئ ترجمہ:۔ایک عورت کا حلال کیا جانا گئی وجہ سے واقع ہو تاہے اس کی مختلف صور تیں میں سائل کو صورت تحلیل پہلے لکھنی جائے تاکہ ہے کی پوری حقیقت سے جواب ویا جائے۔انشاء اللہ المستعمان۔

ماورجب كےروزے

مران عبداللہ میں خران عبداللہ میری نے آپ کی خدمت میں ایک بہت مرا عبد اللہ میری نے آپ کی خدمت میں ایک بہت مرا عرب ایف کی خدمت میں ایک بہت مرا عرب ایف کی بیان کیا کہ ہماری قوم وطب کے بعض ارباب علم ویقین اور اکثر خوا تین با حمکین آج ۲۲ مرس سے ماہ رجب کے دوزوں سے محکین ہیں اور است ملا ویق الشل شعبان اور رمضان کے روزوں سے ملا ویق ہیں۔ میان اس میرت کے ہمارے بعض علماء فرماتے ہیں کہ بیر روزوں معصیت میں واضل ہیں۔

اس مسلہ کے جواب میں جو تو تیع مبارک آئی :۔

ترجمہ:۔ ماہ رجب میں پندرہ روز تک تو ردزہ رکھیں پھر منقطع کرویں گراپنے قضا کردہ روزوں میں تبین روزے اس میننے ضرور رکھیں کیونکہ اس امر میں مدیث خاص وارد ہے اور اس کے الفاظ بیہ ہیں کہ ماہ رجب قضا

روزوں کے اداکرنے کے لئے سب سے اچھاممینہ ہے

نماز جماعت

دریافت کیا گیا کہ ماموم اس وقت شریک جماعت ہوا جب امام ذکر رکوع فی واجب امام ذکر رکوع فی واجب امام ذکر رکوع فی مشغول تفاوہ اپنے موجودہ الحاق بالجماعت اور ذکر رکوع کو جواس نے امام کے ساتھ کیا ہے رکعت فوت شدہ کے براہم جانتا ہے قلاف اس کہ بعض اصحاب کا خیال ہے کہ تا وقتیکہ سے مخص اس جمیر کی آواز کو جوامام پیش از رکوع کتا ہے نہ سن لے۔ آپنے صرف کر رکوع یا محض افتدا کے امام جماعت کو ایک رکعت فوت شدہ کی جگہ شار نہیں کر سکت

اس کے مارے میں جو تو قیع مبار کے آئی :

ترجمہ ۔ اگروہ شخص الی طالت میں تھی اہام جماعت کے ساتھ مل جائے کہ جب اس کو ذکر رکوع میں صرف ایک بار سجان اٹھ کننے گورہ گیا ہو۔ تاہم اس کی ایک رکعت شار میں آنے گی خواہ اس نے امام جماعت کی تحبیر تمبل از رکوع کی آواز کو ساہویا نہیں۔

نماز کے بارے میں

وریافت کیا گیا کہ ایک شخص نے نماز ظهر کے بعد عصر پڑھی جب نماز عصر کی کل دور کعتیں عصر کی کل دور کعتیں پڑھی ہیں ایس صورت میں اسے کیا کر ناچاہئے ۔ پڑھی ہیں ایس صورت میں اسے کیا کر ناچاہئے ۔

جواب میں تو قیع مبارک آئی کہ:۔

ترجمہ جو اگر اس نے در میان نماز کے کوئی ایدا امر کیا ہے جس سے نماذ باطل ہو جاتی ہے تو اسے دونوں نمازوں کا اعادہ کرنا چاہئے اور اگر ایدا امر کوئی اس سے سرزو نہیں ہوا تو آن دونوں رکعتوں کوجو اس نے نماز عصر کے حساب میں پڑھی ہیں نماز ظہر کے تتمہ میں محسوب کرے بعد اس کے نماز عصر پڑھے لیے۔

ابل بهشت کی زندگی

سوال ہواکہ آیا اہل ہمنے کیلے توالدو تاسل بھی الام آسات ہے اس ملہ کا جواب اس عبارت میں مرحت قربایا گیا۔

ترجمہ: عور توں کو بہشت میں والادے، چیف و نفاس اور تمام نسائی ضرور توں کی کوئی حاجت نہیں ہوگی اور وہ تمام تکالیف و محنت جو ابتدائے طفولیت ہے لے کر س رسیدہ تک اٹھائی ہوتی ہو دہ تھی ایک نے ہوگی گرچو نکہ بہشت میں وہ تمام جوں گیا جو نگر ہوتی ہوگی جمشت میں وہ تمام جیزیں فراہم ہوں گی جن کی خواہش دلیائے مومنین کو ہوا کرتی ہیں اور جن کے نظارے اور سیر کی ضرورت عموما آئکھوں کو ہوا کرتی ہیں اور جن کے نظارے اور سیر کی ضرورت عموما آئکھوں کو ہوا کرتی ہیں اور جن کے نظارے اور سیر کی ضرورت عموما آئکھوں کو ہوا کرتی ہے۔ چنا نچہ خدا نے سجاند تعالیٰ قربان مجمید میں خود فریا تا ہے۔ کہ مومن کو جس ہے کی خواہش جس طرح اس سے فرل میں پیدا ہوئی ہے اس صورت اور ایک حالت کے مطابق غداند تعالیٰ اس شختے مطلوبہ کو اس بندہ مومن کیلئے پیدا کر دیتا ہوا در عور توں کو بہشت میں حمل ہونے اور چہ جفنے کی کوئی ضرورت نہ ہوگ اور تمام اشیاء وہاں الی ہی تعلوت ہوں گی جیسے کہ حضرت آدم علی نیوا وال و

علیہ السلام کواس نے عبر ت اور نتنجر خلائق کے لئے خاص طور پر بغیر ان معمولی ضرور لوں کے خلق فر مایا ہے۔

ایک قرض کے حوالے ہے

پوچھاگیا۔ کہ ایک آوی نے دوسرے سے مبلغ ایک ہزار روپیہ قرض کیا اس کے وہوں سے جوت میں اس کے پاس شاہد کا بل اور معارف صاوق موجود ہیں گراس کیا تھی اس کاد عویٰ رجوع کرنے کی ضرورت نہیں ہو ئی تھی کہ اس نے پھر ای تھی کوایک دوسرے تمک کے ذریعہ سے پانچ سوروپ قرض دیتے اور اس کے بھی کائی جوت اس کے پاس موجود ہیں اس کے بعد اس نے تیسرے تمک کی روسے اس کو بیل سوروپ اور دیئے اور اس کا جوت بھی تیار ہے غرضیکہ ان دونوں رقوم شرکات کے علاوہ وہ ایک ہزار ہے جس کا وعویٰ می بیان کرتا ہے کہ ان تو عویٰ اس کے بیان کرتا ہے کہ ان تمام شرکات کا کل روپیہ ایک ہزار ہے جس کا دعویٰ میں بیان کرتا ہے کہ ان تمام شرکات کا کل روپیہ ایک ہزار ہے جس کا دعویٰ بیش دو ہزار درہم ایک بار جواب مدعا علیہ سے قطعی انکار ہے صورت مرقومہ میں وہ ہزار درہم ایک بار دارک دیا جائے یا بار بار کر کے سب شرکات مقیدہ کی اواکاری لازم ہے اور حقیقت میں یہ تمام و کمال رقم وہی ایک ہزار رقم مدعا علیہ ہے یا علیحدہ علیحدہ ہزار ۔ یا چھواور تمن سو۔

تو قیع مبارک میں اس کاجواب یوں صاور ہوا : ـ

ترجمہ: ۔ مدعاعلیہ ہے ایک ہزار روپید لینا چاہے اور یہ وہی ایک ہزارکی رقم ہے جس کی نبت فریقین ہے کی کو بھی کوئی عذر اور کلام نہیں ہے۔ باتی ہزار در ہم کے لئے مدی سے شری قتم لی جائے اگر وہ حلف شرعیہ سے انکار کرے تو حقیقت میں اس کو مدعا علیہ سے اس رقم کی وصولی کا کوئی حق حاصل نہیں ہے۔

خاك تربت امام حسينً

آپ سے بی چھا گیا کہ خاک تریت حضرت امام حسین علیہ السلام میت کے ساتھ قبر میں رکھنا جائز ہے یا نہیں ؟

جواب میں خح پر فرمایا گیا۔

-: , 5. 7

فاکِ مرقدِ منور جناب امام حلین علیہ السلام کو میت کی قبر میں رکھنا اور اس کے حنوط کے ساتھ شامل کرنا جائز ہے۔ انتاج الله المستعان.

خاك نزيت حسين اور كفن

استفیار کیا گیاکہ حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام سے مردی ہے کہ آپ نے اپنے فرزندگرامی حضرت اساعیل کے کفن پر اپنے دست مبارک سے تح بر فرمادیا تھا۔

اسمعيلُ يشهد أن لا اله الا الله

تر جمہ ۔۔اساعیل گواہی دیتا ہے کہ اللہ کے سواکوئی معبود نہیں۔ آیا ہم لوگوں کے لیئے تھی اپنی میت کے پار چہائے کفن پر اس کا لکھنا جائز ہوگا یا نہیں اور آیا ہم ان فقرات کو خاکبِ ترمت حضرت امام حسین علیہ السلام سے لکھ کتے ہیں یا نہیں ؟ جواب میں تحریر ہوا۔ '' جائز ہے''۔

شبيج فاكبشفاء

پوچھا گیا کہ خاک ترمت حضرت حسین علیہ السلام سے تشییح تیار کر کے اس پر ''سجان رقی العظیم'' پڑھانا جائز ہو گایا نہیں۔اگر جائز ہے تواس میں کوئی نضیلت خاص بھی ہے یا نہیں ؟

جواب میں علم ہوا:۔

تسیح خاک شفاء پر فرکر جائز ہے کی دوسری شے پر ذکر تسیح کو وہ فضیلت حاصل نہیں ہے جو اس پر اور جو فضیلت مخصوصہ اس کو حاصل ہے وہ یہ ہے کہ اگر کوئی شخص ذکر تسیح کو کھول جائے اور صرف اس کے دانوں کو گر دش دیا کرے تواس کو ذکر تسیح کا پورا پورا ثواب دیا جائے گا۔

خاک پر سجدہ

پوچھا گیا کہ خاک پاک پر تجدہ صحیح ہے اور اس میں بھی کوئی نضیلت خاص ہے ؟

ختم ہوا : مِنْهُ جائز ہے اور اس میں فعنیلت تھی ہے۔

قبر معصومن يرنماز

استفیار کیا گیا کہ ایک شخص زیارت قبور پر انوار حفرات آتمہ طاہرین علیہ السلام کے لئے جایا کرتا ہے اس کو ان قبور مطهر ہ کے آگے تجدہ جائز ہے یا نہیں آیا یہ بھی اس کے لئے جائز ہے کہ وہ قبور مطهر ہ کے قریب نماز پڑھے اور اگر نماز پڑھے تو قمر مطهر ہ کی پشت پر کھڑ اجواور مزار خالص الانوار کو قبلہ کی طرف آگے کے یابائل جانب کھڑ اجو کر نماز اواکرے آیا جائز ہے کہ قبر منور کو اپنی پشت پر لے کراس کے آگے قبلہ کی طرف اس طرح کھڑ اجو کہ قبر مطہر اس کی ہیں پشت واقع ہو۔

ناحیہ مقدسہ سے اس کا بجائے اس عبارت میں صادر ہوا

قبور پر تجدہ کرنا کی صورت میں عام اس سے کہ بھسد زیارت ہویا نوا قل یا فرائض جائز نہیں ہے باتی رہا جس امر پر عمل ہو سکتا ہے وہ ابنا ہی ہے کہ سید سے رضار کو قبر مطمر پر رکھے اور نماز ہر قبر منور کی پشت پر اس طرح اوا کرے کہ قبر منور کو اپنے منہ کے آگے رکھے۔اور قبر منور کے آگے کھڑے ہو کر بابالائے سر باپائیں نماز کا اواکر نا جائز نہیں ہے کیونکہ امام علیہ السلام کے آگے کھڑا ہو نایا اُن کے مرام کھڑا ہو نایا اُن کے بمین و بیار کھڑا ہو نا جائز نہیں ۔

پوچھا گیا کہ دور کعت آخر نماز میں بہت می حدیثیں وار دہوئی ہیں بھن میں وار دہے کہ ان رکعات میں تناسور ہُ حمد پڑھنا چاہتے ادر کی کافی فنیلت ر کھتا ہے اور بعض کے نزدیک تشبیج اربعہ کا پڑھنا زیادہ فضیلت کابا عث ہو تا ہے ان دو نول میں جس کو فضیلت ہو تح ریر فر مایا جائے۔

جواب مں ارشاد ہوا :_

ان دونوں رکعتوں میں سور ہ تھ کا پڑھنا تسیحات اربعہ کی قرآت کو منسوخ کر دیتا ہے ادر وہ چیز کہ جس نے تسیحات اربعہ کی قرآت کو منسوخ کر دیتا ہے ادر وہ چیز کہ جس نے تسیحات اربعہ کی قرآت کو منسوخ کر دیا ہے۔ تو قول امام علیہ السلام ہے کہ جو نماز بغیر سور ہ تحمہ کے پڑھی جاتی ہو اگر منسقطع اور خالی از خیر ہے مگر ہاں دہ شخص البتہ پڑھ سکتا ہے جو یہ سجھتا ہے کہ اگر ہم سور ہ تحمہ پڑھیں گے تو جس کے تو جس کے تو جس کے تو جس کے کہ کا یا تمار امر ض براھ جائے گا۔

قرامت د ارول کاحق

استفیار کیا گیا کہ ایک شخص نے اپنے مال میں سے پھے نذرِ فدا نگالا اور نیت کی کہ اپنے اس مال کو کسی برادر مو من پرایٹار کردے گا گر اس نیت کے بعد دوایخ عزیزوا قارب میں سے خاص ایک شخص کو محتاج پاتا ہے تو کیا ہو سکتا ہے کہ فٹلاف سابق وہ اپنے اس مال کو جائے عام برادران ایمانی کے اپنے اس عزیزاور قریب برادر کے حوالہ کر دے ناجیہ مقد سے سے جواب عنایت کیا گیا۔

ترجمہ: اس مان کو ایسے شخصوں میں سے اُس کو دینا جا ہے جو اس کی قراست میں عزیز تر اور قریب تر ہواگر جائے ہواس قول امام علیہ السلام پر عمل کر سکتا ہے کہ خدا تعالی ایسے شخص کا صدقہ کہمی قبول نہیں کرتا جو ایسی صالت میں صدقہ دوسر دل کو دیتا ہے جب اس کی قراست اور عزیز داری میں فقیر اور

مختاج خود موجود ہوتے ہیں۔ تحقیق۔ کہ اسے لازم ہے کہ این اس مال کو اپنے عزیر مختاج اور اس غیر شخص محتاج کے فیمائین تقلیم کردے جن کی نسبت وہ پہلے سے مشیت کر چکا ہے تاکہ اس کو دونوں فضیلتیں اور دونوں ثواب میک وقت حاصل ہو جا کیں۔

خرگیش کے بالوں سے تیار کر دہ کپڑے میں نماز
دریافت کیا گیا کہ جناب حضرت امام حسن عسری علیہ السلام سے
پوچھا گیا تھا کہ لباس خز مین جو خرگوش کے بالوں سے تیار کیا جاتا ہے نماز پڑھنا
جائز ہو گایا نمیں ؟ارشاد ہوا تھا۔ نمیں کم حضور گی خد مت باہر کت ہے ایک
توقیع مقدس برآمہ ہوئی ہے جس میں حم جواز تافذ فرمایا گیا ہے اب ان دونوں
احکام مطہر ہ میں ہے کی ایک پر عمل کرنے کی اجاز ت دی جائے ہے۔اس

ترجمہ: ۔ ان پھموں میں مع پوست کے نماز پڑھنا حرام ہے اور تھا پھم والے کیڑے میں نماز پڑھنا حلال ہے اور بھن علاء جو قول حضر ت امام صادق علیہ السلام سے نقل کرتے ہیں اس کے بیہ معنی ہیں کہ پوست روباہ میں جو مصلی کے بدن سے ملحق ہو نماز جائز نہیں ہے سواء اس کے کوئی دوسری مراد نہیں ہو سکتی۔

واضح ہو کہ یہ چند سوال وہ ہیں جن کو محمد این عبداللہ حمیر ی ؓ نے

جناب حضرت امام زمانه عليه السلام كى خدمت ميں لكو كر استفسار كيا تعاان كے جوابات كے آخر ميں جو عبارت خاص أن كو دست مبارك سے لكھى كى تقى دوري ب

ترجمہ: ۔ ہم اللہ الرحمٰن الرحیم۔ حکام خداوآئمہ علیمم السلام کونہ خود تم ہواور نہ اولیاء اللہ علیمم السلام کونہ خود تم لوگ سمجھے ہواور نہ اس پر غور وخوض کرتے ہواور نہ اولیاء اللہ علیمم السلام کے سمجھانے ہے سمجھتے ہواور نہ ان کے احکام کو قبول کرتے ہواور اس میں بھی خدا کی حکمت بالغہ مضمر ہے کہ ان قوموں کو حضر ات انبیاء واولیاء علیمم السلام کا مثلا نااور سمجھانا کوئی نفع نہیں وشتا۔

سلام خدا ہو ہم پر ۔ الن مدد وں صالح اور نیکو کار ہیں جب تم کو یہ منظور ہو کہ ہم تمہاری طرف متوجہ ہوں اور تم الله کی طرف اور ہماری طرف توجہ کر و تو جیسا کہ خدائے حمید نے قرآن مجید میں ہم پر ان لفظوں کے ساتھ سلام فرمایا ہے۔ تم بھی کماکرو۔ سلام ہو۔ آل یا سین پر۔ اللم صلی علی محد وآل محد۔ فرمایا ہے۔ تم بھی کماکرو۔ سلام ہو۔ آل یا سین پر۔ اللم صلی علی محد وآل محد۔ فرمایا ہے۔ تم بھی کماکرو۔ سلام ہو۔ آل یا سین پر۔ اللم صلی علی محد وآل محد۔ فرمایا ہے۔ تم بھی کماکرو۔ سلام ہو۔ آل یا سین کر۔ اللم صلی علی محد وآل محد۔ فرمایا ہے۔ تم بھی کماکرو۔ سلام ہو۔ آل یا سین کر۔ اللم صلی علی محد وآل محد۔ فرمایا ہے۔ تم بھی کماکرو۔ سلام ہو۔ آل یا سین پر۔ اللم صلی علی محد وآل محد۔ فرمایا ہے۔ تم بھی کماکرو۔ سلام ہو۔ آل یا سین پر۔ اللہ مسلی علی محد وآل ہے۔ تم بھی کماکرو۔ سلام ہو۔ آل یا سین پر۔ اللہ مسلی علی محد وآل ہے۔ تم بھی کماکرو۔ سلام ہو۔ آل یا سین پر۔ اللہ مسلی علی محد واللہ میں مدد واللہ میں میں مدد واللہ مدد واللہ میں مدد واللہ مدد واللہ میں مدد واللہ میں مدد واللہ مدد واللہ میں مدد واللہ مدد واللہ میں مدد واللہ میں مدد واللہ مدد وال

نماز مغرب وصبح دیرسے پڑھے والا ملعون ہے فی مناز مغرب وصبح دیرسے پڑھے والا ملعون ہے فی من نہری ہے روایت کی ہوہ کلیدنی نے کانی میں زہری ہے روایت کی ہوء کسے ہیں کہ میں عرصے سے صاحب الزمان علیہ السلام کی زیارت کا مشاق تمااور اس مقصد کے لئے میں نے کافی بیسہ مرف کیا یہاں تک کہ میں محمہ من عثمان محمد من عثمان محمد من عثمان کی خدمت مرف کیا یہاں تک کہ میں محمد من عثمان میں شرف یاب ہوااور ایک عرصہ تک میں اُن کی خدمت کر تارہا۔ آخر میں میں میں شرف یاب ہوااور ایک عرصہ تک میں اُن کی خدمت کر تارہا۔ آخر میں میں

نے ان سے اپنا سد عامیان کیا پہلے تو انہوں نے میری مطلب ہرآوری سے پہلو تمی کی جب میں نے بہت الحاح وزاری کی تو انھوں نے کہا کہ کل صبح سویرے آجانا چنانچہ میں ووسرے روز ان کی خدمت میں پہنچا جس وقت میں وہاں گیا تو میں نے ان کو ایک جوان سے گفتگو میں مشغول پایا جس کا چرہ بہت خوب صورت تھااور اس کے جم مبارک سے خوشبو نکل رہی تھی اور ان کی آستین میں تاجروں کی طرف جم مبارک سے خوشبو نکل رہی تھی اور ان کی استین میں تاجروں کی طرح کوئی چیز تھی۔ میں جناب محمد بن عثان آگی طرف میں موسطا مگر انھوں نے اس شخص کی طرف انگی سے اشارہ کیا۔ میں نے اس شخص کی طرف انگی سے اشارہ کیا۔ میں نے اس شخص واضل مونے گئے جناب محمد بن عثان عمری نے کہا اور جو پو چھنا ہو بو چھ لو؟ کے مواضل ہونے گئے جناب محمد بن عثان عمری نے کہا اور جو پو چھنا ہو بو چھ لو؟ کیو نکہ اس کے بعد پھر بھی ان کونے و کھے سکو گے۔ میں مزید سوالات کرنے کے لئے آگے یہ ھا تو انھوں نے (صاحب الزمان علیہ السلام)اس سے زیادہ کوئی بات نہ فرمائی کہ:۔

ترجمہ:۔ لمعون ہے لمعون ہے وہ شخص کہ جو شام کی نماز (یعنی مغرب) آئی ویر سے پڑھے کہ ستارے آسان پر چیک جائیں اور سج کی نماز آئی دیر سے کہ ستارے غائب ،و جائیں۔ یہ کر آپ گر میں داخل ہوگئے۔

(احتجانَ طبر ی ، گو ہر ایگانہ ۲۲ ، ۲۳)

میر وص اور مجد وم کی گواہی پوچھاگیا کہ میروص و مجدوم اور مفلوج کی گواہی؛ رست ہے؟ کیو نکہ اُن کے متعلق وار و ہوا ہے کہ بیرا مامت ِنماز شیں کر کتے۔

اس کاجواب آیا :۔

اگریہ امراض ان کے پیدائش کے بعد حادث ہوئے ہیں تو جائز ہے اور اگر خلتی ہوں تو جائز نہیں۔

سجده گاه کی تلاش میں سر کاا ٹھانا

آپ ہے دریافت کیا گیا کہ بھن او قات انسان اندھیرے میں نماز شب پڑھتا ہے اور غلطی ہے پیشانی جائے تجدہ گاہ کے فرش پر پڑجاتی ہے جب سر اٹھایا تو تجدہ گاہ نظر آئی ہے تجدہ محسوب ہو گایا نہیں اس کا جواب آیا :۔ جب تک بالکل سیدھا ہو کر نہیں ہٹھا ہے تجدہ گاہ ڈھونڈ نے کے لئے سر اٹھا سکتا ہے (احتیان طبری)

ہے کے بارے یں

ا کیہ ایسے ہے کے متعلق سوال کیا گیا جس کا ختنہ کیا گیا لیکن بعد میں کھال دوبار ویڑھ گئی اس کاد وبار و ختنہ کیا جائے یا نہیں ؟

جواب دیا گیا۔ کہ۔اس کا دوبار ہ ختنہ واجب ہے کیو نکہ (اخلف) جس کا ختنہ نہ کیا گیا ہو جب زمین پر پیثاب کر تا ہے تو چالیس روز تک زمین فریاد کرتی ہے۔ نماز میں آگ، مورت اور چراغ کے بارے میں نمازی عالت میں سامنے آگ مورت، چراغ کی بات ہو چھا گیا کہ الی عالت میں نماز درست ہے یا نہیں ؟

جواب دیا گیا کہ:۔ جو ست پر ستوں اور آتش پر ستوں کی او لاو ہو اس کے لئے جائز نہیں۔

کام کرنے والے عنسل نہیں کرتے

ہمارے پاس کچھ مجوی جو لا ہے (کپڑے بینے والے) جو مر دار کھاتے جیں اور عسل جنامت نہیں کرتے تو اُن کے نئے ہوئے کپڑوں میں بغیر پاک کیئے ہوئے نماز پڑھی جاسکتی ہے۔

جواب آیا کہ ان کیڑوں میں نماز پڑھنے میں کوئی حرج نہیں۔

حالت نماز میں شہیج گھمانا

کیائی مخص کے لئے یہ جائزے کہ وہ نماز فریضہ یا نماز نافلہ پڑھ رہا ہوادراُس کے ہاتھ میں تشبیح ہوادروہ حالت نماز میں اُسے گھمار ہاہو۔ جوات آیا:۔ اگر اُسے کھولنے یا غلطی کا خوف ہو تو اُس کے لئے جائز

باکیس ماتھ میں تشہیج پڑھنا کیابائیں ہاتھ سے تشہیج (کے وائے گھمانا) پڑھناجا کزے یانا جا کز۔ آپ نے جواب دیا یہ جا کڑے اور حمر اللہ کے لئے ہے۔

و قف کے مال کی فروخت

مال و قف کی فروخت کرنے کے بارے میں حوال کیا گیا کہ جب
و قف چندلوگوں کی ذات اور اُن کی اولاو پر ہواور تمام اہل و نف اس کو فروخت
کرنے پر متفق اور مجتع ہو جائیں کہ اس مال و قف کا فروخت کرنا ہی مناشب و
ہمتر ہے تو اگر سب اہل و تف راضی نہ ہوں اور بعض اہل و قف فروخت کرنا
جاہیں تو کیا اُسے خرید نا جائز ہے۔ یا ناجائز تاو قشکہ سب اہل و تف راضی نہ ہو
جائیں اور و مال و قف کو نباہے جس کا فروخت کرنا جائز نہیں ؟۔

جواب آیا کہ : اگر وقف امام المسلمین کیلئے ہے تواس کافرو فت کر ، مائز نہیں اور اگر وقف مسلمانوں میں ہے چندلوگوں کے لئے ہے تواُن میں ہے ہرا یک فرو خت کر سکتاہے خواہ اجتاعی طور پر یاا نفرادی طور پر۔

پینہ کی ہدیو سے چنے کے لئے کیامر م کے لئے یہ جائز ہے کہ وہ اُپنے زیر بغل پینہ کی بدیو ہے چنے کے لئے مر دار سک یا تو تیار کھے۔ یا جائز نہیں ہے ؟ جواب آیا :۔ یہ جائز ہے۔

ناہیا ہونے کے بعد کی شہادت

دریافت کیا کہ ایک شخص جب اس کی آنکھوں میں بصارت تھی کی وستادیز پر گواہ سایا گیا اُس کے بعد اُس کی آنکھیں جاتی رہیں۔ اب دیکھ نہیں سکا۔ تاکہ تحریر کو دیکھ کر اپنے دستخط کچھانے اب اُس کی شمادت جائز ہے یا نہیں ؟ اور اگر اس نامیا کو وہ شمادت یاد ہو تو اس کی شمادت ور شمادت کا وقت یاد آپ نے جو اب دیا :۔ اگر اُس کو اپنی شمادت اور شمادت کا وقت یاد ہو تو اُس کی گواہی جائز ہے۔

نماز جعفر طيارٌ كب يرٌ هيس

نماز جعفر طیاڑین انی طالب علیہ السلام کس دفت پڑ ھناافٹل ہے اور کیاس نماز میں قنوت ہے۔
کیاس نماز میں قنوت ہے۔ اور اگر ہے تواس کی کس رکعت میں قنوت ہے۔
آپ نے جواب میں فر مایا :۔اس نماز کے پڑھنے کااول ترین دفت روز

جعد ہے اور اس ون کے ابتد الی حصیہ میں ہے ویسے جس ون چاہیں اور صبح وشام جس وقت چاہیں اور صبح وشام جس وقت چاہیں اس کا پڑھنا جائز ہے اس نماز میں دو مرتبہ قنوت ہے ایک دوسری دکست میں۔

كم يروردكار!

بِنهِ اللهِ الرَّحْلنِ الرَّحِيمُ *

ظَهَرَ الْفُسَادُ فِي الْبَرِوَ الْبَحَرُ بِمَا كَسَبَتُ اَيْدِى النَّاسِ

فَاظُهِرُ اللَّهُمُ لِنَا وَلِيَّكَ وَابْ سِنْتِ سَبِيْكَ الْمُسَمَّى بِاسْمِ مَهُولَةِ

حَتَّى لَا يَظُهُ فَي بِينَ وَيْنَ الْبَاطِلِ الْاَمْزَتَ لَا وَيُحِقُّ الْحُنَّ

وَيَحَقِّقُهُ وَاجْعَلُهُ اللَّهُمُ مَفْزُعًا لِهَ طُلُومِي عِبَادِ لِدُونَا مِعْ لَيُعَلِّلُومِي عِبَادِ لِدُونَا مِعْ لَيْ مَفْزُعًا لِهَ طُلُومِي عِبَادِ لِدُونَا مِعْ لَيْ مَفْزُعًا لِهُ طُلُومِي عِبَادِ لِدُونَا مِعْ لَيْ اللَّهُ مَفْزُعًا لِهُ اللَّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْكُ وَاللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْكُومُ وَاللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْكُولُولُ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْكُومُ وَاللّهُ عَلَيْكُومُ اللّهُ عَلَيْكُولُولُهُ اللّهُ عَلَيْكُومُ اللّهُ عَلَيْكُومُ اللّهُ عَلَيْكُومُ اللّهُ عَلَيْكُومُ اللّهُ عَلَيْكُومُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْكُومُ اللّهُ عَلَيْكُومُ اللّهُ اللّهُ الْمُعُلِمُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْكُومُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْكُومُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّ

رترجر، بروبری ضا در دنابرگ ادخود لوگون ی کے اعتمال الے معبود النے ول دمیا حب العمل کو جریرے بن کا نواسے اور تیرے دبول ہی کام نام ہے فل بر فرما دے کہ کوئی باطل ایسا نہ ملے عبس کا بردہ جاک نہ کرد سے اور حق کوئی نابت کرکے رہے ، اے پر دردگار ایسا کو جاک نہ کرد سے اور حق کوئی نابت کرکے رہے ، اے پر دردگار ایسا کو این منظلیم بندوں کا بیشت بنا ہ ، اور جس سب کسی کا تیرسے سواکوئی نابی اس کا حد گار ائے حلدل کر تیری کی ب کے جوام کام معطل ہور سے بیں امنیں وہ جرسے جاری دساری کر وسے اور تیرسے دبن ک نشانوں اور تیرسے دبن ک نشانوں کو مستمام کردسے۔

ياؤل كالمسح

وضویل پاؤل پر مس کرتے وقت پہلے کس پاؤل سے شروع کیا جائے یا دونوں پاؤل پر ایک ساتھ مس کر لیا جائے ؟ دونوں پاؤل پر ایک ساتھ مس کر لیا جائے۔ورنہ پہلے دانے پاؤل سے شروع کیا جائے۔

تشبیج (بر) کے دانوں کوہوھ جانا

آپ سے پوچھا گیا کہ شیخ فاظمہ زہر اسلام اللہ علیما پڑھے وقت آبک مخص چو نتیس مرتبہ سے زیادہ اللہ اکبر کہ سرگیائی وہ چو نتیس پر دالیں آ یا از سر نوچو نتیس بار اللہ اکبر کے اور اگر وہ شخص بھول کر ۲۷ مرتبہ سجان اللہ للہ گیا کیادہ ۲۲ پر بلیٹ آئے یااز سرنو سجان اللہ کہنا شروع کر ہے۔

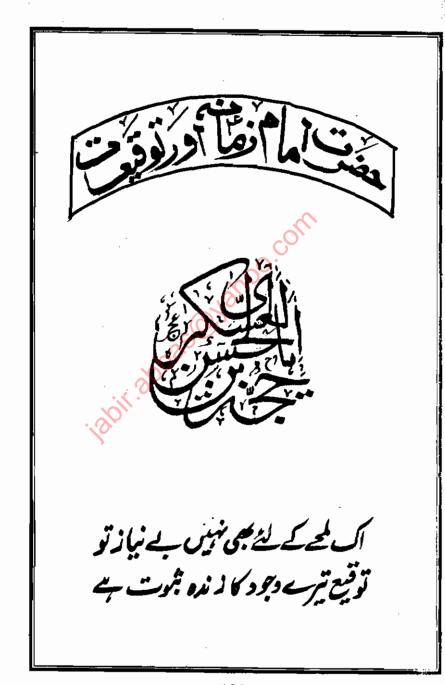
آپ نے جواب میں فرمایا :۔ اگر کوئی شخص کھول کر چو ہیں دانوں ے زیادہ پر اللہ اکبر کمہ گیاہے تو وہ چو نتیس پر واپس آئے۔ دوبارہ از سر نواللہ اکبر کھنے کی ضرورت نہیں اور اگر کھول کر سجان اللہ کنے بیں ۲۷ ہے تجاوز کر گیاہے تو وہ ۲۷ پر جوع کرے اور اگر الحمد اللہ کنے بیں سو سے تجاوز کر گیاہے تو کوئی حرج نہیں۔

(حارالانوار جلد ۱۲، صفحه ۵۵،۵۵۰)

مومنین کرام :۔

حضرت امام زمانہ علیہ السلام سے مومنین اور صالحین نے جو مسائل دریافت کیئے وہ خاص توجہ کے طالب ہیں ان میں سے چند مسائل کا تعلق روزانہ کی زندگی سے ہے۔ جن کا علم ہو نا ضروری ہے اور انسان أی طرح عمل کرے جیسے کہ ہمارے مولاً نے آسٹاد فرمایا ہے۔





ظہور کے مارے میں تو قیع مبارک

محدین ایر اہیم بن اسحاق کا میان ہے کہ میں نے ابو علی محدین ہمام کو کہتے ہوئے سااور ابو علی محمد بن ہمام کا میان ہے کہ میں نے محمد بن مثان عمری قدس الله روحہ کو فرماتے ہوئے سنا کہ حضرت صاحب الزمان علیہ السلام کے وست مبار کہ سے لکھی ہوئی تحریر جس کو میں پہچا نتا ہوں سے کہ :۔

- 27

جو شخص لوگوں کے مجمع میں میرانام لے اس پراللہ کی لعنت۔ نیز میں نے ایک عربیضہ لکھ کر ظہور فرج کے متعلق پوچھاتو جواب آیا :۔ ترجمہ :۔ اُس کاوفت معین کرنے والے جھوٹے ہیں۔ (اکمال الدین، خار الاتوار جلد ۱۲، صفحہ ۸۳ کار دوترجمہ)

حضرت امام زمانة كالشخ مفيدٌ كن مايك خط

كتاب الاحتجاج ميں رقوم ب كه ماه صفر الم جرى ميں ناجه
مقدسه سے شخ الى عبدالله محد بن نعمان كه عام ايك تحرير آئى پہنچانے
والے نے متايا كه ده تحرير ناجيه متصل با تجازے لايا ب اس كى عبارت بہ ج۔

ر جمہ :۔

سے کھائی اور ہدایت یافتہ دوست سی مفید الی عبداللہ محد بن محد بن محد بن اللہ اللہ تعالیٰ ان کہ بن اللہ اللہ تعالیٰ ان کے اعزاز کو قائم ودائم رکھے۔

ترجمه نط :په

اللہ كے نام ہے جو مربان ہے نمايت رقم والا ہے اس كے بعد تم پر
سلام ہو۔ا ہو وست دار۔ا ہو بن میں مخلص اور ہمار ہے بار ہے میں خصوصی
یقین رکھنے والے۔ ہم اس خدا کی حمد کرتے ہیں جس كے سواكو ئی خدا نہيں اور
اسی ہے ملتی ہیں كہ وہ اپنی رحمیں نازل فرمائے ہمارے آقاو مولاً اور ہمارے بی اور
اور اُن کی آل پاک پر۔اللہ تعالی حق کی نفر سے کے لئے تمہاری تو یتی ہمیشہ قائم
ر کھے اور ہماری طرف سے ہمارے مانے والوں كو جو بچ بچ باتیں بہنچاتے ہواللہ
تعالیٰ تمہیں اس کی مولی جانے خیر عنایت فرمائے تمہیں معلوم ہے كہ فیصے اذن و یا
گیا ہے كہ میں تمہیں خط و كتا ہے كاشر ف مخشوں جس طرح تم سے پہلے ہمارے مائے والوں ہیں ہوئے ہیں۔

تم اللہ ك و شنول اور و بن لے خارج ہو جانے والول كے مقابع پر المت قدم رہواللہ تمہارى نفرت و مدد كرے كالور جو كھے ہم انتاء اللہ تمہارى نفرت و مدد كرے كالور جو كھے ہم انتاء اللہ تكون كے اسے ان لوگوں تك پنچاذ جن پر تمہيں اطمينان ہوئي ہم خالموں كى آبادى سے دور اپنے مقام پر مقیم و قیام پذیر ہیں اس لئے كہ اللہ كے بن نظر اس بیں ہمارى اور ہمارے شيعوں كى بہترى ہے كہ جب تك و نیاكى حكومت فاستوں كے بہارى اور ہمانى كى قلم و (وسترس) سے دور رہیں مگر اس كے باوجود تم لوگوں باس ہے ہم ان كى قلم و (وسترس) سے دور رہیں مگر اس كے باوجود تم لوگوں كے حالات كاعلم ہمیں ہو تار ہتا ہے اور تم لوگوں كى كوئى بات ہم سے چھي شيں رہتی ہے۔ ہمیں تم لوگوں كى لغز شوں كاعلم اس وقت سے جب سے تم ہمیں اور ہی سے اکثر اس طرف ماكل ہو گئے جس سے اسانف صالحین ہمیشہ دور رہے اور جو ان سے عمد لیا گیا تھا انھوں نے اس كو چھوڑ دیا اور ایسائیں پشت ڈال دیا ہيے ان

کواس عہد کی خبر ہی نہیں۔

پھر بھی ہم نے تم لوگوں کو بھلایا نہیں ہے۔ تہماری رعایت نہیں پھوڑی ہے اور اگر ایبانہ کرتے تو دشمن تہیں ختم ہی کر دیتے۔ لہذا تم لوگ اللہ ہے ڈرواور اُن فتنوں میں پڑنے ہے جو تم پر چھا جائے والا ہے اور جس میں وہ مختص جس کی اجل آئی ہے وہ مر جائے گاجو اپنی مر ادکو پینچنے والا ہے وہ جائے گا اور وہ ہمارے اقدام کی ابتداء کی نشانی ہوگی اور ہمارے امر و نمی کا اجراء ہوگا اللہ اپنے نور کو بایہ شخیل تک پہنچا کر رہے گا چاہے مشرکوں کو ناگوار بی

تم لوگ جا بلید کی آگ کے شعلوں سے جے بدنی امیے کے تعصب اس جی بینی امیے کے تعصب اس جی کے لئے تقیہ ہے کام لوا مسال جب اہ جمادی الاول آئے گا تو اس جی جو پہنے ہوا تا تارہ کا اور اس کے فور آبعد جو پہنے ہوا ہے و کی کر خواب غفلت سے میدار ہو جانا تم لوگوں کے لئے ایک واضح نشانی نمو دار ہوگی۔ آسمان سے اور اس طرح بالکل اس کے برابر زمین سے ہیں۔ سر زمین مشرق میں ایسے حاد ثاب ہول کے جنمیں دکھی کر رنج و قاتی ہوگا اور اس کے بعد عراق پر و وگروہ غالب آجائے گاجو اسلام سے خارج ہوگاان کی بدا عمالیوں سے اہل عراق کی روزی نگ ہو جائے گی اس کے بعد بیہ خم کی گھٹا بدا عمالیوں سے اہل عراق کی روزی نگ ہو جائے گی اس کے بعد بیہ خم کی گھٹا کور لوگوں کو خوشی ہوگی اور تمام اطراف ارض سے لوگ جج کے اراد سے پر متفی اور تمکی کار لوگوں کو خوشی ہوگی اور تمام اطراف ارض سے لوگ جج کے اراد سے پر متفق ہو جائے کی دوابیا عمل کر سے جو ہمارے نزدیک متفق ہو خگ تم میں سے ہر شخص کو جائے کہ وہ ایسا عمل کر سے جو ہماری حکومت یک ہونہ میں نا پہند یہ ہو جو عمل نہ کر سے جو ہمیں نا پہند یہ ہوں کے کہ ہماری حکومت یک

میک آئے گی اور اُس وقت کسی کی توبہ قبول نہ ہوگی خواہ کوئی کتنی ہی ندامت کا اظہار کرے سزاے ضیع ہے گا۔ اللہ نے تمہاری ہدایت الهام کے ذریعے سے کل ہے اور اپنے لطف و مهر بانی سے تم لوگوں کو ہدایت کی توفیق و کی ہے۔ یہ نسخہ توقیع خود صاحب الرمان علیہ السلام کے وست مبارک سے لکھی ہوئی ہے۔

ترجمہ:۔۔

اے میرے برادر۔ دوست، ہماری محبت میں با صفاء ، با اخلاص، مدوگار وفا دار۔ اللہ اپنی آنکھوں سے تہماری گرانی کرے جو آبھی نہیں سو تیں۔ یہ میرا خط ہے تہمارے نام۔ اس تحریر کو کی پر ظاہر نہ کر نااور اس کے مضمون پر صرف اُن لوگوں کو مطلع کر نا جن پر تہمیں اطمینان ہو اور انھیں عمل کی ہدایت کرنا۔ اللہ کی رحمت نازل جو محمد اور اُن کی آل اطمار پر۔ عمل کی ہدایت کرنا۔ اللہ کی رحمت نازل جو محمد اور اُن کی آل اطمار پر۔ وتر جمہد)

امام زمانۂ کا شخ مفید کے نام دو سر خط

حفرت امام صاحب الزمان عليه السلام كى جانب نے ايك دوسر ا خط مھى چن شنبہ ٢٣ ذى الحج<u>ر ٢١٣</u> جمرى ميں شخ مفيد عليه رحمہ كے پاس دار دجو ا جو بہ ہے: ۔

ترجمہ :۔ ایک مسافر راہ خدا ہد ہ خدا کی طرف ہے اس شخص کے نام جس کواللہ نے حق کاعلم دیا ہے اور وہ حق کی دلیل ہے :۔

ہم اللہ الرحمٰن الرحیم۔اللہ کے نام کے ساتھ جو مہر بان ہے نمایت رحم والا ہے۔ سلام ہوتم پر اے حق کے مدد گار ، کلمہ صدق کی طرف لوگوں کو وعوت دینے والے میں حمد کرتا ہوں۔ اُس اللہ کی جس کے سواکوئی اللہ نسیں وعی ہمار اللہ ہے اور ہمارے آبائے اولین کا اللہ ہے اور اس سے التجا کرتا ہوں کہ وہ رحمت نازل فرمائے ہمارے نبی ہمارے سیدو سر دار حضرت محمد خاتم الانبیاء " یراوران کی پاک ویا کیزہ آل ہر۔

اس کے بعد اللہ تہيں ہر بلاے جائے اور وشمنوں کے کيدو کر ہے محفوظ رکھے تمہارى مناجات پر ہمارى نظر تھى اور تمہارى دعاكى قبوليت كے لئے ہم نے شفاعت ہى كى۔ اس وقت بل تہيں اپنے خيمہ سے نظ لكھ رہا ہوں جو ايك معروف بہاڑى پر نصب ہے بيں اہمى يمال پر وادى ہے چل كر آيا ہول يو سكتا ہے كہ بچھ عرصے كے بعد بيں اس ويران بہاڑى ہے اتر كر آبادى بيں بوسكتا ہے كہ بچھ عرصے كے بعد بيں اس ويران بہاڑى ہے اتر كر آبادى بيں بنچوں۔ مير ہے حالات نئ كروٹ لين اور مارى خبر تم تك بنچ اور اعمال كے بنچوں۔ مير ہے حالات نئ كروٹ لين اور مارى خبر تم تك بنچ اور اعمال كے ور يع ہے جو ہمارا قرب چاہتے ہو دہ نصيب ہو جائے۔ اللہ تعالى تميں اس كى

الله أن آ كھول سے تمحارى گران كر بي جو بھى نہيں سو تمی۔
تہيں چا ہے كہ تم ان حالات كا مقابلہ كرو۔ اى اثاء ميں باطلى كى كاشت كرن و والى قوم كو پائمال كر ديا جائے گا جس سے مو منين كو مسر سے اور بحر مين كو حزن و غم ہو گا۔ اور ہمار سے اقدام كى نشانى وہ حادثہ ہو گا جو حرم معظم ميں ايك اور قابل مز مت منافق كے ہا تھوں رو نما ہو گا۔ وہ محترم خون كو طال كرے گا۔ پھر كھى اہل ايمان پر ظلم كر كے اپنے مقصد كو حاصل نہ كر سكے گا اس لئے كہ ان مومنين كى بشت بنا بى ميں ہمارى د عا ہوگى جے نہ كو كى آسانى فر شد روك سكتا ہے اور جو اور خون كا فر شد روك سكتا ہے ورجو درجوں كے دل مطمئن رہيں۔ اور جو

اللہ کرتا ہے اُس کا انجام کیمتر ہوتا ہے جب تک کہ لوگ منہیات اور گٹا ہوں ہے پر بیبز کرتے رہیں گے۔

اے میرے مخلص دوستدار اور ہارے لئے ظالموں سے جماد کرنے والے۔اللہ اپنی نفرت ہے تمہاری اس طرح تائید کرے جس طرح اس نے مارے گذشتہ اولیاء صالحین کی تائید فرمائی۔سنو۔ میں تم سے عمد کرتا موں۔ کہ تمہارے مراوران ایمانی میں سے جو محض اینے رب سے ڈر تار ہے گا اور اینے مال میں کے جس قدر تکالنا جاہے تکالنار ہے گاوہ تاریک فتوں اور اس کے گزند سے محفوظ رہے گااوروہ شخص جس کواللہ تغالی نے چندروز مال دیا ہے اوراس کے نکالنے میں قتل کرے گااور جس کے ساتھ صلہ رحم کرنے کا تھم ہے۔ نہ کرے گا تو وہ و نیا و آخرت دونوں میں محروم اور ناکامیاب رہے گا اور اگر ہمارے تتبعین (ایندان کواطاعت کی توقیق رہے)سب یک ول ہو جائیں کہ جو ان سے عمد ہو واسے بور اکریں کے تو ماری طرف سے شرف الا قات فق یں کو کی تاخیر نہ ہوگی اور جلد از جلد وہ ہماری زیارت سے بیٹر ف یاب ہول کے اس لئے کہ وہ ہماری تجی معرفت رکھتے ہوں گے ہم ان لوگوں کے طنے میں اس لئے پر ہیز کرتے ہیں کہ ہم تک ان کی الی ہا تمیں مپنچتی رہتی ہیں جو ہمیں ناپند میں اور اللہ ہی مدد گار ہے اور وہ بہترین و کیل و کارساز ہے اس کی رحت جو ہارے سیدو سر دار ہشیر و نذیر تحد اور ان کی آل اطہار میر اور سلام ہو ۔

(کتبہ کیم شوال ۳۱۲ ہجری) یہ توقع امام زمانہ صلوات اللہ علیہ کے وست مبارک سے تحریر کی آ ہو گی ہے۔

ترجمه :پ

اے میرے دوست دار جس کواللہ نے اپنی طرف سے حق کا علم عطا کیا ہے تہمارے نام نے میر افط ہے جے میں ہو لٹا گیا ہوں اور ہمار ایک باہم وسہ مخص لکھتا گیا ہے اس خط کو سب سے چھپانا اور طے کر کے رکھ دینا اس کی نقل کر لینا اور ہمارے دوست داروں میں سے جس کی امانت و دیانت پر حمیس اطمینان ہو اس کو دکھا دیتا اللہ تعالیٰ ہمارے ذریعے سے تمہارے گروہوں میں اتحاد و انظاق پیدا کر مے گا۔ انشاء اللہ اور ہر طرح کی حمد اللہ کے لئے ہے اور رحمت نازل ہو ہمارے سیدو ہم دار حصر سے حمد اور ان کی آل پاک پر۔

محمد بن ابر البيم ميزيار كوتنبيه

ان ولید نے سعد سے ، سعد نے علان سے ، علان نے محمد من جرا کیل سے محمد من جرا کیل سے محمد من جرا کیل نے ایر اہیم اور محمد پسر ان فرج سے انھوں نے محمد من ایر اہیم میں بیار سے روایت کی ہے کہ وہ مرتد ہو کر اور شک میں مبتلا ہو کر وار وعراق ہوا۔ تو وہاں ایک تو قیع برآمہ ہوئی جس میں بیہ تحریر تھا :۔میزیار کہ دو کہ تم نے اسلام اف میں بے والے ہمار سے شیعوں کے متعلق جو پھر بیان کیا ہے وہ میں سمجھ گیا ہوں مگر تم ان لوگوں سے بو چھو کہ کیا تم نے یہ قران کی آیت نہیں سن ہے جس میں اللہ تعالی فرباتا ہے۔

تر جمہ :۔اے اہل ایمان اللہ کی اطاعت کرواور رسول اور اولی الامر کی اطاعت کرو۔ یہ اولی الا مریت وہی توہ جو تا قیامت چلتی رہے گی اور کیا تم نہیں در کھتے کہ اللہ تعالی نے تہمارے لئے بناہ گا ہیں مادی ہیں جمال تم بناہ لے سکو۔
علم نصب کر دیئے ہیں جن سے تم ہدایت حاصل کر واور یہ سلسلہ حضرت آدم علیہ اسلام سے لیکر میرے والد جو گزرگئے الن تک جاری رہا جب ایک علم طعند اہوا تو دوسر الس کی جگہ نصب ہو گیا ایک ستارہ و وہا تو دوسر الس کی جگہ نمود ار ہو گیا گر جب میرے والد گزرگئے تو تم سجھتے ہواللہ تعالی نے اپنے اور اپنی مخلوق کے دیا مال کی واسلہ منقطع کر دیا حالا نکہ ہر گز ایسا نہیں ہوا اور اپنی مخلوق کے دریا حالا نکہ ہر گز ایسا نہیں ہوا اور نے ہوگا جب تک کہ قیامت مربان کا واسلہ منقطع کر دیا حالا نکہ ہر گز ایسا نہیں ہوا اور سے لوگ کنتی ہی کر اہت کر ہے۔

اے محمد بن اہر اہیم جس مقصد کے لئے تم یہاں آئے ہوا سیس شک نہ کروکہ اللہ نقالی زیبن کو جبت سے فالی نہیں چھوڑے کے یہ بناؤکہ تمہارے والد نے اپنی و فات سے پہلے تم سے یہ نہیں کہا تھا کہ آھی ابھی کی ایسے شخص کو بلاؤ جو ہمارے پاس رکھے و بناروں کو شار کر سکے ۔ گر جب ایسے کی شخص کے آئے ہیں تا خیر ، و فی اور اس ہزرگ کو خطر ہ محسوس ہواکہ کمیں اسی اشاء میں اپناوم فکل نہ جائے تو تم سے کہا کہ اب تم خود ہی ان و بناروں کو گن لو اور یہ کہ کر انہوں نے ایک ہوا کیسے (تھیلے) اور ایک میں مختلف اوز ان کے دینار تھے۔ تم نے ان کو گنا اور اس وقت تمہارے سائے تین کہا اور دیر گئے اور ایک تھیلی جس میں مختلف اوز ان کے دینار تھے۔ تم نے ان کو گنا اور ہی کہ کیا اور بیر گئے ان کو کہا تہ تھی اس کی ذمہ داری سے پہلے کا اللہ سے ڈیا اللہ سے ڈیا اور خیمے اس کی ذمہ داری سے کہا تھے لئے اللہ سے ڈر نا اور پھر میر سے لئے اور خیمے اس کی ذمہ داری سے تھا

نجات د لانااور دہ کرنا جو میں تم ہے امیدر کھتا ہوں۔ لہذا اللہ تم پر رحم کرے وہ ویتار جو تم نے ان نقذیات میں ہے ہمارے حساب سے فاضل سمجھا تھا اسے ذکالو اور وہ دس سے زیادہ دیتار تھے اسے واپس کرواس لئے کہ زمانہ پہلے سے زیادہ صعب و سخت ہے اور ہمارے لئے اللہ بن کافی ہے اور بہترین و کیل وکار سازے۔

سازے۔

(اکمال الدین، محار انوار جلدار دوتر جمہ ۲۵۲۵ ۸۵)

امام زمانگ کی عمر می اور اُن کے فرزند کے نام تو قیع مبارک کتاب اکمالی الدین میں مرقوم ہے کہ مینی اللہ عند نے فرمایا کہ میں نے سعد من عبد اللہ کے ہاتھ کی لکھی ہوئی یہ روایت پائی کہ حضرت امام زمانہ علیہ السلام کی ایک تو قیع سبارک عمر می اور ان کے فرزندر ضی اللہ عنما کے پاس آئی جو مندرجہ ذیل ہے۔

ر جمه : ــ

اللہ تعالیٰ تم وونوں کو اپنی اطاعت کی تو یکن عطافر مائے اور تمہیں دین پر خامت قدم رکھے اور اپنی مرضی پر چلنے کی سعادت فخفے ہم کٹ اس کی اطلاع پہنچ چک ہے۔ جیسا کہ تم دونوں نے بھی اس کا تذکر ہ کیا ہے کہ میٹی نے تم دونوں کو مخار اور اس کے مناظر ہے کے متعلق بنایا اور یہ کہ اس نے مخالف کے دالائل کو متعلق تم سیار نیز اس کے متعلق تم دونوں کو تسلیم کر لیا کہ جعفر بن علی کے سواکوئی خلف نہیں۔ نیز اس کے متعلق تم دونوں کے اصحاب جو پہنے کہتے ہیں تم نے لکھا اور میں سمجھ گیا۔ خداکی پناد۔ اگر کوئی بینا ہونے کے بعد تامیا ہو جائے اور ہدایت پا جانے کے بعد گر اہ ہو جائے۔ یہ سال اور گر اہ کن فتنوں سے اللہ جائے۔

اللهِ عزوجل خودارشاد فرماتاہے:۔

ترجمہ: ۔ الف لام میم ۔ کیالوگ یہ سیجھے ہیں کہ وہ صرف اس تول پر چھوڑو یے جائیں گے دہ ہم ایمان لائے "اوروہ آذیائ نہ جائیں گے ۔

یہ لوگ کیے فتے میں پڑے جا رہے ہیں اور جرانی کے عالم میں اور ھرا و هر گھوم رہے ہیں ہیں وائیں جاتے ہیں اور ہمی بائیں جانب کیا ان لوگوں نے دین کو چھوڑ دیایاس میں انھیں شک لاحق ہے ، یاوا تعاوشی تن بیں ہیں ۔ یااس کے متعلق جو تجی روایات اور احادیث صححہ آئی ہیں اس کو نہیں جانے ہیں ۔ یااس کے متعلق جو تجی روایات اور احادیث صححہ آئی ہیں اس کو نہیں جانے بیا جانے ہیں مگر نفسانیت ہیں جالا ہیں ۔ کیاان لوگوں کو نہیں معلوم کہ ذیمن کبی بیا جانے ہیں مگر نفسانیت ہیں جانے مقام رہے گی ۔ خواہ وہ ظاہر ہویا پوشدہ ۔ کیاا نہیں معلوم نہیں کہ ان کے نبعد ایک نہیں کہ ان کے نبعد ان کے ایما کیا تک کہ وہ میرے والد ہور گوار گذر نے والے لینی حسن من علی تک ہے ۔ یہاں تک کہ وہ میرے والد ہور گوار گذر نے والے لینی حسن من علی تک ہوگیا ور وہ اپنے آبائے کر ام کے قائم مقام رہے ۔ بینیاور وہ اسے آبائے کر ام کے قائم مقام رہے ۔ بینیاور وہ اسے آبائے کر ام کے قائم مقام رہے ۔ بینیاور وہ اسے آبائے کر ام کے قائم مقام رہے ۔ بینیاور مراط متنقیم کی طرف لوگوں کی ہوا ہے قربائے رہے ۔

وہ ایک نور ساطع اور روشن چاند سے محر اللہ تعالی نے انسیں اپنے ہمال کے لئے متحت کر اللہ تعالی نے انسیں اپنے ہمال کے لئے متحت کر ام علم السلام کے دستور کے بالکل مطابق اپنا عمد ہاور اپنی وصیت ایک ایسے کے حوالے کی جس کو اللہ عزوجل نے ایک مدت تک کے لئے چھپالیااور اپنی مشیت سے اس کی جائے قیام کو مخفی رکھا ہے اور اپنے سابقہ فیصلے اور جاری شدہ عظم کے مطابق اب یہ عمدہ اور یہ شرف میر سے پاس ہے ۔ ہاں ۔ اگر اللہ عزوجل کا عظم ہوتا ہے جس کے لئے اس نے منع کر دیا ہے اور اپنے جاری کروہ عظم کو ختم کر دیا۔ تو ہیں حق

کو پہترین شکل میں ظاہر کر دیتا اور اس کی علامات و دلائل کو واضع کر دیتا۔ لیکن قضاد قدر الی پر کسی کابس نہیں اور اس کے اراد ہے کو مستر دہجی نہیں کیا جاسکا۔
لہذایہ لوگ اپنی خواہشات کی پیروی کو چھوڑیں اور اپنے اصل دین پر چلے جائیں جمال وہ تھے اور جس چیز کو اللہ نے ان سے پوشیدہ رکھا ہے اس کے لئے حث نہ کریں۔ گئرگار ہول گے۔ اللہ کے ڈالے ہوئے پر دے کو اٹھانے کی کو حش نہ کریں۔ ناد م ہول گے اور یہ جان لیس کہ حق ہمارے ساتھ ہے اور ہم میں سے اس کا دعوی جو کی ہمارے سواجو بھی کرے وہ کذاب اور مفتری ہوگا ہمارے اس ہم میں سے اس کا دعوی جو کئی ہمارے سواجو بھی کرے وہ کذاب اور مفتری ہوگا ہمارے اس ہم میں نہ جاؤ۔ جو پچھ اشار ڈ کہا گیا ہے اس پر مقاعت کرو۔ انشاء اللہ نقر تے کی مشرورت نہ ہوگا۔

قناعت کرو۔ انشاء اللہ نقر تے کی مشرورت نہ ہوگا۔

قناعت کرو۔ انشاء اللہ نقر تے کی مشرورت نہ ہوگا۔

اہل قم کا تو قیع مبارک کی تصدیق کے لئے ایک خط
ایک جماعت نے ابو الحن عمرین احمدین واؤد ہی ہے روایت کی ہے
ان کامیان ہے کہ میں نے ایک قلمی نیخ پایا جو احمدین اہر اہیم نو بہختی کے ہاتھ
کا لکسا ہو ااور ابو القاہم حیین بن روخ کا لکھایا اور املا کر ایا ہوا تھا اس کتاب کی
پشت پر تحریر تھا کہ اس میں اُن مسائل کے جو ابات ہیں جو قم سے جھچے گئے تھے اور
بو چھاگیا کہ آیا ہے جو ابات فقید علیہ السلام (امام قائم علیہ السلام) کے تحریر کر دہ
ہیں یا محمد بن علی علم عانی کے ہیں اس وریا فت کا سبب ہے کہ لوگ میان کرتے
ہیں یا محمد بن علی علم عانی کے ہیں اس وریا فت کا سبب ہے کہ لوگ میان کرتے
ہیں کہ علم عانی کتا ہے کہ ان مسائل کے جو ابات میں نے تحریر کئے ہیں تو ان

مسائل کے مجبوعے کی پشت پر میہ لکھ دیا گیا۔ ترجمہ : تو قیع مبارک :۔

ہم اللہ الرحمٰن الرحیم۔ ہم اس سقے اور اس کے مضمون پر مطلع ہوئے یہ سب ہمارے جواب ہیں اس میں ایک حرف بھی اس مخدول و ضال و مقل (راندہ ورگاہ، گمر آہ اور گر اہ کن) کا نہیں ہے اور اس سے پہلے چند چیزیں احمد من ہلال اور اس کے مانند ویگر لوگوں کے ہاتھوں تم لوٹوں تک پینی تھیں گر ان سب کا بھی اسلام ہے مرتد ہو نا ایبا ہی ہے جیسے یہ (مثلمغانی) مرتد ہو گیا ہے ان سب پر اللہ لعن کرے اور اپنا غضب نازل فرمائے۔

(سائل نے اس خطے آخر میں لکھا کہ اس کی تصدیق میں پہلے تھی کراچکا ہوں)۔

زجمه: توقع مبارک.

پس اس کے جواب میں یہ لکھا ہو آیا کہ جس تو قبع کی تہیں پہلے تصدیق ہو چکل ہے اگر ان لوگوں کے ذریعے سے تھی وہی چیز آئی ہے تو اس میں ضرر نہیں وہ صحیح ہے۔

اور بعض علائے اہلبیت علیم السلام کے متعلق قدیم سے یہ روایت چلی آر بی ہے کہ ان سے بھی اس طرح کا سوال کی ایسے کے لئے کیا گیا تھا جو مغضوب الی تھا توآئی آئے اس کے جواب میں فرمایا تھا کہ علم تو ہمارے پاس بی ہان سے جوا نکار کرے وہ کر تاریح تم لوگوں پر اس کا کیا اثر ہے اگر کوئی الیں روایت اس کے ذریعے سے تم لوگوں تک پہنچے جس کی تصدیق تو ثیق اپنے الیں روایت اس کے ذریعے سے تم لوگوں تک پہنچے جس کی تصدیق تو ثیق اپنے اشکر اوا کر واور اُسے قبول کر لو۔ اور جس میں تم

لوگ شک کرتے ہویادہ روایت اس کے علاوہ اور کی مر دشتہ ہے تم تک پہنی ہو

تواس کے لئے ہماری طرف رجوع کروہم مائیں گے کہ وہ صحیح ہے یا غلط ہے اور
اللہ تعالیٰ کے اساء بہت ہیں اس کی حمد و ثناء بہت جلیل ہے وہی تمہاری
تو فیقات کا مالک ہے اور تمام امور میں ہم لوگوں کے لئے کانی ہے اور
بہترین وکیل وکار ساز ہے۔

ان نوح کامیان ہے کہ سب سے پہلے ابو الحسین تحد من علی بن تمام نے
ہیان کی انھوں نے کہ کہ میں نے بیہ تو قیع اس قلمی کتاب سے نقل کی جو ابو الحن
بن داؤد کے پاس تھی اور جب ابو الحن بن داؤد تشریف الم یَ تو میں نے وہ
نقل انھیں پڑھ کر ساتی اور انھوں نے بھی یہ کہا کہ اس نیز کو بعینہ اہل تم نے
شیخ ابو القاسم حسین بن روح کو تھیما تھا اور اس کی پشت پر اس کا جو اب احمد بن
ایم تیم نو بہ ختی کے ہاتھ کا لکھا ہو الگیا دریہ نیز ابو الحن بن داؤد کے پاس سے
حاصل ہو ا

(حار الانوار ، جلد ۱۲، ار دوتر جمه صفحه ۳ ۲۳۷۳)

امام زمایۃ کے وجود کے بارے شک کرنے والوں کے لئے تو قع مبارک

یکی موثن ابو عمر عامری کامیان ہے کہ ایک مرتبہ ان الی عائم قزوی فی اور شیعوں کے ایک گروہ کے متعلق اور شیعوں کے ایک گروہ کے در میان حضرت امام زمانہ علیہ السلام کے متعلق صف ہوئی این الی عائم قزوینی نے کہا کہ حضرت ابو محمد امام حسن عسکری علیہ السلام نے دفات پائی اور انھوں نے کوئی اولاد نہیں چھوزی توگروہ شیعہ نے السلام نے دفات پائی اور انھوں نے کوئی اولاد نہیں چھوزی توگروہ شیعہ نے

ایک خطاس کے متعلق لکھ کرنا جیہ مقدسہ کی طرف روانہ کیااوراس خطی متایا کہ آپ کے وجوو کے متعلق یہاں یہ صف ہاس خط کے جواب میں خود حضرت امام زمانہ علیہ السلام کے دست مبارک کی لکھی ہوئی یہ تحریر (توقیع مبارک) مرآمہ ہوئی :۔

ترجمہ:۔ اللہ کے نام کے ساتھ جور تمان ور حیم ہے

اللہ تعالیٰ ہمیں اور تمہیں دونوں کو فتوں سے محفوظ رکھے اور ہمیں
اور تمہیں دونوں کوروح یقین عطا فرمائے تم لوگوں کے دلوں میں جو اپنے
والیان امر کے متعلق شک ہے تو یہ خود تمہارے لئے مصر ہے ہمارے لئے
تہیں۔اس کا گزند تمہیں پنچے گا ہمیں نہیں۔ حق ہمارے ساتھ ہے اب جو بھی
ہمیں چھوڑ کر بیٹھ رہے ہمیں اس کی پرواں نہیں ہم لوگوں کو ہمارے پر در دگار
نہیں جھوڑ کر بیٹھ رہے ہمیں اس کی پرواں نہیں ہم لوگوں کو ہمارے پر در دگار
نے پہلے مایا ہے اور ساری محلوق ہمارے بعد مائی گئی۔

اے لوگو احمیں کیا ہو گیا ہے تم کیوں شک و حیرت میں مبتلا ہو کیا تم نے اللہ تعالیٰ کا یہ قول نہیں سُا۔ وہ ارشاد فریا تا ہے : ۔ کہ

ترجمہ:۔اے اہل ایمان!اللہ کی اطاعت کرواور اطاعت کرور سول کی اور ہوں کی اور ہوں ہے کہ دور سول کی اور جو تم میں سے اولی الامر ہیں (اُن کی اطاعت کرو)

کیا تم نہیں جانتے کہ اس کے لئے احادیث صححہ وار و ہو کی ہیں جن میں تمہارے گذشتہ اور آئندہ آئمۃ کے لئے متادیا گیاہے۔

کیاتم نمیں و کیھتے کہ از حضرت آدم علیہ السلام تا امام حسن عسکری علیہ السلام جن کی و فات ہو کی ہے اللہ نے پناہ گا ہیں میادی ہیں جمال تم لوگ آگر پناہ لو۔اور علم نصب کر دیتے ہیں جس سے تم لوگ ہدایت عاصل کرو۔جب

ا یک علم ٹھنڈا ہو تا ہے تو د دسر اعلم نمو دار ہو جاتا ہے جب ایک ستار ہ ؤ دہتا ہے تو ووسر ااس کی جگہ نمو دار ہو تا ہے گمر جب حضرت امام حسن عسکری علیہ السلام کی و فات ہوئی تو تم لوگوں نے سمجھا کہ اللہ تعالیٰ نے اپنے دین کو ہا طل کر ویاادراللہ اوراُس کی مخلوق کے در میان جور شتہ و تعلق تھاد ہ منقطع ہو گیا۔ ہر گز ابیا نہیں ہے۔ اور نہ ہو گاجب تک قیامت ہریانہ ہو جائے امر الی کا ظہور ہو کر رہے گاخواہ لوگ آسے ناپند کریں۔ اور بلاشبہ وہ (حضرت امام حسن عسکری علیہ السلام اکذر نے والے این آبائے کر الم کے وستور کے مطابق بالکل قدم بہ قدم گامزن رے اور گذر گئے مرأن كى وصيت ميرے لئے ہے ان كاعلم ميرے یاس ہے میں ان کا فرز حروں ۔ اُن کا قائم مقام ہول ان کی قائم مقامی کے متعلق ہم ہے وہی الجھے گا جو ظالم اور گنگار ہو گااور میرے سوا وعویٰ امامت و بی کرے گاجو کا فرو جاحد ہو گا۔ اگر انٹر کا پیہ تھم نہ ہو جاتا کہ اللہ کار از ظاہر نہ ہو اور نہ اس کا اعلان ہو تو میری امامت اس طرح ظاہر ہوتی جس کو د کیہ کر تمهاری عقلیمی دیگ ره جا تیں اور تمهارا به سارا نشک و شبه دور ہو جاتا گر جواللہ عا ہتا ہے وہی ہو تا ہے اور ہر کام کے لئے ایک وقت مقر کہنے۔ تم لوگ اللہ ہے۔ ڈرو اور ہمیں تشکیم کرواور یہ امر ایامت ہماری طرف پلٹاؤ کیو نکہ صدور اور ورود سب ہمارے لئے ہے اور وہ بات جو تم سب سے یو شیدہ رکھی گئی ہے اس کے انکشاف کی کو شش نہ کرونہ تم لوگ د اپنے کی طر ف مڑ و نہ ہائمیں طر ف مڑ و ملحه مودّت کے ساتھ سنت واضحہ اختیار کرواور سیدھے ہماری طرف آؤ۔ یہ تصیحت ہم نے تنہیں کی اور اللہ ہم پر بھی گواہ ہے اور تم پر بھی۔اور اگر ہمیں تماری اصلاح کی خواہش نہ ہوتی۔ ہیں تم سے ہدر دی نہ ہوتی۔ ہمیں تم پر

ترس نہ آتا۔ تو ہم تم لوگوں سے (اس وقت) مخاطب نہ ہوتے اور خاموش ہی رہے جس طرح ہم تم لوگوں سے (اس وقت) مخاطب نہ ہوتے اور خاموش ہی رہے جس طرح ہم نے اس ظالم وسر کش سے کوئی جھڑا نہیں کیا جو اپنی کجروی میں بہاجار ہاہے۔ اپنرب کا مخالف ہے اس شے کاوعوید ارہے جو اس کے لئے نہیں ہے اور جن کی اللہ نے اطاعت فرض کی ہے اُن کے حق کا مکر ہے۔ وہ ظالم ہے غاصب ہے۔

اور اس سلسلے میں میرے لئے بدنت رسول اللہ کی سیرت بہترین موں دللہ کی سیرت بہترین معونہ عمل ہے وہ جائل پی بدا عمالی ہے تباہ ہوگااور کافر عنقریب جان لے گاکہ آخرت کا کھر سس کے لئے ہے اللہ تعالی ہمیں اور تم لوکول کو مہلتوں اور برائیوں اور ہم لوکول کو مہلتوں اور برائیوں اور ہر شے پر عمل قدرت رکھے واللہ وہ ہمار ااور تممار اسب کاوالی و حافظ ہور تھمبان ہے اور ہرشے پر عمل قدرت رکھے واللہ وہ ہمین کی بہام ہواور اللہ کی رحمیں اور برستے ہوں اور جھے اور اللہ کی رحمیں اور برستے ہوں اور حضرت میں ہوں اور حضرت میں ہوں اور حضرت ہمیں ہوں اور حضرت ہمیں ہوں اور حضرت ہمیں ہوں۔

غیبة طوی میں نہی این افی غانم کا اس سلسلے میں دیف مبارث ند کور ہے۔ (حار الانوار جلد ۱۲، صفحہ ۷۷۲ تا ۹۴۲ کار دوتر جمہ)

آمام زماية كوہر سال حج اد اكر نا

الوجعفران بالویه کا میان ہے کہ جھے ہے محمد ن عثان عمری قد س اللہ روحہ نے فرمایا کہ خدا کی قد س اللہ جو اوا کے اوا کہ خدا کی قتم حضرت صاحب الا مر علیہ السلام ہر سال جج اوا کر نے کے لیے تشریف لے جاتے ہیں ہر مخفس کو ویکھتے اور پہچانے ہیں لیکن ان کو عوم الناس دیکھتے ہیں مگر پہنچانے نہیں ہیں۔

عبدالله ن جعفر حميرى كاميان بكد ايك مرتبه مين في حمد في من الله على عبد الله في الله على الله على الله في الله على الله على السلام كود يكها بالنهول في كما الله الرام كول الله على الله في الله على الله في الله على الله الله على الله على

'' پرورگار! تونے جو کچھ مجھ ہے وعدہ فر مایا ہے اسے پورافر مادے'' محمد بن عثمان کامیان ہے کی میں نے حضرت صاحب الا مرعلیہ السلام کو ویکھا کہ وہ مستجار میں خانہ کعبہ کا پروہ پکڑے ہوئے دعا کررہے تھے کہ پرورگار! تو میرے ذریعے ہے کہنے دشمنوں ہے انتقام لے۔

علی نن صدقہ تمی ہے روایت ہے کہ محمد من عثان عمری کے پاس بغیر
کوئی سوال کیے ہوئے حضرت صاحب الا مر علیہ السلام کا خط آیا جو لوگ نام
دریافت کرتے ہیں انہیں متادو کہ اگر اس کے بارے میں خاموشی دریافت کی
جائے تو جنت کی خوش خبر کی ہے اور اگر تفتگو کی جائے تو جنم ہے۔اس لیے کہ
اگر لوگ نام ہے واقف ہوں کے تو اس کی اشاعث کریں کے اور اگر جائے
قیام معلوم ہو جائے تو دو سرول کو متادیں گے۔

(و) را لا نوار جلد ۱۱، ار دوصفحه ۳۷، ۴۷۵ م)

امام زمانہ کی تلاش میں ہلاکت وشرک ہے (رواہ کی)ایک جماعت نے شخ صدوق علیہ رسمہ ہے اور انھوں نے عمارین حمین بن اسخق سے انھوں نے احمد بن حسن بن الی صالح خجدی سے روایت کی ہے کہ وہ حضرت صاحب الزمان علیہ السلام کی تلاش و طلب میں بہت سر گرواں تھااس کے لئے اس نے محلف شہروں کے چکر لگائے بالاخر اس نے خابو قاسم حبین بن روح قدس اللہ روحہ کے ذریعے سے حضرت صاحب الزیان علیہ السلام کو ایک خط لکھا جس میں اس نے اپنے تعلق خاطر کا اظہار کیا اور یہ کہ میں آپ کی تلاش میں سر گرواں اور مارامار ایجر رہا ہوں تو وہاں سے ایک تو قیع مبارک برآمہ ہوئی جس کا مضمون یہ تھا۔

جس نے صف کی ، اس نے طلب و تلاش کیا ، جس نے طلب و تلاش کیا اس نے ولیل قائم کی اور جس نے ولیل قائم کی اس نے خو و کو ہلاک کیا اور جس نے خو د کو ہلاک کیا اس نے شرک کیا۔

راوی کامیان ہے کہ آئ تو قیع مبارک کے بعد میں نے آنجناب علیہ السلام کی طلب و تلاش ترک کر دی وال کو سکون ہو گیا اور الحمد للہ خوش خوش اپنے وطن واپس آیا۔

(غيية طوى ، قار الا تواجله ١٢، ار دوصفحه ٨٠٤)

سب غیبت کے حوالے سے تو قیع مبارک

اسحاق بن لیقوب سے روابیت ہے کہ نا دیبہ مقد سہ (سامرہ) سے محمہ بن عثمان کے ہاتھوں ایک تو قیع وار دہوئی جس میں تحریر تھا کہ۔

تر جمہ :۔ اے وہ لوگو۔ جو ایمان لائے ہو ان چیز وں کے متعلق مت پو چھاکر و کہ اگر وہ تم پر ظاہر کر دی جا کمیں تو تہمیں ناگوار معلوم ہو۔

(سؤر هُ ما كد ه آيت ۱۰۱)

اور اب یہ بھی من نو کہ مارے آبائے کرام میں سے کوئی ایسانسیں

گذراجس کی گردن پراس زمانے کے ظالم کی حکومت کا دباؤنہ ہو تمر جب میں ظمور وحروج کروں گاتو میری گردن پر کسی طاغوت و سر کش کی حکومت کا دباؤ شہوگا۔

اوراب میری فیبت میں مجھ سے فیض پینچنے کی بات تو اس طرح ہے جیسے آفآب بادلوں کے پردوں میں لوگوں کی نظروں سے پوشیدہ رہنے کے باوجود سب کو فائدہ بہنچا تا ہے پھریہ کہ میں اہل زمین کیلئے ای طرح سبب امان موں کہ جس طرح سبارے اہل آسان کے لئے سبب امان ہیں۔

پس تم اس طرح کے سوالات کے دروازے مد کر دوجو تمہارے لئے بہ مقصد ہوں اور اس کی خمت نہ کروجس کی تم کو تکلیف نہیں دی گئی ہے اور تعجیل فرج و کشائش (ظہور) کے لئے سبت زیاد ود عائمیں ما گلو۔ یمی تم لوگوں بے لئے کشادگی اور فرج ہے۔ اے اسحاق می یعقوب ۔ تم پر اور اُن لوگوں پر ملام ہو جو ہدایت اور حق کی پیروی کریں۔

ا کمال الدین بی این عصام نے (محمد معقوم) کلیدنی علیہ رحمہ سے ای کے مثل روایت کی ہے۔

(حار لا نوار جلد ۱۱، ار دوتر جمه صفحه ۲۰۹)

نا حيه كاننه اق نه أزْ اوَاور خمس او اكر و

ابو الحن مسترق خریرے روایت ہے ان کامیان ہے کہ میں ایک ون حسن میں عبداللہ کن حمد ان عاصر الدیولہ کی مجلس میں موجود تعاویاں عاجیہ کے واقعات کا ذکر آیا اور میں اُس کا خداق اڑا تاریا کہ اس اثناء میں ایک دن میرے

پچا حسین تشریف لائے ۔ میں اُن واقعات ہے متعلق ان ہے گفتگو کرنے اگا۔ تو ا نموں نے فرمایا۔اے فرزند میں تھی تمہاری طرح ابیا ہی خیال رکھتا تھا۔ ایک مرتبہ مجھے تم کی حکومت پر مامور کیا گیا کیونکہ سلطان پر ایک مشکل آبڑی تھی۔ ّ سلطان کی طرف سے جو بھی وہاں جاتا اہل قم اُس سے آماد و پیکار جو جاتے۔ چنانچہ ایک فوج سپرد ک گی اور میں تم ی جانب رواند ہو گیا جب میں نادیہ طرز (طرزایک محلّه تهاجمال کپرُ اسایا جاتا تها) تک پینچا اور و ہاں مقیم ہو گیا ایک د ن شکار کے لئے گیا۔ آقا قابل شکار کا پیچا کر رہا تھا تو میرے سامنے ایک نسر ماکل ہو گئی لیکن میں اُس کے المحد از گیا۔ اور شکار کے تعاقب میں آگے ہی ہرا ستا ر ہا۔اور جتنا میں آ کے یو حتا گیا سروسیع و عریض ہوتی جاتی تھی اس دور ان مجھے ا یک سوار نظر آئے جو سرخ گھوڑے رہوا ادر سریر سبز عمامہ اس اندازے مدھا ہوا تھا کہ صرف ان کی آٹکھیں نظر آر ہی تھیں اور یاؤں میں سرخ رنگ کے موزے تھے اُس نے آتے ہی پکارا۔اے حسین۔ لیحیٰ نیاتو اُس نے مجھے اے امیر کہ کر یکارا۔اور نہ میری کنیت۔ اے ابو عبداللہ کما۔ بلحہ مجتمراً میرانام لے کر پکارا۔ میں نے وریا فت کیا کہ کیا کام ہے۔أس سوار نے کما۔ نا چید کا فداق کیوں اڑاتے ہواور میرے اصحاب کو اپنے مال کا خس کیوں نہیں دیے۔ حسین کہتے ہیں کہ اگر چہ میں ایک دلیر اور جرات مند ھخص تھا نکر اس سوار کی ہیت مجھ پر طاری ہو گئی اور میرے جہم میں رعشہ ساپیدا ہو گیا۔ تاہم میں نے ہمت ہے کام لیا اور عرض کیا۔اے میرے آٹا۔آپ جو تھم فرمائیں اس کی تعمیل کروں گا۔ انھوں نے فرمایا۔ احصا تمہار اجہاں جانے کاار او ہ بے جاؤاور وہاں ہے جو کچھ مھی تہیں بر کیف حاصل ہو جائے اس میں سے متحقین کا حصہ خس ادا

کرویتا۔ میں نے عرض کیا۔ ہمرو چیتم۔ پھر فرمایا کہ اچھا جاؤ۔ اللہ حمیس نیک ہدایت دے۔ یہ کمہ کرآپ نے اپنے گھوڑے کی نگام موڑی اور واپس پلے گئے۔

میں نے اپنے وائیں ہائیں مڑ مڑ کر بہت ویکھا تمر معلوم نہیں کہاں چلے گئے اور اب تو مجھ پر ان کار عب اور چھا گیا اور وہیں ہے ہیں اپنے کشکر کی طر ف واپس آگیا پھریہ واقعہ میرے حافظہ ہے بکسر محو ہو گیا۔ جب میں قم پہنیا تو میرے ذہن میں میہ بات اٹھری کہ مجھے اس قوم سے جنگ کرنا پڑے گی گر میرے پینچتے ہی اہل تم میرنے یاس جمع ہو کرآئے اور بولے اب تک جو حاکم بھی مال آیا ہم اس سے مر پیار پر عکر اب آپ آئے ہیں تو ہم آپ سے جنگ کا کوئی اراوہ نہیں رکھتے ۔آپ شر میں آشریف لے چلیں اور وہاں کا انتظام و انصرام سنبحاليں ۔ چنانچه میں ایک عرصه ور از تک وہاں رہا۔ اور تو قع سے زیاد و مال کمایا۔ ممر لفکر کے سر داروں نے سلطان کے میری چغلی لگادی اور حمد کی اک میں جلنے گے کہ یہ ایک عرصہ سے یمال رہ کر مال کار ہاہے۔ لہذا مجھ معزول کر دیا گیااور واپس بغد اد آگیا پہلے سلطان کے پاس حام کری دی اسے سلام کیا چر اینے گر آیا۔ لوگ میری ملاقات کو آئے اُن میں جناب محمد بن عثان العمرى (آپ امام زمانہ کے نواب اربعہ سے تھے) کھی تشریف لائے اور میرے تکیے پر ٹیک لگا کر مبٹھ گئے مجھے مڑا غصہ آیا لوگ آئے جاتے رہے اور میر اغصہ یر هتا بی جاتا تھا۔ جب سب لوگ رخصت ہو گئے تو میرے قریب آئے اور اولے۔ مجھے تم سے تنائی میں کھ کمنا ہے میں نے کما۔ فرمائے۔ کیا کمنا چاہتے ہیں۔انھوں نے کماکہ ایک مرتبہ نہریر ایک نرخ گھوڑ۔ والے سے تمہاری

الملاقات ہوئی تھی اُن کا پیغام ہے کہ میں نے اپنا وعدہ پوراکر دیا۔اب تم بھی اپنا وعدہ پوراکرو۔ یہ سنتے بی جھے اپناوہ واقعہ یاد آگیااور میں کانپ اٹھا۔اور عرض کیا۔ہمر و چھم ۔ یہ کہ کر میں وہاں سے اٹھا اُن کاہا تھ پکڑااور خزانے کے پاس آیا اور وہ ہر مال کا پانچواں حصہ نکالنے گئے یماں تک کہ ان اموال کا بھی خمس نکالا جن کو میں بھول چکا تھا اس کے بعد وہ واپس چلے گئے (اس واقعہ کے بعد میرنے نزدیک حضرت صاحب الزمان علیہ السلام کاوجود محفق ہو گیا) پھر جھے اس سلسلے میں کوئی شک میں ہا۔

راوی کامیان ہے کے جب سے میں نے اپنے بچاسے میہ واقعہ سُنامیر انھی شک رو ہو گیا۔

(الخرائجوالجرائح، حار الافوار علد ١١، صفحه ٩٤٥ ٥٢ ٥١ ١ دو)

امام زمانہ کا محمد بن ایر اہیم کے نام خط

کتاب "الخرائج والجرائح" بین محمد بن ایر اہیم بن میز پارسے روایت ہے اُن کامیان کہ بین حضر ت ابو محمد المام حسن عسری علیہ السلام کی شمادت کے وقت شکوک بین جتلا ہو گیا تھابات سے تھی کہ میرے والد کے پاس بہت سامال المام جمع ہو گیا تھا تو انھوں نے سب مال اٹھایا اور ایک کشتی پر سوار ہوئے۔ بین بھی اُن کے ہمراہ تھارا سے بین اٹھیں سخت ہار آیا تو انھوں نے مجھ سے فرمایا کہ متعلق بھی واپس لے چلو۔ یہ موت کی آمد کی نشانی ہے۔ اور دیکھو۔ اس مال کے متعلق التہ سے ورتے رہنا۔

پر مجھ سے مزید وصیت کی اور فوت ہو گئے۔ میں نے اپنے دل میں کما

کہ میرے والد کی غیر صحیح بات کی وصیت نہیں کر سکتے تھے۔ لہذااس مال کو میں عراق لے جاتا ہوں۔ محرکسی کو متاؤں گا نہیں۔ اگر کو ئی علامت المامت کسی کے متعلق ظاہر ہوئی تواس کے قوالے کرووں گا۔ ورنہ انفاق کر دوں گا۔

چنانچہ میں نے لیہ وریا ایک مکان کرائے پر لیا اور چندون اس میں قیام کیا ای اثناء میں ایک قاصد میرے پاس ایک خط لے کر آیا اس میں لکھا تھا کہ :۔

اے محد! تسارے پاس فلال فلال چزیں ہیں۔

یمال تک کہ مال امام ہے متعلق جتنی چیزیں تھیں اُن سب کو گنوادیا۔ یہ پڑھ کر میں نے وہ سار امال قاصد کے حوالے کر دیا پھر اس گھر میں چند دن اور قیام کیا گر امام کی طرف ہے کوئی توجہ نہ پائی تو جمعے مزاد کھ ہوا۔ استے میں میرے نام ایک اور خط آیا جس میں تم بی تھا کہ :۔

میں نے تہمیں تمہارے والد کی مجلہ مقرر کیا۔ تم اللہ کا شکر اوا کرو۔ (حار الا نوار جلد اا ، اردو ترجمہ ، صفحہ ۸۸۸)

امام زمانہ کی اولا دخرینہ کے لئے دعا

عظر طبری نے اپنی کتاب میں ابو الفضل شیبانی و کلیدنی کے

عوالے سے تحریر کیا ہے کہ قاسم بن علاء کا میان ہے کہ میں نے حضرت
صاحب الزمان علیہ السلام کی خدمت میں تین عریضے تحریر کئے اور ان میں اپنی
حاجتیں میان کیں اور یہ بھی کھا 'کہ میں کبیر السن ہو گیا ہوں گر کوئی اولاد نہیں
رکھتا۔ آپ نے تمام حاجوں کے متعلق تو جواب دیا گر اولاد کے بارے میں کوئی

جواب نہیں دیا۔ پھر میں نے چوتھی مرتبہ عریضہ لکھااور اس میں در خواست کی کہ آپ د عافر مائمیں اللہ جھے فرزند عطاکرے۔

آپ نے اس کے جواب میں تحریر فرمایا:

یاللہ! تو اس محض کو اولا و نرینہ عنایت فرما جس ہے اس کی آتکہیں محنثری ہوں اور وہ حمل جو قرار پایا ہے اس کو فرزند کا حمل قرار دے۔

قاسم بن علاء کامیان ہے کہ جمعے معلوم نہ تھا کہ میری کنیز حاملہ ہے جب میں نے اس سے وریافت کیا تو اس نے اقرار حمل کیااس کے بعد اس کنیز سے فرزندگی ولاوت ہوگی اس حدیث کو حمیری نے بھی نقل کیا ہے۔

(حارا لا نوار جلد ۱۱، ترجمہ اردوصفحہ ۳۱۰)

خس کو ناحق کھائے والا ملعون ہے

شمس کے متعلق ہمارے اللی ٹروت حضر الت مری سستی کرتے ہیں اور الل کو اللہ کی عفاری اور الل بیت کی رحی پر کھر وسہ ب کے وہ یہ وز قیامت عشوالیں کے حالا فکد اُن کو خبر شیں کہ یہ حقوق الناس میں سے ہاوریہ کھی خبر شیں کہ امام علیہ السلام نے اس معاملہ میں سمل انگاری کرنے والے کو کن الفاظ میں یاد کیا ہے۔

: 5.7

اگر کسی کے پاس ہمارا مال (سہم امام) ہو اور وہ اس میں اس طرح تصرف کرے کہ جس طرح اپنے مال میں تصرف کر تاہے پس جو بھی ایسا کرے وہ ملعون ہے اور ہم مروز قیامت اُس کے دشمن ہول گے۔ کیو مَلمہ نی اکرم م نے ارشاد فرمایا ہے۔ جو محض میری عترت سے وہ طال سمجھے جو اللہ نے اس کیلئے حرام قرار دیا ہے وہ میری زبان سے ملعون ہے اور ہر نی مخبات الدعوات کی زبان سے ملعون ہے دور ہی ان بی ظالموں میں سے زبان سے ملعون ہے۔ لہذا جو بھی ہم پر ظلم کرے وہ بھی ان بی ظالموں میں سے محسوب ہوگا جضوں نے ہم اہل بیدت پر ظلم کیا اور اس پر لعنت خدا ہوگ کیو نکہ اس نے قرآن میں ظالموں پر لعنت فرمائی ہے۔

خس کی جائیداد کے بارے میں

اور جو تو تے اس جائیداو کے متعلق سوال کیا ہے جو (ازباب خمس) ہم سے متعلق ہے کہ کیا اس پر تھارت مائی جاسکتی ہے اور اس کا فراج وے کر اور مخارج اداکر کے جو پھھ رچ رہے وہ ہم کو کھے اویا جائے۔

تواس کاجواب پیہے :۔

کہ کی کے لئے جائز نہیں کہ دہ دور سے کے مال میں اس کے بدون اجازت تھر ف کرے جب یہ عام لوگوں کا قانون کے تو ہمارے مال میں یہ کیو فکہ جائز ہو سکتا ہے لیس جس نے تھی ہماری اجازت کے بغیر ایباکیا تواس نے فعل حرام کار تکاب کیا۔

خمس خور پیٹ میں آگ تھر تاہے

ترجمہ:۔جس نے کہی ہمارے اموال (خمس وغیرہ) میں سے پاُو تھی کھایا اس نے اپنے پیٹ میں آگ کو کھر ااور عنقریب وہ جنم میں جائے گا۔ محس خور پر تمام فر شنوں اور لوگوں کی لعنت ابوالحن اسعدی میان کرتے ہیں کہ محمد بن عثان عمری کئے باس حضرت صاحب الزمان علیہ السلام کی حسب ذیل تو قیع برآمد ہوئی۔ ترجمہ :۔ اللہ اور تمام فرشتوں اور انسانوں کی اس محض پر لعنت جو

سر جمہ :۔ القد اور عمام فر سنوں اور السالوں فی اس ہمارے اموال میں سے ایک در ہم کو بھی طال سمجھ۔

اس دوایت کے رادی میان کرتے ہیں کہ اس توقیع مبارک کو دیکھنے کے بعد میرے دل میں یہ خیال گذرا کہ یہ عماب اس مخص کے لئے ہے جونا حیہ مقد سہ کے مال کو اپنے لئے حلال سمجے دو شخص اس میں داخل نہیں ہے جواپنے کو غلطی پر جانے ہوئے اس میں نقر ف کر سے اگر کی امر ہے تو تعر اس معاملہ میں کیا خصوصیت ہے۔

ہر حرام کو حلال سجھنے والے کے لئے سمی پاداش وغناب ہے۔ رادی کہتا ہے کہ عندا:۔اس کے بعد جوں ہی میری نظر و باز ہ توقع کے مدوی قدم میں ندہ کیا کہ جدنہ میاں گریوں اور اس سخت میں اس

مبارک پر پڑی تو میں نے دیکھا کہ حروف بدل گئے ہیں اور اب یہ آنئ عبارت مرقوم تھی :۔۔

ترجمہ:۔ اللہ اور تمام فر شنوں اور تمام لوگوں کی لعنت اُس پر جو ہمارے مال میں سے ایک ورہم کھالے۔

مومنین کرام: ۔ ند کورہ الا تو قبیعیات کے ملاحظہ کرنے ہے معلوم ہوا ہوگا کہ سادات کا حق دبانا خصوصاً حضرت امام زمانہ ملیہ السلام کا حق واجب (جس کو سہم امام) کہتے ہیں اوانہ کر ناکتنا مواجر م ہے (گوہر لگانہ، صفحہ ۲۲۲۳)

دعائے امام زمانہ "اور شخ صدوق ً

کتاب "مدی موعود" صفی نمبر ۱۵۳ سے نقل کیا جاتا ہے۔ شخ صدوق ی نے "اکمال الدین" بی مجمع علی اسود سے نقل کیا ہے (طبع چارد ہم) محمد من عثال کی صلت کے بعد علی من حبین من موکی من بابو یہ نے بھے سے چاہا کہ ابو القاسم حبین ابن روح ہے ساتد عاکروں اور دہ حضر سے صاحب الزبان علیہ السلام سے استد عاکریں کہ وہ میرے لئے دعاکریں تاکہ خدا بھے بینا عطا کرے۔ حبین ابن روح نے جناب صاحب الزبان علیہ السلام کی خد مت اقد س میں عرض کر دیا اور تین دن بعد بھے اطلاع دی کہ حضر سے امام زبان علیہ السلام نے علی من بابویہ کے لئے دعا فرمائی ہے اور عشر سے ایک ایساباید کت بینا جس کے وجود سے خد الوگوں کو نفع پنچائے گا اُسے عطاکر کے گا اور اس کے بعد اور

محمد بن علی اسود کہتاہے کہ میں نے الی قاسم سے خود اپنے بادے میں استدعا کی کہ وہ دعا کریں کہ خدا جھے بینا عطا کرے۔ میری خواہش کو انھوں نے قبول نہ کیااور کما کہ یہ خواہش پوری نہ ہوگی۔ راوی کہتاہے کہ علی بن بادیہ کے بال أس سال محمد نام كالؤكا پيدا ہوااور اس كے بعد چند ہے اور پيدا ہوئے اور ميرے بال كو كی چہ پيدانہ ہوا۔

تُنْ صدوق عليہ الرحمہ (دبی عظیم مخص ہیں جو حضرت امام زمانہ علیہ السلام کی دعااور اُن کی خدا ہے در خواست کے نتیج میں پیدا ہوئے) کہتے ہیں کہ محمد ابن علی اسود جب بھی جھے دیکھتے تھے کہ میں شخ محمد بن حسن بن احمد بن ولید کی مخطل میں کتابی اٹھائے جارہا ہوں اور علم پر صبدی کتابوں کے یاو کرنے میں رغبت رکھتا ہوں تو وہ جھ ہے کماکرتے تھے کہ علم کے سلسلے میں تیمری پیدر غبت نتیجب انگیز نہیں ہے اس لئے کہ تو حضرت امام زمانہ علیہ السلام کی دعائے نتیج میں پیدا ہواہے۔

ای مفہوم کی تقصیل این نوح کی روایت کے مطابق بیخ طوی کی کتاب ''فیبت'' کے صفحہ (۲۳۷) پراس طرح مر قوم ہے کہ :۔

شخ صدوق ان کے بھائی اور محم ن نوح نے کہا کہ جس وقت ابو عبداللہ حیون ین محم این سور وقتی سفر رخ کے واپس آئے تھے علی این حیون ین بوسف زرگر اور محم این احم ین محم صبر فی جو ان و لاکل کے نام سے مصور تھے اس کے علاوہ اور لوگوں نے جو علائے قم کے بزرگ علائے میں سے تھے انھول نے روایت کی ہے۔ کہ علی من حیون بن موسی بن بابو یہ نے اپنی چھا آاو بھن سے جو محمد این موکی بن بابو یہ کی بدیشی تھیں شاد کی کی۔لیکن اُس کے اجمن سے ان کا کوئی چہ پیدانہ ہوا۔ پس انھوں نے ایک خط ابو القاسم جناب حیون این روئے کے بام لکھا اس میں تحریر تھاکہ میں صاحب الزمان علیہ السلام سے ایک استد عار کھتا ہوں کہ وہ میر سے بار سے میں و عاکریں کہ خداو ند تعالیٰ جھے ایک فقیہ عنایت فرمائے۔

اس کے جواب میں تحریر آئی اس میں لکھا تھا کہ تو عنقریب ایک دیلی

کنیز سے شاوی کرے گا جس کے لطن سے تیر سے ہاں دو نقید میے پیدا ہوں گے اور ان نوح نے بھے سے کہا کہ علی بن اور ان نوح نے بھی کہا ہے کہ الی عبداللہ بن سورہ نے جھے سے کہا کہ علی بن بابویہ کے تین میں سے محمد (شیخ صد دی اُ) اور حسین دو نقیہ سے اور حفظ حدیث میں ماہر شیے وہ حدیثیں جو انھیں یاد تھیں وہ تم کے علاء میں سے کی کو بھی از بر نہ تھیں اُن کا ایک تیمر ابھائی حسن تھا یہ عباد ت اور زہد میں مصروف رہتے تھے۔

حاجی پی غیاس فتی کی '' نوا کد الرضویہ '' کے صغیہ ۲۸۱ پراس طرح مر قوم ہے اور '' نفلاصہ ''نامی کتاب بیس بھی تحریر ہے کہ علی بن بابویہ اپنے عمد بیس شخ اہال قم تھے اور اُن میں نقیہ اور ثقہ شار ہوئے تھے وہ عراق آئے اور جناب حسین ابن روٹ جو حضرت اہام آئیانہ علیہ السلام کے وکیل تھے اُن کے پاس پہنچ اور اُن سے بعض و بنی مسائل دریا وقت کیے واپس بطے جانے کے بعد انھوں نے اور اُن کے بحکم اس خط میں انھوں نے ایک خط کھے کر علی ابن جعفر اسود کو دیا اور اُن کو بھیجا اس خط میں انھوں نے استدعا کی تھی وہ استدعا کی تھی وہ استدعا کی تھی وہ استدعا کی تھی وہ اللہ می خد مت اقد س میں پہنچادیں۔

جب وہ رقعہ حضرت امام امانہ علیہ السلام کی نظر سے گذرا تو انھوں بے جواب میں تحریر کیا :۔

قد دعونا الله لك بذالك و ستر زق ولدين دكرين خيرين آن كود و مين ديرين خيرين آن كود و مين دي _ الا آن كود و مين دي _ الا جعفر _ اور او عبد الله _ الا جعفر _ منقول ہے كه ميں حضرت صاحب الامر عليه السلام كى وعائے تتيج ميں پيدا ہوا ہوں اور وہ اس پر فخر كياكرتے تتھ عليه السلام كى وعائے تتيج ميں پيدا ہوا ہوں اور وہ اس پر فخر كياكرتے تتھ (نائين امام صفحه حالاتا ١١٩ ، فوائد الرضور، ممدى موعود)

Contact: jabir.abbas@yahoo.com

شیخ صدوق کاامام زمانہ کے تھم پر کتاب لکھنا

شیخ صدوق کتاب اکمال الدین واتمام المنعمه میں تحریر فرماتے ہیں۔
کہ میں نے خواب میں دیکھا کہ میں مجد میں مشرف بزیارت ہوا ہوں اور احرام باندھ کر خانہ کعبہ کا طواف کر رہا ہوں اور طواف کے دور ان میری نظر حضرت امام میدی علیہ السلام کے نور انی چر وَاقد س پر پڑی۔ امام نے بجے ارشاد فر مایا کہ اے شخ ! آپ میری اور میری غیبت کے بارے میں کیوں ایس کتاب نہیں لکھے جس سے لوگوں کے ایمان کو نور حقیقت اور دلوں کو تقویت بنچے۔ میں نے کہ عن مول ! میں نے آپ کے بارے میں بہت سی کتابی تکھیں ہیں۔ امام نے فرمایا : جھے معلوم ہے کہ آپ نے میرے بارے میں بہت کی کتابی تکھیں ہیں۔ امام نے فرمایا : جھے معلوم ہے کہ آپ نے میرے بارے میں بہت کی کتابی تکھیں ہیں۔ امام نے ایک ایس کتابی تکاب تکھیں جس میں سابقہ المبیاری غیبت کوئی نیاست بھی ہو تا کہ لوگ اس امر سے آگاہ ہو جا کیں کہ میری غیبت کوئی نیاست نہیں ہے باتھ یہ اس امر سے آگاہ ہو جا کیں کہ میری غیبت کوئی نیاست نہیں ہے باتھ یہ اس امر سے آگاہ ہو جا کیں کہ میری غیبت کوئی نیاست نہیں ہے باتھ یہ اس امر سے آگاہ ہو جا کیں کہ میری غیبت کوئی نیاست نہیں ہے باتھ یہ اس امر سے آگاہ ہو جا کیں کہ میری غیبت کوئی نیاست نہیں ہے باتھ یہ اس امر سے آگاہ ہو جا کیں کہ میری غیبت کوئی نیاست نہیں ہو باکھ یہ اس امر سے آگاہ ہو جا کیں آتار ہتا ہے۔

حضرت امام زمانہ علیہ السلام کے فرمان کے مطابق عالم جلیل القدر شخ صدوق علیہ رحمۃ نے کتاب اکمال الدین وا تمام المنعمة تحریر کی اور اس میں حضرت آدم علیہ السلام سے لے کر ختمی مر تبت حضرت محمد تک تمام انبیاء کی غیبتوں کا تذکر وفر مایا ہے اور اس امر کو میان کیا ہے کہ ہر نبی ایک عرصہ تک اپنی قوم سے غائب رہے۔

صحيفه كامله اورامام زمانه عليه السلام

علامہ محمد باقر مجلسی این ملا محمد تقی مجلسیؓ نے حار الانوار میں تحریر فرمایا ہے:۔اور وار السلام ہے اس خواب کو ''النجم النا قب'' میں ترجمہ کیا گیا ہے۔

علامہ محمہ تقی مجلسی علیہ رحمہ فرماتے ہیں کہ میں نے در میان مید اری
و خواب کے دیکھا کہ حضرت صاحب الزمان علیہ السلام سمجد جامع قدیم داقع
اصنمان میں قریب دروازہ طابی کے ساتھ کھڑے ہیں۔ بعد دست ہوی میں
نے سائل متعلقہ نمازشب وغیرہ کی تقیج کی اور حضرت امام زمانہ علیہ السلام
ہے ایک کتاب دعاکی استدعاک۔

فرمایا :۔ که ملاحمر تاج کو میں نے کیا ہے عاوے وی ہے۔

چنانچہ میں اُس خواب میں محلہ وار تیج گیا اور تاج ہے وہ کتاب حاصل کر کے واپس ہورہا تھا کہ خواب سے میدار ہوا۔ میرے ہا تھ میں وہ کتاب نہ تھی۔ میچ کو علامہ بھائی کے پاس جاکر تعبیر لی۔ پھر اس محلہ میں گیا جمال خواب میں گیا تھاوہاں سکا تاج سے ملا قات ہو گی اُن سے میں نے مدعامیان کیا توانہوں نے ایک وقتی کتاب لاکر وی وہ کتاب صحیفہ کا ملا تھی۔ میں اس کتاب کو لے کر شخ بھائی کی خد مت میں آتیا نھوں نے اس کتاب کا اپنے نہذ سے نقابل کیا جو ان کے جداعلی نے شہید خاتی کے نہذ سے نقابل کیا جو ان کے جداعلی نے شہید خاتی کے نہذ سے اس کا مقابلہ ایک واسطہ ان عمید الرؤسا این سکون سے اس کا مقابلہ ایک واسطہ ان اور یس کے نیخ سے کیا تھا جو نیخہ جھ کو حضر سے صاحب الزبان علیہ السلام کی اور یس کے نیخ سے کیا تھا جو نیخہ جھ کو حضر سے صاحب الزبان علیہ السلام کی

ہدایت سے ملا تھاوہ خط شہید سے تھااور نمایت موافقت رکھنا تھاان ادر ایس نے نسخہ سے یہاں تک کہ اس کے حواثی تھی مطابق سے اس کے بعد بہت سے لوگوں نے میرے نسخہ سے مقابلہ کیا چروہ جستی بلاد میں پہیل گیا۔

(مقاح الشفاعة ، گو ہریگانہ ، صفحہ ۲۲)

ابو الحسن خصر محمد کوشفا کے سلسلے میں تو قیع مبارک
احمد بن ابوروں سے روایت ہے اُن کامیان ہے کہ میں ابوالحن خصر بن
محمد کی پڑھ رقم لے کر بخد اور والنہ ہوا اور حکم یہ ہوا تھا کہ یہ رقم ابو جغر محمد بن
عثان عمر بی کے حوالے کر دوں اور پی کہ میرے لئے دیا کی در خواست کرو میں
ممار ہوں اور یہ تھی یو چھا کہ کیا پشینہ پہنتا جا تڑے ؟۔

چنانچہ جب میں بغداد پہنچ کر عمری کی خدمت میں حاضر ہوا تو انھوں نے وہ رقم لینے ہے انکار کیااور کمایی رقم الا جعفر محمد من احمد کے پاس لے جاؤان کے حوالے کر دو میں نے اُن سے کہ دیا ہے اور تمہارے سوالات کے جو ابات آگئے ہیں تم کو وہاں ہے مل جا کیں گے لہذا میں ابو جعفر کے پاس بہنچااور وہ رقم اُن کے پاس بہنچائی۔ انھوں نے ایک رقعہ نکالا جس پریہ تحریر تھا:۔ مہم اللہ الرحمٰن الرحمے۔

ترجمہ:۔تم نے آپنے مرض سے شفا کے لئے در نواست کی ہے تواللہ نے تنہیں صحت وی اور تنہار امرض دور ہو گیا اور جو تم اپنے اندر حرار (خار) پاتے تنے وہ بھی دور ہو گئی تم اجھے ہو گئے تنہار ہے جسم کو صحت ملی۔ اور تم نے پوچھا ہے کہ کیا پشینہ وسمور و سنجاب ولومڑی کی کھال اور نیوٹ کی کھال اور

حواصل میں نماز جائز ہے۔

توسنو۔ سمور اور لومڑی کی کھال میں تمہارے لئے اور وو سروں کے
لئے نماز حرام ہے اور وہ جانور جن کا گوشت کھانا حلال ہے اُن کی کھال یابال
تمہارے لئے پہننا جائز ہے بھر طیکہ اس میں کوئی اور چیز نہ ملی ہو اور حواصل میں
تمہارے لئے نماز جائز ہے۔ گور ٹروگو سفند بھر طیکہ وہ آر مینیہ (جرمنی) میں ذح
تہ ہوا ہوا اس لئے وہاں نصار کی صلیب پر ذح کرتے ہیں اگر تمہارے یہ اور و پئی
یاوہ کہ جس پہمیں و ثوق ہوا سے ذرح کیا ہو تو اس کا پہننا تمہارے لئے جائز

(الخرائجوالجرائح، جارالانوار جلد١٢ ، صفحه ٥٠٨ تا٨٠٨،ار دو)

جعفرین حمران کے لئے تو قیع مبارک

حسین ن اسائیل کندی کامیان ہے کہ جعفر بن حمد ان نے حفر سہ امام ذمانہ علیہ السائم کو عربضہ لکھ کریہ مسکلہ دریافت کیا کہ علی نے ایک کنیز کو اپنے طال کیا تمر اس کنیز سے میہ شرطی کہ اُس کے کوئی لڑکا پیدانہ ہوگا اس کو طال کیا تمر اس کنیز نے کہا جھے تو حمل قرار پا گیا ہے۔ میں نے کمایہ کیے ۔ جھے تو یاد نہیں کہ میں نے جھ سے اولاد چاہی ہو غرض اس کے بعد میں پہرہ و نول کے لئے باہر چلا گیا جب واپس آیا تو وہ کنیز گود میں ایک فرزند کو میں بہر ہو گئا ہوں ایک فرزند کو فی ایک فرزند کو فی ایک فرزند کو فی ایک فرزند کو فی اس کے باہر چلا گیا جب واپس آیا تو وہ کنیز گود میں ایک فرزند کو فی ایک فرزند کو فی اس کے باہر چلا گیا جب واپس آیا تو اس کے لئے میں نے وصیت کردی کہ وقف کر چکا تھا۔ جب وہ فرزند کیکرائی تو اس کے لئے میں نے وصیت کردی کہ اگر میں مر جاؤں تو جب تک ہے چھوٹا ہے اس کے اخرا جات پورے کئے جا کمی

لیکن جب برا ہو جائے تو ہماری جائیداد سے اس کو بکمشت دوسو دینار دیئے جائیں اور اس رقم کے اداکر وینے کے بعد اس کااس وقف سے کوئی مطلب نہیں۔

اب دریافت طلب مئلہ رہے کہ اس فرزند کے لئے جو تھم ہوا اُس پر عمل کیا جائے ؟۔

جواب آیا: رترجمه: ر

وہ فخص جمل نے کنیز کواس شرط پر اپنے لیے طال کیا کہ اُس کے اولاد نہ ہو تو پاک ہے وہ ذاہت کہ جس کی قدرت میں اس کا کوئی شریک نمیں ۔ یہ شرط تو کنیز سے نہ ہو تی بلتحہ اللہ تعالیٰ سے ہو گئی۔ اب رہ گیااس فرزند کو دو سو دینار دیتا اور وقف سے خارج کر دیتا تو جائداد تواس کی ہے وہ جو چاہے کرے۔ جائداد تواس کی ہے وہ جو چاہے کرے۔

(حارالاتوار جلد ١٢، صفحه ١٨٧، ١٨٥ اردد)

این ہلال ملعون کے مبارے میں تو قیع مبارک جب این ہلال ملعون کی موت کی خبر امام کی طرف سے ظاہر ہوئی تو شخ (حسین بن روح) میرے پاس آئے اور یو لے وہ صندوق جو تسارے پاس ہے نکالو۔ میں نے نکالا۔ تواس میں ایک رقعہ تھا جس میں تح بر تھا۔ تم نے جو این ہلال (ملعون) کا قد کرہ کیا پس اللہ نے اس کی عمر مختر کر دی۔

(كمال الدين جلد دوم، صفحه ٣٢٣)

وقت خروج کے بارے میں امام زمانہ کی تحریر

میان کیا جھے سے محمد بن امر ہیم بن اسحاق طالقائی نے انہوں نے کما کہ میان کیا جھے سے ابو علی محمد بن ہماں سے محمد بن عثمان عمر بی قد س اللہ روحہ نے انہوں نے کہا کہ میر انے انہوں نے کما کہ آپ کا فرمان ظاہر ہوا کہ جس نے لوگوں کے جُمع میں میر انام کیا اس پر اللہ کی لعنت ہے ابو علی محمد بن ہمام کہتے ہیں کہ میں نے وقت فروج کے متعلق سوال بھیا توجواب میں آپ نے تحریر فرمایا:۔

شک کرنے والے جموٹے ہیں۔

(كمال الدين علد دوم صفحه ۸۵۸)

محمد من ایم اہیم من میز بارکی غلط فنمی پر تو قیع مبارک
محمد من ایم اہیم من میز بارکی غلط فنمی پر تو قیع مبارک
محمد من ایم اہیم من میز بار نے بیان کیا کہ میں حضر ب امام علیہ السلام کی
علیہ السلام کے بعد شک اور جیرانی میں عراق پہنچا پس میر کے امام امام علیہ السلام کی
توقیع مبارک آئی :۔میز بارے کمو کہ تم نے جو با تیں اپنے موال کے بارے میں
کہیں وہ ہم نے من لیس :۔ تواس سے کمو کیا تم نے خدا کا یہ ارشاد نہیں شا۔
ترجمہ :۔اے ایمان لانے دالو تھم مانو اللہ کا اور تھم مانو رسول کا اور

ریسہ ۱۱۔ بیان لاتے دور کو میں کا دور ہورہ صاحب امر کاجوتم **میں** ہے ہو (سورۃ نساآیت ۹۹)

کیاامر اُس محض کے علاوہ بھی کی کے لئے ہے جو قیامت تک ہے اور تمہاری نظروں سے بوشیدہ ہے اللہ نے تمہیں عقل دی ہے تاکہ غور کرواور تمہارے لئے نشانیاں مقرر کی جیں تاکہ حضرت آوٹم سے لے کر حضر ہام حسن عسكرى عليه السلام تحك تم الن ك ذريعه سے مدايت پاؤ پر ايك نشانى غائب ، و تا ہے۔ حضر سالام و تا ہے۔ حضر سالام حسن عسكرى عليه السلام كے انقال ك بعد كيا تمهدا خيال ہے كه الله تعالى في السياد ميں دكھا؟۔ بدول ك در ميان كوئى وسيله خيس دكھا؟۔

أبيا نبيل ببلحد قيامت تك حكم خدا ظاهر موتار ب گااوروه بدايت کرتے رہیں گے اے محمر کن اہر ہیم ۔اپنے ول میں شک داخل نہ کرو کیونکہ خدائے عزو جل بھی زمین کو اپنی ججت ہے خالی شیں چھوڑ تا۔ کیا تمہارے والد نے مرنے ہے پہلے نسیں کہا تھا۔ وفت آگیا ہے۔ کہ کوئی شخص ان ویناروں کو جو میرے پاس ہیں۔ کموٹی پر سکے جب یہ کام انجام یائے میں تاخیر ،و ٹی اور ﷺ نے خود جلد کیافوت ہو جانے کے خوف کاا ظہار کیا تو تیجہ ہے اس نے کہا تھا کہ تم ان دیناروں کو نمو ٹی پر نموراور میں مہیں ایک ہڑا کیسہ 'کال کر دیتا ،ول ادر تمهارے سامنے۔ تین کسے اور کچھ تھیلیاں تھیں جی میں مختلف تعداد میں دینار تھے۔ پھرتم نے ان کو کسوئی پر کسااور ﷺ نے اس پر اپنی آگا، تھی ہے میر اگائی اور تم ہے بھی کہا کہ میری انگشتری کے ساتھ تم بھی مہر لگاؤ کیں 🔍 یں زند دریا تو میں ان کا زیادہ حق وار ہول گااور اگر میں مر گیا تو تم اللہ سے اینے اور میرے مارے میں ڈرنا۔اور مجھ ہے جدائی کے بعد میری خواہش کے مطابق خود کو ڈھال لینا۔اللہ تمہارے اوپر رحم کرے ان دیناروں میں ہے جو میں نے اپنے حساب میں سے تم کو دیئے ہیں زکال لواوروہ دس دینار ہیں۔اور جو تم نے لیا تھا اس کو واپس کو د داس لئے کہ زمانہ جو کچھ گذر چکاہے اس ہے کہیں زیادہ د شوار گزار ہے۔ حسبااللہ و نعم الو کیل۔ محد بن الرہیم کتے ہیں کہ ہیں محکر (سر من رائے) گیا تاکہ امام سے ملاقات کروں اس وقت بھے ایک عورت کی اس نے بھے سے کما کیا تم محمد بن الراہیم ہو ہیں نے کما ہاں۔ وہ بولی اس وقت لوٹ جاؤر رات کوآنا۔ اور وروازہ تمہارے لئے کھلا ہو گا اس میں چلے جانا۔ اور اس کر سے کی طرف آنا۔ جس میں چراغ جل رہا ہو۔ پس میں نے الیابی کیا۔ وروازہ کھلا ہوا تھا میں واغل ہوا ۔ تم میں چراغ جل رہا ہو۔ پس میں نے الیابی کیا۔ وروازہ کھلا ہوا تھا میں واغل ہوا۔ تا ہے ہوئے کر سے کی طرف مراحا تو ایخ کو وہ قبر ول کے در میان واغل ہوا۔ تا ہے ہوئے کر سے کی طرف مراحا تو ایخ کو وہ قبر ول کے در میان واغل ہوا تھا میں روف کے اللہ سے آواز آئی۔ اس محمد اللہ سے ڈرو اپنے امور لینی وکالت کوانجام دو کے ہمام عظیم ہے۔

وکالت کوانجام دو کے ہمام عظیم ہے۔

(کمالی اللہ بن وتمام المنعمه جلد دوم، صفح اللہ ۲۰۲۲)



شماران ہیں ہونے یہ انتظار کے دن زمین اور صے سوتا ہوں میں جگا دینا

می نے رضائے سیوہ پوچھی الم سے برنے للم معر فظ اتم حین

امام زمانہ کی آخری تو قیع مبارک جناب ابوالحن سمری کے پاس حضرت امام زمانہ علیہ السلام کی طرف ہے ایک تو قیع (تحریر) آئی جس کا مضمون مندرجہ ذیل ہے۔۔

-: 2.7

اے علی بن مجمد السمری سنو۔ اللہ تعالیٰ تمہاری و فات پر تمہارے بھا کیوں کو صبر کا عظیم نواب عطافر مائے۔ اس لئے کداب تمہاری موت چھ دن میں واقع ہو جائے گی۔ لہذاتم اپنے تمام کام سمیٹ لو۔ اور آئیندہ اپنی و فات کے بعد کی کو اپنا قائم و مقام مقرر کرنے کی و صبت نہ کر نا۔ کیو نکہ آپ فیبت تامہ واقع ہو چی ہے اور بغی حکم خد اے اب ظہور نہ ہوگا۔ اور وہ بھی ایک طویل عرصے کے بعد۔ جب لوگوں کے دل سخت ہو جا کیں گے اور زمین ظلم وجور سے محم خد ایک میں سے پھے لوگ جمے و کیمنے کا دعوی کر رہے وہ جھوٹا کریں گے لیکن جو شخص خروج سفیانی سے قبل جمے دیکھنے کا دعوی کرے وہ جھوٹا اور مفتری ہے۔

(اور نمیں ہے کوئی طاقت، اور نمیں ہے کوئی قوت سوائے اللہ

يورگ ويرترکي مدو کے۔)

(احتجاج طبری ، فارالانوار جلد ۱۲، ار دوتر جمه ، صفحه ۲۱) حن بن احمد مکتب سے بھی ای کے مثل روایت نقل ہو کی ہے۔ (اکمال الدین)

شاید اس روایت میں نیات و سفارت کے ساتھ مشاہدہ اور رویت مراو ہو درنہ بے شار روائیں الی ہیں جن میں لوگوں نے امام قائم کی زیارت کاشر ف حاصل کیا ہے۔

(حارالانوار جلد ۱۲، ار دوتر جمد، صفحه ۲۲)





امام زمانۂ کے فراق میں گریہ کریں

کتاب اکمال الدین وا تمام المنعمه ، شخ صدوق علیہ الرحمتہ جلد ۲ ، صفحہ ۲ کے غم ناک اور شمنڈ سانس مسفحہ ۲ کے عم ناک اور شمنڈ سانس کھر سے۔ افسر دہ حالت ہوائی کے سانس لینے کا تو ب شیخ کا تواب ر گھتا ہے۔

ای کتاب کے صفحہ ۲ س س پر حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام کا ارشاد ہے کہ خداکی فتم۔ آپ کا امام ایک ذمانہ میں آپ سے غائب ہوگا اور کا ارشاد ہے کہ خداکی فتم۔ آپ کا امام ایک ذمانہ میں آپ سے غائب ہوگا اور کنائش ہوگی یمال تک کہ لوگ کیس کے یا تو وہ مرکبا یا پھر کمی وادی میں چلاگیا شخیق۔ مومنین کی تصویراس پر گریاں ہوں گی۔

مومنین کرام _ پس میں امام زمانہ علیہ السلام کی مظلومیت اور اُن کی رعیت ہے دور رہنے پر عمکین اور افسروہ خاطر رہنا چاہیے _

کتاب محت العقول صفحہ ۲۰۱، پر آمام تھی تابیہ السلام سے منقول ہے کہ '' ہمارا قائم ممدیؓ ہے اُن کے غائب ہونے کے دور ان اُن کا انتظار کر نا واجب ہے اور دہ میری اولاد کے تیسرے ہیں۔

حضرت امیر المو منین علیه السلام کا ارشاد ہے کہ '' تمام عباد توں ے افعنل انتظار فرج امام ممدی علیہ السلام کی آمد کا منتظر رہنا ہے

(خار الانوار جلد ۵۲، صفحه ۱۲۵)

مومنین اگرام: میں عاری ذمہ داری ہے کہ ہم آپ کے ظہور کا انظار کریں۔

امامٌ کا تھم واجب ہے

کتاب اکمال الدین جلد ۲، صفحه ۲۵ ۳ پر حفرت امام تقی کار شاد ہے کہ میر کے بعد میر ابیاعلی علیہ السلام امام ہے اس کا حکم میر احکم ہے اس کی بات میری بات ہے اس کی اطاعت میری اطاعت ہے اس کے بعد اس کا بیناحن علیہ السلام امام ہے اُس کی اطاعت میری اطاعت ہے اُس کی بات اُس کے والد کا حکم ہے اُس کی بات اُس کے والد کی بات ہے۔ اس کی اطاعت ہے اس کے بعد آپ خاموش کی بات ہے۔ اس کی اطاعت اس کی والدگی اطاعت ہے اس کے بعد آپ خاموش ہوگئے۔

راوی کتاہے کہ میں میں اس اللہ "" حسن " کے بعد امام کون ہے؟ کون ہے ؟

حضرت نے بہت زیادہ گریہ فرمانے کے بعد کما۔امام حسن عسری علیہ السلام کے بعد امام آن کے بیعے " قائم" " ' نختار گلیہ السلام کے بعد امام آن کے بیعے " قائم" " ' نختار گلیہ السلام کے بعد ہیں کہ جب یاں رسول اللہ آن کو قائم کیوں کہتے ہیں۔ فرمایا۔اس لئے قائم کہتے ہیں کہ جب اس کاذکر ختم ہو جائے گاآپ کی امامت کے بہت سے قائل اپ عقیدت سے ہمنہ جائیں گے تو اس وقت آپ قائم ہو نگے بینی قیام کریں گے۔دوبارہ آپ کا مام زندہ ہوگا۔خاموثی کے بعد قیام کی وجہ سے قائم کما گیا ہے۔

راوی نے سوال کیا۔اور آپ کو '' منظر ''کیوں کما جاتا ہے۔ فر مایا۔ اس کی وجہ آپ کا غائب ہوتا ہے۔ جو کہ ایک طولانی عرصہ ہوگا۔آپ کے جو مخلصین ہوں گے وہ آپ کا انظار کریں گے شک کرنے والے آپ کا اٹکار کریں گے مشرین آپ کے ذکر کا غذاق اڑائیں گے جو آپ کے ظہور کاوقت تعین کریں گے وہ جھوٹے ہوں گے اور جو جلدی کریں گے وہ ہلاک ہوں گے اور جو آپ کے امر اور معالمے میں سر تشلیم جھکا کیں گے وہ نجات پاکیں گے۔

امام زمانہ کے نام پر مال خرچ کریں

اصول کانی جلد ا، صفحہ ۵۳۵ میں حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام سے روایت ہے کہ اللہ تعالی کے نزدیک امام علیہ السلام کے لئے مال خرج کرنے سے نیادہ محبوب چیز اور کوئی نہیں۔ تحقیق۔ جو مومن اپنال میں سے ایک درہم امام علی السلام پر خرج کرے۔ خداوند ہمات میں احد بہاڑ کے مراکز کا کہ ایک کا کہ لہ دے گا۔

امام زمانهٔ کا صد قه ویس

کتاب مجم الثاقب صفحہ ۴۳۲ میں روایت ہے کہ حضرت امام العصر علیہ السلام کی سلامتی کی نیت سے صدقہ دیاجائے۔ امام زمانڈ کی معرفت حاصل کرنے کی دیاکریں

ا کمال الدین جلد ۲ صفحہ ۳ ۳ ۴، پر حضرت امام جعفر صاوق علیہ السلام سے مروی ہے کہ حضرت امام ذمانہ علیہ السلام کی معرفت کے لئے اللہ تعالیٰ ہے اس طرح دعاما نگنا جاہے۔

'' خداد ندا مجھے اپنی ذات کی معرفت عطاکر کیو نکہ اگر تو مجھے اپنی ذات کی معرفت عطانہ کرے تو میں تیرے نی کی معرفت حاصل نہیں کر سکتا۔ خداوند۔ بجھے اپنے رسول کی معرفت عطافر مادے کیونکہ اگر تو بھے اپنے رسول کی معرفت عطافر مادے کیونکہ اگر تو بھے اپنے رسول کی معرفت عطافہ کرے تو میں تیری صحبت کو نمیں پہچان سکتا۔ اے میرے خدا۔ بجھے اپنی ججت کی معرفت عطافر مادے کیونکہ اگر میں تیری جبت کی معرفت عاصل نہ کروں تو اپنے دین سے کھک جاؤں گا۔

ہر حالت میں نھرت کے لئے تیار رہیں کتاب جم الثا قب صفحہ ۳۲۳ پر تح برہے کہ حضرت امام ممدی علیہ السلام کی صفات کو جانتان جمر حالت میں آپ کی نھرت کرنے پر آمادہ رہنا اور آپ کے فراق میں گریہ کناں ہونا چاہئے۔

یہ و عاما تکی جائے

کتاب اکمال الدین جلد ۲، صفحه ۳۵۳، پر هفرت امام جعفر صادق علیه السلام سے مروی ہے کہ اس د عاکاور در کھناچاہئے۔ یااللہ یار حمٰن یار حیم یامقلب القلوب ثبت قلبی علی دیک ترجمہ: اے اللہ اے رحمٰن اے رحمٰن اے دلول کو پھیر دین والے میرے دل کواسے دین پر ثامت قدم رکھ۔

آپ کے نام کی قربانی کریں کاب جم اللہ قب میں ہے کہ اگر استطاعت رکھتا ہو تو عید قربان کے

وقت خروج کے بارے میں امام زمانہ کی تحریر

میان کیا جھ سے محمد من اور جیم من اسحاق طالقائی نے انہوں نے کما کہ میان کیا جھ سے ابو علی محمد من مام نے ان سے محمد من عثان عمر ی قد س اللہ روحہ نے انہوں نے کما کہ آپ کا فرمان ظاہر ہوا کہ جس نے لوگوں کے جمع جی میر امام لیا اس پر اللہ کی لعنت ہے ابو علی محمد من ہام کہتے ہیں کہ میں نے وقت خروج کے متحلق سوال میجا توجواب میں آپ نے تحریر فرمایا :۔

شک کرنے والے جموٹے ہیں۔

(كمال الدين حلد دوم صفحه ۸ ۵ ۴)

محدین ایر اہیم من میر یار کی غلط فنمی پر تو قیع مبارک محدین ایر اہیم من میر یار کی غلط فنمی پر تو قیع مبارک محدین ایر اہیم من میر یار نے بیان کیا کہ میں حضر بنام اہم علیہ السلام کے بعد شک اور حیرانی میں عراق پنچا پس میرے ایم اہم علیہ السلام کی توقع مبادک آئی :۔ میزیار سے کمو کہ تم نے جو باتیں این موال کے بارے میں کمیں وہ ہم نے سن لیس :۔ تواس سے کموکیا تم نے خداکا یہ ارشاد سیس سا۔

میں وہ ہم نے سن لیس :۔ تواس سے کموکیا تم نے خداکا یہ ارشاد سیس سا۔

ترجمہ :۔ اے ایمان لانے والو تھم مانو اللہ کا اور تھم مانو رسول کا اور

سربھہ :۔اکے ایمان لانے واتو سم ماتو اللہ 8 اور سم ماتو رسوں 8 اور صاحب امر کاجوتم میں ہے ہمو (سور ۃ نساآیت ۹ ۵)

کیاامراُس محف کے علاوہ بھی کی کے لئے ہے جو قیامت تک ہے اور تمہاری نظروں سے بوشیدہ ہے اللہ نے تمہیں عقل دی ہے تاکہ غور کرواور تمہارے لئے نشانیاں مقرر کی ہیں تاکہ حضرت آدم سے لے کر حضر دامام حسن عسكرى عليه السلام تك تم ان ك ذريعه سے بدايت پاؤر بھراكي نشانى غائب ہوگئ تودوسرى ظاہر ہوئى جيسے ايك ستاره دومتاہ تودوسر اظاہر ہوتا ہے۔ «هنرت امام حسن عسكرى عليه السلام كے انقال ك بعد كيا تمهاد اخيال ہے كه الله تعالى ف اپناور بعد كيا تمهاد اخيال ہے كہ الله تعالى ف اپناور بعد كا تحد كيا تمهاد اخيال ہے كہ الله تعالى ف اپناور بعد كيا تمهاد اخيال ہے در ميان كو كي وسيله تمين ركھا؟۔

الیا نہیں ہے بلحد قیامت تک حکم ندا ظاہر ہو تار ہے گااوروہ ہدایت کرتے رہیں گے اے محمہ بن اہر ہیم ۔اپے ول میں شک داخل نہ کرو کیونلہ خدائے عزو جل جمی مین کوانی جمت ہے خالی شیں چھوز تار کیا تمہارے والد نے مرنے ہے پہلے شمیل کیا تھا۔ وقت آئیا ہے۔ کہ کوئی شخص ان ویناروں کو جو میر نے پاس ہیں۔ کموٹی پر کے جب یہ کام انجام یائے میں تاخیر ہو گیاہ رشُخ نے خود جلدی فوت ہو جانے کے خوف کالظمار کیا تو تھے ۔۔ اس نے کہا تھا کہ تم ان دیناروں کو نسو ٹی پر نسو۔اور میں تمہیں ایک پڑا کیسہ 'کال کر دیتا ہوں اور تمہارے سامنے۔ تین کیسے اور کچھ تھیلیاں تھیں جن میں مختلف تعداو میں وینار تھے۔ پیمرتم نے ان کو کسو ٹی ہر کسااور شخ نے اس ہرا تی انگر نھی ہے میر اگائی اور تم ہے بھی کہا کہ میری انگشتری کے ساتھ تم بھی میراگاؤ پس اکٹ زند دربا تو میں ان کا زیادہ حق وار ہوں گا اور اگر میں مرگیا تو تم اللہ سے اینے اور میرے بارے میں ذرنا۔ اور مجھ سے جدانی کے بعد میری خواہش کے مطابق خود کو ڈ ھال لینا۔ اللہ تمہارے او پر رحم کرے ان ویناروں میں ہے جو میں نے اینے حساب میں ہے تم کو دیئے ہیں نکال لواور وہ دس دینار ہیں۔اور جو تم نے لیا تھا اس کووالیں کودواس لئے کہ زمانہ جو پچھ گذر چکا ہے اس سے کمیں زیادہ د شوار گزار ہے۔ حسبااللہ و نعم الو کیل۔ محد تن الد تیم کستے ہیں کہ میں مسکر (سر من رائے) گیا تا کہ امام ہے ملاقات کروں اس وقت مجھے ایک عورت ملی اس نے مجھے کہا کیا تم محمہ تن الد الیم ہو میں نے کہا۔ ہاں۔ وہ بولی اس وقت لوٹ جاؤ۔ رات کوآنا۔ اور دروازہ تمہارے لئے کھلا ہوگا اس میں چلے جانا۔ اور اس کرے کی طرف آنا۔ جس میں چراغ جل رہا ہو۔ پس میں نے ایسا ہی کیا۔ وروازہ کھلا ہوا تھا میں داخل ہوا۔ رہان کو وہ قبرول نے در میان داخل ہوا۔ بتائے ہوئے کمرے کی طرف بردھا توا پنے کو وہ قبرول نے در میان واللہ ہوا۔ بیا ہور ایک آواز آئی۔ اے محمد۔ اللہ سے دروائی امور یعنی وکالت کو انجام دو کہ ہے امر عظیم ہے۔



. (كمال الحدين وتمام المنعمه جلدودم، صفحه ١٢ ٣، ٢٢، ٣)

شمارانیس ہونے برانتظارے دن زمین اور صصے سوتا ہوں میں جگا دینا

یں نے رضائے سیدہ پوچی الم سے براے الم عمر فظ اتم حین

امام زمانہ کی آخری تو قیع مبارک جناب ابوالحن سمری کے پاس حضرت امام زمانہ علیہ السلام کی طرف ہے ایک تو تیع (تحریر)آئی جس کامنہون مندرجہ ذیل ہے۔۔

ر جمہ :₋

اے علی بن مجر السمری سنو۔ اللہ فعالی جہاری و فات پر جہارے ہما کو سنو۔ اللہ فعالی جہاری و فات پر جہارے ہما کو سرکا عظیم نواب عطافر مائے۔ اس لئے کہ الب جہاری موت چھ دن میں واقع ہو جائے گی۔ لہذا تم اپنے تمام کام سمیٹ لو۔ اور آگئی و فات کے بعد کی کو اپنا قائم و مقام مقرر کرنے کی و صیت نہ کر نا۔ کیو نکہ اب غیبت تامہ واقع ہو چی ہے اور بغی حکم خد اکے اب ظہور نہ ہوگا۔ اور وہ بھی ایک طویل عرصے کے بعد۔ جب لوگوں کے دل سخت ہو جا کیں گے اور زمین ظلم وجور سے کھر جائے گی اور آئیدہ میرے شیعوں میں سے پھے لوگ جھے و کیلے کا دعویٰ کر سے وہ جھوٹا کر یں سے لیکے کا دعویٰ کر سے وہ جھوٹا کر یں سے لیکن جو مخص خروج سفیانی سے تبل جمعے د کیلے کا دعویٰ کر سے وہ جھوٹا اور مفتری ہے۔

(اور سیس ہے کوئی طاقت، اور سیس ہے کوئی قوت سوائے اللہ

موقع پر حفرت امام زمانه عليه السلام كى نيامت ميں قرباني كرے۔

آئے کا اصل نام ندلیا جائے

کتاب اکمال الدین جلد ۲، صفحه ۳۵۲، پر تحریب که حضرت امام علیه السلام کاجواصلی نام ہے بیتی رسول الله والا نام۔ احرام کے لئے نہ پکارے بعد جوآپ کے القاب بین أن میں سے کئ لقب کے ذريعه آپ کو پکارے۔ بعد جوآپ کے القاب بین أن میں سے کئ لقب کے ذريعه آپ کو پکارے۔ بعض دوايات میں حضرت ليعن کا تم منتظر، جمت ، مهدی، وغیرہ۔ بعض دوايات میں حضرت امام زمانہ عليه السلام کانام لينے سے سخت منع کيا ہے۔

امام زمانہ کا تام سنتے ہی کھڑے ہو جا کیں کاب نجم الثاقب صفحہ ۲۳۳ کی تحریر ہے کہ جب حضرت امام زمانہ علیہ السلام کا سم مبارک لیا جائے تو احرام کے لئے کھڑا ہو جانا چاہئے خاص کر جب آپ کے القاب میں سے قائم کا لقب بکارا جائے تواستقبال کے لئے کھڑے ہو جائیں یہ سنت آئمہ علیم السلام ہے۔

امام زمانہ کے لئے جنگی آلات مہیا کریں حار الانوار جلد ۹۴ صفیه ۲۹ میں غیبة نعمانی کے حوالے سے حضرت امام جعفر صاوق علیہ السلام کی حدیث میان کی گئی ہے۔ '' حضرت کی حمرا ہی میں وشمنان خدا سے مقابلہ کرنے کے لئے اسلحہ وغیرہ فراہم کرنا ضروری ہے اور ہر مخص حضرت امام زمانہ علیہ السلام کے ظہور کے لئے جنگی الات مبیا کر کے رکھے اگر چہ ایک تیر ہی کیوں نہ ہو امید ہے کہ جس کی بیہ نیت ہو اللہ تعالیٰ اُسے حضرت امام علیہ السلام کے اصحاب سے قرار دے گا۔

مشکلات میں امام زمانۂ کووسلیہ قرار دے

حارالانوار جلد ۹۳ صفحہ ۲۹ اور جلد ۵۲ صفحہ ۱۸۹ میں یہ بھی تحریر ہے کہ مشکلات میں حضرت امام زمانہ کو وسلیہ قرار دے اور آپ کی خد مت میں اپنی حاجات کا عربیت ارسال کرے یا توآئے۔ علیم السلام یا بیغیر کی ضر سے میں ڈالے یا ور بیا، سمندر ، کنویں میں ڈالا جائے اور حضرت خضر علیہ السلام کو وسلیہ قرار دے اس عمل سے بیات و بہن نشین ہو جاتی ہے کہ حضرت امام زمانہ علیہ السلام موجود ہیں وہی ہمارے رہیم ہیں اور اُن کے ذریعے تمام مشکلات علی ہو جاتی ہیں ہمیں ان کی نصر سے کے لئے تیار ہمانیا ہے۔

خداہے سوال کے وقت امام زمانہ کی قتم دی جائے کتاب اکمال الدین میں تحریر ہے کہ خدا تعالیٰ سے سوال کرتے وقت خداو ند عالم کو حضرت امام زمانہ علیہ السلام کے حق کی قتم دی جائے اور حضرت امام زمانہ علیہ السلام ہی کواپنا شفیج اور سفارش کرنے والاسایا جائے۔ کا فرونڈل کے پروپیگنڈے سے متاثر نہ ہول کتاب طار الانوار جلد ۵۲، صفحہ ۱۸۹، پر تحریب کہ دین پر متحکم رہے۔ کا فروں کے پروپیگنڈے اور باطل کی رنگینیوں سے متاثر نہ ہو کیونکہ جب تک سفیانی کا حروج نہ ہوگا اور آسانی آواز نہیں آئے گی اس وقت تک حضرت امام زمانہ علیہ السلام کی نصرت کے لئے آماد ور کھے۔

ثابت قدم دنھیں

اکمال الدین جلدا، صفی ۳ س، پر حضرت امام باقر علیہ السلام سے روایت ہے کہ لوگوں پر ایسا وقت انگا۔ جب اُن کا اہام اُن سے غائب ہوگا۔ خوش نصیب ہیں وہ لوگ جو ہمارے امر پر اس ذہانہ میں عاست قدم رہیں گے۔ کم ترین بواب اور بدلہ جو اللہ اُن کو دے گا۔ وہ بیہ ہوگا کہ خدا کی طرف سے اُن کو آواز آئے گی۔ اے میرے بندو۔ اور اے میری کنیز د ۔ تم میرے سر دار پر ایمان لے آئے ہو اور میری غائب جت کی تم نے تصدیق کی ہے۔ حسیس اجھے اجر اور ثواب کی بھارت ہو میں تہمارے استھے اعمال قبول کروں گا اور نماری اور نم ساؤل گا اور این بندول کی مصیبتوں کو نالوں گا اگر تم نہ کو تے تو بی ان پر ایخان میرا بی بارش یر ساؤل گا اور این بندول کی مصیبتوں کو نالوں گا اگر تم نہ ہوتے تو بی ان پر ایخان بی بارش یر ساؤل گا اور این بندول کی مصیبتوں کو نالوں گا اگر تم نہ ہوتے تو بی ان پر ایناعذاب بھیجا۔

راوی نے سوال کیا ۔کہ اس زمانے میں کونیا نمل بہر ہے؟ فرمایا :کہ اپنی زبان کو قابو میں رکھواور گھر وں میں رہو۔

امام زمانہ کے فضائل میان کریں

مکارم الاخلاق طبری صفحہ ۳۲۲، پر تحریر ہے کہ حضر تدامام معدی علیہ السلام کے فضائل و کمالات میان کئے جائیں کیونکہ آپ اُس دور میں ولی نعمت ہیں اور خدائے تعالیٰ کی تمام ظاہری اور باطنی نعمتوں میں آپ بی واسطہ ہیں ۔ یعنی آپ فیض پہنچانے کاوسیلہ ہیں۔

جمال مبارک کی زیار ہے کا اشتیاق رکھیں

کتاب اکمال الدین جلد ۲۹۱ پر تحریر ہے کہ حضرت امام العصر علیہ السلام کے جھال مبارک کی زیارت کا اشتیاق رکھتا اور اس شوق کا اظہار کرنا چاہئے۔ حضرت امیر المومنین علیہ السلام اپنے سینے کی طرف اشارہ فرما کرسر و آہ تھرتے اور امام دواز دہم ہے ملاقات کرنے کے شوق کا انلمار فرماتے تھے۔

گھر والوں کو جہنم کی آگ ہے جائیں

واله کافی سلیمان بن خالد ہے مروی ہے کہ میں نے حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام ہے عرض کیا کہ میرے رشتہ دار ہیں خاندان والے ہیں اور میری بات کو سنتے ہیں کیا بین اُن کو اس امر کی دعوت دوں کہ وہ حضرت امام مهدی علیہ السلام کی معرفت حاصل کریں ؟

آپ نے فر مایا۔ بی ہاں۔ خداد ند تعالی نے قرآن مجید میں ارشاد فر مایا ہے اے وہ لوگ جو ایمان لے آئے ہو این جانوں کو اور اینے گر والوں ادر

غاندان کواس آگ ہے چاؤ جس کا بند سمن لوگ اور پھر ہیں۔ (سور ہَ تح یم)

د شمنوں کی اذیت سے گھبر ائے نہیں

کتاب اکمال الدین جلد اصفحہ ۳۱۵، پی ہے کہ حضرت امام حسین علیہ السلام نے فرمایا کہ جو مومن بار ہویں امام کی غیبت کے زمانہ بیں و شمنول کی اذبیت اور اُست سے کام اُس فادبیت اور اُست سے کام اُس مجبر اسے نہیں ۔وہ ایسے ہے جس طرح اُس نے رسول کی ہمراہی میں جماو کیا اور اُس اُس کا تُواب لے گا۔

زيارت امام زماننديرٌ هنا چاہمےُ

حضرت امام زمانه عليه السلام كى زيارت برهياب سب آئمه عليم السلام بالخسوس حضرت امام حسين مليه السلام كى زيارت برهناب زياده ثواب ہاى طرح رسول الله كى زيارت كا تھى بہت ثواب ہے۔

آئے کی سلامتی کے لئے دعائیں مانگیں

الاحتیاج جلد ۲، صفحہ ۲۸۳ پر تحریر ہے کہ ظہور حضرت امام ممدی علیہ السلام کی تعمیل کے لئے آپ کی سلامتی اور آپ کے مصائب دور ہونے کے لئے و عالمیں ما تگیں ۔روایات میں ہے کہ تعمیل ظہور کیلئے بہت و عالمیں کریں

كو نكه آپ لوگول كى فتح كشادگى اى ميں ہوگى۔

دعاؤل کے بہت فائدے ہیں

کتاب اکمال الدین جلد ۲ صفحہ ۳۸۴ پر حضرت امام حسن عسری علیہ السلام سے روایت ہے کہ ظہور کیلئے تجیل کی دعاما نگنا ایمان پر تاست قدم رہنے کا سبب ہے یہ دعا کی کتابول میں موجود ہیں ان دعاؤں کے مانکتے میں بہت سے قائدے ہیں جی ایکھا خصار کے ساتھ درج کئے جاتے ہیں۔

طولائی عمر ہونا (مکارم الاخلاق صفحہ ۲۸۳) امام زمانہ ملیہ السلام کے حق کی اوالیگ (کافی جلد ۲ صفحہ ۱۷۰) رسول کی شفاخت نصیب ہونا (اتحصال جلد ۱، صفحہ ۱۹۲)

وعاکر نے والے کی خدا مدد فرماتا ہے حضرت امام زمانہ علیہ السلام فوش ہوتے ہیں امام علیہ السلام اس کے لئے دعا فرماتے ہیں۔ خدا کے فرشے اس کے لئے دعا فرماتے ہیں۔ خدا کے فرشے اس کے لئے دعا ما تکتے ہیں۔ وعاما نگنا امام علیہ السلام سے دو تی کا انہمار ہوا رہا تھے ہیں۔ وعاکر نے والے ہیا جر رسالت ہے۔ وعاکر نے سے مصائب دور ہوتے ہیں۔ وعاکر نے والے کورسول اللہ اور حضرت علیٰ کی ہمراہی میں جماد کرنے کا ثواب ملک ہے۔ وعاکر نے سے کرنے سے انتظاب کی آماد گی اور تیار کی کا حساس پیدا ہوتا ہے ہمر طیکہ قلب کی گرائیوں سے دعا ما تگی جائے نہ کہ صرف زبانوں سے ہوتا ہے ہمر طیکہ قلب کی گرائیوں سے دعا ما تگی جائے نہ کہ صرف زبانوں سے اوائیگی ہو۔ روایات میں ہے کہ آئمہ علیم السلام سے منقول جو دعا کیں ہیں اُن کو بر حاجا ہے۔

شیعوں کے دل کو مضبوط کر ہے

ا لکافی میں احادیث رسول اللہ تحریر ہیں '' کہ جو شخص ہمارے شیعوں کے دلوں کو مضبوط کرے (یعنی اُن کے شکوک و شبهات دور کرے) و والیک ہزار عبادت گذاروں سے بہتر ہے۔

دوسری حدیث ہے کہ جب میری امت میں بدعتیں ظاہر ہو جائیں تو عالم پر واجب ہے کہ وہ اپنے علم کو ظاہر کرے اور اگر ابیانہ کرے گا تو اس پر غدا کی لعنت ہے۔

انام کی خدمت کریں

حارالانوار جلد ۵۱ صفحہ ۸ میں حضرت امام جعفر صاوق علیہ السلام سے روایت ہے کہ اگر میں آپ کے زمانے میں جو تا توجب تک زندہ رہتا امام (عج) کی خدمت کرتا۔ امام علیہ السلام کی خدمت کرنے کا مطلب آپ کے مشن کی خدمت کرنا ہے۔ مشن کی خدمت کرنا ہے۔ مشن کی خدمت کرنا ہے۔

امام زمانهٔ کو دوست رکھیں

عابیة الحرام جلدا، صفحه ۳۲ پر حدیث رسول الله اس طرح تحریب که آپ نے فرمایا۔ که معراج کی رات الله تعالی نے مجھ سے خطاب فرمایا۔ کیا آپ چاہتے ہیں کہ آپ کے اولیاء کا ویدار کراؤں۔ میں نے کما۔ ہاں۔ فرمایا۔

ا پے سامنے ویکھو۔ جب میں نے دیکھا توا پے بارہ اوصاء کی در خدہ تھو ہریں تھیں جن میں حضرت قائم علیہ السلام کی تصویر روشن ستارے کی مانند چک ربی ہے۔ ربی ہے۔

میں نے عرض کیا۔ خدایا یہ کون ہیں ؟ تو خطاب ہوا۔ یہ سب ہر حق آئمہ ہیں اور جو ان کے در میان زیادہ روشن ہیں یہ میرے حلال کو حلال اور میرے حرام کو حرام کرے گا اور جن میرے دشمنوں نے حلال کو حرام اور حرام کو حلال کیا ان ہے بدلہ لے گا۔ اے محمہ اس سے محبت کر دادر اے دوست رکھوکیو فکہ ہیں اُسے بہند کر تا ہوں اور اُسے جا ہتا ہوں جو اُسے دوست رکھے گا ہیں اے دوست رکھوں گا۔

امام مهدی کے وسیمتوں پر لعنت کریں الاحتجاج جلد ۲، صفحہ ۳۱۲ پرہے کہ حضرت امام مهدی علیہ السلام کے دشمنوں اور آپ کے پر وگر ام کے مخالفین پر نفرین کرنا۔

کیاسوال کریں؟

مفضل کتا ہے کہ بیل نے حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام سے سوال کیا کہ جب آپ امام زمانہ علیہ السلام کی غیبت کا تذکرہ فرمارہ ہے تھے۔ کہ ہم غیبت کے زمانے بیل کیا کریں توآپ نے ارشاد فرمایا۔ کہ اگر کوئی محض اس دوران صاحب الام ہونے کا دعوی کرے تواس سے الی چیزوں کا سوال کرد

جو سوائے امام الجت خدا کے کوئی اور نہیں بتا سکتا۔ جیسے حیوانات سے باتیں کرنا، نباتات اور جمادات سے بات کرناوغیرہ۔

ظہور کا وفت معین کرنے والے کو جھٹلا د و

العنبیة شیخ طوی صفحہ ۲۹۲، پر حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام ہے روایت ہے کہ جو شخص آپ کے لئے ظہور کاوقت معین کرے اس ہے ڈرو مت اور اُسے جمثلاً ووکی کو نکہ ہم نے کسی ایک کے لئے وقت معین نہیں کیا۔ جو کچھے روایات میں حتی علامات کے حوالہ سے ذکر ہے اس کے میان پر اکتفاکیا جائے کیونکہ یہ خدا کے رازوں میں ہے ایک رازے۔

امام زمانہ سے ملا قات کی دعا ما تگیں

روضة كافى صفحه ٢٣٣، پرے كه خداد ند تعالى سے بير دعا ما كلى جائے كه خدايا جھے ايمان كى حالت ميں حضرت قائم عليه السلام كى ملا قات نصيب فرما۔ كيو نكه جب حضرت ظهور فرما بميں كے خدا كاغضب بن كرآئميں كے۔

اسلحہ اور سواری ہر وقت تیار ر کھے

حضرت امام زمانہ علیہ السلام کی غیبت کے زمانہ میں دشمنِ اسلام ہے مقابلہ کرنے کے لئے اسلام اور سواری کو ہروتت تیار کھے اس کے لئے نہ تو جکہ معین ہے اور نہ بی دفت معین ہے بلعہ ہروتت مومن اپنے آپ کوآماد گی ادر

تیاری کی حالت میں رکھے۔اس طمن میں جنگی فنون حاصل کرے۔بابحہ ہر شعبہ میں مخلق فنون حاصل کرے بابحہ ہر شعبہ میں مخالفین اسلام کو شکست دینے کے لئے تعلیم حاصل کرے تاکہ جب اسلای حکومت قائم ہو توان امور کو انجام دیناآسان ہو جائیگا۔

(بھریہ ظہور امام ممدیٰ قریب ترہے)

تنجیل ظہور کے لئے د عالا زم ہے

شیعیان و ممبان اہل بیت علیم السلام کے لئے ضروری سے کہ غیبت میں ظہور امام کی عائمیں ما تگیں اور سے ہر گزنہ کمیں کہ جو پچھ مقدر میں ہے وہی ہوگالہذا جب خداد ندیالم مصلحت سمجھے گاامام کو ظاہر فرمائے گا کیو مکہ روایت میں ہے کہ :۔

حضرت اہام جعفر صادق علیہ السلام نے اربٹاد فرمایا کہ خداو تد عالم اس بات پر قادر ہے کہ جب بھی چاہے اہام زمانہ کے ظہور کا تھم وے ۔لیکن ہمارے لئے یہ ضروری ہے کہ خدا سے طلب کریں اور التجاء واستد عاکریں کہ خدایا ہمارے لئے یہ ضروری ہے قہور میں تجیل فرما۔ اور اس کے ساتھ ساتھ یہ آر زو بھی رکھیں کہ خداو تد عالم ہمیں امام کے ساتھیوں اور اعوان وانصار میں قرار دے کو فکہ کی تمنا اور کی آر زو دل میں رکھنا تی عبادت ہے اور ظہور امام کا خظر ہونا بہت میری عبادت ہے اور ظہور امام کا خظر عونا بہت میری عبادت اور اطاعت الی ہے ہمیں ہمیشہ یہ الفاظ ور و زبان کرنے چاہیں۔

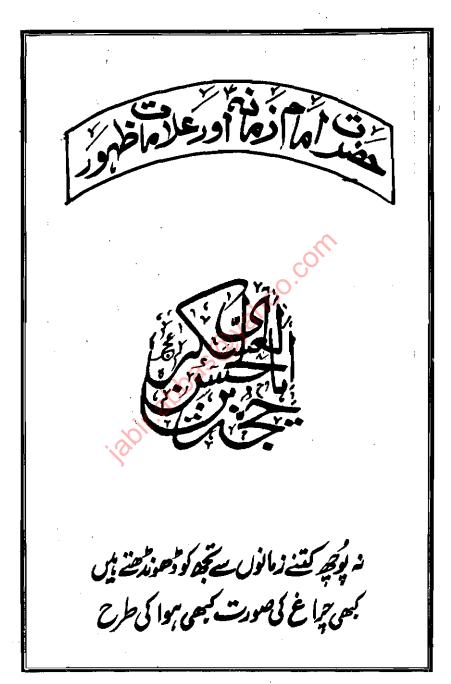
اللهم عجل فرجه و سهل مخرجه و اجعلنا من اعوانه و انصاره بر حمتک یا ارحم الراحمین.

زجمہ :۔

پرور دگار۔ ظہور اہام میں تعیل فرمااور اُن کے ظہور میں آسانی فرما۔ اور ہمیں اُن کے اعوان وانسار میں قرار دے۔اے ارحم الراحمن اپنی رحست کے صدقے میں ہماری دعا قبول فرما۔

(مهدى موعودامام زمانته ، صفحه ١٦١١١)







ایک عظیم ہستی کا پوری دنیا کوانتظار

کر وَارِ صُ کَا خَالَ ہِ مُور ہے جو موجود و صورت حال ہو چکی ہے ہوری
و نیا مخلف مظالم کا شکار ہے اس صورت حال کی روشی میں تمام قو میں ایک عظیم
متن کی آمد کے انظار میں اپنے دن رات گزار رہی ہیں۔ ہر قوم اس عظیم متن کو
اپنے مخصوص نام ہے یاد کرتی ہے۔ لیکن تمام قومیں اس کے بنادی اوصاف
اور اس عظیم متن کے پروگر اموں کے بارے میں متفق ہیں چنا نچہ بعض لوگوں
کے وہم و گمان کے خلاف ، امر بہت کے جانکاہ زخوں پر مرہم رکھنے کے لئے
ایک عظیم نجات و هندہ کے ظہور پر ایمان کا مئلہ مسلمانوں میں ہی نہیں پایا جاتا
حتی کہ سے عقیدہ صرف مشرقی خدا ہب ہے بھی مخصوص نہیں ہے باجہ الی
روایات موجود ہیں جن سے سے بات نامت ہوتی ہے۔ کہ سے ایک پر انا اور عالمگیر
اعتقاد ہے جو مشرق اور مغرب کے تمام خدا ہب اور اقوام میں پایا جاتا ہے۔
میں یماں پر مختف قو موں اور غدا ہب کے حوالے سے مختفر آسا تحریر
میں ماں پر مختف قو موں اور غدا ہب کے حوالے سے مختفر آسا تحریر

247

زرتشتیوں کی کتاب"زند"

مشہور و معروف کتاب ''زند'' بیں یزدانیوں اور اھریموں کی دائی جنگ کے ذکر کے بعد تحریر ہے کہ:۔

اس و قت یزدانیوں کو عظیم کامیابی حاصل ہوگی اور احر یمن صغیہ استی سے نابو و ہو جائے گایزدان کی کامیابی اور احریموں کی نابو دی کے بعد دنیا اپنی حقیق سعادت اور خوش نصیبی سے جمکنار ہوجائے گی اور فرزندان آدم خوش قسمتی کے تخت پر جلوہ افروز ہوں گے۔

"جا ماسپ نامہ" میں جا اسپ زر وشت کی زبانی نقل کرتا ہے کہ تازیوں کی سر زمین سے ایک مخص طروح کرے گا ایک ایما مر دجو ہوئے سر بر جسم اور بردی پنڈلیوں کا مالک ہوگا اپنے جد کے آئین پر عمل کرے گا اور ایک بوڈی فوج کے ساتھ ایران کارخ کریگاد نیا کو آباد اور زمین کو عدل دانساف سے تھر دیگا۔

ہندو وک اور ہر ہمدنوں کی کتاب ''وشنو ویگ '' اس کتاب میں تحریر ہے کہ آخر کار دنیا اُس کے ہاتھوں میں ہوگی جو خدا کو دوست رکھتا اور اُس کے خاص بھروں میں سے ہے اور اس کانام مبارک اور ممیون ہے۔

''وید''۔ نامی ایک دوسری کتاب میں آیا ہے کہ۔ دنیا کے طراب ہو جانے کے بعد آخری زمانے میں ایک ایبا بادشاہ ظاہر ہوگاجو پیشوائے خلاکق ہو گا۔اُس کا نام منصور ہے۔وہ تمام دنیا پر قبضہ کر کے سب کو اپنے آئین کا پیروکار سالے گا۔

بر ہسمنوں کی دواتک تامی کتاب برہسنوں کی مقدس کتاوں میں سے''دواتک''ٹای کتاب میں تحریر کیا گیا۔دست حق نکلے گا۔اور ممتاطا کا آخری جانشین ظہور کرے گا۔مشرق ومغرےایں کے قیضہ میں ہوگااور خلائق کی مدایت کرے گا۔

مندون کی کتاب''یا تکل''

ہندوؤں کی کتاب ''پا تھک میں تحریر ہے کہ جب اُن کی مت ختم ہو جائے گی اور پر انی دنیا نئی اور زئدہ ہو جائے گی اور ایک نئے باد شاہ کا ظہور ہو جائے ۔ دنیا کے دو پیٹوا ؤں کے فرزندوں ہیں سے ایک آخری زمان کی ۔ آئد و۔ اور و وسر ا۔ حتی کہ اُن کامیرا۔ جس کانام پشن ہے اور اُس نئے بادشاہ کانام ''را جنما'' ہے وہ فتی بادشاہ ہوگا وہ رام کا خلیفہ ہوگا حکومت کرے گا اور بہت سے معجزے کا مالک ہوگا۔

ہندوؤں کی کتاب''باسک'' میں ورج ہے کہ:۔

دنیاکاد ور آخری زمانہ میں ایک ایسے عاد ل بادشاہ پر تمام ہو جائے گاجو فرشتوں پر یوں اور آدمیوں کا پیٹوا ہو گااور پچ توبیہ ہے کہ حق اس کے ساتھ ہو گااور جو زمینوں پہاڑوں اور دریاؤں میں مخفی ہو گاسب اس کے ہاتھ لگ جائے گااور جو کچھ زمین وآسان میں ہوگاوہ اس کی خبر دے گااور دنیا میں اس سے ہوا

کوئی ہخض نہ ہو گا۔

توریت اور اس کے ملحات

مر امیر واؤد نامی کتاب کے مز مور نمبر ۲ سیم آیا ہے کہ:

کیو تکہ شریر لوگ نابود ہو جائیں گے اور خدا پر توکل رکھنے والے

ز مین کے دار شے ہوں گے تھوڑی ہی مدت کے بعد کوئی شریر نہ ہوگاتم اس جکہ

ك بارے ميں غور كرو كے اور اس كے مكان ميں تامل وہ و بال نہيں ہو گا۔اس

کے دور میں فقط حکیم (صالح) لوگ زمین کے وار ث ہو ل گے۔

ای مز مور نمبر ۲ سے جملہ نمبر ۲۲ میں آیاہے:۔

کیونکہ خداوند عالم کے متبرال وگ زمین کے دارث ہوں گے لیکن

اس کے ملعون لوگ نابو و ہو جا کیں گے جملہ ممبر 10 میں آیا ہے ۔۔

کہ صدیق حضرات زمین کے وارث ہو کر جمیشہ بمیشہ کیلئے اس میں

سكونت كرير كرات حدقوق في "نامي كتاب فصل نمر المي آلام :-

اور اگر وہ تاخیر کرے تو اس کا انظار کرو۔ کیونکہ وہ حتما کئے

گا۔ دریگ نہیں کرے گا۔ بلحہ ٹمام امتوں کو اسے ار دگر د اکھٹا کرے گا اور سب

کواپنے لئے فراہم کرے گا۔

''اشعیاء نی''فعل نمبر ۱۱ میں ایک الی صف میں جو سر تاپا تشبیہ

ے آیا ہے کہ :۔

اور کی کے سے ایک نمال نکال کر۔اس کی شاخوں میں سے ایک

شاخ موصے گی جو ذ لیلول کے لئے عاد لانہ تھم اور زمین کے مینول کے لئے مج مج

میں عیبہ (اور میداری کا سبب ہوگ) اس کی کمر بند عدالت ہے۔ اور وفا۔ اس کی میں عیبہ (اور میداری کا سبب ہوگ) اس کی کمر بند عدالت ہے۔ اور وفا۔ اس کی میان کا نطاق ہوگا اور بھی ہیں ہے چوں کے ساتھ سکونت کرے گا اور ایک چھوٹا ساچہ اُن کا چوپان ہوگا اور میرے تمام مقدس پہاڑوں میں ذرہ ہر اہر ضرر اور فساد نہیں ہوگا کیو نکہ وہ زمین خداوند عالم کے علم و دانش ہے بالکل ای طرح لبریز ہو جائے گی جیسے پانی سے سمندر۔

عمد جدید میں ''انجیل اور اس کے ملقات''

انجل متى فصل نمبر ٢٨ مين آياب كه:

جس طرح ملی شرق سے نکلتی ہے اور مغرب تک ظاہر ہوتی ہے انسان کے فرزند کا آنا ہی الیے ہی ہوگا۔ انسان کے فرزند کو آسانی بادلوں پر دیکھیں گے کہ قدرت و عظمت و جلال کے ساتھ آرہا ہے اور اپنے فرشتوں (اپنے یارومددگاروں) کو بلند آولز (صور) کے ساتھ تھے گا اوروہ اپنے رگذیدہ لوگوں کو اکٹھا کریں گے۔

''انجيلِ لو قا''

''اخیلِ لو قا'' فصل نمبر ۱۲ میں ذکر ہوا ہے کہ اپنی کمر باندھے اور اپنے چراغ کو جلائے رکھواور تم ایسے لوگوں کی طرح رہو جو اپنے آ قاکا انظار کررہے ہوں تاکہ جس وقت وہ در وازہ تصحیحائے فور اُاس کے لیے کھول دو۔

چینیوں اور مصریوں کا عقیدہ

كتاب علائم الطهور صفحه ٢ م يربيه عبارت نظر آتى ب:

ہر دور ادر زمانے ہیں۔ خدا پر ستوں کے دلوں ہیں ایک ایسے عالم گیر
اور عظیم مسلح کی تمنا مجلتی رہی ہے۔ اور ایبا نہیں ہے کہ یہ آر زو صرف برے
ند اہب کے مانے والوں جیسے زروشتی، یبود کی، عیسا کی اور سلمانوں ہیں، ہی پائی
جاتی ہو باعد اس کے آثار چینیوں کی پرانی کتابوں، ہندوؤں کے عقائد
اور اسکنڈ نیسیویا کے باشدوں یماں تک پرانے مصریوں اور
میں میں بھی بائے جاتے ہیں۔

(جب مولا آئیں گے ،انقلاب مهدی)



علامات ظهور امام مهدی علیه السلام کی دوفتمیں ہیں۔ احتمیہ ۲۔غیر حتمیہ یاشر طیہ حتمہ علامات

وہ علامات جو حضرت امام زمانہ علیہ السلام کے ظہور مُر نور سے پہلے ہر حال میں ظاہر ہوں گی اور ان میں کسی قتم کی تبدیلی کا ثنا ئید نہ ہو گا حتمیہ علامات کملاتی ہیں۔

غير حتميه ماشر طيه علا مات

یہ وہ علامات ہیں جو خداوند قدوس کے معدوں کے اعمال سے متعلق موں گی اگر خدا تعالی جا ہے گا تو یہ علامات ظاہر ہوں گی ورنہ عابد اور صالح لوگوں کی توبہ واستغفار سے ٹال دی جائیں گی

ظہور امامؓ کے زمانے کے قریب کی علامات رسول پاک کا خطبہ مرائے آخری زمانہ

جاء بن عبداللہ انساری نے روایت کی ہے کہ میں نے ج کیا۔ جناب رسول پاک کے ساتھ ۔ جبتہ الوداع میں ۔ پس جب پینبر علیہ اندال ج سے فارغ ہوئے تو آپ نے فرمایا۔ یا کھا الناس۔ آج یقیناً میں کعبہ کو الوداع کمہ رہا ہوں۔ اس کے بعد کعبہ کے در کو حلقہ کیا۔ اور باآواز بلند لوگوں کو پکارا تمام الل مجد جمع ہو گئے اور بازار والے بھی آگئے اس وقت آپ نے فرمایا۔ کہ سنو! جو

میں متانا چاہتا ہوں۔ جو میرے بعد ہوگا۔ تم میں سے جو حاضر ہیں وہ غائبین تک اسے پنچاویں پھر رسول اللہ کا گریہ کرتے ہوں تو گئے جب رسول اللہ کا گریہ بعد ہوا تو ہوئ نے ارشاد فرمایا۔ کہ خداتم پر رحم کرے۔ یہ جان رکھو کہ تم آج کے دن سے ایک سوچالیس سال تک اس بے کی مانند ہو جس میں کا نثانہ ہو پھر اس کے سے ایک سوچالیس سال تک اس بے کی مانند ہو جس میں کا نثانہ ہو پھر اس کے بعد دوسوسال تک ایبازمانہ ہوگا جس میں پت نہیں ہے بمال تک کہ اس زمانے میں سلطان جار فیل سرمایہ دار، دنیا پر ست عالم، جھوٹے نقیر، فاس و فاج میں سلطان جار فیل سرمایہ دار، دنیا پر ست عالم، جھوٹے نقیر، فاس و فاج مور سول اللہ نے کہ اور الحق عور توں کے علادہ لوگ نظر نہیں آئیں گے پھر رسول اللہ نے کہ ایباک ہوگا۔ یا ارسول اللہ نے کہ ایباک ہوگا۔ ا

ہوجائیں گے اور تمہارے قاریان قرآن ختم ہو جائیں گے اور تم زکواہ کی اور نگل قطع کر دو گے اور اپنا عمال بدکو ظاہر کرو گے جب تمہاری آوازیں تمہاری مجدول میں بعد ہوں گی اور جب تم دنیا کو اپنے سر پر اٹھاؤ کے اور علم کو زیر قدم رکھو گے۔ جمعوث تمہاری تفتگو ہوگا۔ فیبت تمہاری نقل محفل ہوگ اور جرام مال غنیمت ہوگا۔ اور جب تمہار ایزیگ تمہارے چھوٹوں پر شفقت نمیں کرے گااور تمہارے چھوٹے تمہارے ہورگوں کا احترام نمیں کریں گے اس وقت تم پر اللہ کی لعنت نازل ہوگی اور تمہاری امت تمہارے در میان قرار وے گااور دین تمہاری زبانوں پر فظالیک لفظین کردہ جائے گائو تم میں جب یہ خصاتیں پیدا ہوجائیں تو سرخ آندھی من یا آسان سے سنگ باری کی توقع

ر کھو۔اور میرے اس کلام کی تصدیق کتاب خدا میں موجو د ہے۔

ترجمہ:۔ اے رسول کمہ دو کد دبی اس بات پر قادر ہے کہ تم پر عذاب تہمارے مرک او پرے نازل کرنے یا تہمارے پاؤں کے نیچ ہے اٹھا دے یا ایک گروہ کو دو سرے گروہ کے مقابل کروے اور تم سے بھن کو بھن کی جنگ کامز انچکھادے۔ویکھوہم کس طرح آیات کوبد ل بدل کرمیان کرتے ہیں تا کہ یہ لوگ سمجھ سکیں۔

(سورةانعام آيت ٢٥)

اُس و **تت صحابہ کا ایک گروہ اٹھ کر کھڑ ا ہو گیا۔ اور کہنے لگا یا رسول** الله ً مناہیئے کہ ایبا کب ہو گاآپ نے ارشاد فرمایا۔ کہ جب نمازوں میں تاخیر کی جائے اور شہوت رانی عام ہو جائے اور قہوہ کی مخلف اقسام بی جانے لگیں اور باپ اور مال کو لوگ گالیاں دینے کئیں۔ یہاں تک کہ حرام کو مال غنیمت اور ز کوۃ وینے کو جرمانہ سمجھنے لگیں مروا ٹی ابیک کی کی اطاعت کرنے لگے اور انہے ہمیائے پر ظلم کرے اور قطع رحم کرنے لگے اور پیز گوں کی شفقت اور رحم ختم جو جائے اور چھوٹول کی حاء کم جو جائے اور لوگ علا تول کو مضبوط سانے لکیں۔اورا پینے خاو موں اور لونڈیوں پر ظلم کرنے لگیں اور ہواہ ہوس کی بیناویر گواہی ویں اور ظلم سے حکومت کریں اور مروا پناب کو گالی و نے لگے انسان اسين ممائى سے صد كرنے لكے۔ حصد دار خيانت سے معاملہ كرنے لكے۔ وفاكم مو جائے اور زناعام موجائے۔اور مروعور تول کے کیروں سے اینے آپ کو آرات کرے اور عور توں سے حیاء کا پروہ اٹھ جائے۔اور تکبر ولوں میں ا سطرح داخل ہو جائے جس طرح زہر جسموں میں داخل ہو جاتا ہے۔اور عمل نیک تم ہو جائیں اور جرائم بے انتاعام ہو جائیں اور فرائض الی حقیر ہو جائیں اور سر مایہ وار مال کی ما بر اپنی تعریف کی خواہش کریں اور لوگ موسیقی اور

گانے پر مال صرف کریں۔اور د نیاواری میں سرگرم ہو کر آخرت کو کھول جائیں اور تقویٰ کم ہو جائے اور طعی ہوھ جائے اور انتظار و عارت گری ہوھ جائے اور انتظار و عارت گری ہوھ جائے اور ان کی معجد میں اذان سے بے آباد ہوں اور اُن کے دل ایمان سے فالی ہوں اس لئے کہ وہ قرآن کا استخفاف (تو بین) کریں اور صاحب ایمان کو ان سے مہر قتم کی ذلت و خواری کا سامنا کرنا پڑے تو اس وقت دیکھو گے کہ ان کے چرے آدمیوں کے چرے بیں اور ان کے دل شیطانوں کے دل بیں اور ان کی گفتگو شمدے شیریں ہے اور ان کے دل شیطانوں کے دل بیں اور ان کی گفتگو ممدے شیریں ہے اور ان کے دل حدظل سے زیادہ کر دے ہیں تو وہ کھیو سے بیں جو انسانی لباس میں بیں ایسے زمانے میں کوئی دن ایمانہ ہوگا جب خدا ان سے بید نہ کے گا کہ کیا تم میری رحمت سے مغرور ہوگئے ہو؟ تمہاری جراً تمی ہوھ گئ ہیں (کیا تم یہ گمان کر حمت سے مغرور ہوگئے ہو؟ تمہاری جراً تمی ہوھ گئ ہیں (کیا تم یہ گمان کر حمت سے مغرور ہوگئے ہو؟ تمہاری اور تمہاری بازگشت ہماری طرف نہیں ہوگی)

(مورزة مومنون آيت ١١٧)

میں اپنی عزت و جلال کی قتم کھا تا ہوں کہ اگر بھی خلوص سے عبادت

کر نے والوں کی پر واہ نہ ہوتی تو میں گنا ہگار کوا کیہ چشم زدن کی بھی مسلت نہ دیتا
ادر اگر ہندگان متعین کے تقویٰ کی پر واہ نہ ہوتی تو میں آسان سے ایک قطرہ بھی
نہ بر ساتا ادر زمین پر ایک سبز پنہ بھی نہ اگا تا تعجب ہے ان لوگوں سے جن کے
خدا ان کے اموال ہیں جن کی تمنا کمیں طویل ہیں ادر عمریں کو تاہ۔اس کے
باوجود وہ جوار رحمت میں آنا چاہج ہیں حالا نکہ وہ عمل کے بغیر نہیں پنچ کتے اور

(جارالانوار جلد ۵۲ ، صفحه ۲۲۳)

حضرت امير المومنينً كا خطبه بمرائح آخري زمانيه نزال این سبر ہؓ ہے روایت ہے کہ ایک ون حضر ت امیر المو منین علی ان الى طالب عليه السلام نے ہمارے سامنے خطبه ديا يملے خداويد عالم كى حمد شاء کی اس کے بعد تمین مرتبہ فرمایا کہ جو کچھ مجھ ہے یو چھنا جا ہو تبل اس کے کہ تم مجھے مم کرووں یہ بن گر صعبہ بن صوحان اٹھ کھڑ ہے ہوئے اور کہنے لگے۔ ما امیر المومنن _ د حال کا فروج کب ہو گا۔ فرمایا کہ بیٹھ جاؤاللہ نے تمہاری مات س لی اور اے تمهار المقصود بھی معلوم ہے خداکی قتم اس مسلئے میں مسئول (جس سے سوال کیا گیاہے) کا کل ہے عالم تر نہیں ہے لیکن اس کے خروج کی کچھ علامتیں ہیں جو لفظ ہالفظ متواتر اوری ہوتی رہیں گی اگرتم جا ہو تو علامتوں ہے تنہیں آگاہ کر سکتا ہوں صعبہ نے عرض کی ۔یا امیر المومنین ۔ ارشاو فرما ہے۔ فرمایا۔ جو کمہ رہا ہوں اسے یادر کھنا اس کی علامات سے ہیں کہ جب لوگ نماز کو مار ڈالیں ۔اور امانت کو ضائع کرنے لگیں اور سود کھانے لگیں اور ریثوت لینے لگیں اور معکم عارتی تقیر کرنے لگیں۔اور وین کو ونیا کے بالے فروخت کرویں۔اور سنہا(اس ہے مراوا سے غیر ذیبد دار اور بے ہرواہ اشخاص ہیں جنہیں اپنے فرائض منصبی ہے کوئی ولچیپی نہ ہو) کوعا مل سمجھا جانے لگے اور ظلم دستم ماعث فخر ہو اور جب حکمر ان جابر ہوں اور وزراء ظالم ہوں اور عرفا (بعض لو گوں نے عرفا ہے مراد عام دانشور وں کالیا ہے اور بعض نے اس لفظ کو الل تصویف کے ساتھ مخصوص کما) خائن ہوں اور قاریان قرآن فاسق ہوں اور جب جھوٹی گواہیاں ظاہر ہو جائمیں اور فتق و فجور بہتان تراشی گناہ دیر کشی کا

اعلا نیہ رواج ہو جائے اور جب قرآن مزین کئے جائیں اور میحدوں میں نقاشی کی جائے منارے طومل معائے جانے لگیں اور شریر افراد کی تکریم کی جانے لگے اور صف بعدیاں کثرت ہے ہونے لگیں اور خواہشوں میں اختلاف ہو جائے۔اور معابدے ٹوٹ جائیں اور وقت موعود قریب آجائے اور میبال حرص و نیا میں ا پنے شوہروں کے ساتھ تجارت میں شریک ہونے لگیں۔فاس انسانوں کی آوازیں بلند ہوں اور انہیں سنا جانے لگے اور قوم کا سر دار ان کارؤیل ترین مخض ہواور فاسق و فاجر مخض کواس کے شر کے خوف ہے پر ہیز گار کہنے لگیں اور جھوٹے کی تصدیق کی جانے گئے اور جب خیانت کار ایمن بن جائے اور گانے والی عور تیں آلات موسیقی ہاتھ میں لے کر گانا گانے لگیں۔اور: مہلوگ اینے مر شتہ افراد پر لعنت تھیجنے لگیں اور عور نی من سوار ہونے لگیں اور جب عور تیں مر دول ہے اور مر د عور تول ہے مشاہ ہو جائیں۔گواہ گواہی طلب کئے بغیر گواہی وینے لگیں۔اور دوست اپنے ووست کی خاطر خلاف حق گواہی دے اور لوگ علم دین کو غیر دین کے لئے حاصل کریں۔ اور دنیا کے کام کو آخرت کے کام پر مقدم قرار دیں اور جب لوگ بھیرو یوں جیسے بچر ہوں کی کھال ین لیں اور ان کے ول مروار سے زیادہ مستعفیٰ ہول کے اور مبر سے زماد ہ تکنے ہوں گے جب ایباز مانہ آجائے تو اس وقت عجلت اور سرعت ہے کام لیما اور بہت جلدی کرنا اس زمانے ہیں سکونت کے لئے بہترین جگہ مدیت المقدس ہو گی ا نسانوں پر ایک زمانہ ایساآئے گا جب ہر محض وہاں سکونت کی تمنا كرے كا _ يہ س كر اصبع بن نباية كورے يو كے اور عرض كى كه _ يا ا مير المومنين - و حال كون ہے - فر مايا- آگاه ہو جاؤكہ و حال صائدين صيد ہے و ه

شقی ہے جواس کی تصدیق کرے ۔اور وہ سعید ہے جواس کی تکذیب کرے۔وہ اصنبان نامی اک شہر ہے اور یہوویہ نامی ایک گاؤں سے خروج کرے گا اُس کی واہنے آنکھ میں کوئی چیز ہوگی جو جے ہوئے خون کی طرح ہوگی اور اس کی و ونول آتکھوں کے ور میان تحریر ہوگا کہ کا فریبے۔اور ہریزھالکھااور جائل اس کو بڑھ سکے گا اور سمندروں کو یار کرے گا اور سورج اس کے ساتھ چلے گا اوراس کے سامنے و هو کی کامیاڑ ہو گااوراس کے پیچے ایک سفید بہاڑ ہو گا جے لوگ غذا سمجھیں کے اور وہ شدید قط کے زمانے میں ٹروج کرے گااور ایک سفید گدھے پر سوار ہو گائیں کے گدھے کا ایک قدم ایک میل ہو گاز مین اس کے قد موں کے پنیجے سمٹی جائے گی وہ جس یانی کے قریب سے گذرے گاوہ قیامت تک کے لئے خٹک ہو جائے گا۔ وہ بلید آواز ہے خطاب کرے گا جے مشرق و مغرب تک جن وانس اور شیطان سی کے اور وہ کے گاکہ اے میرے د وستو۔ آؤ میر ہے بیچھے۔ میں ہی وہ ہوں جس نے خلق کیا۔ اور کوازن واعتدال منشااور رزق مقرر کیا۔اور پھر ہدایت کی۔ پس میں تہارا نیدائے بیزرگ ویرتر يول.

وہ دشمنِ خدا جھوٹا ہوگا اور یک چشم ہوگا۔ کھانا کھائے گا اور بازاروں میں راستہ چلے گا جب کہ تمہار ارّب نہ یک چشم ہے اور نہ کھانا کھا تانہ بازاروں میں راستہ چلا ہے۔ نہ فنا پذیر ہے اس زمانے میں وحال کے اکثر میروکار۔ زنا زادے ۔ اور سبز ریشی لباس والے لوگ ہوں گے خدائے عزوجل ۔ شام کی ایک بہاڑی پر جس کانام عقبی افتی ہوگا۔ وجال کو قتل کرے گاسے قتل اللہ جعد کے ون تین ساعت بعد اس مختص کے ہاتھوں کروائیگا جس کے پیچے میسی ان

مریم نماز پڑھیں گے۔

آگاہ ہو حاؤ۔ کہ اس کے بعد بہت موا حادثہ رونما ہوگا۔ ہم نے بوجھا کہ۔ یاامپر المومنین ۔ وہ حادثہ کیا ہے ؟ فرمایا صفا کی طرف سے دایہ الارض کا خر وج ہے اس کے ساتھ سلمان کی اٹلو تھی۔ مو سی ؓ کا عصا ہو گاو ہ اس اٹلو تھی کو جس مومن کے چربے پر رکھے گا تواس پر نقش ہو جائے گا کہ یہ مومن حقیقی ہے۔ اور جس کا فر کے چرے پرر کھے گا تواس پر تحریر ہو جائے گا کہ یہ حقیقی کا فریے۔ یہاں تک کہ مومن آواز دے گا کہ اے کا فرتچھ پروائے ہو۔اور کا فر کے گا۔اے مومن تیرا حال کتنا اچھا ہے مجھے یہ بہت پند ہے کہ کاش میں تھی تیری طرح کامیاب و کامران ہوتا مجروہ دابۃ اینے سر کوبلند کرے گااور مشرق و مغرب کے لوگ خدا کے اون ہے اپنے اس وقت ویکھیں گے جب سورج اپنے مغرب ہے طلوع کرے گااس ونت در توبہ بعد ہو جائے گااور نہ توبہ تبول ہو گی اور نہ کوئی عمل صالح آسان کی طرف جائے گا اور نہ کس کا ایمان اسے فائدہ بنیائے گااگر اس نے پہلے سے ایمان قبول ند کیا ہو۔ یا ایمان کی حالت میں خررند کیا ہو۔ کچر فرماما :۔اس کے بعد اس کے واقعات مجھ ہے نہ کو چھواس لئے کہ میں نے اپنے حبیب رسول اللہ ہے یہ عمد کیا تھاکہ اپنی عتر ت کے علاوہ کی اور کو اس کی اطلاع نہ دوں گا نزال این سبر ہ نے صعبہ ہے یو چھا۔ کہ اس بات ہے امير المومنين کي کيا مراو ہے۔صعصہ نے جواب ويا که اے ابن سره۔وہ محض جس کے پیچیے علیٰ این مریم مناز پڑھیں گے وہ عترت رسول کا بار حوال اور اولادِ حبین کانوال امام ہوگا یہ وہی سورج ہے جو اسنے مغرب سے طلوع ہو گا۔وہ رکن و مقام کے قریب ظاہر ہو گا۔ زمین کو یاک کرے گا اور میز ان

عدل کو قائم کریگا۔ پھر اس کے بعد کوئی کی پر ظلم نہیں کرے گا۔اور امیر المومنین ۔ نے یہ بھی کما ہے کہ ان کے حبیب رسول اللہ نے ان نے عمد لیا تھا کہ اس کے بعد جو کچھ ہوگاوہ آئمہ اہل بیت علمهم السلام کے علاوہ کی اور کونہ بٹلا کس۔

(قاراً لا نوار جلد ۵۲، صفحه ۱۹۳)

المم باقر كاعلامات ظهور مهدى ميان كرنا

غیبت نعمانی میں ابو بھیر نے حضرت آمام باقر علیہ السلام سے روایت کی ہے کہ آپ نے فرمایا۔ کہ جب تم مشرق میں آگ و کیھو جو عظیم ہر اتی سے بہت مشابہ ہواور وہ تین دن یاسات وال و شن رہے تواس و قت انشاء اللہ آل محمد کی حکومت کے مختظر رہو یقینا اللہ عزیزہ حکیم ہے۔ پھر فرمایا۔ کہ صدائے آسان فقط ماور مضان یعنی خدا کے مہینے میں ظاہر ہوگی اور وہ لوگوں کیلئے جبر ائیل کی صدا ہوگی پھر فرمایا کہ آسان پر ایک مناوی تا تم کے نام سے نداوے گاور اسے مشرق و مغرب کے سارے لوگ سن لیس کے ہر سویا ہوا میدار ہو جا بیگا۔ کھڑ اہوا بیٹھ جا بیگا اللہ اس پر رحم کرے جو اس صدا سے عبر سے حاصل کرے اس لئے کہ پہلی صدا جبر ائیل اللہ اس پر رحم کرے جو اس صدا سے عبر سے حاصل کرے اس لئے کہ پہلی صدا جبر ائیل اللہ اس پر دحم کرے جو اس صدا سے عبر سے حاصل کرے اس لئے کہ پہلی صدا جبر ائیل اللہ اس پر دحم کرے جو اس صدا سے عبر سے حاصل کرے اس لئے کہ پہلی صدا جبر ائیل اللہ اس پر دعم کرے جو اس صدا سے عبر سے حاصل کرے اس لئے کہ پہلی صدا جبر ائیل اللہ اس کی کہ ہوگی۔

آپ نے فرمایا کہ خروج قائم علیہ السلام سے قبل یہ دونوں آوازیں حتی ہیں ایک آسان کی آواز ہو گی اور ووسری زینن کی آواز ہوگ جو البیس لعین کی ہوگ ۔ جو فلال محض کے نام سے دے گا۔ کہ وہ مظلوم قتل

ہواہے اس آواز کے ذریعے فتنہ پھیلانا جاہے گا تو پہلی آواز کی پیروی کرنا اور خبر دار۔ دوسری آواز کے ذریعے فتنہ پھیلایا جائے گا تو پہلی آواز کی پیروی کرنا اور خبر دار۔ دوسری آواز کے فتنے میں نہ پھنتا۔

آپ نے فرمایا۔ کہ قائم علیہ السلام کاخروج اس وقت ہوگاجب لوگوں
پر شدید خوف طاری ہوگاز لڑلے آئیں گے لوگ فتنہ اور بلا بیں گھرے ہوں
کے اور اس سے قبل طاعون ہوگا اور عرب کے در میان تکوار چل رہی ہوگا
لوگوں بیں شدید اختلاف ہوگا امور وین بیں مختف الرائے ہوں گے اور اُن کی
حالت حنیر ہوگی یمال تک کہ لوگوں کی اذبت رسانی اور ایک دو سرے کے
ساتھ ور ندگی کو دکھے کر تمنا کرنے والے موت یا ظہور ممدی کی تمنا صبح و شام

اور آپ نے فرمایا: ۔ کہ قائم الموجدید، کتاب جدید اور سنت جدید کے ساتھ قیام کرے گا اور اس کا فیصلہ عربوں پر بخت گراں ہو گا اور اس کا کام و شمنوں کا قتل ہے وہ ایک و شمن خدا کو تھی ذیمن پر باقی نہ چھوڑے گا۔ ملا قات کرنے والوں کی ملامت اُسے بازندر کھے گی۔ پھر فرمایا۔ کہ جب قابان آپس بی مخالف ہو جا کیں تو اُس وقت فرج ہے۔ آسانی اور سولت کا وقت بدنی فلال کے اختلاف ہو جا کیں تو اُس وقت فرج ہے۔ آسانی اور سولت کا وقت بدنی فلال کے اختلاف بی ہو جائے تو ما و ر مضان بی چی کی تو تع رکھو جو شروح و تر وج قائم علیہ السلام کی بھارت ہو گا اور جو چا ہے ہوند و کھے سکو گے وہ کر تا ہے۔ اور ہر گز قائم کا شروح شیں ہو گا اور جو چا ہے ہوند و کھے سکو گے جب تک بدنی فلاں کا آپس بی اختلاف نہ ہو جائے۔ جب ایسا ہو جائے تو لوگ بہت کی بدنی فلاں کا آپس بی اختلاف نہ ہو جائے۔ جب ایسا ہو جائے تو لوگ بی حک بدنی فلاں کا آپس بی اختلاف نہ ہو جائے۔ جب ایسا ہو جائے تو لوگ

ہوگااور پھر فر مایا۔ کہ بدنی فلال کی حکومت حتی ہے توجب حکومت کے بعد اُن بھی اختلاف ہو جائے تو اُن کی سلطنت پر اگندہ ہو جائے گی اور وہ سے جائیں گے۔ یمال تک کہ خراسانی و سفیانی ایک مشرق سے ایک مغرب سے ان پر خروج کریں گے اور یہ دونوں دوڑ کے گھوڑوں کی طرح ایک او حرسے ایک اُو حرسے تیزی ہے کو فہ کی طرف چلیں گے یمال تک کہ بدنی فلال کی ہلاکت ان دونوں ہی ہوگی اور یہ ان جیس سے ایک کو بھی باتی نہ چھوڑیں ان دونوں کے ہاتھوں میں ہوگی اور یہ ان میں سے ایک کو بھی باتی نہ چھوڑیں

پھر فر مایا سفیانی و بھانی اور خر اسانی کا خروج ایک ہی سال ، ایک ہی مید اور ایک ہی ون میں ہوگاس ہار کی طرح جس کے وائے منظم اور ایک دوسرے کے بعد ہوں۔ اس وقت ہر طرف مایو ی ہوگا۔ وائے اُس پر جو ان کی خالفت کرے۔ ان پر چموں میں بھانی کے علاوہ کوئی پر ہم ہدایت نہیں ہے اس کئے کہ وہ لوگوں کو تمہارے امام (علیہ السلام) کی طرف وعوت دے گا۔ تو یمانی خروج کرے تو اُس کی طرف جاؤ۔ اس لئے کہ اس کا پر چم ۔ پر ہم ہدایت ہوایت ہے اور اگر مسلمان کے لئے جائز نہیں ہے کہ اُس سے بھی اختیار کرے اور اگر ہے اور اگر میں نے ایساکیا تو وہ جنمی ہے اس لئے کہ بمانی لوگوں کو حق اور صراط متنقیم کی وعوت دے گا۔

(نيبت تعماني صفحه ۱۳۵، فيار الانوار جلد ۵۲، صفحه ۲۳۰)

ظہور کے وقت کا تعین کر نا (مسکلہ توقیت) توقیت کے معنی وقت معین کرنے کے ہیں۔ مثیت الی یہ ہے کہ ظہور مهدی کے وقت کو پوشیدہ رکھا جائے۔بالکل ای طرح بیسے انسان کو اپنی موت کا وقت معلوم نہیں اور اس طرح وقت قیامت بھی پوشیدہ ہے ہی سبب ہے کہ آل محمد علیم انسلام نے خود ظہور امام مهدی علیه انسلام کا وقت مقرر کیا اور نہ بی دوسر ول کے اس قتم کے عمل کو پند فر مایا بیسے اُن لوگوں کی ندمت فرمائی جو ظہور امام مهدی علیه السلام کے وقت کا تعین کرتے ہیں۔

روایت ملاحظه جو: په

الوہم نے حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام سے عرض کی کہ میں آپ پر فدا ہو جاؤں قائم کاخروج کب ہوگا۔ فرمایا۔ اے ابو محد ہم وہ خاندان میں کہ وقت معین نہیں کرنے۔ رسول اللہ نے فرمایا کہ وقت معین کرنے والے جھوٹے ہیں۔ اے ابو محد اس امر سے پہلے پانچ نشانیاں ظاہر ہوں گ۔ماور مضان کی ندا۔ فروج سفیاتی فروج فراساتی ، قبل مفن ذکیہ اور زمین میداء کا حسف ۔ پھر فرمایا۔ اے ابو محد ۔ اس سے قبل دو طاعون ہوں کے۔ طاعون سفیداور طاعون سرخ۔

ادو بھیر نے پوچھا کہ آپ پر فدا ہو جاؤں یہ دو طاعون کیا ہیں فرمایا۔ طاعون سفید عام موت ہے اور طاعون سرخ (قتل) شمشیر ہے۔ قائم مروح نہیں کرے گاجب تک منیبویں رمضان کی شب جو جمعہ کی شب ہوگی فضاؤں میں اُس کے نام کا اعلان نہ ہو جائے۔

حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام نے محمد من مسلم سے فرمایا کہ اے محمد ! جو مخض بھی ہماری طرف سے تعین دفت کی اطلاع وے اُس کی تکذیب کر نا اس لئے کہ ہم کس مخض کے لئے بھی وفت کا تعین نہیں کرتے۔

میزم نے حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام سے سوال کیا کہ آپ پر فدا ہو جاؤں ہم جس امر کے انظار میں ہیں اس کے بارے میں بٹلا سے کہ کب ہوگا؟ فرمایا۔اے میزم وقت معین کرنے والے جھوٹ یولیں گے اور اس امر میں عجلت کرنے والے بلاک ہول گے اور سر تسلیم خم کرنے والے فلاح پاکیں گے۔

ظہور اللہ تعالیٰ کی مرضی سے ہوگا

کلیدنی نے اسلی بن یعقوب سے روایت کی ہے اُن کامیان ہے کہ محمد بن عثان کے ہاتھوں اُن کے پاس ایک تو قیع مرآمد ہوئی جس میں یہ تحریر تھا کہ :۔

ترجمہ: بیر سوال کہ ظہور کب ہوگا؟ توبیاللہ کی مرضیٰ پر مخصر ہے اس کے وقت کا تعین کرنے والے جموٹے ہیں

(احتجاج، حار الانوار)

ظهور کاوفت بتا نے والے کاذب ہیں

فضیل ہے روایت ہے اُن کامیان ہے کہ میں نے حضر سے ابو جعفر اہام محمد باقر علیہ السلام سے دریافت کیا کہ فرزند رسول کے کیا ظہورِ صاحب الامر علیہ السلام کے لئے کوئی وقت مقرر ہے ؟ آٹ نے ارشاد فرمایا:۔ ترجمہ:۔ وقت مقرر بتانے والے جھوٹے ہیں۔وقت مقرر بتانے والے جھوٹے ہیں۔ والے جھوٹے ہیں۔وقت مقرر بتانے والے جھوٹے ہیں۔ (عنبة طوسی، حار الانوار جلد ١١، ار دوتر جمہ)

ہم نے وقت ظہور نہ بتایا اور نہ بتا کیں گے۔

منذر جواز نے حضرت ابو عبداللہ امام جعفر صاوق علیہ السلام سے

روایت کی ہے کہ آپ نے ارشاو فر مایا :۔

تر جمہ :۔ وقت مقرر بتانے والے جمولے ہیں ہم نے نہ تو ماضی میں

کوئی وقت مقر رہتایا اور نہ مستقبل میں کوئی وقت مقر رہتا کیں گے۔

حضرت امام علیہ السلام کے ظہور پر توری جوالے سے اکثر مستد

کتب میں علاقوں کے حوالے سے بھی علامات ورج ہیں۔ میں کا یمال پر تذکر و

معراج پرامام ِ زمانه کا تذکرہ اینِ متوکل نے اسدی ہے ، انہوں نے فتی ہے ، انہوں نے نو قلی ہے انہوں نے علی بن سالم ہے ، انہوں نے اپنے والدے انہوں نے اینِ ظریف ہے انہوں نے ابن نبایۃ انہوں نے ابن عباس ہے روایت کی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم نے ارشاد فرمایا: جب مجھے معراج کے لیے ساتویں آسان پر لے جایا گیا تو ہیں وہاں سے سدرۃ النتہیٰ گیا اور سدرۃ النتہیٰ سے جاب نور تک پہنچا تو میر سے پروردگار نے مجھے آوازدی۔ا سے محمد اُن میر سے ہد سے ہو۔ ہیں تمبارا رب ہوں میر سے سامنے سر جھاؤاور میری ہی عبادت کرو۔ مجھ پر بی توکل کرو۔ میں اس بات پر خوش ہوں کہ تم میر سے ہد سے ، میر سے محمد پر بی توکل کرو۔ میں اس بات پر خوش ہوں کہ تم میر سے ہد سے ، میر سے محمد ہیں اس بات پر خوش ہوں کہ تم میر سے ہد سے ، میر سے کہ تمبار سے کمانی علی خلیق اور باب بیں وہ میر سے بعدوں پر میری جست اور میری تعلوق کے امام بیں ان بی کے ذریعے سے میر سے ووست اور میر سے دعمن پہانے جائیں المام بیں ان بی کے ذریعے سے میر سے اور شیطان کے گروہ میں انتیاذ ہوگا۔ ان بی کے ذریعے سے میر سے دین کا تیام اور میری صدود کا تحفظ ہوگا۔ میر سے ادکام کا فذ ہو گئے تمباری اور ان کی او لاد

میں جتنے آئمہ علم السلام ہوں گان کے واسطے سے میں بعدوں اور کنے واسطے سے میں بعدوں اور کنے واسطے سے میں بعدوں اور کنے والے کر وال گا اس کے ذریعے سے میں اپنی زمین کو اپنی تشیع و تقدیس و تہلیل و تجییر و تبجید سے آباد کروں گا۔

ای کے ذریعے سے میں اپنی زمین کو اپ وشنوں سے پاک کر کے اپنے اولیاء کو اس کا دارث ماؤں گا۔ ای کے ذریعے سے کا فروں کی بات نیخی اور اپنی بات او نچی کروں گا۔ اس کے ذریعے سے اپ علم سے اپ شہر وں اور اپنی بات او نچی کروں گا۔ اس کے ذریعے سے اپ علم ضرائے اور ذخیر سے اپنی بعدوں میں جان ڈالوں گا۔ اس کے ذریعے سے تمام خزانے اور ذخیر سے باہر زکالوں گا۔ اپنی مشیت اور اپنے اراد سے سے اس پر تمام اسر ارور موز آشکار

کروں گااور اپنے احکام کے نفاذ میں اپنے ملا نکھ سے اس کی مدد کردں گا۔ وہی میر اوا قعی دلی اور میرے ہندوں کے لیے سچابادی ہوگا۔ (امالی شیخ صدوق میں معارالا نوار جلد ۱۱،ار دوتر جمد صفحہ ۱۲۹۔ ۱۳۰)

امامِ قائم کو جحتِ آلِ محمد "کے لقب سے یاد کرو ابو ہاشم جعفری کتے ہیں کہ میں نے حضرت ابو الحن امامِ علی المدیقی علیہ السلام کو فرماتے ہوئے شاہے۔

تر جمہہ : میرے بعد میرا جانشین میر افر زند حن ہو گااس کے بعد اس کے حانشین کاد در آئے گا تواس وقت تہلارا کیا حال ہو گا ؟

میں نے عرض کیا: آپ پر قربان پیکوں؟

آپ"ئے ارشاد فرمایا:

اس لیے کہ تم لوگ اس کو جسمانی طور پر نہ دیکی سکو گے اور نہ اس کا نام لینا تہمارے لیے جائز ہوگا۔

میں نے عرض کیا کہ پھر ہم لوگ انہیں کیا کہ کریاد کریں ہے؟ آپ نے ارشاد فرمایا: اس کو جمت آلِ محمد صلی اللہ و علیہ و آلہ وسلم کہہ کریاد کرنا۔

علی بن محمد بن سندی نے محمد بن الحن سے اور انہوں نے سعد ہے اس

کے مِثل روایت کی ہے۔

(جار الانوار ، كناسه)

يورپ نټاه ہو جائے گا

فاضل معاصر سید ایرائیم موسوی زنجانی نے ائبات الجبہ کے صفحہ
نبر (۲۸۰) پر اند لس کی ووبارہ تباہی کو بھی علائم میں شار کیا ہے علائم ظہور میں
عماد زادہ اصفہانی نے رسول اکرم سے نقل کیا کہ میر ب بعد جزیرہ اند لس فتح
کیا جائےگاأن پر اہلی فکر غالب آجا کیں گے اور وہ اہلی اند لس کے مال و دولت اور
اکثر علا قول کو چین لیس گے۔ ان کی عور توں اور چوں کو اسیر کریں گے پر دب
چاک کر دیں گے اور شہر وں کو تباہ کر دیں گے اکثر ستیاں ویر انوں اور صحر اوّں
جی تبدیل ہو جا کیں گی اکٹر لوگوں کو ان کی زمینوں اور دولت سے بد دخل
میں تبدیل ہو جا کیں گی اکٹر لوگوں کو ان کی زمینوں اور دولت سے بد دخل
کر دیں گے تو وہ جزیرہ کے بیشر جھے کو لے لیس گے اور کم ترباتی رہ جائے گا اور
غرب میں شور و شر ہو گا خوف کا عالم ہو گا ان پر کھوک اور مردگائی مسلط ہو گی اور
فتوں کی کثرت ہو جائے گی اور لوگ ایک دوسر سے کو کھانے لگیں گے اس
وقت مغرب اقصیٰ سے نسل فاطمہ زہراً بہنت پر سول اللہ سے ایک شخص مز وج

(علائمُ الطهور نجانی صفحه ۳۸۰)



ا فریقہ کے بارے میں علامات

العرف الوروی جلد ۲ صفحہ نمبر (۲۸) پر ندکور ہے کہ نعیم ان حماد نے ابو قبیل سے نقل کیا ہے کہ افریقہ میں ایک شخص بارہ سال تک حکومت کرے گا مچراس کے بعد فتنہ ہوگا اور ایک سیاہی مائل شخص حکومت لے لے گااور عدل وداد سے پُر ہوگا مجروہ ممدیٰ کی طرف روانہ ہوگا اور پہنچ کر اطاعت قبول کرے گااور اس کی طرف ہے جنگ کرے گا

(العرف الور دي جلد ۲، صفحه ۲۸)

رُّر ب ظهورِ مهائ چین کی حالت

ار بعین میر لوحی میں ضل ان شاذان کے جھرے امام محمر باقر علیہ السلام سے روایت کی ہے کہ آپ نے ارشاد فرمایا کہ گویا میں وکی رہا ہوں کہ مشرق بعید کی ایک بیستی ''شیا'' سے ایک قوم خروج کرے گی اور اہل چین سے ایپ خق کا مطالبہ کرے گی لیکن اُن کا حق شیں ملے گاوہ لوگ بھر اپناحق طلب کریں گے اشیں بھر منع کیا جائے گاجب وہ ویکھیں گے تواپی گر دنوں پر اپنی تلواریں رکھ لیس گے توالمی چین اُن کا مطالبہ پور اکرنے پر آمادہ ہو جا ہیں گے لیکن وہ لوگ اے قبول شیں کریں گے اور خلق کثیر کو قبل کر دیں گے بھر وہ ترک اور ہندو ستان کے سارے علا قوں پر مسلط ہو جا کیں گے اور اس کے بعد خراسان کی طرف متوجہ ہوں گے اور اہل خراسان سے اُن کا علاقہ طلب کریں گے اور ان کا ارادہ یہ ہوگا کہ حکومت کو گے اور نہ جو گا کہ حکومت کو گے اور نہ دیے بھر گے اور ان کا ارادہ یہ ہوگا کہ حکومت کو گے اور نہ دیے بر جر آ قابض ہو جا کیں گے اور اُن کا ارادہ یہ ہوگا کہ حکومت کو

صاحب الامركے ہاتھوں تك پنچاديں پھر ظهور كے بعديد أن لوگوں سے انقام ليس م جنھوں نے انہيں قل كيا تھااور مهدى كى حكومت ميں دنيا كے ختم ہونے تك زندگى نمر كريں گے۔

(الزام الناصب جلد دوم صفحه ١٧٠)

چین فناہو جائے گا

مناقب ان شراشوب میں عائم ظهور کے سلسلہ میں تحریر ہے کہ جب چین فنا ہو جائے اور مغربی حرکت کرے گا اور عبای یا عمانی سز اختیار کرے گا اور عبای یا عمانی سز اختیار کرے گا اور سفیانی کی جیعت کی جائی گی تواسوقت ولی اللہ (ممدی علیه السلام) کو اذن خروج ویا جائے گا

(اثبات الحجة صفحه ٣١٢)

روس کالشکر سر نگول ہو گا

رسالہ الرزیہ تالیف محی الدین عربی ۱۳۳۱ ہجری میں ممایر وعلیٰ الملکوک (جوباد شاہوں پر گذر نے والی ہے) کے ذیل میں تحریر ہے:۔
روس کا طالع منحوس ہے اس کا لشکر سر عگوں ہوگااس کاباد شاہ مایوس ہوگاوہ اس کے دوعظیم واقع ہوگاوہ اس کے دوعظیم واقع ہول گے۔

ا۔ ملک کے مخلف علا قول میں اختلاف ہوگا یماں تک کہ طران

ا نہیں ختم کرنے ہے عا جز آجائے گا۔

۲۔ پے ور پے مختف امراض پھیل جا بی گے اور جان و مال کا خدار ، ہوگا اور اس کا اقتدار حاصل کرنے کی تمناجر من ، نمبار ، بھر ، مر کیہ اور تھا ز

کو گ کریں گے ہر پر ندہ نیچے اور بلندی کے لئے پستی ہے پھر فر ہایا کہ ظلم کا گھر خراب ہوگا اگر چہ تا خیر بی کیوں نہ ہوا گر بڑاس سے نجات پالے گا بلغاریہ کی طرف پنچے گا اور اہل بلغاریہ کو وطن سے دوری اختیار کرنا پڑے گی۔ ایر ان میں متواز دوسال تک اختال گات رہیں گے جو ساقط ہوا ہے۔ وہ والی ہوگا اور بینے اس متواز دوسال تک اختال گات رہیں گے جو ساقط ہوا ہے۔ وہ والی ہوگا اور بینے اس متواز دوسال تک اختال گات رہیں گے جو ساقط ہوا ہے۔ وہ والی ہوگا اور بینے اس متعلی کے اس منازی کے اور انشاء اللہ وہ استقلال عاصل کرے گا۔ پھر کھا کی ہے سین قیام کر۔ اے لام خطاب کر۔ استقلال عاصل کرے گا۔ پھر کھا کی ہے سین قیام کر۔ اے لام خطاب کر۔ اس میم حکم کر اور مسلمانوں کو مجتمع کر۔ جارہ باد شاہ گذر گئے۔ حق آگیا اور باطل میں خام کر اور مسلمانوں کو مجتمع کر۔ جارہ باد شاہ گذر گئے۔ حق آگیا اور باطل میں ظاہر ہوگی۔ خوصت ہے جس کا وہ انتظار کرتا ہے ہماری حکومت آخری زمانے کی نا نے بیماری حکومت ہوگی۔

(علامات ظهور مهدئ صفحه ۲۲۰ ۲۲۲۱)

آذربائجان سے مددآئے گی

غیبت نعمانی میں حضرت امام محمد علیہ السلام سے روایت ہے کہ فرمایا کہ ہمارے لئے آذر بائیجان سے ایک مدوآئے گی جس کا مقابلہ کوئی شے نہیں کر سکے گی جب وہ وقت آجائے تو گھر میں جم کر بیٹھ جاؤ پھر صحر اسے ندا ہو گی تو حرکت کرنے والا حرکت کریگا تواس کی طرف جاؤاگر چہ گھسٹ کر جانا ہو۔ میں و کھے رہا ہوں کہ رکن اور مقام کے ور میان وہ نی تر تیب کے ساتھ کتاب پر بیعت لے رہاہے جو عرب کے لئے ہے۔

(غيبت نغماني)

مشرق ہے ایک مخص کا خروج

جلال الدین سیوطی نے العرف الوردی صفیہ 2 جلد دوم میں اپنے سلسلہ سند سے علی ابن ابی طالب علیہ السلام سے نقل کیا ہے کہ آپ نے ارشاد فرمایا کہ ممدی سے قبل الل بدیت سے ایک مخض خروج کرے گاوہ آٹھ مینے تک اپنی تلوار اپنے کندھے کی اور قتل و غارت کرے گا بھر وہ بدیت المقدس کارخ کرے گالیکن سنچے سے پہلے مرجائے گا۔

(العرف الوردي صفحه ۷۰ جلد دوم)

حضرت امام محمہ باقر علیہ السلام نے ارشاد فر مایا کہ گویا کہ میں ایک قوم کود کیے رہا ہوں جو مشرق سے خروج کرے گی اور اپنے میں کا مطالبہ کرے گی اور اپنے میں کا مطالبہ کریں گے بھر انکار ہوگا تو جب وہ یہ ویکھیں گے تو اپنی تکواروں کو اپنے کند ھوں پر رکھ لیس گے بھر ان کا مطالبہ مان لیاجائے گالیکن وہ قبول نہیں کریں گے اور قیام کرے حق لے لیں گے اور وہ حق صاحب الامر تک بہنچا کیں گے ان کے مقول شہید ہوں گے۔

مشرق کی آگ کے وقت خروج یقینی ہے

حضرت امام حمین علیہ السلام نے ارشاد فرمایا جب مشرق میں آگ د کیمو جو تین دن یاسات دن (راوی نے اختلاف کیا ہے) باتی رہے تواس وقت انشاء اللہ آلِ محمد علیہ السلام کے خروج کی تو تع رکھو مزید فرمایا کہ آسان سے ایک منادی مهدی کے نام کی ندادے گا جے مشرق و مغرب کا ہر انسان نے گا یمال تک کہ سویا ہوا جاگ الشے گا لیٹا ہوا بیٹے جائے گا اور بیٹھا ہو اخوف سے کھڑا ہو جائے گا فد ااس پر محم کر کے گا جو اس آواز کوئن کر لیک کے گااس لئے کہ یہ تواجر ائیل ایمن کی ہوگی۔

مشرق کی نشانی د نیا کے سب لوگ دیکھیں گے

فالد ان سعد نے کہا کہ عمود کی صورت میں مثر ق ہے ایک نشانی فاہر ہوگی جے دنیا کے سارے لوگ دیکھیں گے جو اس کیفیت کو دیکھے وہ اپنے ایک سال کا غلہ فر خیر و کرلے حضرت اہام جعفر صادق علیہ السلام نے ارشاد فر ہایا کہ جب تم آسان میں ایک علامت دیکھوجو کہ عظیم آگ ہے جو مشرق سے فلاہر ہوگی اور کئی را توں تک رہے گی اس وقت لوگوں کی پریشانی وور ہوئے کاوقت ہے اور یہ ظہور قائم علیہ السلام ہے کچھ قبل ہوگا۔

ایل عراق پرآرام مفقود ہو جائےگا

حضرت امام صادق علیہ السلام نے فرمایا کہ قیام قائم علیہ السلام سے

قبل لوگوں کے گنا ہوں کی ز جرو توقع کی جائے گ

ہے۔ آگ کے ذریعے جو آسمان میں ظاہر ہو گ۔

ہے۔ آگ کے ذریعے جو آسمان میں پھیل جائے گ۔

ہے۔ ہو نے ذریعے کے ذریعے ۔

ہے۔ ہو دین د ھننے کے ذریعے اور

ہے۔ ہو دین د ھننے کے ذریعے اور

ہے۔ ہو الی خون ریزی کے ذریعے ۔

ہے کہ ۔ وہاں ہو نے والی خون ریزی کے ذریعے ۔

ہے کہ ۔ وہاں کے باشدوں کی ہا گت کے ذریعے ۔

ہے کے ۔ وہاں کے باشدوں کی ہا گت کے ذریعے کہ اُن کے لئے آرام ہو قرار منقود ہو جائے گا۔

و قرار منقود ہو جائے گا۔

جبشيبان مالح كابيعت كاجائ

حضرت امير المومنين عليه السلام نے ارشاد فرمايا كه اے جامر جب
ناقوس چينے گئے جب كابوس عارض ہو جائے اور جب تھينسي يو لئے لگيں تواس
وفت عجائب ظاہر ہوں کے اور كيے عجائب؟ جب نصيميٰ ميں اگ روش ہو
جائے اور سياہ واد ى ميں عثانی پر جم ظاہر ہو جا كيں اور شر بهر ہ مضطرب ہو
جائے اور الى ميں ے بعض لوگ بعض پر غالب آجا كيں اور ہر قوم دوسرى قوم كى

طرف جست کرے اور خراسان کی فوجیں حرکت میں آجائیں اور جیعت یا پیروی کی جائے ارض طالقان سے شعیب این صالح تمیں کی اور سعید کی جیعت خوز ستان میں کی جائے اور مروان کرو پر جم نصب ہو جائیں اور عرب ارمین و سقاب کے علاقوں پر غالب اور ہر قل روی قططنیہ میں سفیانی کے سرواروں کی اطاعت کرے تواس وقت توقع رکھو کہ وہ ظاہر ہو جس نے موسیٰ علیہ السلام سے بذریعہ ورخت کو وطور پر بات کی تھی تو وہ علانیہ ظاہر ہو جائے گا آگاہ رہوکہ میں نے بہت سے جائب چھوڑو نے اور بہت سی با تیں ترک کرویں اس لے کہ ان کا مرواشت کر نے اللہ نہیں یا تا۔

(ملامات ظهور مهدى صفحه ٢٤١٦ ٢٤١)

تهران، بغداد دهنس جائے گا

فیبت نعمانی میں ہے قائم فیبت کے بعد اس وقت ظاہر ہوگاجب ایک دوسر استارہ طلوع کرے گادر اس پر سیاہ جھنڈے لہر اتے ہوں گے اور تہر ان بتاہ ہوگا بغداد زمین میں و هنس جائیگا سفیانی کا خروج ہو گا اور آر مینیہ اور آؤر بائجان کے جوانوں سے بدی عباس کی جنگ ہو گی جس میں ہزاروں قبل ہو گ جر شخص کے ہا تھ میں مزین تلوار ہوگی ہے الی جنگ ہو گی جس میں ہر طرف موت کی یکار ہو گی نرخ موت اور عظیم طاعون۔

(غيبت تعمالي)

عجم کے گروہوں میں انتلاف

مجمع النورين ميں غيبت ابن عقد ہ سے نقل كيا "يا ہے كه حضرت امام

جعفر صادق علیہ السلام نے فر مایا کہ تجم کے دوگر و ہوں میں کلمئہ عدل کے لفظ پر اختلاف ہوگا جس میں ہزار دں اور ہزار دں افراد قتل ہوں گے ایک شخص طبر سی ان کی مخالفت کرے گا توائے سولی دے کر قتل کر دیا جائےگا۔ (مجمع النورین)

آئمکہ کی قبر ول کو خراب کریں گے حضرے سول متبول نے ارشاد فرمایا : کہ لوگوں پر امیلائمانہ آنے والا ہے جب وہ آئمٹہ کی قبر وں کوبید و قوں سے خراب کریں گے۔

خر اسمان سے پریشائی دور ہوئ کی امید معروف ان خربوذمیان کرتے ہیں کہ ہم جب ہی حضرت امام محمہ باقر علیہ السلام کی خدمت حاضر ہوئے آپ نے ارشاد فرمایا کہ خراسان ۔خراسان سیستان ۔سیستان ۔گویا کہ وہ ہمیں بھارت دیتے تھے کہ ان علاقوں سے ہماری پریشانی دور ہونے کی امید ہے۔

قم علم و فضل کامعد ن ہو گا حضر ت امام صادق علیہ السلام نے کوفہ کا تذکر ، کرتے ہوئے ارشاد

(علامات ظهور مهدي صفيمه ۲۷۵)

ہو گااور اس کے لئے امن فقل قم اور المیِ قم کی طر ف سے ہو گا۔ پو چھا گیا کہ اس کے دونوں اطر اف کیا ہے ؟

فرمایا۔ ایک بغداد دوسر اخراسان ہے اور ان دونوں کی تکواریں رے میں مجتمع ہوں گی تو اللہ اُن پر عذاب میں عجلت کرے گا اور ہلاک کرے گا۔ تو اہل رے قم میں پناہ لیں مے اور اہل قم انہیں پناہ دیں مے پھر اہل رے وہاں ہے اروستان کی طرف منتقل ہو جائیں ہے۔

قزوین سے خروج

شیخ طوی نے کتاب نیبت میں رسول اللہ سے روایت کی ہے کہ ایک مخص قزوین سے خروج کرے گااس کانام الیک نبی کانام ہو گابہت جلد لوگ اس کی اطاعت کر لیس سے وہ مشرک ہوں یا مومن اور وہ شخص پہاڑوں کو خوف و ہراس سے نمرکے گا۔

قزوین ہے زندیق کا خروج

محمد ای بھر روایت کرتے ہیں کہ میں نے تحمد بن حنفیہ سے کہا کہ یہ امر کب و قوع پزیر ہوگا اور کب تک اس کا انتظار ہوگا آپ نے اپنی سر کو جنبش وی اور فرمایا کہ ابھی یہ کیسے و قوع پزیر ہوگا ابھی تو زمانے نے اپنی تختی اور تنگی منیں د کھائی اور ابھی تو بھا نیوں نے ایک دوسرے پر ظلم نمیں توڑے۔ ابھی وہ امر کیسے و قوع پزیر ہو سکتا ہے ابھی اس بادشاہ نے ظلم و ستم بھی نمیں کیا ہے ابھی

یہ امر کیے واقع ہو سکتا ہے ابھی تو قزوین سے زندیق نے خروج نمیں کیا ہے جو وہاں کے پروے بھاڑوے کا اہم مختصیتوں کی تحکیر کرے گااس کی فصیلوں کو تبدیل کروے گا اس کی فصیلوں کو تبدیل کروے گا اور اس کی خوش حالی کو ختم کروے گا جو بھی اس سے جنگ کرے گاوہ قلیر ہوجائے گا اور جو اس کی بروی کرے گاوہ وہ آئیں ہوگا یہ اس تک کہ لوگوں کے دوگروہ ہوجائیس گے بیروی کرے گاوہ کا فر ہوجائیس اس کے کہ لوگوں کے دوگروہ ہوجائیس گے ایک گروہ اپنے وین کی جابی پر گریہ کرے اور وہ سر اگروہ اپنی و نیا کی ہر باوی پرگریہ کرے گا

خراسان والاكوفه ملتان پر قضير كرے گا

حضرت امام صادق عليہ السلام ہے روایت ہے کہ انہوں نے اپنے والد ہے سااور ان کے جدا میر المو منین علیہ السلام نے پہر الی بی بیں بیان کیں کہ جو ان کے بعد سے لے کر قیام قائم اسک و قوع پر پر ہونے والی تھیں اس پر حضرت امام حسین علیہ السلام فے وریافت کیا کہ ۔یا امیر المو منین اللہ کب اس ذہین کو ظالموں سے پاک کرے گاآپ نے فرمایا اس وقت تک یہ زمین پاک منیں ہوگی جب تک محترم خوان نہ بھاویا جائے۔پھر آپ نے بدنی امیہ اور بدنی عباس کا تفصیل سے ذکر فرمایا۔ اور اس کے بعد فرمایا۔ کہ جب ایک قیام کرنے وال خراسان سے قیام کرے اور کوفہ و ملتان پر غلبہ حاصل کرے اور اہر و و بلم والا خراسان سے قیام کرے اور کوفہ و ملتان پر غلبہ حاصل کرے اور اہر و و بلم کے لوگ اس کاسا تھ ویں اور ترک کے پر چم میرے بیٹ کے لئے ظاہر ہوں جو مختلف اطر اف وجو انب بیل پر اگنہ ور سے جو ل اور اس سے قبل ہری حالت و کیو

چکے ہوں اور جب بھر و جاہ ہو جائے اور مصر میں امیروں کا امیر قیام کرے۔ پھر آپ نے ایک طویل گفتگو فرمائی اور ارشاد فرمایا کہ جب ہزاروں افراد جنگ کے لئے آمادہ ہو جائیں اور صفیں تیار ہو جائیں اور مینڈ ھااپنے ہے کو قتل کر دے اس و قت ایک دوسر اشخص قیام کرے گااور خون کا انقام لے گااور کا فر ہلاک ہوگا اس وقت وہ قائم جس کی تمناکی جارہی ہے اور وہ غائب امام جو صاحب شرف و فضیلت ہے خروج کرے گا۔ اور اے حیین ۔ وہ تمماری نسل صاحب شرف و فضیلت ہے خروج کرے گا۔ اور اے حیین ۔ وہ تمماری نسل عام ہوگا ایسا ہو جو بھی و بے نظیر ہوگا۔ مجد حرام کے دو ارکان کے در میان مخضر گروہ اور دو آلات جنگ کے ساتھ ظاہر ہوگا اور جن وائس پر فران ہوجود ہو اور اس کا خاتمہ کروے گا۔ بھارت ہے اس کا خاتمہ کروے گا۔ بھارت ہوگا۔ میں موجود ہو اور اس کے عمد میں زندگی گذارے۔ فرانہ ہا کے اور اس دور میں موجود ہو اور اس کے عمد میں زندگی گذارے۔

عراق میں نسل نبی کے بچے کا قتل

سید علی ہمدانی خجفی نے کتاب روضۃ العلویہ سے نقل کیا ہے کہ امام علیہ السلام نے فرمایا کہ جب نسل نئی سے ایک چہ عراق میں قتل کر دیاجائے اور فوجی حکومت کرنے لگے تولوگ سر تاپا صدة لب ہو جا کیں گے اور شور وشر یوھ جائے گا۔ مومن کی توجین کی جائے گی۔ انجمن سازی یوھ جائے گی اور ایمان کم ہو جائے گا ان لوگوں کے نزد یک منبروں سے خطاب کرنے والے مردارکی طرح ہوں گے ہر شخص اپنے نفس کے لئے سوچے گا بعض لوگوں میں

اضطراب پیدا ہو گااور کھے مدت تک رہے گااس وقت شالی عراق میں بہت سے علاقے منہدم ہو جائیں گے اور بے گناہ لوگ کثرت سے قبل ہوں گے ۔ پھر عالی شان محل اور دوسر سے علاقے بھر ہمیں تقمیر ہوں گے اس کے بعد ایک گروہ شام سے آنے گاجو قرض کا مطالبہ کرے گااس حدیث کی صحت میں تا ہل ہے۔ گروہ شام سے آنے گاجو قرض کا مطالبہ کرے گااس حدیث کی صحت میں تا ہل ہے۔

امير المومنينٌ كا خطبه لولوة

علقہ بن قیم نے بیان کیا کہ ایک ون حضر ت امیر المو منین علی ابن الی طالب علیہ السلام نے مجد کونہ میں ایک خطبہ دیا جس کا نام لولوۃ ہے اس خطبہ کے آخر میں فرمایا کہ آگاہ ہو جاؤک میں عنقریب تم سے جدا ہو کر عالم غیب کی طرف چلا جاؤں گا تو تم بدنی امیہ کے فتہ اور کر وی حکومت کے منظر رہو اور اس کے بھی منظر رہو جے اللہ نے زندہ کیا آھے ہار ڈالا جائے اور جے اللہ نے مروہ کیا اسے زندہ کیا جائے تو اس وقت تم اپنی عبادت گاہوں میں گوشہ نظین ہو جانا تھا کی آگ کو دانتوں کے نیچ دبالینااور کشرت سے خداکاذکر کرنا آگر تم سمجھ سکو تو ذکر خدا ہر شے سے ہور گ ہے پھر فرمایا کہ وجلہ و جیل و فرات کے در میان ایک شہر ممایا جائے گا جے زور ایکار اجائے تو تم دیکھو کے کہ گج اور این سے تعمیر ہوا ہے اور اسے سونے چاندی ، لاجو رود ، مر مر ، رخام سے مزین کیا جائے گا اور آب میں عاج اور آبدوں سے در وازے لگائے گئے ہیں این سے تعمیر ہوا ہے اور اس میں عاج اور آبدوں سے در وازے لگائے گئے ہیں۔ ہر طرف ساج ، عرع اور صوبر کے ور خت ہیں اور مشخکم محلات تعمیر کئے ہیں۔ ہر طرف ساج ، عرع اور صوبر کے ور خت ہیں اور مشخکم محلات تعمیر کئے ہیں۔ ہر طرف ساج ، عرع اور صوبر کے ور خت ہیں اور مشخکم محلات تعمیر کئے ہیں بدنی شدیصدیان کے چو ہیں افراد کے بعد

وگرے اس کے علم ان بیں ان بیل سفات، مقلاص ، جموح، خدوع ، مظفر مونث ، نظار ، کبش ، مستور ، عنار مصطلم ، مستعصب ، علام ، ربان مخلید خ ، سیار ، مترف ، کرید ، اکتب ، اکلب و سیم سیلام اور عیدوق بیل اور فاک دید خ اگل دیگ کا قبہ سرخ میدان میں سایا جائے گا اور اس کے عقب میں قائم یہ حق ممالک کے در میان اپنے چر ہے ہاں طرح نقاب انھایا جائے گا کہ کویا چیکت موئے ستاروں کے ور میان روشن چاند ہے۔ آگاہ ہو جاؤکہ اس کے خروج کی وس علا متیں ہیں۔

اس کی پہلی علامت و مدار ستارے کا طلوع ہے جو ستارہ حاوی کے قریب ہوگا اور بی کشادگی کی قریب ہوگا اور بی کشادگی ک علامت میں اور ایک علامت سے دو سری طامت تک در میانی عمد تعجب کا ہے۔ جب دس علامتیں بوری ہو جا کیں گی تو آئی وقت ماہ تابال ظاہر ہوگا اور کلمہ اضاعی جو تو حید خداکا شعار ہے کامل ہو جا نیگا۔

(الزام الناصب جلد دوم، سفحه ۱۶۲۶)

مسجد مرا ثا کے را ہب سے جناب امیر کی گفتگو جار ان عبداللہ انفساری نے کہا کہ مجھ ہے اُنس بن مالک خادم رسول اللہ نے میان کیا کہ جب حضرت علی علیہ السلام جنگ نہروان سے پلٹے تور اثار پر اور اُڈالا وہاں غار میں حباب نامی ایک را ہب قیام پزیر تھار اہب نے اشکر کا غو غا سنتے ہی غار ہے نکل کر حضرت امیر المومنین علی این افی طالب علیہ السلام کی فرغ سنتے ہی غار ہے نجھ اضطر اب ہوااور وہ بے اختیار فوج کے قریب آگر ہو پہنے کی فرغ کی وہ کے اسلام کی فرغ کی اُن کی دائی کی اُن کی دیا ہے۔

لگا۔ کہ بیہ کون ہے ؟ اور اس فوج کا سالار کون ہے ؟ اوڑوں نے کہا کہ بیہ امیرالمومنین علیه السلام سالار ہیں اور جنگ نهروان ہے واپس آرہے ہیں۔ حماب تیزی کے ساتھ فوج کے در ممان ہے گذر تا ہوا حضر ت علی علیہ السلام کے قریب آگر کھڑا ہو گیا ۔اور کہا ۔السلام و علیک یا امیر المومنین ا حقاحقا۔آپ نے فرمایا کہ تحقیمے کیے علم ہوا کہ میں حقیقت میں امیر المومنین مول۔ اس نے کماکہ اس کی خبر ہمارے علاء اور پیشواؤں نے وی ہے آپ نے فرمایا۔اے جاب ! ایمی یی کماتھا کہ را ہب نے ہو چھاکہ آپ کو میرے نام کاعلم کسے ہوا ؟آٹ نے فرمایا مجھے میر ہے حبیب رسول ؑ نے بتلایا تھا۔ حیاب نے کہا کہ آٹ بیعیت کے لیے ہاتھ برمھائیں میں گواہی ویتا ہوں کہ اللہ کے علاوہ کوئی معبود شمیں ہے اور محمدؓ اللہ ﷺ سول ؓ ہیں اور آپ علی این الی طالب علیہ ، السلام رسول کے وصی و جانشین ہیں آئے نے بوجھا تیر اسکن کہاں ہے۔ کہا۔ کہ یمال ایک غار میں رہتا ہو ں۔ فرمایا کہ آن کے بعد غار میں نہ روہایحہ یمال برایک معجد تقیر کر اور اُس کانام اُس کے بانی کے نام پر رکھ دے۔ مرا انانای ایک شخص نے مجد کی بہاکی اور اس کے نام ہے مسجد مشہور ہوئی چر حضرت علی علیہ السلام نے بوچھا حماب ۔ تو مانی کمال سے بیٹا ہے کما کہ وجلہ ہے او تا ہوں۔ کمار کہ ا ہے لئے کوئی چشمہ یا کنواں کیوں نہیں کھو دلیا ؟ عرض کی جب بھی کنواں کھو دا گیا تو شوریانی نکلا به فرمایا که اس مقام بر کنوال کھو دو۔ جب کنوال کھو دا گیا تو ا یک چٹان بر آمد ہو ئی جسے ا کھاڑیا ممکن نہ ہوا۔ خود حضرت علی علیہ السلام نےوہ جِثَانِ الْمَارُي _ تُواْسِ كَ يَنْجِ سے انتها كَي ميشمااور شمند اياني مرآمد مواأس وقت آئے نے فرمایا کہ اے حباب۔ جلد ہی تیری مسجد کے پہلو میں ایک شر سمایا جائے

گا۔ جس میں جار افراد کی کثرت ہو گی وہاں پر بلائے عظیم ہو گی یہاں تک کہ ہر شب جمعہ میں ستر ہزار زنا کاریاں ہوں گی اور اس مجد کار استہ بعد کر دیں گے جو شخص بھی اس میجد کو منہد م کر ہے گاوہ کافر ہو گا بھر اس میجد کی دومار ہ تغمیر ہو گی جب وہ مجد کو منہد م کریں گے تو تین سال تک حج ہے رو کیس گے اس وقت ان کی کھیتاں جل جائیں گی اور اللہ تعالیٰ اُن پر اہل سفخ (عراق کے ایک علاقے کا نام ہے) میں ہے ایک محض کو مسلط کریگاوہ جس شر میں داخل ہو گا اہے تناہ کریے گا اور شہر ہوں کو ہلاک کریے گا اور وہ و وہار ہ تھی ان لوگوں کی طرف والبِس آئِگا اس وقت نداوگ تمين سال تک قبط اور منگائي ميں مبتلار ہيں. کے اور مزید نختاں جھپلیں گے اور وہ شخض کیر ان لو گوں کی طرف آئے گاای کے بعد وہ بھر و میں داخل ہو گااور جس گھر کو آگھے گاأے تناہ کروے گااور اس کے ساکنوں کو ہلاک کرے گااور یہ اُس وقت ہو گاجپ کھنڈر تقمیر ہو جائے اور وہاں جامع مبحد تعمیر ہو جائے اُس وقت بھیر ہ تاہ ہو گا کچر وہ تجاج کے ساکر دہ شہر واسط میں دا غل ہو گااور بھیر و جیسا سلوک کر نگاانل بغداد بھاگ کو فیہ میں بناہ لیں گے اس دقت اہل کو فیہ اس ہے ہر اساں نہیں ہوں گے پھر وہ خود اور وہ لوگ جنمیں بغد اد لایا ہو گامل کر میری قبر کی طرف روانہ ہوں کے تاکہ أے کھود ڈالیس اس وقت سفیانی اُن کے مقابل آجائے گا اور جنگ کے بعد اسیں تکست و ہے کر قتل کر و ہے گا بھر کو فد کی طرف ایک فوج بھچے گا تو وہاں کے پہلے لوگ اس کی اطاعت کرلیں گے بھر اہل کو فیہ ہے ایک شخص سفیانی کے مقابلیہ کے لئے اٹھے گاسنیانی اے کر فار کر کے فصیل شہر کے اندر قید کر دے گاجو ا س بناہ کاہ میں جائے گا اے امان مل جائے گی پھر سفیانی کا لشکر کو فیہ میں واخل

ہوگااور قبل عام کرے گاکی کو باتی نہیں چھوڑے گااُل اُن میں ہے کوئی شخص یوے درے کے ساتھ بھی گذرے گا تو وہ اسے بھوڑ دے گا اور اگر ایک چھوٹے چے کو دیکھے گا تو قبل کردے گا۔ اے حباب۔ آگاہ ربوکہ اس دقت عظیم امور ظاہر بول کے اور رات کی طرح تاریک فتنے پیدا ہول کے اے حباب جو میں کہ رہا ہوں۔ اُسے یادر کھو۔ (حار الا نوار جلد ۵۲، صفحہ ۲۱۸)

مجد کو فه کی دیوار کاگر نا

حفزت الآم صادق عليه السلام نے ارشاد فرمايا كه جب مجد كو فه كى وه دي وه ديوارگر جائے جو عبداللہ ابن مسعود كے گھر كى طرف ہے توأس وقت وہاں كے بادشاہ كو زوال ہو گااور اس كے زوال سے قريب قائم عليه السلام كافر دج ہوگا۔ موگا۔

يوم عرب پر حادث

حصرت امام صاوق علیہ السلام نے فرمایا کہ تمہاری لیخی مجد کو فہ کے پاس بدنی فلال کاایک پر احادثہ ہوم عرب کے موقع پر ہوگا جس میں باب الفیل سے صابون فروشوں کے بازار تک چار ہزار آدی قتل ہوں گے تو تم اس دن اس راستے سے پر ہیز کر فادروہ محض بہتر رہے گاجو محلّہ انصار کار استہ اختیار کرے۔ (الزام الناصب جلد دوم سفیہ ۱۳۵)

حجاز میں آگ آور نجف میں یانی آجائے

حفرت علی علیہ السلام نے فر مایا کہ جب تمہارے خباز میں آگ پیدا ، و جائے اور تمہارے نجف میں پانی جاری ہو جائے تو اُس و قت اُس کے ظہور کی تو قع رکھو۔

(الزام الناصب جلد دوم ، صفحه ۱۳۵)

بغد او پر تا تاری حکومت کرنے لکیس

حفرت امام زین العابدین علید السلام نے فرمایا کہ تمہار انجف سیلاب وبارش سے تھر جائے اور جب تجاز اور مدوری آگ فلاہر ، و جائے اور بغد ادپر تا تاری حکومت کرنے لگیس تواس وقت قائم " منتظر کے ظہور کی تو تعر کھو۔ (الزام الناصب جلوروم ، صفحہ ۱۲۵)

قبر کمیل ؒ کے اطراف میں باغات ہوں گے

محملی این زیاد نے حضرت امیرالمومنین علیہ السلام ہے کہا کہ مولا۔ میں آپ ہے ایک خواہش کر ناچاہتا ہوں لیکن حیاس ہے مائے ہے آپ نے فرمایا۔ اے کمیل ۔ اپنی خواہش میان کر و کہا۔ مولا۔ میں چاہتا ہوں کہ میری قبر آپ کے جوار میں ہے آپ کمیل کی طرف متوجہ ہوئے اور فرمایا۔ کمیل ۔ تہماری قبر یمال ہے گا۔ کمیل نے عرض کی ۔ مولا " ۔ یہ تو آپ ہے بہت دور ہے فرمایا۔ ہم گر نہیں۔ یہ مستقبل میں قریب ہوجائے تا اور بیہ بھی جان لوکہ آئری

زمانے میں تمہاری قبر کے جاروں طرف اعلیٰ مکانات اور باغات ،وں کے اور ہر قصر میں ایک ایسا چراغ ہو گاجو تمہاری نگر انی کرے گااور ایک ایساآئینہ ،وگاجس میں دور اور نزدیک کی چیزیں نظر آئیں گی اور یہ سب باتیں ہمارے قائم آل میماً کے ظہور کی علامات ہیں۔

(روضة العلوبيه ، فواله علائم ظهور زنجاني ، صفحه ۲۲ ۳)

شام میں پر حجم شامل ہو کئے

میں حضرت امام رضاعلیہ السلام نے ارشاد فرمایا کہ گویا ہیں و کیے رہا ہوں کہ چھ پر چم جو سزرنگ ہیں رکھے ہوئے ہیں مصر میں حرکت کریں کے اور شام اور اطراف شام میں واغل ہوں کے اور صاحب عصاء کے لڑے کو ہدیہ کیئے جائیں گے۔

(الزام الناصب جلد ۲، سفير ١٣٠)

قیں اور خراسان کے پر چم

امام علیہ السلام سے کی نے فرج ظہور کے بارے میں سوال کیا توآپ نے بو چھاکہ تفصیل سے میان کروں یا اختصار سے ؟عرض کی کہ اختصار سے بیان فرمائے۔ فرمایا۔ کہ جب قیس کے پر جم مصر میں کندہ کے برجم خراسان میں مر شخر ہو جا کیں تو فرج ہوگی۔

(الزام الناصب جلد ٢، صفحه ٢ ١٠ ١١ الخرائج والجرارُّ)

شام میں تین جھنڈے خروج کریں گے

حضرت علی علیہ السلام نے فرمایا کہ جب سیاہ جسنڈوں والے اختلاف کریں توارم کی بست یوں میں ایک بستی دھنس جائے گی اور اس کی مجد کا مغربی حصہ مندم ہو جائے گا اس وقت شام میں تین جسنڈے خروج کریں گے۔ اصحب ،المدقع اور سفیانی۔سفیانی شام سے خروج کرے گا اور المبقع مصرے لیکن سفیانی الن لوگوں پر غالب آجائے گا۔

سفیانی کے قبضے کے بعد

عبدالله این منصور نے حضر ت الم جعفر صادق علیہ السلام سے سفیانی کانام دریافت کیاآپ نے فرمایا کہ تہیں اس کے نام سے کیا کر نام جب دہ شام کے پانچ خزانوں د مشق، حمص، فلسطین ،ار دن اور قزین کا مالک ہو جائے تواس وقت ظہور کے متوقع رہنا۔راوی کہتا ہے کہ عمل نے پوچھا کہ دہ نو ماہ حکومت کرے گا؟ فرمایا نہیں ۔بلحہ پورے آٹھ ماہ حکومت کرے گا جس عمل ایک دن کھی زیادہ نہیں ہوگا۔

شام کی بسدتنی د هنس جائے گی معرب المام محمیا قرعلید السلام نے دادی سے فرمایا کہ زمین پر جم جاؤ ادرائیے ہاتھ یاؤں کو حرکت نہ دویمال تک کہ دوعلا مات دیکھوجو میں ذکر کر رہا

ہوں۔اور میں جا تا ہوں کہ تم اس دقت تک باتی نہیں رہو گے۔بنی عباس کا اختلاف ۔آسان سے مناوی کی ندا۔ تممارے پاس دمشق کی طرف سے فتح کی آواز کا آنا۔ شام کی بستیوں میں سے ایک کا دھنس جانا جس کا نام جابی ہے۔ ترک گا جزیرہ میں اور روم کار ملہ میں وار دہونا۔اس دقت ساری دنیا میں شکہ یدا ختلا فات ظاہر ہونا یمال تک کہ شام تباہ ہوجائے اور اس کی تباہی کا سبب شکہ یدا ختلا فات ظاہر ہونا یمال تک کہ شام تباہ ہوجائے اور اس کی تباہی کا سبب تمن جھنڈے ہوں گے۔ایک اصبب کادوسر اللبقع کا اور تیسر اسفیانی کا جھنڈا

پانچ درياپر كفار كا قيضه

جناب حذیفہ اور جناب جائے دوایت کے ہے کہ حضرت جرائیل رسول اللہ کے پاس آئے اور انہوں کے بطارت دی کہ قائم اُن کی اولاد یہ ہوگا اور اس وقت تک ظہور نہیں کرے گا جب تک کفار پانچ و ریاؤں کون، جیمون، وجلہ، فرات، نیل پر قابض نہ ہوجا میں تو اس وقت اللہ گر اہی کے مقابع میں ایل بیدئے رسول کی نفر ت کرے گا اور پھر تیا مت تک گر اہی کا برجی بلد نہیں ہوگا۔

(الزام النامب جلد ٢، صفحه ١٢٥)

ہیو طآو م سے لے کر اب تک گر ھن حضرت امام محمد ہاقر علیہ السلام نے فرمایا کہ وو نشانیاں قائم آل محمہ علیہ السلام کے قیام سے قبل طاہر موں گی اور یہ ہیوط آدم سے لے کر اب تک ظاہر نہیں ہوئی ہیں۔ رمضان کے وسط میں سورج گر هن اور آخر میں چاند گر هن ہوگائی هخص نے کما کہ فرزندرسول "سورج گر هن آخر ماہ میں چاند گر هن اوسط ماہ میں ہواکر تا ہے۔ آپ نے فرمایا کہ تم جو کہ رہے ہووہ میں بھی جانتا ہوں لیکن بید دونشانیاں الی ہیں جو ہوط آدم علید السلام سے اب تک نہیں ہوئی ہیں

ایک ماہ میں سورج اور جا ندگر ھن ہو گا ور دھے روایت ہے کہ حضرت امام محمہ باقر علیہ السلام نے فرمایا کہ

اس امر (فلہور) سے معلی دو نشانیاں ہیں۔ ۲۵ تاریخ کو جاند گر ھن ہو گا اور ۔ ۱۵ تاریخ کو سورج گر ھن ہو گا اور یہ دونوں نشانیاں ہوطِ آوم سے اب تک ظاہر نہیں ہوئی ہیں اس و نت اہل نجوم کا حیاب ساقط ہو جائیگا۔

جماوی الثانیہ ورجب میں متواتر بارش ہوگی

عوالم میں حضرت اہام جعفر صادق علیہ السلام سے روایت ہے کہ

جب قیام قائم علیہ السلام کا وقت آجائیگا تو پورے جمادی الثانیہ اور رجب کے

دس و نول میں الی بارش ہوگی جو لوگوں نے پہلے نہ ویکھی ہوگی اس سے
مومنین کے گوشت اور جمم الن کی قبروں سے نمو پائیں کے اور گویا کہ میں دیکھ

رہا ہوں کہ وہ جمید کی طرف سے آرہے ہیں اور اسے نم واس سے مٹی کو صاف کر

رہا ہوں کہ وہ جمید کی طرف سے آرہے ہیں اور اسے نم واس سے مٹی کو صاف کر

(الزام الناصب جلد ٢ ، صفحه ١٢٥)

ماہ صفر سے ماہ صفر تک جنگ

عبداللہ ان بینارکی کتاب میں حضرت امام حسین علیہ السلام سے منقول ہے کہ جب اللہ تبارک و تعالیٰ قائم " کے ظہور کا ارادہ فرمائیگا تو اس زمانے ہیں ماہ صفر سے ماہ صفر تک جنگ ہوگی اور وہی خروج مهدی کا زمانہ ہوگا۔

(الزام الناصب جلد ۲، صفحہ ۱۲۵)

مومنین کرام ۔ علامات ظہور مہدی علیہ السلام بہت زیادہ ہیں لیکن میں نے اختصار کے ساتھ علامات کا تذکرہ کیا ہے کیونکہ علامات کے جانے کے مومنین کی دلچیسی مومتی



حضرت امام مهدی کے بارے میں تعدادِ احاد بیث

آ قائی صافی گلپائیگانی نے اپنی کتاب منتخب الاثر میں شیعہ و سنی وایات کے اعدادوشار جن کیئے ہیں۔ جن کاا قتباس درج ذیل ہے:۔

ا۔ وہ روایات جن میں متایا گیا ہے کہ اہام بارہ بیں اور اُن کے پہلے حضرت علی علیہ السلام اور آخری حضرت امام ممدی علیہ السلام بین وہ اکانوے مصرت امام ممدی علیہ السلام بین وہ اکانوے (۹۱) بین۔

۲۔ وہ روایات جن میں بتایا گیاہے کہ حضرت امام مہدی علیہ السلام خاندان رسول ہے ہیں تین سونواسی (۳۸۹) ہیں۔

سووہ روایات جن میں بتایا گیا کی جضرت امام ممدی علیہ السلام نسل فاطمہ سے ہیں ایک سوبانوے (۱۹۲) ہیں۔

سے وہ روایات جن میں جایا گیا ہے کہ امام ملکری علیہ السلام نسلِ علی علی علیہ السلام نسلِ علی علی علی علیہ السلام سے میں وہ دوسوچو دو (۲۱۴) میں۔

د وه روایات جن میں بتایا گیاہے کہ حضرت امام ممدی علیہ السلام عضرت امام ممدی علیہ السلام کی نویں پشت میں میں ایک سو اڑتالیس (۱۳۸) ہیں۔

۷۔ وہ روایات جن میں متایا گیا ہے کہ حضرت امام مہدی علیہ السلام حضرت امام زین العابدین علیہ السلام کی نسل سے میں (۱۸۵)ایک سو پجاسی العقاد میں۔

کے ۔ووروایات جن میں بتایا گیا ہے کہ حضر ت امام ممدی علیہ السلام

اً مامِ حسنُ عسكري سے صاحبزادے ہيں (١٣٦) ايك سوچھياليس ہيں۔

۸۔وہ روایات جن میں متایا گیا ہے کہ حضر ت اہام مہدی علیہ االسلام بار ھویں اورآخری اہام میں ایک سو تبتیس (۲۳۲) میں ۔

9۔وہ روایات جو حضر ت امام مهدی علیہ انسلام کے متعلق ہیں دو سوچودہ (۲۱۴) ہیں۔

۱۰ وه روایات جن میں حضرت امام مهدی علیه السلام کی طولانی عمر کا تذکره ہے تین سواٹھاره (۳۱۸) ہیں۔

انہ وہ روایات جن میں ذ**سمرے ک**ہ حضرت امام مهدی علیہ السلام کی غَیبت طویل ہو گی اکانوے (۹۰) ہیں۔

۱۲_وہ روایات جمل طہور کی بھارت ہے تھ سو ستاہان (۱۵۷) ہیں۔

۱۳ وہ روایات جن میں ذکر ہے کی خضرت آنام مہدی علیہ السلام و نیا کو عدل وانصاف ہے مُدکر دیں گے ایک سوشنیش (منزع) کمیں۔

۱۰۰۰ اوه روایات جن میں ذکر ہے کہ دین اسلام مفرت امام میدی

علیہ السلام کے ذریعیہ و نیا پر حاوی ہو گاستیالیس (۷ م) ہیں۔

حضرت امام مہدی علیہ اسلام سے متعلق اسلام و خیر ؤاحادیث میں

کل روایات کی تعداد د دومبر ارآٹھ سوستر (۲۸۷۰) ہے۔

(علامات ظهور مهدئ صفحه ۱۳ سم إنم الم

لے پروردگار!

بِسْمِ اللهِ الرَّحَمٰنِ الرَّحِيمِ ،

ظَهَرَالْهُمْ اَنْ اَلْهِ الْبَرْدَ الْبَحَرُ بِهَا كَسَبَتُ اَيْدِى النّاسِ فَاظُهِرُاللّٰهُمْ لَنَا وَلِيَّكَ وَانْ مِنْ الْبَيْدَ الْبُسَمَّى بِاسْمِ مَهُولَةٍ حَتَّى لَا يَظُفُرُ اللّٰهُمْ مَنْ الْبُلطِلِ اِلْاَمَزْتَ لَا وَيُحِقّ الْمُنَّا وَيُحِقّ الْمُنَّا وَيُحَقِّ الْمُنَّا مَنْ عَالِمَظُلُو مِي عِبَادِ لَا وَنَامِلًا وَيَعَلَّمُ مَنْ عَالِمَظُلُو مِي عِبَادِ لَا وَنَامِلًا وَمَحَدِدًا يَسَاعُ فِلْوَي عِبَادِ لَا وَمَا عَلَيْلُ مِنْ اللّٰهُ مَا مُنْ عَلَيْهِ وَالِهِ وَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَالِهِ وَ اللّٰهِ وَاللّٰهِ وَاللّٰهُ وَلَا لَهُ وَاللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰهُ اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّلّٰ اللّٰهُ اللّٰ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰ اللّٰهُ اللّٰ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰ اللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ ال

زرجم، بروبرس فادرونا برگیا اورخود لوگون کے باعقول، ان معبود اپنے ول رصاحب العقری کو تیرسے بن کا فاسسے اور تیرسے اور تیرسے بن کا فاسسے اور تیرسے میں کا بدہ میکر کا برائی میں میں بدول کا کا برائی میں انہوں کو تی تابت کرکے رہے، لے بردرد کا را اکسوں کو لیے مظلوم بدول کا بیشت بنا ہ ، اورجس بے کس کا تیرسے سواکوئی شہویا اس کا مدد گار ایک حلال کر تیری کا ب کے جواحکام معطل مورسیے میں انہیں وہ چرسے جاری وساری کر دسے اور تیرسے دبن ک نشانوں اور تیرسے دبن ک نشانوں اور تیرسے دبن ک نشانوں اور تیرسے خیم کر دسے۔

انتظار ظهور امرائه محاصراته حاصل لآوله الشه

زباریت امام زمانهٔ

سلام ہو آپ پر آپ شہنٹاہ زبانہ۔ سلام ہو آپ پر آے ظیفہ فدا۔ سلام ہو آپ پر اے ظیفہ فدا۔ سلام ہو آپ پر اے کفرہ شرک اور ظلم پر آپ کر اے کفرہ شرک اور ظلم و سرکٹی کو نیست و ناپوہ کرنے والے۔ سلام ہو آپ پر فداوند عالم آپ کی کشائش میں تجیل فرائے اور آپ کے ظور کو سل فرائے اور آپ کے ظور کو سل فرائے اور فداکی رحمیں اور برکتی آپ پر ہوں۔

المامهرى عبالسيلا كالبضال فنان ونين كے نام

ہم تمہارے تمہا کا مقد سے واقعت ہیں ان ہیں سے کوئی بھی دمعا لم اسے چھپا ہوا نہیں ہے اود وہ ساری نغزشیں ہوتم سے دمرزد ، ہوتی دہتی ہم سے چھپا ہوا نہیں ہے اود وہ ساری نغزشیں ہوتم سے دمرزد ، ہوتی دہتی ہم ان سے بھی اخر ہی ای دقت سے تجب تم میں سے اکثر (افراد معن ایسی ہم ان سے تمہار سے نیک بزرگ دودی اختیار کے ہوئے تھے ا

ہم تمہاری جہاست ادر دیجہ بھال یہ کو تا ہی نہیں کرتے اور نہ تمہاری یا دکو دل سے نکالتے ہیں۔ اگر ایسا ہوتا تو سے مروسا انیاں اور مینیں تم پر ٹوٹ پڑتی اور ڈٹن تہیں کیل کر رکھ دیتے ۔ دلہٰذا ، تقویٰ الہٰی اختیار کرود الشب وردہ) ہماری نفرت کرواور ج فقنہ تمہیں اپنے نرغے میں لئے ہوئے سے اس سے بچنے کے لئے مجہ سے تدبیرو رہنائی سے طالب ہو۔

اقدباس از: بجادلانوار طبر المصفحة ٥٠٠ اقدباس از: بجادلانوار طبر المصفحة ١٠٥٥ (المانها ناعليه السلام كاندج بالإفران بزرگ عالم شنج مغيد مليدان عمير كذا كاكيك خط سافتها كركيا كيا

Contact: jabil-aobas@yalloc.com

| | c | التماس سورہ فاتھ برائے تمام مرحوثم |
|-----------------------|---------------------------|------------------------------------|
| ٢٥) بيكم واخلاق حسين | ۱۱۳)سپرخسین عباس فرحت | ا] شخ صدوق |
| ٢٧)سيدمتاز حسين | ۱۴) بیم وسید جعفرعلی رضوی | ٣]علامة على ق |
| ١٤) بيگه دسيداخر عباس | ۵۱) سيدنظام حسين زيدي | ٣]علامداظهرشين |
| ۲۸)سدورعلی | ١١) سيدهاديره | ٣]علامەسىدىلىڭتى |
| ٢٩) سيده دخيد سلطان | ڪا)سيده رضوبيطا لوان | ۵] بینکم دسیدها بدعلی رضوی |
| ٣٠)سيدمظفرهسنين | ۱۸)سيد مجمالحن | ۲) پیم دسیدا حمطی رضوی |
| ۳۱)سیدباسط حسین نفتوی | ۱۹) سيدمبارك رضا | ۷) پیگم دسپورضاامچد |
| ۳۲) فلام محى الدين | | ۸) بیم وسیوطی هیدررضوی |
| ۳۳) سیدنامریلی زیدی | ٢١) يَكُم ومرزا محدباشم | ٩) ينكم دسيدسبواحسن |
| ۳۴)سيدوز د درزيدي | ۴۴)سيد باقرعلى رضوي | ١٠) بيكم وسيد مردان حسين جعفري |
| (۲۵)ریاش الحق | ٣٣) بيگم دسيد باسط حسين | اا) پیگم دسید جارحسین |
| ٣٧)خورشيد بيكم | ۲۴)سيدعرفان حيدروضوي | ۱۲) تیکم دمرزاتو حیدعلی |
| | | |